I

नूरुल हक़
(सत्य का तेज)

भाग- 1, 2

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: नूरुल हक़ (सत्य का तेज)
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद-व-महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: अली हसन, एम. ए. (हिन्दी), आनर्स इन अरबिक
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अक्टूबर 2021 ई०
संख्या	: 500
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)

Name of book	: Noor ul Haque
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mouood & Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Ali Hasan, M.A., (Hindi), Hons in Arabic
Edition	: 1st Edition (Hindi) October 2021
Quantity	: 500
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी, मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**नूरुल हक़**" मूल रूप से अरबी भाषा में है। इसका प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद आदरणीय अली हसन साहिब ने किया है और तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री साहिब (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य साहिब (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन साहिब एम. ए., आदरणीय मुहम्मद नसीरुल हक़ आचार्य साहिब, आदरणीय मुहियुद्दीन फ़रीद साहिब एम. ए. और आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ साहिब एम. ए. ने इसका रीव्यु किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
(1835 ई० - 1908 ई०)
संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने रूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आपने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आपने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से पैदा कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आपने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत[1] लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आपने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आपने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

---

1 **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

VI

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

VII

पुस्तक परिचय

नूरुल हक़

यह पुस्तक जिसका नाम "नूरुल हक़" है, रूहानी ख़ज़ायन (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की पुस्तकों का संग्रह) की आठवीं जिल्द में मौजूद है जो "नूरुल हक़" भाग-1, 2, "इत्मामुल हुज्जत" और "सिर्रुल ख़िलाफ़:" पर आधारित है। यह चारों पुस्तकें वर्तमान युग के अवतार हज़रत मसीह व महदी अलैहिस्सलाम द्वारा रचित हैं जो सन् 1894 ई. में लिखी गयीं।

यह पुस्तक अल्लाह तआला की विशेष सहायता और समर्थन से लिखी गई। जो सरस, सुबोध, अलंकारिक, सानुप्रास दोहे और चौपाइयों से सुसज्जित गद्य एवं पद्य पर आधारित है। इसका प्रथम भाग जनवरी 1894 ई. में प्रकाशित हुआ।

इसके लिखने का कारण यह ठहरा कि जब 1893 ई. में अमृतसर में "जंग-ए-मुक़द्दस" नामक शास्त्रार्थ (जिसका हम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द- 6 में विस्तारपूर्वक वर्णन कर चुके हैं) में ईसाइयों की खुली-खुली पराजय हुई और उनकी कमर टूट गई तो इससे न केवल हिन्दुस्तानी पादरी बौखला उठे बल्कि यूरोपियन मिशनरी सोसाइटीज़ जो हिन्दुस्तान में मिशनरी भेजती थी, सोच में पड़ गई कि भविष्य में इस्लाम का सामना कैसे होगा। अत: इस पराजय की शर्मिन्दगी को मिटाने के लिए इस्लाम को छोड़कर पादरी बनने वाले मुसलमानों में से पादरी इमादुद्दीन ने "तौज़ीन-ए-अक़वाल" नामक एक किताब लिखी जो अत्यन्त भड़काऊ और दिलों को ठेस पहुँचाने वाली थी। जिसके बारे में हिन्दू अख़बारात "राय-हिन्द व प्रकाश" अमृतसर और "आफ़ताब-ए-पंजाब" और ईसाई पर्चा "शम्सुल अख़बार" लखनऊ ने अपनी राय लिखी कि यह अत्यन्त भड़काऊ और दंगा फैलाने वाली है और सन् 1857 ई. की तरह यदि पुन: दंगा हुआ तो इस व्यक्ति की गाली गलौज और अनर्गल एवं अश्लील बातों से होगा।

अपनी किताब में उसने क़ुरआन मजीद की सरसता और अलंकारिकता पर आरोप लगाए और लिखा कि क़ुरआन सरस और अलंकारिक नहीं। इसके अतिरिक्त उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र व्यक्तित्व पर अत्यन्त गन्दे और नीच हमले किए और हज़त मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ ब्रिटिश सरकार को उकसाया और लिखा कि यह व्यक्ति उपद्रवी और सरकार का दुश्मन है और मुझे इसके चाल-चलन में बग़ावत के आसार दिखाई देते हैं और साथ ही जिहाद के विषय का वर्णन करते हुए लिखा कि क़ुरआन हर एक दशा में ग़ैर-मुस्लिमों से जिहाद करने का आदेश देता है। इसलिए जब इसे शक्ति प्राप्त होगी तो अवश्य बग़ावत करेगा। जब यह किताब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहुँची तो आपने उसके जवाब में नूरुल हक़ भाग-1 नामक यह किताब लिखी और पादरी इमादुद्दीन के सारे आरोपों का ठोस और मुँहतोड़ जवाब दिया।

जिहाद

जिहाद के बारे में आपने अपनी इस पुस्तक में अत्यन्त ठोस और सारगर्भित लेख लिखा जो हर ज़माने के मुसलमानों और इस्लाम विरोधियों के लिए इस्लामी जिहाद की वास्तविकता समझने हेतु मार्गदर्शक के रूप में है। आप फ़रमाते हैं:-

"ज्ञात होना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ यूँ ही लड़ाई के लिए आदेश नहीं देता बल्कि केवल उन लोगों से लड़ने का आदेश देता है जो ख़ुदा तआला के बन्दों को ख़ुदा पर ईमान लाने से रोकें, उसके धर्म में दाख़िल होने से रोकें, उसके आदेशों के पालन और उसकी इबादत (आराधना) से रोकें, और उन लोगों से लड़ने का आदेश देता है जो मुसलमानों से अकारण लड़ते हैं और मोमिनों को उनके घरों और वतनों से निकालते हैं और लोगों को बलपूर्वक अपने धर्म में दाख़िल करते हैं और इस्लाम को मिटाना चाहते हैं और लोगों को मुसलमान होने से रोकते हैं। ये वे लोग हैं जिन पर ख़ुदा तआला का प्रकोप है और मोमिनों पर अनिवार्य है कि यदि वे बाज़ न आवें तो वे उनसे लड़ें।"

(नूरुल हक़ भाग-1, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-8 पृ. 62 मूल अरबी भाषा से अनुवादित)

IX

इस किताब को अरबी भाषा में लिखने का कारण

इस किताब को अरबी भाषा में लिखने का मुख्य कारण यह हुआ कि इस्लाम को छोड़कर पादरी बनने वाले लोग अपने आप को इस्लाम के भूतपूर्व मौलवी और उलमा के नाम से मशहूर करते थे। जिसके कारण अंग्रेज़ पादरियों की दृष्टि में भी सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे और उनकी ख़ूब आवभगत की जाती थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनके आरोपों के जवाब में अरबी भाषा में यह किताब लिखी और उनको यह चैलेन्ज दिया कि यदि वे अपने इस दावे में सच्चे हैं कि वे विद्वान हैं और अरबी भाषा जानते हैं तो इस किताब के मुकाबले में अरबी भाषा में ऐसी ही किताब इस्लाम से लिखें और उन मुर्तद पादरियों नाम भी लिखें (पृष्ठ 15) और ऐसा करने वाले को पाँच हज़ार रुपया नक़द इनाम दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त मौलवी से पादरी बनने वाले और अरबी भाषा में विद्वान होने का दावा करने वाले उन पादरियों के नाम भी प्रकाशित किए (देखें हाशिया पृष्ठ 144) और लिखा कि उनके कहने पर जहाँ वे चाहें हम यह रुपया जमा करा देंगे। परन्तु साथ ही आपने यह भी घोषणा कर दी कि अल्लाह तआला ने मुझे सूचना दी है कि उनमें से कोई भी इस मुक़ाबले के लिए तैयार न होगा और यदि लिखने के लिए क़लम उठाई भी तो अपमानित और शर्मिन्दा होकर पराजित होंगे। फिर सब लोगों पर स्पष्ट हो जाएगा कि यह लोग अरबी भाषा से पूर्णत: अनभिज्ञ हैं और इनके विद्वान और अरबीदान होने का दावा पूर्णत: असत्य है। इसके अतिरिक्त हर बुद्धिमान समझ सकता है कि जो अरबी भाषा से पूर्णत: अनभिज्ञ हो उसे क़ुरआन मजीद की वाग्मिता और अलंकारिकता पर ऐतराज़ करने का कोई हक़ नहीं। जिसकी वाग्मिता और अलंकारिकता का अरब के बड़े-बड़े वाक्पटु और अलंकर्ता और लबीद इब्नि रबीअ: इत्यादि जैसे बड़े-बड़े कवि और साहित्यकार लोहा मान चुके हैं और उसकी वाग्मिता और अलंकारिकता पर आज तक किसी अरबी साहित्यकार ने भी कोई ऐतराज़ नहीं किया।

फिर आपने इसी किताब में पादरी इमादुद्दीन की पॉलिटिकल नुक्ताचीनी का

जवाब देते हुए खुले शब्दों में सरकार को भी यह परामर्श दिया कि ! ये भूखे-नंगे लोग जो अपना गुज़ारा नहीं कर सकते और न मुसलमान इनके खाने-पीने का प्रबन्ध कर सकते हैं, सांसारिक धन-दौलत और अच्छे-अच्छे खानों की लालच से गिरजों में एकत्र हो गए हैं और अपने आप को इस्लाम से विमुख सिद्ध करने के लिए पवित्रात्माओं के पेशवा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर व्यंग करते हैं और उन्हें गालियाँ देते हैं और व्यर्थ बैठे रहकर अपनी भूख मिटाना चाहते हैं और उनके बड़े-बड़े लोगों ने उन्हें खुला छोड़ रखा है और इस प्रकार की गाली गलौज के गुनाहों से उन्हें रोकने का कोई प्रबन्ध नहीं करते। उन्हें मेरा परामर्श यह है कि उन्हें ऐसे काम दिए जाने चाहिए जो उनकी क़ौम और व्यवसाय की दृष्टि से उचित हों। उनमें से जो बढ़ई हैं उसे तेश: (बसूला) दिया जाय और धुनिए को एक मज़बूत धुनकी दी जाय और नाई को नहन्नी और उस्तरा और तेली को एक बड़ा सा कोल्हू दिया जाए। ताकि उनमें से हर एक आदमी जिसके वह योग्य है अपने काम में लग जाए और इस व्यवस्था से वह व्यर्थ और गुनाह की बातों से रुक जाए। (नूरुल हक़ भाग-1 से सारांशत: उद्धृत) इसके अतिरिक्त इस किताब के एक क़सीद: में आपने दज्जाल के फ़ित्नों के दुष्प्रभावों से बचने और उसकी तबाही के लिए एक दर्दभरी दुआ भी लिखी।

(नूरुल हक भाग- 2)

इस किताब के अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के समक्ष गिड़गिड़ाकर एक लम्बी दुआ की कि:-

"हे ख़ुदा!.....क्या मैं तेरी ओर से नहीं? इस समय मुझे पूरे ज़ोर से अपमानित और शर्मिन्दा किया गया और कुफ़्र के फ़त्वे दिए गए....इसलिए तू हमारे और हमारी क़ौम के बीच सच्चाई स्पष्ट कर दे और तू सबसे बेहतर सच्चाई स्पष्ट करने वाला है। हे ख़ुदा! तू आसमान से मेरी सहायता कर.....और मुसीबत के समय अपने बन्दे की सहायता के लिए आ। मैं असहायों और अपमानितों की तरह हो गया और लोगों ने मुझे धुत्कार दिया और निन्दा का पात्र ठहराया। इसलिए तू मेरी ऐसी सहायता कर

जैसी कि तूने अपने प्रिय रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बद्र के दिन की थी। (नूरुल हक़ भाग-1 अरबी लेख से अनुवादित)

इस दुआ पर अभी मुश्किल से एक माह ही गुज़रा था कि अल्लाह तआला ने आपकी दुआ स्वीकार की और सूर्य-चन्द्र ग्रहण जिसकी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में भविष्यवाणी की गई थी कि सच्चे महदी के अवतरित होने का यह निशान होगा कि रमज़ान के महीने में तेरहवीं रात को उसके पहले भाग में चन्द्र ग्रहण और अट्ठाईस रमज़ान को सूर्य ग्रहण होगा। इसके अतिरिक्त क़ुरआन मजीद की आयत وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (व ख़सफ़ल क़मरो व जुमिअश्शम्सो वल् क़मर) में भी इसी ग्रहण की ओर संकेत था। इसी तरह इन्जील मती और यूएल (joel) नबी की किताब के अतिरिक्त उम्मत-ए-मुहम्मदिया के पुण्यात्माओं और सत्यनिष्ठों की रचनाओं में भी इसका वर्णन पाया जाता था। इसके अतिरिक्त हज़रत न्यामतुल्लाह वली साहिब और हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब लक्खूके वाले ने इस ग्रहण को महदी के प्रकट होने का स्पष्टत: निशान ठहराया था और मुलतान के एक बड़े और मशहूर वली (धर्मनिष्ठ) हज़रत शेख़ मुहम्मद अब्दुल अज़ीज़ पर्हावरी ने तो ख़ुदा से ख़बर पाकर यह घोषणा भी कर दी थी कि यह निशान 1311 हिज्री में प्रकट होगा।

(अख़बार बद्र 14 मार्च सन् 1907 ई. पृष्ठ 8)

अत: इस मशहूर भविष्यवाणी के अनुसार जो भिन्न-भिन्न काल में भिन्न--भिन्न पुस्तकों में प्रकाशित होती रही और शिया और सुन्नी दोनों फ़िर्क़ों की मशहूर पुस्तकों में इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव की निशानी ठहराई गई थी, वह 20 मार्च सन् 1894 ई. को चन्द्र ग्रहण और 06 अप्रैल 1894 ई. को सूर्य ग्रहण के प्रकटन से पूरी हो गई। अत: अल्लाह तआला ने आपकी दुआ को सुना और आसमान से सहायता की और आपकी सच्चाई पर सूरज और चाँद को गवाह बना दिया और यह निशान बद्र के दिन के निशान की भाँति प्रकट हुआ। जिसे क़ुरआन मजीद में यौम-अल-फ़ुर्क़ान का नाम दिया गया है।

चन्द्र और सूर्य ग्रहण का यह निशान जिसे हज़ारों साल से सच्चे महदी की

पहचान का पैमाना ठहराया जाता था जब पूरा हुआ तो मौलवियों ने स्वीकार करने के बजाय ईर्ष्या-द्वेष से भाँति-भाँति के आरोप लगाने शुरू कर दिए। इससे सम्बन्धित हदीस को कभी ज़ईफ़ और मजरूह (अर्थात् कमज़ोर और बहस योग्य) ठहराया और कभी कहा कि इसके रावियों (वर्णनकर्ताओं) में से कई रावी नई-नई बातें गढ़ने वाले दुराचारी और लंपट हैं और कभी कहा कि हदीस के शाब्दिक अर्थानुसार रमज़ान की पहली रात को चन्द्रग्रहण नहीं हुआ। तब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नूरुल हक़ भाग-2 लिखा। जिसमें आपने इस निशान को एक अद्वितीय होना सिद्ध किया और विस्तारपूर्वक उलमा के उन सारे आरोपों के बौद्धिक और तार्किक उत्तर दिए और यह घोषणा की कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण से सम्बन्धित यह हदीस एक महान भविष्यवाणी पर आधारित है और पूर्वयुगों में किसी महदी या मामूर (अवतार) के मुद्दई के लिए ऐसा चन्द्र-सूर्य ग्रहण निशान के रूप में कभी नहीं प्रकट हुआ और मैं ऐसे व्यक्ति को एक हज़ार रुपया इनाम दूँगा जो हदीस में वर्णित तिथियों के अनुसार यह सिद्ध कर दे कि मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज तक किसी महदी या मामूर के मुद्दई के लिए रमज़ान माह की इन तिथियों में ऐसा चन्द्र-सूर्य ग्रहण लगा हो। इसके अतिरिक्त आपने उस व्यक्ति के लिए भी एक हज़ार रुपये इनाम देने की घोषणा की जो शब्दकोषों और अरब काव्यों इत्यादि से यह सिद्ध कर दे कि पहली तिथि के चाँद को क़मर कहा जाता है। लेकिन इन इनामों को पाने के लिए किसी को भी यह सिद्ध करने का साहस न हुआ। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक के मुखपृष्ठ "तम्बीह" शीर्षान्तर्गत यह भी लिखा कि:-

> "यह किताब पहले भाग सहित पादरी इमादुद्दीन और शेख़ मुहम्मद हुसैन बतालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्नः और उनके सहायकों और मददगारों के ज्ञान की वास्तविकता प्रकट करने के लिए लिखी गई है जिसके साथ पाँच हज़ार रुपयों के इनाम का इश्तिहार भी है। यदि चाहें तो रुपया पहले जमा करा लें। इसके अतिरिक्त यदि आमने-सामने किताब लिखने को तैयार हों और इनामी रुपया कहीं जमा कराना चाहें तो ऐसे निवेदन की

अवधि अन्तिम जून 1894 ई. तक है। इसके बाद कोई भी निवेदन स्वीकार न होगा और समझा जाएगा कि भाग गए।"

(टाइटल पेज, नूरुल हक़ भाग-2)

इसी तरह "इत्मामुल हुज्जत" में भी किताब नूरुल हक़ के बारे में लिखा कि:-

"हमारी ओर से समस्त पादरी साहिबान और शेख़ मुहम्मद हुसैन बतालवी और मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी और उनके अन्य सारे साथी इस मुक़ाबले के लिए आमंत्रित हैं और मुक़ाबले के निवेदन के लिए हमने उन सब के लिए अन्तिम जून 1894 ई. तक की मोहलत दी है और मुक़ाबले में पुस्तक प्रकाशित करने के लिए ऐलान के दिन से लेकर तीन महीने तक की मोहलत है।"

(इत्मामुल हुज्जत रूहानी ख़ज़ाएन जिल्द-8 पृ. 304)

वह जून का महीना बीत गया लेकिन न बतालवी और न उनके साथियों में से और न पादरियों में से किसी को मुक़ाबले में आने की सामर्थ्य मिली और न ही दूसरे इनामों को हासिल करने के लिए सामने आने की हिम्मत। अत: अपनी ख़ामोशी से उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वे वस्तुत: विद्वान नहीं, बल्कि अरबी भाषा से बिल्कुल अनभिज्ञ और अपरिचित हैं।

प्रथम संस्करण अरबी का शीर्षक पृष्ठ

ٹائیٹل بار اوّل

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللّٰهَ

الحمد لله الموفق أني كتبت هذه الرسالة والصحيفة العجالة لعلاج مرض المتنصرين الذي امتد مداه
وعرقتهم مُداه واكلتهم نار انكار الفرقان والصول على كتاب الله القرآن - فاردنا ان نجيهم
من مخلب الحمام - ونريهم سوء داءهم ونهديهم الى دواء السقام - فالّفنا هذا
الكتاب مع انعام كثير لمن اجاب - وهو خمسة آلاف من الدراهم لكل من
اتى بمثله واري العُجاب - وهو بفضل الله حسن وطيب والطف
وادق - وسميته الحصة الاولى من

نُورُ الحَقّ

عسىٰ ربكم ان يرحمكم
وان عدتم عدنا وجعلنا جهنم
للكافرين حصيرا ان هذا القرآن يهدي
للتي هي اقوم ويبشر المؤمنين الذين يعملون الصالحات ان
لهم اجرا كبيرا ۞

قد طبع في المطبع المصطفائي بريس في لاهور سنہ ۱۳۱۱ هجري

بار اول جلد ۱۴۰۰

قیمت فی جلد ۱۲/

शीर्षक पृष्ठ पर लिखित लेख का अनुवाद

नूरुल हक़ (भाग-1)

हे अहल-ए-किताब (अर्थात यहूदियो तथा ईसाइयो)! उस बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है, कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत (आराधना) न करें।

सारी प्रशंसा सामर्थ्य प्रदान करने वाले ख़ुदा के लिए है। मैंने यह शीघ्र लिखी जाने पुस्तक ईसाइयों की एक ऐसी लम्बी और पुरानी बीमारी के इलाज के लिए लिखी है जिसकी छूरियों ने उनका गोश्त उधेड़कर हड्डियाँ नंगी कर दीं और खोलकर अन्तर स्पष्ट कर देने वाली अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद के इन्कार और उस पर हमलों की आग ने उनको भस्म कर दिया। अत: हमने चाहा कि उनको मौत के चंगुल से मुक्ति दिलाएँ। उन्हें उनकी घातक बीमारी से अवगत कराएं और उसके इलाज की ओर उनका मार्गदर्शन करें। इसलिए हमने हर उस व्यक्ति के लिए 5000 दिरहम के एक बड़े इनाम के साथ यह किताब लिखी जो इसका रद्द (तोड़) लिखे और इस जैसी किताब लाए और चमत्कार दिखलाए। अल्लाह की कृपा से यह किताब दोषरहित, कल्याणकारी और अत्यन्त नूतन एवं गूढ़ रहस्यों पर आधारित है। मैंने इसका नाम **नूरुल हक़ भाग-1** रखा है।

पवित्र क़ुरआन में अल्लाह फरमाता है :-

> हो सकता है कि तुम्हारा रब्ब तुम पर रहम करे, लेकिन यदि तुम पाप और धृष्टता की ओर लौटे तो हम भी पीड़ा और सज़ा की ओर लौटेंगे और हमने नर्क को अधर्मियों के लिए क़ैदख़ाना बना रखा है। यह क़ुरआन नि:सन्देह उस मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है जो सबसे अधिक सीधा है और उन मोमिनों (ईमानदारों) को जो नेक कर्म करते हैं ख़ुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल निर्धारित है।

मुद्रित- मुस्तफ़ाई प्रेस लाहौर सन् 1311 हिज्री

XVI

सौभाग्यशाली है वह, जो धर्म की सहायता के लिए खड़ा हो गया और
सदा सहाय ख़ुदा की पसन्दीदा राहों को ढूँढ़ता हुआ उठा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएँ उस ख़ुदा के लिए सिद्ध हैं जो समस्त लोकों का पालनहार है और दुरूद व सलामती हो उसके नबियों के सरदार पर जो उसके सब प्यारों में से अति प्रिय और उसकी सृष्टि में जो कुछ है उस में से सबसे श्रेष्ठ और सब नबियों का सरदार और सारे वलियों (अर्थात् ऋषियों मुनियों) का गौरव है। हमारा सरदार, हमारा इमाम, हमारा नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा जो धरती के लोगों के दिल रोशन करने के लिए ख़ुदा का सूरज है, और सलामती और दुरूद उसकी आल (अर्थात् अनुयायीगण) और अस्हाब (सहचरगण) और हर एक उस पर हो जो मोमिन हो और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामने वाला और मुत्तक़ी (अर्थात् संयमी) हो, और इसी तरह ख़ुदा के समस्त नेक बन्दों पर भी सलामती हो।

इसके उपरान्त हे भाइयो! ख़ुदा तुम में और तुम्हारे लिए और तुम पर बरकत नाज़िल करे। तुम्हें ज्ञात हो कि हमारे इस युग में बुराइयाँ अपने चरम को पहुँच गई हैं। शिर्क (अनेकेश्वरवाद), दुराचार और इस्लाम से विमुखता ने बहुतों के मुँह को काला कर दिया है और तबाह करने वाले फ़ित्ने और ईमान को जड़ से उखाड़ फेंकने वाले नित नए-नए पाखण्ड एक के बाद दूसरे ज़ाहिर हो रहे हैं। इनका नित नए रूप में प्रकट होना कम न हुआ यहाँ तक कि मूर्ख, मोटी अक़्ल वाले और वे लोग जो ख़ुदा की शिक्षाओं से अनभिज्ञ थे उनका शिकार हो गए। तुम देख रहे हो कि इन दिनों (नए-नए पाखण्डों की) कितनी तेज़ आँधियाँ चल रही हैं और झमाझम बारिश की तरह चारों ओर से फ़ित्ने पूरे ज़ोर शोर से इस्लाम पर हमला कर रहे हैं। यहाँ तक कि हर इक दिल में सांसारिक मोह माया और उसकी चाहतों की भूख ने डेरा जमा लिया है और इन से सिवाए उसके कोई नहीं बच सका जिसे ख़ुदा के रहम ने बचा लिया। जिस पर उसका रहम हुआ वह ख़ुदा के फ़ज़्ल से इन सारी बाधाओं

(मुसीबतों) से बाहर निकल आया और बच गया। तुम देख रहे हो कि अधिकतर मुसलमानों की कैसे हवा निकल गयी और वे टुकड़े-टुकड़े हो गए और बिखर गए और टिड्डियों की तरह दूर-दूर जा पड़े और उनकी तामसिक इच्छाएँ बेलगाम घोड़े की तरह सर्कश भागने लगीं और सदाचारी और शिष्ट लोगों की आदतें उन्होंने छोड़ दीं। यह तो अधिकतर मुसलमानों का हाल है और इस देश के उलेमा का हाल तो इससे भी बद्तर है। उनमें से बहुतों का काम इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि किसी सच्चे को झूठा कहें या किसी मोमिन को काफ़िर ठहरावें। उनका ज्ञान तो सिर्फ इतना है जितना कि एक अत्यन्त छोटी सी चिड़िया की चोंच में पानी या उससे भी कम, लेकिन घमण्ड इतना है कि शैतान के अहंकार से भी अधिक। यह लोग अपने आपको अकारण ऊँचा समझते हैं और जो व्यक्ति सचमुच फ़ज़्ल (वरदान) और ज्ञान के उच्च स्थान पर हो वह इनकी दृष्टि में एक मूर्ख और बुद्धिहीन है और जो आदमी वास्तव में ईमान और अध्यात्म ज्ञान से भर गया हो वह इनके निकट एक काफ़िर और दज्जाल (अर्थात् अधर्मी और धोखेबाज़) है। अत: देखो कि सच्चाइयाँ इनसे कैसे ओझल हो गयीं। टेढ़े चलने वालों और हद से बढ़ने वालों का ख़ुदा ऐसा ही अंजाम करता है। आप लोगों ने देखा कि हम कैसे उन लोगों की ज़ुबानों से सताए गए। उन्होंने हमें झुठलाया, गालियाँ दीं, लानतें डालीं। हमने उनका कोई गुनाह नहीं किया था और न ही कोई जुर्म। उन्होंने इसी पर बस न किया बल्कि उग्र होकर हमारी तरफ़ दौड़े और हमारा नाम काफ़िर (अधर्मी) रखा। उनके लिए यह उचित न था कि बेधड़क होकर मुसलमानों के बारे में ऐसी बातें कहते, पर वे ख़ुदा तआला की मना की हुई बातों की कुछ परवाह नहीं करते, बल्कि वे तो और ही कामों में लगे हुए हैं। वे मुसलमान को कहते हैं कि तू मोमिन नहीं और वे यह भी जानते हैं कि ऐसा कहने से वे क़ुरआन को छोड़ते हैं और वे उसे रद्दी की तरह छोड़ ही बैठे हैं। इसी कारण वे सच्चाई से दूर जा पड़े और उनके दिल कठोर हो गए। जो चाहते हैं करते हैं और झूठ और फरेब से न परहेज़ करते हैं और न डरते हैं और इसी तरह उन्होंने हम पर झूठे आरोप लगाए और बहुत से नादान लोगों को हमें सताने के लिए उकसाया और हमें बिना किसी ज्ञान और स्पष्ट प्रमाण के काफ़िर ठहराया। इन फ़त्वों

में उनका मुखिया एक शैख़ है जो इन्सानियत के शिष्टाचार से नग्न और अपरिचित है और ईमानी सच्चाई से रहित। उसके पीछे चलने वाले उसी की तरह मूढ़ और मूर्ख हैं। हम ऐसे नहीं थे कि हमारा हाल उनसे छुपा हो और पहचाना न जाए, बल्कि वे हमारे इस्लाम से परिचित थे। उनके कहने से हम ख़ुदा के निकट काफ़िर नहीं हुए, लेकिन इससे उनका ईमान, उनका तक़्वा और उनका ज्ञान और विवेक आज़माया गया और जो कुछ वे छुपाते थे वह सब खुलकर ज़ाहिर हो गया और स्पष्ट हो गया कि वे ईर्ष्या-द्वेष से भरे हुए हैं।

उन पर अफ़सोस! कि उनमें से एक भी हमारे पास न आया कि वह अपनी मुश्किलों के हल के बारे में गम्भीरतापूर्वक शालीनता से हमसे पूछता। हमने किसी खटखटाने वाले की आवाज़ न सुनी जो हिदायत पाने का इच्छुक हो और कोई उनमें से हमारे पास ईर्ष्या-द्वेष से रहित होकर स्वच्छ नीयत से न आया, बल्कि वे तेज़ी से काफ़िर कहने के लिए आगे बढ़े और इससे पहले कि हमारा कोई कुफ़्र साबित हो, हमें काफ़िर ठहराया। फिर इसी पर न रुके, बल्कि यह कहा कि यह लोग मुर्तद (अर्थात् इस्लाम से विमुख) और इस्लाम से ख़ारिज हैं और इनका क़त्ल करना बड़े सवाब (पुण्य) की बात है और इनकी धन-सम्पत्ति लूटना चाहे चोरी से ही क्यों न हो हलाल तय्यब (वैध और श्रेष्ठ) है और इनकी औरतों को उठा लेना और इनके बच्चों को ग़ुलाम बना लेना नेक काम है और जो आदमी फ़ज्र (भोर) से पहले उठे और जंगल में निकल जाय और इन मुसाफ़िरों में से किसी पर चोरों की तरह डाका मारे तो वह बड़ा ही सौभाग्यशाली और चुने हुए नेक लोगों में से है। यह उनकी बातें और उनके फ़त्वे हैं और अब तक इन शरारत भरे फ़ित्ने फैलाने से नहीं रुके और शर्म व हया की ओर नहीं लौटे और न अब तक शर्मिन्दा हुए।

यदि अंग्रेज़ी सरकार का डर न होता तो हमें यह टुकड़े-टुकड़े कर देते। लेकिन यह प्रभावी ब्रिटिश सरकार जो हमारे लिए कल्याणकारी है, ख़ुदा इसको हमारी ओर से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे, कमज़ोरों को अपने उपकार और दया की छत्रछाया के नीचे शरण देती है, कमज़ोर पर ताक़तवर कोई अत्याचार नहीं कर सकता। इसलिए हम इस सरकार की छत्रछाया में बड़े आराम और अमन से जीवन

व्यतीत कर रहे हैं और इसके धन्यवादी हैं। यह ख़ुदा का संरक्षण और उपकार है कि उसने हमें किसी ऐसे ज़ालिम बादशाह के सुपुर्द नहीं किया जो हमें अपने पैरों के नीचे कुचल डालता और कुछ भी रहम न करता। बल्कि उसने हमें एक ऐसी महारानी शासक प्रदान की है जो हम पर रहम करती है और नेकी और सम्मान की बारिश से हमारी सहायता करती है और हमें तिरस्कार और हीनता के गढ़े से निकालकर ऊपर उठाती है, इसलिए ख़ुदा उसको वह उत्तम प्रतिफल दे जो एक न्यायप्रिय शासक को उसकी प्रजापालन के कारण मिलता है और उसको अत्यन्त पुण्य दे और उसमें उसके लिए भलाई प्रदान करे और उस पर यह एहसान भी करे कि तौहीद और इस्लाम की नेमत उसको मिले और उस पर रहम करे जिस तरह उसने हम पर रहम किया और वह हमारा ख़ुदा रहम करने वालों में से सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

भाइयो! आप लोग जानते हैं कि कुफ़्र के फ़त्वे किसी अध्ययन और ठोस जाँच-पड़ताल पर आधारित नहीं थे और उनमें कोई सच्चाई की बू नहीं थी, बल्कि वे सारे फ़त्वे उनकी ईर्ष्या, स्वार्थ, छल-कपट, झूठ और अत्याचार के सूत से बुने हुए थे। यह लोग हमें अच्छी तरह जानते थे और हमारे ईमान को भी पहचानते थे और अपनी आँखों से देखते थे कि हम मुसलमान हैं और वाहिद ला शरीक (एक और अद्वय) ख़ुदा पर ईमान लाते हैं और कलिमा ला इलाह इल्लल्लाहो... के क़ायल (पढ़ने वाले) हैं और ख़ुदा की किताब क़ुरआन और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जो हमारा पेशवा है, ख़ातमुन्नबीयीन मानते हैं और फ़रिश्तों पर और क़यामत के दिन पर और जन्नत-दोज़ख़, (स्वर्ग-नर्क) पर ईमान रखते हैं और नमाज़ पढ़ते है, रोज़ा रखते हैं और काबा शरीफ़ को अपना क़िबल: मानते हैं और जिसे ख़ुदा और उसके रसूल ने हराम ठहराया है उसे हराम समझते हैं और जिसे ख़ुदा और उसके रसूल ने हलाल (जायज़) ठहराया है उसे हलाल समझते हैं और न हम शरीअत में कुछ कणमात्र बढ़ाते हैं और न कुछ उसमें कम करते हैं और जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हमें पहुँचा है उसको क़ुबूल करते हैं चाहे हम उसके रहस्य को समझें या न समझें और उसकी गहराई

तक न पहुँच सकें और हम अल्लाह के फ़ज़्ल से एक ख़ुदा पर ईमान लाने वाले मुसलमान हैं।

जिन लोगों ने हमें काफ़िर ठहराया उनसे हम केवल इस बात में असहमत हैं कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के क़ायल हैं। इससे वे लोग बहुत कुपित हुए और क्रोध से भर गए मानो उन्हें इस आयत पर कुछ ईमान नहीं कि يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु दूँगा (आले इमरान- 3/56) और न मृत्यु के वादे पर ईमान है जिसको इस आयत में स्पष्ट रूप से बयान किया गया है और मानो वे लोग उस आयत को भी नहीं जानते जिसमें हज़रत ईसा का इक़रार है कि तूने मुझे मृत्यु दे दी। यह فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ (फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी) वही आयत है जिसमें मौत के उस वादे के पूरे होने की ओर इशारा है जो आयत اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ (इन्नी मुतवफ़्फ़ीका) में हो चुका था। आयतें स्पष्ट और खोलकर बयान करती हैं मगर शायद यह लोग इस खुली-खुली किताब क़ुरआन के बारे में शक में पड़े हैं और इस पर ईमान नहीं रखते और ईमान लाने के बाद किताबुल्लाह (अर्थात् क़ुरआन करीम) को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

मुझे आश्चर्य है और ख़ुदा की मुहर और उसके गुमराह करने से कुछ आश्चर्य भी नहीं , क्योंकि इस मुल्क के अधिकतर मौलवी बिगड़ गए। यहाँ तक कि उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ व्यर्थ और निष्क्रिय हो गयीं और उनकी अक़्लें मर गयीं और उनकी सूझ-बूझ की ताक़तें खो गयीं और उनके विचार गन्दे हो गए और आँखों पर पर्दे पड़ गए। अत: देखो ख़ुदा का काम और उसका प्रकोप, कि किस तरह से उसने उनकी दूरदर्शिता (अन्तर्ज्ञान), विवेक और बुद्धि छीन ली और उनको अन्धकारों में छोड़ दिया कि वे कुछ देख नहीं सकते। उनका दिल इस्लाम की मुसीबतें देखकर कुछ भी नहीं पसीजता। वे हमें काफ़िर ठहराते हैं और केवल हमें ही नहीं बल्कि हर इक मुसलमान उनके निकट काफ़िर है। चाहे वह एक छोटी सी बात में भी उनका विरोधी हो या मल-मूत्र फिरने के विषयों में ही मतभेद हो। मुसलमानों को धक्के दे-देकर दीन (इस्लाम) से बाहर निकालते हैं और चाहते हैं कि इस्लाम सिमटकर थोड़ा सा रह जाय और अपनी आँखों से देखते हैं कि ईसाई छा गए और उनका मज़हब

धरती पर बहुत बढ़ गया और दुनिया के किनारों तक फैल गया और हर एक तरक़्क़ी उनके हिस्से में आ गयी और एक असहाय बन्दे को उन्होंने ख़ुदा बना लिया और अपनी ओर से बाप और बेटा की धारणा रच ली और अपनी झूठी बातों पर पहाड़ों और चट्टानों की तरह मज़बूती से खड़े हो गये। और यह हमारे मौलवी उनकी झूठी बातों को सुनने के लिए उनके आगे घुटने टेक कर बैठ गये और इनकी बातें ईसाइयों की कलियाँ खिलने के लिए भीनी-भीनी पुर्वाई हवा की तरह बन गयीं और इन्होंने व्यर्थ और ज़ईफ़ कमज़ोर रिवायतें ऐसे जमा की जैसे कोई रात में सैलाब या तूफ़ान के समय में ईंधन इकट्ठा करता है और ईसाइयों का अपनी बातों से समर्थन किया और कहा मसीह इब्नि मरियम अपनी कतिपय विशेषताओं में बेजोड़ है तथा प्रताप और महानता की जो विशेषताएँ उसमें पायी जाती हैं वे उसके सिवा किसी दूसरे में नहीं पायी जातीं। वही एक उच्चकोटि का पवित्र है उसके जन्म के समय शैतान ने उसको स्पर्श नहीं किया और उसके अतिरिक्त सब नबियों को छुआ और कोई शैतान के स्पर्श से बच न सका। इस विशेषता में कोई भी उसके बराबर नहीं चाहे ख़ात्मुल अम्बिया ही क्यों न हों, और कहा कि वह ख़ुदा तआला की तरह पक्षियों को भी पैदा करता था और ख़ुदा तआला ने अपने आदेश से उसको अपना साझीदार बना लिया। इसलिए वे सब पक्षी जो इस संसार में पाए जाते हैं दो प्रकार के हैं एक ख़ुदा के पैदा किए हुए दूसरे मसीह के। अत: देखो कि किस तरह इन उलमा ने मरियम के बेटे को ख़ुदा बना दिया और लोगों में यही अक़ीदे (आस्थाएँ) फैलाते हैं और नहीं जानते कि इन अक़ीदों में क्या-क्या मुसीबतें और तबाहियाँ हैं, और ईसाइयों का समर्थन कर रहे हैं और इन अक़ीदों के परिणामस्वरूप अब तक हज़ारों लोगों का ईमान सच्चे स्रष्टा (ख़ुदा) से उठ गया और हज़ारों मुसलमान ईसाई हो गए। क़ुरआन में मसीह के यथार्थ और लौकिक रूप से पक्षी पैदा करने का वर्णन कहीं भी नहीं है। ख़ुदा ने इस घटना का वर्णन करते समय यह नहीं फ़रमाया कि فَيَصِيْرُ حَيًّا بِاِذْنِ اللّٰهِ (फ़ यसीरु हय्यन बि इज़्निल्लाह) बल्कि यह फ़रमाया कि فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ (फ़ यकूनु त्वयरन बि इज़्निल्लाह) (आले इमरान- 3/50) अत: अरबी शब्द "फ़ यकूनु" और "त्वयरन" पर ग़ौर करो कि क्यों सर्वज्ञ और युक्तिवान ख़ुदा ने इन्हीं दोनों शब्दों का प्रयोग किया

और शब्द "फ़यसीरु" और "हय्यन" को नहीं। इसलिए इस जगह यह साबित हुआ कि इस जगह ख़ुदा तआला का अभिप्राय वह यथार्थ और लौकिक स्रजन बयान करना नहीं जो केवल उसी से विशिष्ट है और स्वयं स्रजित करता है। इसके समर्थन में वे वृत्तान्त प्रस्तुत करते हैं जो कई लोगों के द्वारा तफ़्सीरों में बयान हुए हैं कि ईसा का परिन्दा सिर्फ़ उसी समय तक उड़ता रहता था जब तक कि वह लोगों की नज़रों के सामने रहता था और जब ओझल होता था तो गिर जाता था और मूसा की लाठी की तरह अपने मूल रूप की ओर लौट आता था। ईसा का मुर्दों को ज़िन्दा करना भी इसी तरह था। इससे यथार्थ और व्यवहारिक रूप से पैदा करना या ज़िन्दा करना कहाँ सिद्ध हुआ? इसीलिए अल्लाह तआला ने इस स्थान पर वे शब्द प्रयोग किए जो रूपक की दृष्टि से उचित थे, और यह इसलिए किया ताकि उस चमत्कार की ओर संकेत करे जो रूपक के स्तर तक पहुँच चुका था और रूपक शब्द का इसलिए वर्णन किया ताकि वह उनके चमत्कार को (जो असाधारण था) बयान करे। फिर क्या था जल्दबाज़ जाहिलों ने इस रूपक को यथार्थ के रूप में बयान किया और बिना किसी अन्तर के उसके पैदा करने के ढंग को ऐसा ढंग समझ लिया जैसे कि ख़ुदा का है। हालाँकि वह सिर्फ़ मसीह के इन्द्रजाल से था और उसके साथ कोई दुआ* शामिल न थी। इसलिए ऐसा समझने वाले लोग सच्चाई से दूर जा पड़े और बहुत से अज्ञानियों को इस्लाम से बाहर कर दिया। क़ुरआन तो किसी को ख़ुदा की सृजन प्रक्रिया में साझीदार नहीं ठहराता, चाहे एक मक्खी या मच्छर ही क्यों न पैदा करना हो बल्कि वह कहता है कि ख़ुदा अपने स्वामित्व और विशेषताओं में अकेला और अद्वितीय है। इसलिए तुम क़ुरआन को गहन चिन्तन और सोच-विचार करने वालों की तरह पढ़ो। अत: जो बात बुद्धि, प्रमाण और तर्क से साबित हो गई उसका सिवाए कोई इन्कार नहीं कर सकता ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त कि जिसके दिमाग़ में इन्सानी समझदारी का माद्दा (तत्व) न रह गया हो और सबसे अधिक नुकसान उठाने वालों के साथ जा मिला हो और ऐसी बातें उस आदमी के अतिरिक्त कोई मुँह पर नहीं ला सकता जो तौहीद की राह को भूल गया हो और पहले दर्जे की मूर्खता की ओर लौट

* फूँक से ज़िन्दा करना इसी तरह था जैसे कि नज़र से मारना- इसी से सम्बन्धित

गया हो और उसकी नज़र उेन अक़ीदों में छुपी हुई ख़राबियों और उनसे निकलने वाले परिणामों तक नहीं पहुँच सकी। या वह आदमी ऐसी बातें कहेगा जो मूर्खता की बातों पर अड़ बैठा हो और बिना सोचे-समझे फ़त्वों के अनुकरण में लग गया हो। यहाँ तक कि वह मनुष्य की आज़ादी के असर और नामोनिशान को खो बैठा और ऐसे जाल में फँस गया हो जिससे रिहाई नहीं और लानती इब्लीस के असर के नीचे आ गया हो। और जो क़ुरआन पर ईमान लाया और उसकी हिदायतों का पालन किया वह ऐसे अक़ीदों पर कभी खुश नहीं होता, बल्कि वह ऐसी बातों को जो स्पष्टत: क़ुरआन के उलट और उसकी मुहकम (अर्थात् खुली-खुली) आयतों की पूर्णत: विरुद्ध हैं, नाजायज़ समझेगा। अत: इससे बढ़कर और कौन सा गुनाह होगा कि एक आदमी क़ुरआन पर ईमान लाकर फिर पलट जाय और उसकी कई हिदायतों का इन्कार कर दे और उसकी खुली-खुली आयतों को छोड़कर गूढ़ आयतों की पैरवी करने लगे और क़ुरआन में रद्दोबदल करे और उसके अर्थों को उनकी सच्चाई के मुख्य बिन्दु से बदल दे और अपनी बातों से मुश्रिकों (अर्थात् ख़ुदा का साझीदार ठहराने वालों) का समर्थन करे? परन्तु वह व्यक्ति जिसने क़ुरआन करीम को मज़बूती से थामा और जो कुछ उसमें है उन सब बातों पर सच्चे और यथार्थ रूप से ईमान लाया तो उस पर कौन सा नुकसान और कौन सा डर है कि अगर वह ऐसी रिवायतों को छोड़ दे जो क़ुरआन के खुले-खुले बयान के विरुद्ध हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से ऐसे प्रमाणिक और विश्वसनीय तौर पर कदापि सिद्ध नहीं जो क़ुरआन के तर्क और तवातुर (अर्थात् सिद्धान्त और श्रृंखला) से बराबरी कर सके या उदाहरणस्वरूप ऐसे अर्थ छोड़ देवे जो क़ुरआन की आयतों के विरुद्ध हों और ऐसे अर्थ अपनाये जो क़ुरआन के अनुसार हों चाहे व्याख्या से ही सही। यही नेकों और मुत्तक़ियों का ढंग है और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा के ढंग और स्वभाव में से है। इसलिए ऐसे व्यक्ति पर जो मुसलमान परहेज़गार मोमिन है और जैसा ख़ुदा से डरने का हक़ है, वह डरता है तो उस पर अनिवार्य है कि वह हबलुल्लाह को जो क़ुरआन है, मज़बूती से पकड़ ले और इसके अलावा जो इसका मुखालिफ़ है उसकी कुछ परवाह न करे और जब

देखे या उसे पता चले कि कुछ पुराने उलेमा को किसी बात के समझने में ग़लती लगी है तो यह उसकी ईमानदारी से दूर होगा कि उनकी ग़लतियों के पीछे चले और आँख बन्द करके उनको मान ले और किसी समझाने वाले के समझाने से उन ग़लतियों को न छोड़े और हमेशा उन्हीं ग़लतियों पर अड़ा रहे और उस सच्चाई और हिदायत की ओर मुड़कर न देखे जो खुलकर स्पष्ट हो गई। क्योंकि जब एक बात सच्ची साबित हो गई तो उसको क़ुबूल किए बिना कोई चारा नहीं और उससे भागने की कोई जगह नहीं। जैसे कि एक हदीस में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-لا عَدْوَى (ला अदवा) अर्थात् एक बीमारी दूसरे को नहीं लगती तात्पर्य यह कि एक बीमारी दूसरे में संक्रमित नहीं होती लेकिन चिकित्सीय अनुभवों से इसके उलट सिद्ध हो गया और हम अपनी आँखों से देखते हैं कि कई बीमारियाँ जैसे कि आतशक (उपदंश अर्थात् गर्मी) की बीमारी एक से दूसरे को लग जाती है और एक आतशक से ग्रस्त स्त्री से पुरुष को भी आतशक हो जाती है और इसी तरह पुरुष से स्त्री को भी लग जाती है। यही हालत टीका लगाने में भी देखने को मिलती है, क्योंकि जब चेचक वाले के टीके से दूसरे पर टीका लगाया जाय तो उसके शरीर पर भी चेचक के आसार ज़ाहिर हो जाते हैं। यही तो अदवा (अर्थात् संक्रामक बीमारी) है। इसलिए हम किस तरह इस छूत से फैलने वाली बीमारी का इन्कार कर सकते हैं। क्योंकि इसका इन्कार खुली-खुली अनुभूति विज्ञान का इन्कार है जो चिकित्सीय अनुभवों से सिद्ध हो चुका है और इसमें उन बच्चों को भी शक नहीं रहा जो गली-कूचों में खेलते फिरते हैं, फिर बुद्धिमानों को किस तरह शक हो सकता है। इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि हम इस हदीस की तावील (स्पष्टीकरण) करें और इसके वे अर्थ करें जो साबितशुदा सच्चाई के ख़िलाफ़ न हों। और यदि हम ऐसा न करेंगे तो मानो हम हर मुख़ालिफ़ को बुलाएँगे कि वह हम पर और हमारे मज़हब पर हँसी ठट्ठा करे और इस दशा में हम ठट्ठा करने वालों के समर्थक ठहरेंगे। इसलिए हम इस हदीस की तावील इस तरह करेंगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी बात "ला अदवा" में यह कदापि नहीं कहा कि हर प्रकार से एक की बीमारी दूसरे में संक्रमित नहीं होती और

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसा कैसे कह सकते थे जबकि आपने एक दूसरी हदीस में कोढ़ियों से बचने के लिए हिदायत फ़रमायी है और उनको छूने से डराया है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस हदीस से इसके अतिरिक्त कुछ तात्पर्य नहीं था कि अदवा (अर्थात् छूत) इत्यादि की बीमारियों का सारा असर ख़ुदा तआला के हाथ में है और उसके आदेश और इच्छा के बिना इस संसार में कोई असरकारक नहीं। जब हमने यह तावील (व्याख्या) की तो ऐतराज़ करने वालों के ऐतराज़ों से बच गए और मुझे उस हस्ती की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस स्थान पर और इसके समान दूसरे स्थानों पर जैसे कि नुज़ूले हज़रत ईसा इत्यादि के सम्बन्ध में तावीली (अर्थात् व्याख्यात्मक) अर्थों के अतिरिक्त और कोई अर्थ तात्पर्य नहीं लिए।★ इसलिए तुम जल्दबाज़ी मत करो और षड़यन्त्रकारियों के फ़ित्नों के समर्थक मत बनो। यही सच्ची बात है। अत: सत्य को स्वीकार करो, चाहे वह एक बच्चे के मुँह से ही निकला हो। क्योंकि समस्त कल्याण सत्य के स्वीकार करने में ही है। इसलिए वही पवित्र लोग हैं जो सत्य को स्वीकार करने के लिए विनम्रतापूर्वक झुक जाते हैं और जो लोग हमसे ईर्ष्या-द्वेष रखते हैं वे सत्य को स्वीकार नहीं करते, हालाँकि इसमें कुछ दिक़्क़त नहीं। बल्कि वे अपने दिलों में खूब अच्छी तरह जानते हैं कि वह (अर्थात् क़ुरआन मजीद-अनुवादक) खुला-खुला सत्य है। और जब उनको कहा जाता है कि सच तो स्पष्ट हो गया है अब तुम इसको स्वीकार करो और उन अर्थों को अपनाओ जिनका सही होना सिद्ध हो गया है तो कहते हैं कि क्या हम ऐसी बातों को मान लें जो हमारे पुर्खों की बातों के उलट हैं? चाहे उनके पुर्खे ग़लती पर ही क्यों न हों? हम देखते हैं कि यह लोग दबाए गए हैं और इनके दिलों पर संकीर्ण विचारधाराओं की बर्फ़ के गोले बड़ी अधिकता और तेज़ी से गिरे और इनके

★ **हाशिया:**- यदि नुज़ूले ईसा से तात्पर्य वस्तुत: स्वयं उसी ईसा का ही आना अभिप्राय होता तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह कहते कि वह अवश्य वापिस आएगा, न कि यह कि वह उतरेगा। क्योंकि जाने के बाद जो आदमी आए उसको रुजूअ अर्थात् वापिस आना कहते हैं न कि उतरना। -इसी से सम्बन्धित

दिलों से उठने वाली सच्चाई को दबा लिया और इसके बाद इन पर ईर्ष्या-द्वेष के पत्थर पड़े। जिससे उसके नीचे इनकी सलाहियतें (योग्यताएं) ऐसे पीसी गईं जैसे कि लोहा लोहार के हथौड़े के नीचे पीसा जाता है या रुई धुनिये की धानुकी के नीचे धुनी जाती है। उन पर और उनकी बुद्धि पर आश्चर्य होता है कि वे अपनी आँखों से देखते हैं कि उनकी झूठी और भ्रामक बातें इस्लाम को अत्यन्त नुकसान पहुँचा रही हैं और लोग उनकी बातों को सुनकर दीन-ए-इस्लाम को छोड़ते जा रहे हैं और ईसाई हो रहे हैं। क्योंकि वे मसीह की अनोखी पवित्रता, उसका अब तक ज़िन्दा रहना, पैदा करने और ज़िन्दा करने में उसके पूर्ण समर्थ होने इत्यादि के क़िस्से इस अतिशयोक्ति से सुनते हैं कि जिसका उदाहरण दूसरे नबियों में नहीं पाया जाता और यह मौलवी लोग इन तमाम् बुराइयों को देख रहे हैं फिर भी नहीं जागते और इनके कलेजे नहीं डरते और दिल नहीं पिघलते और इनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत पर कुछ भी रहम नहीं आता। हमें उनकी इस हालत पर रोना आता है और फूट-फूटकर रोते हैं लेकिन कोई हमारी चीख़ व पुकार को नहीं सुनता, बल्कि वे ग़ुस्से में आकर हमें काफ़िर-काफ़िर कहते हैं।

इस्लाम की इस दयनीय परिस्थिति के दिनों में हमारी मिसाल उस मुसाफ़िर की तरह है जो अंधेरी रात में जंगल में भटकता फिरता है या भड़कती हुई आग में फ़रियाद कर रहा है। अत: ख़ुदा तआला के सिवा हम अपनी क़ौम में कोई फ़रियाद सुनने वाला नहीं पाते और हम इन लोगों से अत्यन्त निराश हो गए। मानो ये मुर्दे हो गए। हमने बहुत कहा मगर इन्होंने नहीं सुना। हमने बहुत खौफ़ दिलाकर जगाया पर वे न जागे। हमने बार-बार विनम्रता की, लेकिन वे न माने। अन्तत: हमने कहा, हमसे अलग हो जाओ और दूर हो जाओ ख़ुदा को तुम्हारी कोई परवाह नहीं। वह ऐसे लोग ले आएगा जो उसके दीन के मददगार होंगे और सच्चों से प्यार करेंगे।

सारांश यह है कि जब मैंने इस देश के अधिकतर मौलवियों में यह बीमारियाँ और यह विषैली बातें देखीं जो उनके ख़ून में रच-बस चुकी थीं और मैंने उनको अल्लाह की किताब (अर्थात् क़ुरआन-अनुवादक) और उसके रसूल से लापरवाह पाया, बल्कि मैंने देखा कि वे तो और ही राग अलाप रहे हैं और उनमें से हर एक

राग अलापने वाला अपने झूठे अक़ीदों को अलापने में व्यस्त है और हर एक अपनी स्वार्थपरायणता और सांसारिक वासनाओं में लिप्त है और उन्हीं में ख़ुश है। वे न तो उसको छोड़ते हैं और न पछताते हैं बल्कि मैं देखता हूँ कि वे अपने झूठे अक़ीदों पर हठ और गर्व करते हैं और ख़ुश होकर तालियाँ बजाते हैं और बड़ी दिलेरी से मोमिनों को काफ़िर ठहरा रहे हैं। मानो वे ख़ुदा तआला की पूछ-ताछ और हिसा-किताब से बेपरवाह हैं। मानो ख़ुदा उनसे कुछ नहीं पूछेगा और न यह कहेगा कि तुम क्यों ऐसी बात के पीछे पड़े रहे जिसका तुम्हें ठोस और पक्का ज्ञान नहीं था और मानो उस दिन उनके दिलों के इरादे उन पर नहीं खोलेगा। ऐसा कदापि नहीं, बल्कि उनसे पूछ-ताछ की जाएगी।

मैंने देखा कि फ़ित्ने (बिगाड़) उन्हीं तक सीमित नहीं रहे बल्कि जनसाधारण भी उनकी आवाज़ पर एकत्र हो गए और उनकी नीरस और बनावटी बातों पर मन्त्रमुग्ध हो गए। इसलिए जनसाधारण हम पर भड़क उठे और झूठा इल्ज़ाम लगाने वालों के उकसाने से उनका ख़ून खौल उठा और उन्होंने उनको आलिम, दियानतदार (ईमानदार) और सच्चा समझ लिया। अत: जब हिन्दुस्तान में ऐसा तूफ़ान आया कि सारी ज़मीन हिल गई और उलेमा में मैंने संकीर्णता और जलन पाई तो मैंने अपने दिल में ठान लिया कि इन लोगों से मुँह फेर लूँ और मक्का की ओर जाऊँ और अरब के नेक और मक्का के चुनिन्दा लोगों की ओर ध्यान दूँ जो स्वतन्त्र प्रकृति की मिट्टी से पैदा किए गए और पात्रता की विशिष्टता में दूसरों से आगे बढ़ गए हैं। अत: इस इच्छा के पैदा होने के समय अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह डाला कि मैं खुली-खुली अरबी भाषा में कुछ किताबें लिखूँ। इसलिए मैंने ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम और उसके दिए हुए सामर्थ्य से एक किताब लिखी जिसका नाम "तब्लीग़" है। फिर दूसरी लिखी जिसका नाम "तोहफ़:" है फिर तीसरी लिखी जिसका नाम करामातुस्सादिक़ीन है। फिर चौथी लिखी जिसका नाम "हमामतुल बुश्रा" है और हमामतुल बुश्रा में उन लोगों के लिए ख़ुशख़बरियाँ हैं जो सत्य के अभिलाषी हैं और हर एक उस विषय की व्याख्या भी है जिसको हम पहली पुस्तकों में बयान कर चुके हैं और जो कुछ पहली किताबों से भिन्न-भिन्न रूप से लाभप्रद ज्ञान की वर्षा होती है उसे यह किताब

हमामतुल बुश्रा भूखों के लिए एक ही जगह पर प्रस्तुत कर देती है और इसका दूसरी किताबों से ऐसा ही सम्बन्ध है जैसा कि वृक्ष का अपने फल से। ख़ुदा की महानता और उपकार है कि यह किताब विस्तृत और श्रेयस्कर है और इन पुस्तकों की क़ीमत का हाल यह है कि यह किताबें हिजाज़, शाम (सीरिया) इराक़, मिस्र और अफ़्रीक़ा वालों के लिए तो मुफ़्त उपहार के रूप में हैं और इसी तरह हर एक उसके लिए भी हैं जो न्यायप्रिय आलिम और निर्धन हो और दूसरों को यह किताबें क़ीमत पर मिलेंगी। अत: यदि वे ख़रीदना चाहें तो उन पर अनिवार्य होगा कि हमामतुल बुश्रा के लिए एक रुपया, करामातुस्सादिक़ीन के लिए एक रुपया और तब्लीग़ के लिए आठ आना और तोहफ़: के लिए दो आना क़ीमत भेजें। इच्छुकों का ध्यान रखते हुए हमने तोहफ़: की क़ीमत में उनके लिए एक आना की कमी कर दी है।

मैंने इन किताबों को केवल अरब के लोगों के लिए लिखा है। मेरी बड़ी इच्छा यही थी कि उन पवित्र स्थानों और शहरों में मेरी पुस्तकें फैल जाएँ। फिर मैंने देखा कि उन देशों में किताबों का फैलना, फैलाने वाले व्यक्ति के लिए एक शाख़ की भाँति है। और मैंने समझा कि इस दशा के अतिरिक्त कि ख़ुदा तआला अपनी ओर से मेरे लिए उनमें और उनके भाइयों में से कोई मददगार नियुक्त करे, मेरी किताबों का सुलहा-ए-अरब में छपना और फैलना असम्भव है। फिर मैं इस चाहत के पूरा होने हेतु दुआ के लिए हाथ उठाता और गिड़गिड़ाकर दुआ करता कि मेरी यह मुराद पूरी हो। यहाँ तक कि मेरी दुआ क़ुबूल हुई और मेरी मुराद मुझे दी गई और ख़ुदा का फ़ज़्ल मेरी ओर अरब के विद्वानों और सदाचारियों में से एक ऐसे आदमी को खींच लाया जो विद्वान और विवेकी होने के साथ-साथ लगाव भी रखता था। मैंने उसको कुलीन, शिष्ट, सद्प्रवृत्त, बुद्धिमान और परहेज़गार पाया। अत: मैं उसकी मुलाक़ात से जो मेरी इच्छा थी ख़ुश हुआ और मैंने उसे अपनी दुआ का पहला फल समझा और भविष्य में आने वाली भलाई और सुरक्षित रखने वाले वरदान के लिए मैंने उसको एक नेक शकुन समझा और ख़ुश हुआ और उस दिन मैं उन लोगों में से हो गया जो बहुत ख़ुश होते हैं। तब मैंने अपने आपको सौभाग्यशाली समझा और ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया और कहा कि हे समस्त लोकों के प्रतिपालक! तेरा शुक्र है।

इस संक्षिप्त वर्णन की व्याख्या यह है कि मुल्क शाम से एक ख़ूबसूरत सदाचारी युवक मेरे पास आया अर्थात् तराबलस से और युक्तिवान और सर्वज्ञ ख़ुदा उसको मेरी ओर ख़ींच लाया। और वह लगभग सात महीने तक मेरे पास रहा अर्थात् उस समय तक मेरे पास रहा कि मैंने गहराई से उसको देखा और उसको नेक और बुद्धिमान पाया और उसके चेहरे पर सलाहियत (योग्यता) की चमक पाई और सदाचारियों के लक्षण देखे। फिर मैंने उसकी करनी और कथनी पर ग़ौर किया और उसके अन्दर और बाहर की हालत को उस ज्ञान और इल्हाम की दृष्टि से जो मुझे दिया गया है ध्यानपूर्वक जाँचा, तो मैंने पाया कि वह वस्तुतः सत्प्रवृत्त, सदाचारी, सुशील और भलामानुष आदमी है जिसने तामसिक इच्छाओं को ठोकर मार दी और उनको छोड़कर एक इबादतगुज़ार इन्सान बन गया। फिर ख़ुदा ने उसको कुछ समय मुझे पहचानने का दिया तो वह बैअत करके मेरे अनुयायियों में दाख़िल हो गया। फिर ख़ुदा तआला ने हमारे अध्यात्मज्ञानों का एक आश्चर्यजनक द्वार उस पर खोल दिया और उसने एक किताब लिखी। जिसका नाम उसने "ईक़ाज़ुन्नास" रखा और वह किताब उसके विस्तृत ज्ञान पर एक स्पष्ट प्रमाण है और उसकी सच्ची राय पर एक रौशन तर्क है और वह किताब हर एक मुबाहसा करने वाले के लिए हर एक मैदान में पर्याप्त है। जब उसने उस किताब को संकलित करना प्रारम्भ किया तो हदीस और तफ़्सीर की बहुत सी किताबें एकत्र कीं और हर एक विषय पर घोर चिन्तन किया। इसलिए यह किताब उसके चिन्तन-मनन और गूढ़ ज्ञानों का एक दूध और नूर है। ब्रह्मज्ञानी की पहचान उसकी अध्यात्म की बातें ही होती हैं। जब मैंने उसकी किताब को पढ़ा और उसके अध्यायों के एक-एक पन्ने पलटे और उसका पर्दा उठाया तो मैंने उसके बयान को मनोहर पाया और उसकी श्रेष्ठता की प्रशंसा की। मैंने उसमें कोई ऐसी बात नहीं पाई जो उसकी श्रेष्ठता में दाग़ लगाए। मैं दुआ करता हूँ कि ख़ुदा उसकी किताब को मेरी किताबों के साथ फैलाए और उसे ख्याति दे और उसमें अपनी ओर से एक आकर्षण भर दे और बहुत से लोगों के दिल ऐसे बना दे जो उसकी ओर झुक जाएँ और उसके लेखक को लोक-परलोक में प्रतिफल दे और उसके उद्देश्यों को कल्याणकारी बनाए और उसको अपने प्रिय भक्तों में

सम्मिलित करे। फिर जब वह अपनी किताब संकलित कर चुका तो उसकी निष्ठा ने उसको इस बात पर तत्पर किया कि हमारी आध्यात्म की बातों को अपने वतन के उलेमा तक पहुँचावे और हमारी बातें उनमें फैलावे और उद्घोषक बनकर हर ओर घोषणा करे और किताबों को प्रचारित-प्रसारित करे ताकि उन इलाक़ों में रहने वालों पर सच्चाई खुल जाय और यह वही इच्छा है जिसके लिए हम रात-दिन दुआएँ करते थे। मैं देखता हूँ कि यह आदमी अपनी बात और वादे में सच्चा है और व्यर्थ बातों से बचता है और ज़ुबान को हर एक मैदान में बेलगाम नहीं छोड़ता। ख़ुदा तआला ने हमारी मुहब्बत उसके दिल में डाल दी है। इसलिए वह हमसे मुहब्बत करता है और हम उससे। जो कुछ उसने कहा और वादा किया मुझे विश्वास है कि वह इसके योग्य है और जैसा वादा किया वैसा ही करेगा। मैं आशा करता हूँ कि ख़ुदा उसको हमारे बीज के उगने और हरे-भरे होने का कारण बनाए और हमारा दूध (अर्थात् शिक्षा) उसके माध्यम से रुचिकर हो जाय और ख़ुदा सब कारकों से श्रेष्ठतम् कारक है और मैंने देखा कि यह व्यक्ति साधक और सहनशील है शिकवा-शिकायत और रोना-धोना इसकी प्रकृति में नहीं। मैंने अधिकतर देखा है कि यह व्यक्ति खाने-पीने और पहनने की थोड़ी सी चीज़ों को ही पर्याप्त समझता है। यदि रज़ाई न हो तो उसको माँगता नहीं बल्कि धूप में बैठकर और आग सेंक कर गुज़ारा कर लेता है और कष्ट उठाने के बावजूद भी नहीं माँगता। मैंने इसमें विनम्रता, गम्भीरता, पश्चाताप और संवेदना के लक्षण पाए। शेष ख़ुदा अधिक जानता है और वही उसका हिसाब-किताब लेने वाला है। मैंने जो देखा वही कहा। ख़ुदा की रहमत पर आश्चर्य मत करो कि वह इस व्यक्ति की कोशिश से उन रोकों को दूर कर दे जो अचानक हमारे बीच में आ पड़ी हैं। ख़ुदा जो चाहता है करता है। जिस बात को वह करना चाहे तो कोई उसे रोक नहीं सकता और जो कुछ वह देना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता। वह अपने धर्म का रक्षक है और जो लोग उसके धर्म की सहायता करते हैं वह उनकी सहायता करता है।

हे भाइयो! तुम्हें यह भी ज्ञात रहे कि अरब में हमारी किताबों को प्रसारित करने और उनके श्रेष्ठतम् अर्थ अरब लोगों तक पहुँचाने का काम कोई आसान काम नहीं, बल्कि यह एक बहुत बड़ा काम है और इसको वही पूरा कर सकता है

जो इसके योग्य हो। क्योंकि यह गूढ़ विषय जिनके कारण हम काफ़िर ठहराए गए और झुठलाए गए कुछ सन्देह नहीं कि वे अरब के उलेमा को भी ऐसे कष्टदायक लगें जैसा कि इस देश (अर्थात् हिन्दुस्तान-अनुवादक) के मौलवियों को लग रहे हैं। विशेषकर यह अरब के गँवारों को तो बहुत ही नापसन्द होंगे, क्योंकि वे गूढ़ विषयों से अनभिज्ञ हैं और जैसा उनका सोच-विचार और ग़ौर करने का हक़ है वे गहराई से सोच-विचार नहीं करते। उनकी नज़रें सतही (सरसरी) और दिल जल्दबाज़ हैं। लेकिन उनमें थोड़े ऐसे भी हैं जिनकी प्रकृति को ख़ुदा तआला ने रौशन कर दिया है और ऐसे लोग बहुत कम पाए जाते हैं।

अत: इन बाधाओं के कारण जो तुम सुन चुके हो धार्मिक मस्लहत ने यह आवश्यक समझा कि इस काम के लिए हम उपरोक्त विद्वान को नियुक्त करें जिसका नाम मुहम्मद सईदी अन्निशारुल हमीदी शामी है।★ और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उसका अस्तित्व इस महान कार्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है और उसका हमारे पास आना ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल में से है और वह नेक दिल और बहुत अच्छा आदमी है और इसकी घोर आवश्यकता भी है। शायद ख़ुदा उसके हाथ से हमारा काम आसान कर दे और वह इस माध्यम से अपने वतन पहुँच जाय और सफर के घोर कष्टों से बच जाय और वतन एवं दोस्तों की जुदाई से भी मुक्ति पाए और तुम्हें इसका ख़ुदा तआला की ओर से फल मिले। मैंने यह बातें केवल अल्लाह के लिए कही हैं और मैं केवल ईमानदारी से नसीहत करने वाला हूँ। जो लोग यह गुमान करते हैं कि अरब के लोग क़ुबूल नहीं करेंगे और न ही सुनेंगे, उनकी इस नादानी का हमारे पास इसके अतिरिक्त और कोई उत्तर नहीं कि हम उनके इस विचार को अनदेखा और अनसुना करें और उनकी इस समझ पर रोएँ। क्या वे यह नहीं जानते कि अरब के लोग सत्य के स्वीकार करने में प्राचीनकाल से हमेशा सबसे आगे बढ़ने वालों में से रहे हैं। बल्कि वे इस बात में जड़ के समान हैं और दूसरे उनकी टहनियाँ हैं। हम पुन: कहते हैं कि हमारा यह काम

★**हाशिया:-** उसका वतन तराबलस है जो मुल्क शाम (सीरिया) में है। जिसे अंग्रेज़ी शब्दकोश में ट्रिपोली कहा जाता है। यह एक बड़ा शहर है जो भूमध्य सागर के तट पर स्थित है और इसके और बेरूत के मध्य तीस कोस की दूरी है। -इसी से सम्बन्धित

ख़ुदा तआला की ओर से एक रहमत है और अरब के लोग प्रथमत: उसकी रहमत को स्वीकार करने के सबसे निकट और सबसे बड़े पात्र हैं और मुझे ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल की ख़ुशबू आ रही है। इसलिए तुम नाउम्मीदी (निराशा) की बातें मत करो और नाउम्मीदों (निराशों) में से मत बनो और कुधारणाओं में मत पड़ो। क्योंकि कुछ धारणाएँ गुनाह बन जाती हैं। इसलिए तुम ऐसी कुधारणाएँ मत रखो जिनसे कुधारणाएँ रखने वाले इन्सान के ईमान की जड़ें हिल जाती हैं और अच्छी नीयत डगमगाने लगती है और पैशाचिक विचार बढ़ते हैं। ख़ुदा पर विश्वास करो और कोई नेकी कर लो जो कर सकते हो और अपने भाई के लिए कुछ यात्रा की सामाग्री हेतु सहायता करो जो उसकी जल और थल की यात्रा के लिए पर्याप्त हो। ख़ुदा तुम्हारे साथ हो और तुम्हें सामर्थ्य दे और वह सबसे उत्तम सामर्थ्य देने वाला है।

अत: हम धनाढ्य मित्रों की निष्ठा से आशा रखते हैं कि इस काम के प्रबन्ध की ओर पूरे दिल और पूरी हिम्मत से ध्यान देंगे। हमें कोई आवश्यकता नहीं कि हम अपनी बात में बढ़ा-चढ़ाकर कहें और बनावटी बयानों से अपने दोस्तों और निष्ठावानों को प्रेरित करें। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे सद्भावक मित्रों के लिए संकेत ही पर्याप्त होगा, नि:स्वार्थ काम करना उनकी आदत है। इसलिए चाहिए कि उनमें से हर एक अल्लाह की दी हुई सामर्थ्य के अनुसार दे और इस बात पर शर्म न करे कि वह थोड़ा देता है और यह जान ले कि मुख्य उद्देश्य देना है चाहे एक पैसा ही हो या उसका चौथाई भाग या खजूर की गुठली की झिल्ली से भी कम हो। जो मध्यम वर्ग का हो उसे चाहिए कि वह अपनी हैसियत के अनुसार दे। यह काम केवल अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिए है। जो आदमी थोड़ी सी भी नेकी करेगा वह उसका फल पाएगा और ख़ुदा उसकी धन-सम्पदा और घर-परिवार को बढ़ाएगा और जो कुछ तुम ख़ुदा की राह में ख़र्च करोगे वह लोक-परलोक में तुम्हारी ओर लौटकर वापिस आएगा और तुम नुकसान नहीं उठाओगे। इसलिए यदि तुम एक दाना दोगे तो तुम्हारे लिए एक खेती होगी, यदि एक बूँद दोगे तो तुम्हारे लिए ख़ुदा की कृपा का एक सागर होगा। ख़ुदा उपकार करने वालों का फल कभी नष्ट नहीं करता। क्या तुम गुमान करते हो कि यूँ ही बख़्शा दिए जाओ और ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो जाय, जबकि अभी उसने

तुमको अपनी प्रसन्नता की राहों पर चलता हुआ न पाया हो और तुम उसकी दृष्टि में आज्ञापालक और निष्ठावान न ठहरे हो। हे लोगो! ख़ुदा से डरो और उन लोगों की तरह हो जाओ जो ख़ुदा को अपनी इच्छाओं पर प्राथमिकता देते हैं और नि:सन्देह जान लो कि ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है। तुम्हारी धन-सम्पदा और तुम्हारी सन्तान परीक्षा हैं। ख़ुदा देखता है कि तुम उससे प्रेम करते हो या दूसरी चीज़ों से। वह समय आता है कि तुम इन आनन्दों से दूर कर दिए जाओगे और लोगों के यह गिरोह बाक़ी न रहेंगे और न इनके देखने वाले। फिर तुम ख़ुदा तआला के सामने हाज़िर किए जाओगे और तुमसे तुम्हारे कामों के बारे में पूछा जाएगा और यह भी पूछा जाएगा कि तुमने उसकी राहों में क्या-क्या कोशिशें की हैं। इसलिए उठो हे लोगो! उठो समय गुज़रता जाता है, जल्द उठो और आलसी लोगों के साथ मत बैठो। जो अपने ऊपर हक़ वाजिब नहीं ठहराता, हम ऐसे व्यक्ति पर कोई हक़ वाजिब नहीं ठहराते। अल्लाह किसी पर उसके सामर्थ्य से बढ़कर बोझ नहीं डालता और मैं बोझ डालने वालों में से नहीं हूँ। मैं केवल ऐसे व्यक्ति से कहता हूँ जो मुझसे सच्चा प्रेम करता है और मैं उसको छोड़ता हूँ जिसको संकीर्ण सोच ने नेक काम करने से रोक दिया और वह संकीर्ण विचार वालों के साथ मिल गया। वह ठुकरा दिया गया और शर्मिन्दा होने वालों में से हो गया।

चाहिए कि भेजने वाले भेजने में जल्दी करें क्योंकि समय कम है और प्रिय मेहमान यात्रा के लिए तैयार हैं और हम पर अनिवार्य ठहर चुका है कि जो सुस्ती या लापरवाही में पड़े हैं उनको शीघ्र आगाह करें। इसके बाद कि मैंने इस बात की आवश्यकता बयान कर दी है अब उचित नहीं कि तुम सुस्ती करके बैठे रहो। इसलिए तुम मदद के लिए आगे क़दम बढ़ाओ और पीछे मत हटो और हाथों को झाड़ो ताकि तुम्हें उसका फल दिया जाय और ख़ुदा की राह में एक-दूसरे से आगे बढ़ो और चाहिए कि भेजने वाला जो कुछ रुपया या पैसा भेजना हो वह इसी जगह क़ादियान में भेजे और अपने पत्र में लिख दे कि यह रुपया उसके लिए भेजा गया है, बल्कि अच्छा तो यह है कि उसी के नाम से सीधे भेजे ताकि जो कुछ आवे वह सब उसी के पास जमा होता रहे ताकि उससे उसका दिल संतुष्ट हो और ख़ुदा के लिए किए जाने वाले सब कामों में से जो इस समय ख़ुदा तआला की प्रसन्नता पाने के लिए

किए जाते हैं, इस्लाम की बातों की बुलन्दी चाहना उनसे अधिक पुण्य का कारण है। इसलिए अपने समय को बर्बाद न करो और सेवकों की भाँति उठ खड़े हो।

हे मुसलमानो! ख़ुदा की ओर दौड़ो और उन फ़ित्नों से बचो जो तुम में और तुम्हारे इर्द-गिर्द हिलोरें मार रहे हैं और वे काम करो जिससे ख़ुदा राज़ी हो जाए, ताकि तुम्हें उसके निकट प्यार और प्रतिष्ठा मिले और चाहिए कि तुम्हारे धर्म के लिए तुम्हारे दिल में कुछ सहानुभूति (दर्द) पैदा हो। क्योंकि वह कमज़ोर हो गया है और उसके कानों के बाल सफेद दिखाई देने लगे हैं और यह बुढ़ापा असहज और अप्राकृतिक है जो इस पर लगातार आने वाली आँधियों और मुसीबतों के कारण दिखाई दे रहा है। चाहिए कि हर एक आदमी अपने कर्म को देखे और अपने दिल की बातों को टटोले और अपनी उस पूँजी को तौले जो उसने आख़िरत (परलोक) के लिए तैयार की है और अपने उस माल को खरा करे जो उसने उस सफर के लिए तैयार किया है कि क्या वह वज़न में पूरा और खरा है? या खोटा और कम वज़न का है चाहिए कि वह अपने आपको धोखा न दे और ख़तरे में न डाले, और चाहिए कि समय से पहले अपनी ग़लती सुधारे और ग़ाफ़िलों की तरह न बैठा रहे।

हे लोगो! अपने विचारों को शुद्ध करो और अपने दिलों को साफ़ करो और नश्वर दुनिया और उसकी चमक-दमक पर ख़ुश न हो और उस पर कुत्तों की तरह मत पड़ो। चाहिए कि तुम्हारा अन्त इस हालत में हो कि तुम पूर्णत: ख़ुदा के आज्ञापालक हो, और लोगों की धुत्कार से मत डरो क्योंकि वह सहज और आसान है बल्कि उस ख़ुदा की धुत्कार से डरो जो मुँहों को काला कर देती है और अपमान के गर्त में गिरा देती है। यही हमारी नसीहत है जिसकी हमने तुम्हें वसीयत की है। इसलिए तुम इस नसीहत को याद रखो और गवाह रहो कि हमने तुम्हें नसीहत पहुँचा दी है और ख़ुदा सब गवाहों से श्रेष्ठ गवाह है, और आख़िरी सन्देश हमारा यही है कि सारी प्रशंसाएँ उस ख़ुदा के लिए हैं जो समस्त लोकों का पालनहार है।

★★★

अभिज्ञापन

हम आशा करते हैं कि ब्रिटिश सरकार अपनी महान दया के कारण इस अभिज्ञापन की ओर ध्यान देगी और उस सर्पस्वभाव को सज़ा का पात्र ठहराएगी जो उसके शुभचिन्तकों को डसता है और साँपों की तरह ज़बान लपलपाता है।

हे महारानी विक्टोरिया! ख़ुदा तुझको मुसीबतों से बचाए रखे और हर एक नेक इरादे में उसकी कृपा तेरे साथ हो और भयानक विपत्तियों और दुर्घटनाओं से तुझे बचाए। हम फ़रियादी बनकर तेरे पास आए हैं, क्योंकि हम एक व्यक्ति की ज़ुबान और उसकी दु:खद बातों से सताए गए हैं। हमने सुना है कि तू अच्छे शिष्टाचारों से विभूषित है और अपने न्याय में उन बातों से रहित है जिनसे शिष्टाचार कलंकित होते हैं और दया एवं सहानुभूति को तूने अपनी एक स्वाभाविक विशेषता ठहरा लिया है और अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करती।

यह तेरा शिष्टाचार है और हम तेरी मदद की छत्रछाया के बावजूद कई दुश्मनों के डंक से डसे जाते हैं और उनके दाँतों से काटे जाते हैं और हर एक ऐसा आदमी हम पर हमला करता है जिसके बाप-दादों को कोई नहीं जानता और हर एक नीच मूर्ख हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान कर रहा है और कोशिश करता है कि हम बाग़ियों में से गिने जाएँ।

यदि इस संक्षेप का विवरण चाहो तो हे महारानी तेरा प्रताप बढ़े और ख़ुदा तेरी दुनिया में बरकत दे और तेरा अन्त भी शुभ करे। आपको विदित हो कि इस्लाम को छोड़कर ईसाई हो जाने वालों में से एक व्यक्ति जो अपने आपको पादरी इमादुद्दीन कहता है, जनसाधारण को धोखा देने के लिए इन दिनों एक किताब लिखी है जिसका नाम "तौज़ीनुल अक़्वाल" है और उसमें पूर्णत: झूठे तौर पर मेरे कुछ हालात लिखे हैं और लिखा गया है कि यह व्यक्ति अराजक और सरकार का दुश्मन है और मुझे उसके चाल-चलन में बग़ावत की निशानियाँ दिखाई देती हैं और मुझे विश्वास है कि

वह अमुक-अमुक काम करेगा और वह विरोधियों में से है।

अत: सार यह है कि उस व्यक्ति ने अधिकारियों को मुझे सताने के लिए भड़काया और इसके साथ-साथ मुझे गालियाँ देने और अपमान करने में इतना आगे बढ़ गया कि जो कुछ उसके अन्दर था सब बाहर आ गया और मेरे मित्रों को गन्दी-गन्दी गालियाँ दीं और हमारे पवित्र धर्म के बारे में बहुत कुछ अपशब्द कहे और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ दीं और अपमान करने में हद से बढ़ गया और ऐसी बातें कहीं जिनसे दिल काँप उठते हैं और बेचैनियाँ हद से बढ़ जाती हैं। शीघ्र ही हम उनमें से थोड़ा सा लिखेंगे और उन मूर्खों की पोल खोलेंगे।

अब हम महान सरकार को उन बातों की मूल वास्तविकता से अवगत कराते हैं जो हम पर उसने झूठे और मनगढ़त आरोप लगाए हैं और सोचा है कि मानो हम ब्रिटिश सरकार के दुश्मन हैं। अत: गवर्नमेन्ट को ज्ञात हो कि यह सारी बातें ख़ूबसूरत झूठ और षड़यन्त्र के धागों से बुनी हुई हैं और लेशमात्र भी इनमें सच्चाई का अंश नहीं। इन बातों पर उसको केवल उसके कुछ स्वार्थों ने आमादा किया है जो उसने इन षड़यन्त्रों के अन्दर देखे हैं और उसका एक उद्देश्य यह भी है कि वह इसके द्वारा अपने बड़े पादरियों को ख़ुश करे। ख़ुदा का शुक्र है कि उसकी मनगढ़त बातें एक ऐसी चीज़ हैं कि जिसकी वास्तविकता इस सरकार से छिपी नहीं और हम उसकी शरारत से बचे हुए हैं और अपनी चमकदार सेवाओं को उसकी बातों के खण्डन के लिए ऐसा पाते हैं जैसा कि शैतानों को भगाने के लिए आसमान से गिरने वाले भड़कते हुए शोले। अधिकारियों से मेरा रंग-ढंग और चाल-चलन छुपा नहीं और मैं उनसे छुप-छुपकर नहीं चलता, बल्कि ब्रिटिश सरकार मुझे और मेरे बाप-दादों को अच्छी तरह जानती है और मेरे मार्ग और मंशा को देख रही है और मेरी जड़ और स्रोत को जानती है और मेरे ख़ानदान से अनभिज्ञ नहीं और जानती है कि हम उपद्रवियों, दुश्मनों, बाग़ियों और अवज्ञाकारियों में से नहीं। मैं अभी किसी गुफ़ा से नहीं निकला कि सरकार मुझसे अनभिज्ञ हो। बल्कि यह सरकार हमारे जैसे शुभचिन्तकों पर गर्व करती है और जो व्यक्ति हमारी बातों को ध्यानपूर्वक देखेगा और हमारे कामों पर एक गहरी नज़र डालेगा तो उस पर हमारे काम छुपे नहीं रहेंगे। हम सच्चे हैं और

यह सरकार हमारी गहराई तक गोता मार रही है और उससे हमारे काम छुपे नहीं और इस सरकार की सोच-विचार की शक्तियाँ इतनी तेज़ हैं कि कोई तेज़ रफ़्तार और ताक़तवर ऊँटनी उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती। जिस समय सरकार अपने विचारों को अपनी मंशा और चाहतों की धरती पर दौड़ाती है तो वे विचार धरती को चीरते हुए चले जाते हैं। धार्मिक समझ के अतिरिक्त हर एक बात की समझ इस सरकार को है और हम आशा करते हैं कि यह द्वार भी इस पर खुल जाय, अल्लाह सब दया करने वालों से बढ़कर दयावान् है।

गवर्नमेन्ट से यह बात छुपी नहीं कि हम प्रारम्भ से ही उसके सेवक और उसके सदुपदेशक और शुभचिन्तकों में से हैं और हर एक अवसर पर हार्दिक दृढ़ता से उसके पास हाज़िर होते रहे हैं और मेरा पिता गवर्नमेन्ट के निकट प्रतिष्ठित और प्रशंसनीय था और इस सरकार में हमारी सेवाएँ ज्वलन्त और सुस्पष्ट हैं। मैं सोच नहीं सकता कि यह गवर्नमेन्ट कभी उन सेवाओं को भुला देगी और मेरा पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तुज़ा पुत्र मिर्ज़ा अता मुहम्मद प्रमुख क़ादियान इस सरकार के शुभचिन्तकों और सद्भावकों में से था और इसके निकट प्रतिष्ठित और निकटतम् लोगों में से था और बड़े-बड़े सभापतियों में प्रतिष्ठित था और यह सरकार उसे अच्छी तरह जानती थी और हम पर कभी कोई बद्गुमानी नहीं हुई, बल्कि हमारी निष्ठा तमाम् लोगों के सामने सिद्ध हो गयी और अधिकारियों पर स्पष्ट हो गया। अंग्रेज़ी सरकार अपने उन पदाधिकारियों से पूछ ले जो हमारी ओर आए और हमारे बीच रहे और हमने उनकी आँखों के सामने किस तरह जीवन गुज़ारा और किस तरह हम हर इक सेवा में आगे बढ़ने वालों के दल में रहे।

इन वास्तविकताओं को विस्तारपूर्वक बयान करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि ब्रिटिश सरकार हमारी निष्ठाओं और विभिन्न प्रकार की सेवाओं के बारे में ख़ूब जानती है और उन सहायताओं के बारे में भी जानती है जो समय-समय पर हम से प्रकट हुईं, विशेषकर दिल्ली में ग़दर के समय। इसके अतिरिक्त इस सरकार को यह भी ज्ञात है कि मेरे पिता ने कैसे इस सरकार की ऐसे समय में सहायता की कि जब लड़ाइयों की एक भयानक आँधी चल रही थी और दंगे भड़क रहे थे और

हद से बढ़ गए थे तो मेरे पिता ने उस उपद्रव के समय 50 घोड़े सवार सहित इस सरकार को सहायता के रूप में दिए और अपनी क्षमता की दृष्टि से सहायता में सबसे आगे बढ़ गया। जबकि वह ज़माना हमारी मुसीबत और तंगी का था और ख़ानदानी जागीरदारी का दौर ख़त्म होकर मुसीबत और तंगी के दिन आ गए थे। जो साफ़दिल और ईमानदार है उसे चाहिए कि सोचे।

मेरा बाप हमेशा इसी तरह सेवाएँ करता रहा यहाँ तक कि बूढ़ा होकर देहान्त पा गया। यदि हम उसकी सारी सेवाएँ लिखना चाहें तो इस जगह समा न सकें और हम लिखते-लिखते थक जाएँ। अत: सार यह है कि मेरा पिता ब्रिटिश सरकार के उपकारों का हमेशा उम्मीदवार रहा और आवश्यकता पड़ने पर सेवाएँ भी करता रहा। यहाँ तक कि ब्रिटिश सरकार ने अपनी प्रसन्नता के पत्रों से उसको सम्मानित किया और हर एक समय उसको अपने उपहारों से विशिष्ट किया और उसके साथ सहानुभूति की और उसका लिहाज़ रखा और उसको अपने शुभचिन्तकों और सद्भावकों में से समझा। फिर जब मेरे पिता का देहान्त हो गया तब इन विशेषताओं में उसका क़ायममुक़ाम (स्थानापन्न) मेरा भाई हुआ। जिसका नाम मिर्ज़ा गुलाम क़ादिर था और ब्रिटिश सरकार ने उसी तरह उसके साथ भी उपकार किए जिस तरह मेरे पिता के साथ किए थे। पिता के बाद कुछ वर्षों के पश्चात् जब मेरे भाई का भी देहान्त हो गया तो उन दोनों के बाद मैं उनके पगचिन्हों पर चला और उनकी परम्पराओं को अपनाया और उनके समय को याद किया। लेकिन मेरे पास धन-दौलत और जागीर नहीं थी बल्कि मैं उनके देहान्त के पश्चात् महान प्रतापी ख़ुदा की ओर झुक गया और उन लोगों में जा मिला जिन्होंने सांसारिक मोह-माया को त्याग दिया। फिर मेरे रब्ब ने मुझे अपनी ओर खींच लिया और मुझे अत्युत्तम स्थान प्रदान किया और मुझे अपनी नेमतों से भर दिया और मुझे सांसारिक मोह-माया से निकालकर अपनी पाक जन्नत में ले आया और उसी ने मुझे दिया जो दिया और उसने मुझे मुल्हमों और मुहद्दसों (अर्थात् ख़ुदा से संवाद पाने वालों) में से बना दिया। अत: मेरे पास सांसारिक धन-दौलत और सांसारिक घोड़े और सांसारिक सवार तो नहीं थे, लेकिन क़लमों के अत्युत्तम घोड़े मुझे प्रदान किए गए और वाणी के अनमोल रत्न और

गूढ़ रहस्य मुझको दिए गए और वह ब्रह्मज्ञान मुझको दिया गया जो मुझे पथभ्रष्टता से बचाता और सन्मार्ग की राह दिखाता है। अत: ख़ुदा की इस आसमानी दौलत ने मुझे संसार से निस्पृह कर दिया और मेरी मुसीबत और तंगी को दूर कर दिया और मुझे चमका दिया और मेरे अन्धकार को दूर कर दिया और मुझे इनाम पाने वालों में सम्मिलित कर लिया। अत: मैंने चाहा कि धनवान् हूँ कि इस आसमानी दौलत के साथ ब्रिटिश सरकार की सहायता करूँ जो ख़ुदा ने मुझे दी है। यद्यपि मेरे पास रुपये और घोड़े-ख़च्चर तो नहीं हैं और न मैं धनवान हूं।

अत: मैं उसकी सहायता के लिए अपनी क़लम और हाथ के द्वारा खड़ा हुआ और ख़ुदा मेरी मदद पर समर्थ है। मैंने उन्हीं दिनों ख़ुदा तआला से यह प्रतिज्ञा की कि कोई बड़ी किताब इसके बिना नहीं लिखूँगा कि जिसमें महारानी विक्टोरिया के उपकारों का वर्णन न हो और उसके उन तमाम् उपकारों का भी जिनका धन्यवाद करना मुसलमानों पर अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त मेरे दिल में यह भी था कि मैं गरिमाशाली विक्टोरिया को इस्लाम की दावत दूँ और उस रब्ब की ओर उसका मार्गदर्शन करूँ जो वस्तुत: हर एक प्राणी का पालनहार है। क्योंकि उसका एहसान हम पर और हमारे बाप-दादों पर है और एहसान का बदला इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि हम उसकी दुनिया की भलाई और तेज के लिए दुआ करें और परिणामत: उसके लिए ख़ुदा तआला से यह दुआ माँगें कि वह उसको इस्लामी तौहीद की राह प्रदान करे और वह ख़ुदा की राहों पर चले और उस बादशाह (अर्थात् ख़ुदा) की महानता पर ईमान ले आए जो ग़ैब (परोक्ष) की बातें जानता है और उस रब्ब को पहचाने जो एक और अद्वय है और समस्त प्राणियों की अन्तिम शरण है, न वह किसी का बेटा है और न किसी का बाप। वह उसको कभी न समाप्त होने वाली नेमतें दे।

इसलिए मैंने कई किताबें लिखीं और हर इक में मैंने लिखा कि ब्रिटिश सरकार मुसलमानों पर उपकार करने वाली और उनकी सन्तानों के लिए फ़ायदेमन्द है। इसलिए उनमें से किसी के लिए उचित नहीं कि उसके ख़िलाफ़ उठे और बाग़ियों की तरह उस पर हमला करे, बल्कि उन पर इस सरकार का धन्यवाद और

आज्ञापालन अनिवार्य है क्योंकि यह सरकार मुसलमानों के प्राणों और धन की रक्षा करती है और हर एक अत्याचारी के अत्याचार से उनकी रक्षा करती है। वस्तुत: इसी ने हमें दिल दहला देने वाली भयानक बेचैनियों और यातनाओं से बचाया है। यदि हम इसका एहसान न मानें तो अत्याचारी ठहरेंगे। इसलिए हम पर दीन और ईमान की दृष्टि से इसका शुक्र अदा करना अनिवार्य है और जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता उसने ख़ुदा का भी शुक्र अदा नहीं किया। ख़ुदा उन्हीं को अपना दोस्त बनाता है जो न्याय पर चलते हैं और हम उन दिनों और ज़मानों को भूल नहीं गए जो इस सरकार के आने से पहले हम पर बीते। ख़ुदा की क़सम! हमें उन दिनों और ज़मानों में दो पल के लिए भी अमन नहीं था, फिर कहाँ एक या दो दिन। हम डरते-डरते सुबह और शाम गुज़ारते थे।

इन लेखों पर आधारित पुस्तकों को मैंने इसलिए प्रकाशित किया और सारे देशों और सारे लोगों में फैलाया और दूर-दूर के देशों में भेजा है जिनमें अरब और ग़ैर अरब के अतिरिक्त दूसरे देश भी शामिल हैं। (यह इसलिए किया) ताकि दुष्ट स्वभाव रखने वाले लोग सीधे मार्ग पर आ जाएँ और सुस्वभाव रखने वाले इस सरकार का शुक्रिया अदा करने और इसकी आज्ञापालन की सलाहियत पैदा करें और उपद्रवियों के उपद्रव कम हो जाएँ और वे जान लें कि यह सरकार उनकी हितैषी है और वे दिल से इसका आज्ञापालन करें। यह मेरा काम और मेरी सेवा है, ख़ुदा मेरी नीयत को जानता है और वह सबसे अच्छी परख करने वाला है। मैंने यह काम सरकार से डरकर नहीं किया और न उसके किसी इनाम के लालच से, बल्कि यह काम केवल अल्लाह और उसके नबी ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशानुसार किया है। क्योंकि हमारे नबी हमारे पेशवा और आक़ा ने जो ख़ुदा का प्यारा और उसका सर्वप्रिय दोस्त मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है, हमें यह आदेश दिया है कि हम उनकी प्रशंसा करें जिन्होंने हम पर इनाम किया है और उनका शुक्रिया अदा करें जिन्होंने हम पर एहसान किया हो। इसीलिए मैंने इस सरकार का शुक्रिया अदा किया और जहाँ तक बन पड़ा इसकी मदद की और इसके एहसानों को हिन्दुस्तान से लेकर अरब

और रोम तक प्रकाशित किया और लोगों को जगाया कि वे इसका आज्ञापालन करें और जिसको सन्देह हो वह मेरी किताब बराहीन अहमदिया देखे और यदि वह उसके सन्देह दूर करने के लिए पर्याप्त न हो तो फिर मेरी किताब "तब्लीग़" को पढ़े और यदि उससे भी संतुष्ट न हो तो फिर मेरी किताब "हमामतुल बुश्रा" पढ़े और यदि फिर भी कुछ सन्देह रह जाए तो फिर मेरी किताब "शहादतुल क़ुरआन" पर ग़ौर करे और उस पर कोई रोक नहीं जो इस किताब को भी देखे ताकि उस पर स्पष्ट हो जाए कि मैंने क्यों घोषणापूर्वक कहा है कि इस गवर्नमेन्ट से जिहाद हराम है और जो इसके विरुद्ध निकलते हैं वे ग़लती पर हैं।

यदि मैं इस गवर्नमेन्ट का दुश्मन होता तो ऐसे काम करता जो मेरी इस कार्यवाही के विपरीत होते और यह किताबें और यह इश्तिहार अरब और समस्त इस्लाम जगत की ओर न भेजता और इन नसीहतों के लिए आगे क़दम न बढ़ाता। अत: हे बुद्धि और विवेक रखने वालो! सोचो कि मैंने यह काम क्यों किए और क्यों यह किताबें जिनमें जिहाद की सख़्त मनाही है लिखीं और अरब एवं अन्य इस्लामी देशों में भेजीं? क्या मैं इन किताबों के द्वारा उन लोगों से इनाम की उम्मीद रखता था या यह समझता था कि वे इन बातों से मुझसे ख़ुश हो जाएँगे और बिरादरी और एकता को मज़बूत करेंगे? यदि इन उद्देश्यों में से मेरा कोई उद्देश्य न था बल्कि इसका खुला-खुला परिणाम लोगों के क्रोध और कटुतापूर्ण व्यंग का शिकार होना था तो इसके बाद किस उद्देश्य ने मुझे इस काम के लिए उभारा? क्या मेरे लिए इन किताबों को ऐसे देशों में भेजने में जो ब्रिटिश सरकार के अधीन न थे बल्कि स्वतन्त्र इस्लामी देश थे और उनके विचार भी अलग थे, कुछ दूसरा लाभ था? और यदि कोई गुप्त लाभ था तो ऐसा व्यक्ति जो मुझ पर कुधारणा रखता है और ऐतराज़ करता है तो उसे चाहिए वह उस लाभ को स्पष्ट करे यदि वह सत्यवादियों में से है। तो समझो कि सत्य सामने लाने के सिवा कोई फ़ायदा न था। बल्कि मैंने सुना है कि मेरी यह बातें और यह किताबें कई उलेमा के कुपित होने का कारण हुईं और मूर्खों की तरह मुझे काफ़िर (अधर्मी) ठहराया। लेकिन मैंने सच को समझने के बाद और हिदायत का पता चलने के बाद उन लोगों की कुछ परवाह न की और मैंने पाया कि यही

सच है इसलिए मैंने बयान कर दिया चाहे मेरी क़ौम भले ही इसे नापसन्द करती रहे। अत: इस गवर्नमेन्ट से जब मेरी निष्ठा इतनी साबित हो गई और मैंने बुद्धिमानों के लिए इतने पर्याप्त प्रमाणों से उसको सिद्ध कर दिया तो इसके बाद जो व्यक्ति मुझ पर बद्गुमानी करे वह ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त और कौन हो सकता है जिसकी प्रकृति में दुष्टता और डसना है। वस्तुत: यह उसी का काम है जो दुष्टता को पसन्द करता है और नेक आदत को छोड़ता है।

मेरा अरबी किताबों का लिखना इन्हीं महान उद्देश्यों के लिए था। मेरी किताबें अरब के लोगों को लगातार पहुँचती रहीं यहाँ तक कि मैंने उनमें प्रभाव के लक्षण देखे। कुछ उनमें से मेरे पास आए और कुछ ने पत्र-व्यवहार किया और कुछ ने गाली-गलौज की और कुछ ने अपना सुधार कर लिया और सत्याभिलाषियों की तरह मान गए।

मैंने इन सहायताओं को करने में एक लम्बा ज़माना गुज़ारा है, यहाँ तक कि ग्यारह वर्ष इन्हीं बातों के फैलाने में बीत गए और मैंने कोई कोताही नहीं की। अत: मैं यह दावा कर सकता हूँ कि मेरी इन सेवाओं में कोई मेरा हमतुल्य नहीं और कह सकता हूँ कि मैं इन सेवाओं में अद्वितीय हूँ, और कह सकता हूँ कि मैं इस गवर्नमेन्ट के लिए एक तावीज़ के रूप में हूँ और एक शरण के तौर पर हूँ जो मुसीबतों से बचाता है। और ख़ुदा ने मुझे शुभसूचना दी है और कहा है कि ख़ुदा ऐसा नहीं है कि तू उनमें हो और वह उनको कष्ट पहुँचाए। इसलिए इस गवर्नमेन्ट की हितेच्छा (कल्याण कामना) और सहायता में कोई अन्य व्यक्ति मेरे समान और समतुल्य नहीं। यह सरकार निकट ही जान लेगी यदि इसमें लोगों को पहचानने की योग्यता है।

परन्तु जो लोग ईसाई हो गए और इस्लाम धर्म और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ दिया, हम उन्हें ऐसा नहीं पाते कि वे अंग्रेज़ी सरकार की कुछ सेवा करते हों या उससे सच्चा और निष्कपट प्रेम रखते हों। बल्कि हम उन्हें कपटी और चाटुकार पाते हैं। अधिकतर मुसलमान केवल इसलिए ईसाई हुए हैं कि वे अपनी भूख के दर्द का इलाज करें और अपनी लालच के कटोरों को लबालब भर लें। जब यह लोग देखेंगे कि पेट भरने की सुन्दर चरागाह से निकाल दिए गए तो

किसी दिन तितर-बितर हो जाएँगे और अपने जल्द लौटने से लोगों को आश्चर्य में डालेंगे। हम तो उन्हें कई वर्षों से देख रहे हैं कि वे क्षुद्र लोगों की भाँति अपने धार्मिक प्रण और प्रतिज्ञा को तोड़ने को तैयार हैं और हम उनमें इसके अतिरिक्त और कोई लक्षण नहीं पाते कि वे प्यालों में भरे हुए शराब और स्वादिष्ट खानों के रसिया हैं और कौवे की भाँति मुर्दार से प्रेम करते हैं और हम देखते हैं कि सांसारिक भोग-विलास ने उनको पथभ्रष्ट कर दिया है। ब्रिटिश सरकार शीघ्र ही जान लेगी कि उनमें कितने सच्चे निष्ठावान हैं। और ख़ुदा की क़सम! हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि उनमें से अधिकतर केवल क्षणिक कष्टों और क़र्ज़ के बोझ एवं पेट और वासना की भूख के कारण इस्लाम छोड़कर ईसाई हो गए हैं। मुसलमान उनकी लालच की खुजली और चाटुकारिताओं से परिचित थे। अत: उन्होंने इनकी कुछ परवाह न की। इसलिए यह लोग पादरियों की ओर झुके क्योंकि इन्होंने उनके सांसारिक ठाट-बाट, साज-सज्जा और धन-दौलत की चमक देखी और इन सब के साथ-साथ उनको अपने मूल उद्देश्यों से मूर्खों की तरह लापरवाह पाया और उन्होंने गिरजाघरों को मूर्खों का घर समझ लिया इसलिए वे उनकी ओर धोखा देने की नीयत से झुक गए। हमारे देश के मुसलमान इस योग्य नहीं कि इन सुस्त और काहिल लोगों का भरण-पोषण कर सकें और उनके खाने-पीने और पहनने के ख़र्च का बोझ उठा लें और उनको गर्भवती स्त्रियों की तरह विवश समझकर आराम करने दें और उनके सारे ख़र्च अपने ज़िम्मे ले लें और उनको केवल खाने-पीने के लिए निश्चिन्त छोड़ दें। चूँकि मुसलमान एक कमज़ोर और कंगाल क़ौम है और इनके मालों में इतनी बचत नहीं होती कि किसी दूसरे को दें फिर कहाँ से और किस तरह निकम्मे लोगों के बर्तन भर सकें। इसलिए इस्लाम से मुर्तद होकर ईसाइयत की ओर झुकने वालों ने जब यह देखा कि मुसलमान उनके बोझों को उठा नहीं सकते और उनकी ग़रीबी और कंगाली की परवाह नहीं करते तो वे शिकार ढूँढ़ते हुए पादरियों की ओर दौड़े।

अत: वे अत्यधिक बेचैन कर देने वाली भूख के कारण गिरजाघरों में जमा हुए और यह सब कुछ ईसाइयों की धन-सम्पत्ति पर लालच और उनके ठाट-बाट पर नज़र डालने से पैदा हुआ और फिर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

पर घोर अपमानजनक बातें करके पादरियों को ख़ुश करना शुरू किया और उनके लिए नित नई-नई अपमानजनक बातें और आरोप रचते ताकि उनको दिखलावें कि वे इस्लाम से विमुख और ईसाई धर्म में बड़े पक्के हैं और वे यह इसलिए करते ताकि वे उन अपमान और आरोप की बातों के द्वारा उनकी विशेष निकटस्थता प्राप्त करें और उनके माध्यम से अपनी लालसाएँ पूरी करें और उनके सामने नेक और संयमी दिखाई दें। इसी तरह उन मुर्तदों के तीर निशानों पर लगे और उनकी मनोकामनाएँ पूरी हो गयीं। अत: तू देखता है कि किस तरह इन्होंने उनके बड़ों का शिकार किया और उनके माल लूटे और किस तरह उनके मूर्खों को धोखे दिए। फिर वे इनसे प्यार करने लगे और इन पर एहसान किए, मानो यह एक सच्चों और संयमियों की फ़ौज है और इनके लिए अपने ख़ैराती (दान सम्बन्धी) मालों में हिस्से ठहरा दिए और वज़ीफ़े निर्धारित कर दिए। हर एक भ्रष्ट उनमें से लेता है और निकम्मा बनकर सोते हुए उस (दान और वज़ीफ़े के) माल को खाता है। तू देखता है कि मुर्तद होने के बाद वे ऐसे अहंकार से चलते हैं जैसे क़ैदी क़ैद से छूटकर घमण्ड से चलता है और ऐसे ख़ुश हो रहे होते हैं जैसे वह व्यक्ति ख़ुश होता है जो ग़रीबी के बाद अमीरी देखता है और लोगों का माल भोग-विलास में उड़ा रहे हैं। काश ! इस माल से जो मक्कार लोगों के भोग-विलास के लिए पानी की तरह बहाया जाता है, नदी पार करने वालों के लिए कोई पुल बना दिया जाता या मुसाफ़िरों के लिए कोई सराय बना दी जाती तो कानाफूसी करके धोखा देने वाले इस शैतानी गिरोह के ऊपर यह माल ख़र्च करने से जिसने खाने-चबाने में लोगों के श्रेष्ठ और उत्तम धन (अर्थात् हलाल माल) को अकारण बर्बाद कर दिया, इसकी अपेक्षा लोगों के लिए अधिक बेहतर और फ़ायदेमन्द था और इनको तो लोक-परलोक की चिन्ता छू भी नहीं गयी। इनके इस्लाम छोड़ने का मुख्य कारण अत्यन्त मूर्खता और मूढ़ता है फिर इसके साथ-साथ इनके मुर्तद (अर्थात् इस्लाम से विमुख) होने का अधिकतर कारण भूख की आग का भड़क उठना और रात की रोटी के लिए बेक़रार होना और अच्छे-अच्छे खानों की इच्छा और शराब की लालच और छरहरी और सुन्दर स्त्रियों की चाहत और राग-रंग के शौक़ और नाज़ुक और कोमल बदन औरतों को देखने के लिए सुबह को जाना

और गाने-बजाने वाली स्त्रियों से मेल-मिलाप रखना और इसी तरह अन्य दुर्गुण हैं। अत: वे इस दुनिया पर लालच से भरे हुए दिल के साथ इस तरह गिरे जैसे मक्खी पीप और बलग़म पर गिरती है और अंजाम से बिल्कुल बेपरवाह रहे। शराब पीने, अहंकार से लटकते हुए लम्बे-लम्बे जुब्बे पहनने, नरम-नरम रोटी खाने, पेट के घड़े को शराब के प्यालों से भरने और पवित्र लोगों का अपमान करने के अतिरिक्त इनका कोई काम न रहा। मैं देखता हूँ कि उनकी सुखदायक मित्र शराब है और आधी रात की शराब उनकी हार्दिक और अंतरंग मित्र है और पेट उनका धर्म है और उन्होंने दुस्साहस से ख़ुदा की महानता को भुला दिया है।

वे झूठ, छल और बनावट से परहेज़ नहीं करते, और न ही झूठ की गन्दगी से बचना चाहते हैं, यह उनके कर्म हैं। फिर निष्पापों को गालिया देते हैं, परलोक को भुला दिया है और कफ़्फ़ारा के धोखे में आकर हिसाब-किताब (अर्थात् क़ियामत) के दिन से निश्चिन्त हो बैठे और तामसिक वृत्ति के ग़ुलाम हो चुके हैं, जो चाहते हैं खाते हैं, जो दिल में आता है बोल देते हैं, न्याय की विशेषताओं से अनभिज्ञ और विरोध की छातियों का दूध पी रहे हैं। और इस मुख़ालिफ़त पर उनके उस मन के अतिरिक्त और किसी बात ने उन्हें नहीं उकसाया, जो बेलगाम और अनन्त इच्छाओं वाला है। अत: वे सत्य को छोड़कर झूठ की ओर झुक गए और सीधे हाथ की ओर वालों को (सदाचारियों) को छोड़ दिया। उनके बड़े क्यों उनको बुरी बातों से नहीं रोकते और क्यों उनको गुनाहों की ओर क़दम उठाने से मना नहीं करते और क्यों उनको ख़ाली बिठा रखा है। अत: मेरे निकट अनिवार्य है कि उनके सुपुर्द कुछ ऐसे काम किए जाएँ जो क़ौम और पेशा के लिहाज़ से उनकी दशानुकूल हों। अत: चाहिए कि बढ़ई को तेशा (कुल्हाड़ी), धुनिये को एक मज़बूत धुनकी (पिंजन), नाई को नहन्नी और उस्तुरा और तेली को एक बड़ा सा कोल्हू दिया जाए। ताकि उनमें से हर एक उस काम में लग जाए जिसके वह योग्य है। ताकि इस व्यवस्था से उनमें से हर एक व्यर्थ बकवास और गुनाह की बातों से रुक जाए और आम जनता और ख़ुदा के भक्तों को उनकी धृष्टता और कष्ट से छुटकारा मिले। इस व्यवस्था में उनके वरिष्ठ लोगों को बड़ा फ़ायदा है जो बहुत नुकसान उठा चुके हैं।

और यह आदमी जिसने मुझ पर आरोप लगाया, उसने केवल उस मजबूरी के कारण आरोप लगाया है जो उसको पेश आई और वह यह है कि वह उन प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ रहा जो हमने उससे और उसके साथियों से एक मुबाहसा में पूछे थे और स्पष्ट हो गया कि वे लोग झूठ और खुली-खुली पथभ्रष्टता में ग्रस्त हैं। जिससे यह व्यक्ति बहुत शर्मिन्दा हुआ और ऐसे छटपटाया जैसे कोई ज़िबह किया जाता है और जब उस पर उत्तर देना मुश्किल हो गया तो उसको अपनी क़ौम को ख़ुश करने के लिए आरोप लगाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न मिल सका अत: उसने उस मार्ग को अपना लिया ताकि आरोप लगाकर अपनी पर्दापोशी करे। इसलिए उसके दिल में यह विचार रच-बस गया कि अंग्रेज़ी सरकार के शासकों-प्रशासकों द्वारा अपनी झूठी मुख़बिरी के काम में मदद ले और अपनी मीठी-मीठी बातों के तीर से दंगे-फ़साद की बातों को हवा दे, ताकि शासक मुझको फाँसी दे दें या क़त्ल कर दें और इस प्रकार से यह भ्रष्ट लोग विजयी हो जाएँ। इसलिए उसके लेखों का मुख्य कारण इन मनगढ़त षड़यन्त्रों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। उसने इस ढंग को केवल इसलिए अपनाया है कि उसे यह ज्ञात नहीं कि इस सरकार के हम पर कितने उपकार हैं और कितने एक-दूसरे पर पारस्परिक हक़ हैं। हमने ऐसे अधिकार एक-दूसरे को उपहारस्वरूप दिए हैं जो पारस्परिक प्रेम को बढ़ाते हैं और द्वेष और कपट को दूर करते हैं। इसलिए हमारे ऊपर कोई ऐसा बादल नहीं जिसे कोई आलोचक अंधकार की ओर सम्बद्ध कर सके। हमारे तरकश में केवल एक ही तीर नहीं कि हम मुख़ालिफ़ तीरन्दाज़ों से डरें। इस मूर्ख नुक्ताचीन ने यह भी न सोचा कि अंग्रेज़ी सरकार एक समझदार और दूरअन्देश गवर्नमेन्ट है, हर इक बात और उसके रहस्य को पहचान लेती है और हर एक षड़यन्त्र और उसके रचने वाले को समझ लेती है और हर एक द्वेषी आलोचक की बात का अनुसरण नहीं करती। अत: कोई इस सरकार को धोखा और झाँसा नहीं दे सकता क्योंकि वह धोखेबाज़ और झाँसा देने वाले आलोचक और बेजा दख़ल देने वाले और झूठे और झूठी मुख़बिरी करने वाले को अच्छी तरह पहचानती है। वह धोखा खाने वालों की तरह नहीं भड़कती बल्कि उसके पीछे काम करने वाले षड़यन्त्री को तुरन्त पकड़ लेती है और उसका प्रकोप

उन पर भड़कता है जो कमज़ोरों पर हमला करते हैं और अत्याचारी प्रवृत्ति को नहीं छोड़ते। अत: वह प्रमाण जो उस व्यक्ति की शत्रुतापूर्ण मुख़बिरी से हमको बरी करता है और उसके भयानक छल से हमको बचाता है और उसको अपने उद्देश्य में असफल रखता है, वही हमारे बरी होने का प्रमाण है जिसे हम अभी-अभी लिख चुके हैं। ख़ुदा तआला जानता है कि हम इन बेजा इल्ज़ामों से बरी हैं, बल्कि इस बात के पात्र हैं कि अंग्रेज़ी सरकार हमें अपने बड़े इनाम से लाभान्वित करे और हमारे नेक कामों का फल बढ़-चढ़कर दे और आवश्यकताओं के समय हमारी सहायता करे और हमें अपने शुभचिन्तकों में समझे। यह वह बात है जिसमें कण मात्र भी अन्तर नहीं और जानने वाले इस बात को अच्छी तरह जानते हैं। हमारे पास ऐसे आलोचक का इलाज नहीं जो निर्लज्ज, नीच और दोषारोपण करने वाला हो। हम वे सारी बातें कह चुके हैं जिनमें धुत्कारे हुए इन झूठों का जवाब है।

इस व्यक्ति ने जो शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर पत्रिका इशाअतुश्सुन्न: की प्रशंसा लिखी है और कहा है कि यह व्यक्ति नेक और प्रशंसा का पात्र है। तो हम इस बात का भेद नहीं समझते और बड़े अचम्भित हैं कि किस तरह ऐसे व्यक्ति ने मुहम्मद हुसैन की प्रशंसा की जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गालियाँ देता है और किसी ऐसे मोमिन से ख़ुश नहीं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम करता हो और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे शब्दों से गालियाँ देता है जिससे मुसलमानों के दिल काँप जाते हैं और हम प्रशंसा से इन्कार नहीं करते, हो सकता है शेख़ बटालवी भ्रष्टों की नज़र में ऐसा ही हो और शायद ऐसी कोई बात कही हो जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों को अच्छी लगी हो लेकिन हम इस बारे में बात करना उचित नहीं समझते और न इस सन्दर्भ में हम बात को बढ़ाना चाहते हैं। हर एक अपनी बात से पकड़ा जाएगा और ख़ुदा तआला अच्छे और बुरों को देख रहा है।

इस आलोचक का यह कथन और कल्पना कि मानो मैं दुनिया की बादशाहत चाहता हूँ या अपनी क़ौम में लीडर बनने की मुझे इच्छा है तो यह खुला-खुला एक षड़यन्त्र है। हम हर एक सुनने वाले को गवाह ठहराते हैं कि हम दुनिया की

बादशाहत के इच्छुक नहीं और न हम दुनिया की लीडरी चाहते हैं और न हम इस मृत्युलोक की चमक-दमक के इच्छुक हैं। हम केवल उस आसमानी बादशाहत को पसन्द करते हैं जिसका अन्त नहीं और न कभी उसका पतन होता है और न कभी मरने से समाप्त हो सकती है। हम नहीं चाहते कि हम शासन और सत्ता से लोगों पर राज करें बल्कि हम ऐसे संकल्प के इच्छुक हैं कि जो ख़ुदा की इच्छा (रज़ा) के लिए तामसिक इच्छाओं पर विजय पाए। हमारा यह सिद्धान्त नहीं कि हम उपद्रव फैलाएँ, काँटे बोएँ और तबाही इत्यादि की बातों को फैलाएँ। बल्कि हम उन लोगों को सुलह, नेकी और सदाचारियों के मार्ग की ओर बुलाते हैं और चाहते हैं कि लोग ऐसी तौबा करें जिस तरह नेक लोग तौबा करते हैं। हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य यही है कि लोग ईमान की हक़ीक़त को ढूँढ़ें और ब्रह्मज्ञान के रहस्यों की ओर आगे बढ़ें और उनमें परस्पर दया और उपकार बढ़ जाए और लोग बुरी बातों और बुरे कामों से रुक जाएँ। अत: हम ऐसे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सदुपदेश, दुआ, चिंतन और धैर्य के साथ प्रयत्न कर रहे हैं और यही हमारा सिद्धान्त है। और जो इसके विपरीत हमारी ओर कोई बात मन्सूब करे तो उसने हम पर लाँछन लगाया। हमें इस बात पर केवल अल्लाह तआला ने खड़ा किया है, जो अन्धकार के समय अपना नूर भेजता है और बीमारी बढ़ जाने के समय दवा प्रकट करता है और अपने भक्तों को बेचैनी से बचा लेता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि धरती पर दुराचार बहुत बढ़ गए हैं और बहुत से धुएँ आसमान की ओर उठे हैं और हर तरफ़ हर एक छोर से बिगाड़ने और तबाह करने वाली हवाएँ चली हैं। यदि हम इन तमाम् बुराइयों को विस्तारपूर्वक वर्णन करना चाहें तो हमें कई किताबें लिखने की आवश्यकता पड़ेगी। जिनको पढ़कर बहुत से स्त्री और पुरुष रोएँगे और सुनने वालों के पैर काँप जाएँगे। आप जानते हैं कि हर इक बीमारी की एक दवा और हर इक अंधेरे के लिए एक दीया है। अत: मेरे ख़ुदा ने इरादा किया है कि दुनिया को अंधकार के बाद प्रकाश (ज्ञान) की ओर लाए। हे बुद्धिमानो! क्या तुम्हें इससे कुछ इन्कार है? हम अमीरों की तरह गर्व से नहीं चलते बल्कि हम फ़क़ीरों की तरह फटे-पुराने कपड़ों में चलते हैं और दिखावे के जुब्बे लटकाना नहीं चाहते और महारानी विक्टोरिया और उसके अधिकारियों का

उनके उन एहसानों के कारण धन्यवाद करते हैं जो उन्होंने तंगी के दिनों में हम पर किए और महारानी के लिए हम सच्चे दिल से दुआ करते हैं और उसको दुआ का तोहफ़ा भेजते हैं। मगर हम उसके मज़हब पर राज़ी नहीं हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वह गुनहगारों और भ्रष्ट लोगों का मज़हब है और हम बड़ी शिष्टता और विनम्रता से उसको इस्लाम की ओर बुलाते हैं ताकि वह हमेशा की नेमतों में दाख़िल हो जाए। हमें इस बात पर आश्चर्य है कि वह अपनी इतनी होशियारी और गहरी सूझ-बूझ के बावजूद जो उसको सांसारिक मामलों में है, एक असहाय बन्दे की इबादत (उपासना) करे और उसको समस्त लोकों का पालनहार समझे। हालाँकि वह सच्चा माबूद (उपास्य) जन्म-मरण से रहित है और उसका कोई साझीदार नहीं। यदि वह चाहे तो हज़ारों ईसा बल्कि उससे बढ़कर उत्तम और श्रेष्ठ पैदा कर दे। वह पैदा कर सकता है और उसके रहस्यों को कौन जानता है? चाहिए कि तुम इन बातों को छोड़ दो और उसका साझीदार ठहराने से बचो और दिल से उसके फ़रमाँबर्दार बन जाओ। हम कैसे मान लें कि ईसा ही ख़ुदा है। हमने तो कोई ऐसा फ़लसफ़ा (दर्शन) नहीं पढ़ा जिससे यह सिद्ध हो कि एक आदमी जो खाता-पीता हो मल-मूत्र करता हो, सोता हो, बीमार पड़ता हो, परोक्ष ज्ञान से अनभिज्ञ हो, दुश्मनों को भगाने से विवश हो, मुसीबत के समय शाम से सुबह तक दुआ करे और वह दुआ भी क़ुबूल न हो, और ख़ुदा तआला न चाहे कि अपने इरादे को उसके इरादे से अनुकूल करे और शैतान उसको एक पहाड़ी की ओर खींच ले जाए और वह उसको दूर न कर सके और उसके पीछे चला जाए और यह बात कहता-कहता मर गया हो कि हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया, और इन सब दोषों के होते हुए ख़ुदा भी हो, और ख़ुदा का बेटा भी। ख़ुदा तो इन सब दोषों से रहित है, यह तो उस पर एक खुला-खुला लाँछन है।

मैंने अनेकों बार ईसा अलैहिस्सलाम को ख़्वाब में देखा है और अनेकों बार ध्यानमुद्रा में मुलाक़ात हुई और एक ही थाल में उसने मेरे साथ भोजन किया। एक बार मैंने उससे उस बुराई के बारे में पूछा जिसमें उसकी क़ौम ग्रस्त हो गई है तो उस पर कँपकँपी छा गई और उसने ख़ुदा तआला की महानता बयान की और उसकी

स्तुति और प्रशंसा करने लगा और धरती की ओर संकेत करके कहा कि मैं तो एक तुच्छ इन्सान हूँ और इन तोहमतों से बरी हूँ जो मुझ पर लगाई जाती हैं। अत: मैंने उसको एक विनम्र और विनीत इन्सान पाया। एक बार मैंने उसको ख़्वाब में देखा कि वह मेरे दरवाज़े की ड्योढ़ी पर खड़ा है और उसके हाथ में पत्र की तरह एक काग़ज़ है। फिर मेरे दिल में डाला गया कि उसमें उन लोगों के नाम दर्ज हैं जो ख़ुदा तआला से प्रेम करते हैं और ख़ुदा तआला उनसे प्रेम करता है और उसमें उनकी सामीप्य के स्थानों का वर्णन है जो ख़ुदा के निकट उनको प्राप्त हैं। जब मैंने उस पत्र को पढ़ा तो क्या देखता हूँ कि उसके अन्त में मेरे स्थान (मर्तबे) के बारे में ख़ुदा तआला की ओर से यह लिखा है कि वह मुझसे इतना निकट है जैसा कि मेरा एक और अद्वय (अतुलनीय) होना, और निकट ही लोगों में मशहूर किया जाएगा, यह है जो मैंने देखा। यह तेरे लिए काफ़ी होगा यदि तू सत्य का अभिलाषी है। यह कहना व्यर्थ है कि यह तो एक ख़्वाब या तन्द्रावस्था है, सम्भव है कि ऐसी बातों में शैतान भेष बदलकर ज़ाहिर हो। शैतान केवल नबियों (अवतारों) के रूप में भेष बदलकर प्रकट नहीं होता। इसलिए इस महान रहस्य को क़ुबूल कर और जो कुछ इसके विपरीत कहा गया है उसको मत स्वीकार कर। हमने तुझे अल्लाह की रहस्यपूर्ण बातें पढ़ सुनायीं। क्या तू चाहता है कि तू उसकी ओर झुके और नेक तथा सदाचारियों में से हो जाए।

उपरोक्त आलोचक के आरोप तथा उनका खण्डन

उनमें से एक यह उसका कथन है कि इस ज़माना के पादरी दज्जाल (मिथ्याभाषी) नहीं हैं। इसके बाद मुझे प्रताड़ित करने के लिए उसने ब्रिटिश सरकार को उकसाया और इस बात की ओर संकेत किया कि इस आदमी का यह अक़ीदा (मत) है कि यही सरकार दज्जाल माहूद है और यह व्यक्ति बाग़ियों में से है।

अत: इसके उत्तर में स्मरण रहे कि हम इस सरकार का नाम दज्जाल नहीं रखते, बल्कि हम जानते हैं और हमें दृढ़विश्वास है कि यह सरकार बुद्धिमान और छानबीन करने वाली और हर बात की असलियत पर ग़ौर करने वाली है। ख़ुदा ने इसको ज्ञान, युक्ति, दर्शन और कई प्रकार की कलाएँ प्रदान की हैं और बौद्धिक

ज्ञान की किरणें इस पर छा गई हैं। इसलिए यह सरकार झूठी बातों को अच्छी तरह पहचानती है और झूठ के बन्द रहस्य की मोहर को तोड़कर हक़ीक़त खोल देती है और उन लोगों में से नहीं हैं जो झूठी और असंगत बातों पर राज़ी हो जाएँ। फिर कैसे सम्भव है कि यह सरकार ऐसी झूठी और निराधार बातों को मान ले, बल्कि यह तो उनको एक झूठी और बिखरे हुए ख़्वाबों की कहानियों का ढेर समझती है। इसके अतिरिक्त इस सरकार को धार्मिक बातों की ओर कुछ ध्यान नहीं और दुनिया की चाहत और हुकूमतों के शौक़ ने इसके दिल को अपनी ओर खींचा हुआ है। इसलिए वह सिर से पाँव तक पूरी तरह दुनिया में डूबी हुई है और किसी धर्म की ओर इसको झुकाव नहीं और यदि किसी समय झुकाव करेगी तो केवल इस्लाम की ओर, और ख़ात्मुन्नबीन के मज़हब के सिवा और कोई धर्म स्वीकार नहीं करेगी।

हम देखते हैं कि वह इस्लाम को मुहब्बत की नज़र से देखती है और गुमराही पर औंधे मुँह नहीं गिरती, बल्कि ग़ौर और फ़िक्र में अपने दिन गुज़ारती है और अहंकारी की तरह मुँह नहीं मोड़ती। मैं उसकी हिदायत के लक्षण पाता हूँ। मेरा गुमान है कि वह शीघ्र इस्लाम की ओर झुकाव करेगी और ख़ुदा उसको ग़ाफ़िलों और भ्रष्टों में नहीं रहने देगा। एक गिरोह उनके उलेमा का हमारे दीन में दाख़िल हो चुका है जो रूपवान् और आकर्षक नौजवान हैं और उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो एक समय तक अपना ईमान छुपाए रखते हैं। हम आशा रखते हैं कि हमारी सम्माननीय महारानी विकटोरिया हिदायत पाएँगी। उसके दिल को इस्लाम से मुहब्बत और उसकी रौशनी से लगाव प्रदान किया गया है। सम्भव है कि ख़ुदा तआला महारानी और उसके युवराजों के दिलों में अपनी तौहीद का नूर डाल दे और ख़ुदा तआला के लिए यह काम मुश्किल नहीं, बल्कि उसकी क़ुदरत ऐसे ही काम करती है और वह हर चीज़ पर समर्थ है और वह चाहने वालों के दिल अपनी ओर खींच लेता है। इसी तरह हम देखते हैं कि इस गवर्नमेन्ट के बड़े-बड़े लोग दिन-प्रतिदिन तौहीद की ओर झुकते जाते हैं और उनके दिल उन झूठे अक़ीदों से नफ़रत कर चुके हैं और उनकी प्रतिष्ठा के योग्य नहीं कि वे अपने जैसे एक ऐसे आदमी की इबादत करें जो कमज़ोरी और मानवीय आवश्यकताओं में उन्हीं के समान है। ऐसा शिर्क वे कैसे कर सकते हैं

जबकि ख़ुदा ने उनको कई प्रकार के ज्ञान प्रदान किए हैं और सूझ-बूझ दी है। हम इस क़ौम के गवेषियों (छानबीन करने वालों) में से कोई ऐसा व्यक्ति नहीं पाते जो इन व्यर्थ बातों पर राज़ी हो सिवाए कुछ एक के, जो उस एक सफ़ेद बाल की तरह है जो काले बालों में हो। मैं जानता हूँ कि यह लोग इस्लाम के अण्डे हैं और निकट ही इनमें से इस मज़हब के बच्चे पैदा होंगे और उनके मुँह ख़ुदा के मज़हब की ओर फेरे जाएँगे। क्योंकि यह एक ऐसी क़ौम है जो हर इक बात की छानबीन करती है और उस सच्चाई से आँख बन्द नहीं करती जो खुल गई और सच को स्वीकार करने से शर्म नहीं करती, बल्कि सच को ढूँढ़ती है और थकती नहीं, और जो ढूँढ़ेगा वह पाएगा चाहे कुछ देर के बाद ही सही।

इस आलोचक ने जो ब्रिटिश सरकार को मेरी बग़ावत से डराया है तो यह पिशुनता और गाली से बढ़कर कुछ भी नहीं। हमारा भेद किसी से छिपा नहीं है और सरकार इस आलोचक की अपेक्षा मुझे अधिक जानती है और एक ज़माने से देख रही है। उसके निकट हमारा ख़ानदान इस क्षेत्र में सबसे अधिक मशहूर है। वह अपनी प्रजा को दर्जा ब दर्जा पहचानती है। अत: उस पर इस आलोचक का उद्देश्य छुपा नहीं। वह इसके चीखने-चिल्लाने का मुख्य उद्देश्य जानती है, बल्कि वह ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानती है जो अधिकारियों को अपनी ईर्ष्या-द्वेष और चालबाज़ी के जोश से धोखा देना चाहते हैं। उनके अन्दर फ़साद के ज़हर के अलावा और कुछ नहीं, उनके दिल में मुर्तद (विमुख) होने की नाराज़गी के अतिरिक्त और कोई बात नहीं। उन्होंने ख़ुदा और उसके प्रताप (रौब) से मुँह फेर लिया है और ज़मीन में उपद्रव फैलाने पर आमादा हो गए हैं। हम कई बार लिख चुके हैं कि हम सरकार के शुभचिन्तकों में से हैं और कैसे न हों, क्योंकि ख़ुदा तआला ने इसके द्वारा हमारी मुसीबतों को दूर किया और हमारी ज़िन्दगी की कठिनाइयों को भी। हम सर्पस्वभाव लोगों के बीच में थे, ख़ुदा ने इसके द्वारा उन सब साँपों को नष्ट कर दिया जो हमारे आसपास थे। इसका हम पर बड़ा एहसान है अत: हम इस एहसान को भूल नहीं सकते और शुक्रिया अदा करते हैं।

इस आलोचक ने जो इस्लाम के जिहाद का वर्णन किया है और गुमान करता

है कि क़ुरआन अकारण जिहाद पर प्रेरित करता है तो इससे बढ़कर और कोई झूठ और छल नहीं। यदि कोई बुद्धि और विवेक वाला हो तो उसे जानना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ यूँ ही लड़ाई के लिए आदेश नहीं देता बल्कि केवल उन लोगों के साथ लड़ने का आदेश देता है जो ख़ुदा तआला के बन्दों को उस पर ईमान लाने से रोकें, उसके धर्म में दाख़िल होने से रोकें, उसके आदेशों के पालन और उसकी इबादत (आराधना) से रोकें, और उन लोगों के साथ लड़ने का आदेश देता है जो मुसलमानों से अकारण लड़ते हैं और मोमिनों को उनके घरों और देशों से निकालते हैं और लोगों को जबरन अपने धर्म में दाख़िल करते हैं और इस्लाम धर्म को मिटाना चाहते हैं और लोगों को मुसलमान होने से रोकते हैं। ये वे लोग हैं जिन पर ख़ुदा तआला का प्रकोप है और मोमिनों पर अनिवार्य है कि यदि वे बाज़ न आएं तो वे उनसे लड़ें। फिर इस गवर्नमेन्ट को देखो कि इन विकारों (ख़राबियों) में से कौन सा विकार उसमें पाया जाता है? क्या वह हमें नमाज़, रोज़ा, हज और धर्म के प्रचार से रोकती है या धर्म के बारे में हमसे लड़ती है या हमें हमारे देशों से निकालती है? या लोगों को जबरन और मार पीटकर ईसाई बनाती है? कदापि नहीं, बल्कि वह इन सब आरोपों से बरी है और हमारे लिए मददगारों में से है। फिर क़ुरआन के उन आदेशों पर नज़र डालो जिनमें ख़ुदा तआला हमें यह सिखाता है कि हमें उनके साथ क्या बर्ताव करना चाहिए जो हम पर एहसान करें और हमें हमारे सुकर्मों के लिए सुअवसर प्रदान करें और हमारी आवश्यकताओं के पोषक बन जाएँ और हमारे बोझों को उठा लें और हमारी दुर्दशा के बाद हमें अपनी शरण में ले आएँ। क्या ख़ुदा तआला हमको नेकी करने वालों के साथ नेकी करने और इनाम देने वालों का शुक्रिया अदा करने से रोकता है? कदापि नहीं, बल्कि वह तो पूर्णत: न्याय और एहसान करने का आदेश देता है और न्याय करने वालों को अपना मित्र बनाता है और क़ुरआन में उसने यह फ़रमाया है कि:-

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۔ (आले इमरान- 3/105)

अर्थात - तुम में से सदैव ऐसे लोग होते रहें जो नेकी की ओर बुलावें और नेकी का आदेश दें और बुराई से रोकें।

और यह कदापि नहीं कहा कि तुम में से हमेशा ऐसे लोग होते रहें जो काफ़िरों (अधर्मियों) को क़त्ल करें और उनको अपने धर्म में जबरन दाख़िल करते फिरें। उसने तो यह कहा है कि ईसाइयों से न्याय और युक्तिसंगत ढंग से नेक नसीहत के साथ शास्त्रार्थ (बहस) करो, यह नहीं कहा कि उनको तलवारों से क़त्ल कर डालो। हाँ जब वे ख़ुदा की राह से रोकें और इस्लाम के नूर को बुझाने के लिए षड़यन्त्र करें और दुश्मनी पर उतारू हो जाएँ तो फिर देख कि हमारे रब्ब ने जो समस्त लोकों का रब्ब है अन्तिम विकल्प क्या फ़रमाया है।

हम वर्णन कर चुके हैं कि लड़ाई और जिहाद करना क़ुरआन के मूल उद्देश्यों में से नहीं है और न यह उसकी शिक्षा की जड़ है। वह केवल समय की घोर आवश्यकता पर ही उचित ठहराया गया है अर्थात् ऐसे समय में कि जब अत्याचारियों का अत्याचार हद से बढ़ जाए और मनमानी करने वालों की क्रूरता भड़क उठे। इस सन्दर्भ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा की गई लड़ाइयों में तुम्हारे अनुसरण हेतु श्रेष्ठ आदर्श है। देखो किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुफ़्फ़ार (अधर्मियों) के कष्टों पर इतने समय तक सब्र किया कि जिसमें एक बच्चा अपनी युवावस्था तक पहुँच जाता है, अत: तू भी सब्र कर। काफ़िर (अधर्मी) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को रात-दिन दु:ख देते और सताते और दुष्टों की तरह मुसलमानों का धन लूटते और उनकी स्त्रियों और पुरुषों को ऐसे बड़े-बड़े कष्ट देकर मारते और क़त्ल करते कि उनको याद करने से आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं और सदाचारियों के दिल काँप उठते हैं। जब कष्ट अपने चरम को पहुँच गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने देश से निकाले गए और यहाँ तक कि इन लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जान से मारने का इरादा किया तो उसके रब्ब ने उसे आदेश दिया कि वह अपने वतन को छोड़ दे और मदीना भाग जाए। अन्तत: वह मक्का से मदीना हिजरत कर गए। इस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी क़ौम के द्वारा अपने

वतन से निकाल दिए गए। फिर भी काफ़िरों ने कष्ट पहुँचाने में कमी न की, बल्कि वे लगातार दंगा फ़साद भड़काने और प्रचार के कामों में बाधाएँ डालने में हद से आगे बढ़ गए और अपने सवारों और पैदल साथियों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर चढ़ाई करने के लिए दौड़ पड़े और मदीना के निकट पहुँचकर बदर के मैदान में अपनी फ़ौज के ख़ेमे गाड़ दिए और चाहा कि इस्लाम को जड़ से उखाड़ दें। तब उनके ज़ुल्म और ज़्यादती को हद से बढ़ते देखकर उन पर ख़ुदा का प्रकोप भड़का और उसने अपनी वह्यी (ईशवाणी) अपने रसूल पर अवतरित की और कहा कि ख़ुदा ने मुसलमानों को देखा कि-

لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ

(अल् हज - 22/40)

अर्थात- अकारण उनके क़त्ल का इरादा किया गया है और वे अत्यधिक सताए हुए हैं। इसलिए उन्हें अब सामना करने का आदेश है और ख़ुदा उनकी सहायता करने में पूर्णत: समर्थ है।"

अत: ख़ुदा तआला ने इस आयत में अपने सताए हुए रसूल को उन लोगों का मुक़ाबला करने के लिए हथियार उठाने का आदेश दिया जिन्होंने अन्याय और अत्याचार में पहल की थी। लेकिन यह आदेश उस समय दिया जब कुफ़्फ़ार (अधर्मियों) की ओर से भयानक अत्याचार और धृष्टता देख ली और यह देख लिया कि वे ऐसे लोग हैं कि जिनका सुधार केवल नसीहतों से सम्भव नहीं। अब देखो और सोचो कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लड़ाइयाँ किस तरह की थीं। अल्लाह का नबी इस्लाम के दुश्मनों से तब तक न लड़ा जब तक उसने यह न देख लिया कि वे तीर और तलवार से मार-काट में हद से आगे बढ़ गए। मरने वालों में केवल काफ़िर (अधर्मी) ही नहीं मरते थे बल्कि दोनों ओर के लोगों के प्राण जाते थे लेकिन ज़ुल्म और ज़्यादती करने वाले हमलावर अन्तत: काफ़िर ही थे।

इस स्थान पर प्रत्येक बुद्धिमान, जिसको ख़ुदा ने मूर्खों, मूढ़ों और दुष्टों की आदतों से बचा रखा है ग़ौर करे और सोचे ताकि उस पर इस्लामी जिहाद की वास्तविकता खुल जाए और उसे चाहिए कि वह यह देखे कि इस जिहाद में ज़ुल्म

और ज़्यादती का निशान कहाँ है? और कहाँ किसी एहसान करने वाले को दु:ख दिया गया है? बल्कि उन दिनों तो इस्लाम का सिर ओखली में पड़ा हुआ था और मुसलमानों की ऐसी दुर्दशा थी कि उनका हाल सुनकर आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं और दिल दर्द से जल-भुनकर राख हो जाते हैं। क्या कोई न्यायप्रिय है !!! जो ख़ुदा के प्रकोप से डरे और सोचे या यह कि मुख़ालिफ़ों के दिलों से इन्साफ़ उठ ही गया है? यही बात सच है और हम सच से ख़ियानत नहीं करते और न उसको छुपाते हैं। और कपट हमारे निकट सब गुनाहों से बढ़कर है और दिखावा सब कामों से अधिक ख़तरनाक। यह आदतें तो बेईमानों और मुश्रिकों की हैं।

हमारी बात का सार यह है कि धार्मिक लड़ाई और जिहाद का विषय कुछ ऐसा विषय नहीं जिसे इस्लाम का मुख्य बिन्दु और उसका मुख्य उद्देश्य कहा जाए, जैसा कि मूर्ख विरोधी या मूर्ख और मूढ़ मुसलमान समझते हैं। बल्कि क़ुरआन शरीफ़ में इसके विपरीत खुली-खुली आयतें मौजूद हैं जैसा कि तुम ने ख़ुदा तआला की आयतों को सुन चुके हो। कतिपय उलमाओं का यह कथन अर्थात् उनका यह मशहूर अक़ीदा कि मसीह मौऊद आसमान से नाज़िल होगा (अर्थात् उतरेगा) और काफ़िरों से लड़ेगा और जिज़्य: (रक्षा कर) स्वीकार नहीं करेगा और दो बातों में से एक बात होगी अर्थात् क़त्ल या इस्लाम। अत: जान लो कि यह अक़ीदा सरासर झूठा है और तरह तरह की ग़ल्तियों और गुमराहियों से भरा हुआ है और क़ुरआन की खुली-खुली आयतों के विपरीत है और झूठे लोगों का छल से भरा हुआ एक मनगढ़त अक़ीदा है। इन पर अफ़सोस कि इन्होंने हज़रत ईसा को हद से ज़्यादा बढ़ा दिया है। यहाँ तक कि कुछ ने कहा कि वह फ़रिश्ता है, इन्सान नहीं और कुछ ने कहा कि वह एक कलिमातुल्लाह और रूहुल्लाह है और उसके इस मर्तबा में कोई उसका हमतुल्य नहीं और कुछ ने इस पर और हाशिए चढ़ाए और कहा कि वह एक अलग सृष्टि है जो फ़रिश्तों से बढ़कर है, क्योंकि फ़रिश्ते तो आसमान पर जा नहीं सकते मगर वह आसमान पर बैठा है। क्योंकि ख़ुदा की ओर उसको उठाया गया है और ख़ुदा आसमान पर है। इसलिए वह हर एक फ़रिश्ते और हर एक आदमी से श्रेष्ठ है। यह तो कुछ उलमा का कहना है, लेकिन "इन्सान-ए-कामिल" किताब के लेखक अब्दुल करीम

ने जो सूफ़ियों में से हैं इस बारे में तो हद ही कर दी और कहा कि तस्लीस एक अर्थ की दृष्टि से सही है और इसमें कोई हर्ज नहीं, ईसा ऐसा है और वैसा है बल्कि इस ओर संकेत कर दिया कि वह ख़ुदा तआला की सृष्टि में से नहीं है और कुछ तो इस झूठ में इतना आगे बढ़ गए और लिखा कि بسم الله الاب والابن والروح القدس (अर्थात् बाप अल्लाह, बेटे और रूहुल क़ुदुस के नाम के साथ) इस तरह उन्होंने झूठ का समर्थन किया और उसकी सहायता की। पहले पहल तो झूठ थोड़ा था, फिर जो व्यक्ति एक झूठे के बाद आया उसने कुछ अपनी ओर से भी पहले झूठ से मिला दिया। यहाँ तक कि झूठ की इमारत बहुत ऊँची हो गई। एक बूढ़ी औरत का बच्चा ख़ुदा का बेटा बनाया गया और फिर ख़ुदा करके माना गया। सावधान हो जाओ! कि झूठों पर ख़ुदा की लानत है। ईसा दूसरे नबियों की तरह केवल ख़ुदा का एक नबी है और वह उस पाक नबी की शरीअत (धर्मविधान) का एक सेवक है जिस पर समस्त दूध पिलाने वाली हराम की गई थीं यहाँ तक कि वह अपनी माँ की छातियों तक पहुँचाया गया और उसके ख़ुदा ने सीना नामक पहाड़ पर उससे कलाम (संवाद) किया और उसको अपने प्यारों में से बनाया। यह वही मूसा★ ख़ुदा का पहलवान है जिसके बारे में क़ुरआन में संकेत है कि वह ज़िन्दा है और हम पर अनिवार्य किया गया है कि हम इस बात पर ईमान लाएँ कि वह ज़िन्दा आसमान में मौजूद है और मुर्दों में से नहीं।

इस अक़ीदे को कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से नाज़िल होंगे, तो हमने अपनी किताब "हमामतुल बुश्रा" में पूर्णत: झूठा साबित कर दिया है और इसका निचोड़ यह है कि इस सन्दर्भ में हम क़ुरआन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के अतिरिक्त और कोई वर्णन नहीं पाते और देहान्त का वर्णन एक स्थान पर नहीं बल्कि कई स्थानों पर पाते हैं। हाँ कुछ हदीसों में नुज़ूल का शब्द प्रयुक्त हुआ है, लेकिन वह ऐसा शब्द है कि जिसका अधिकतर प्रयोग अरबी साहित्य में

★ **हाशिया**- ख़ुदा ने एक पहाड़ पर मूसा अलैहि. से सम्बोधन किया और एक पहाड़ पर शैतान ने ईसा से सम्बोधन किया। अब इन दोनों प्रकार के संवादों पर विचार करो यदि विचार करने की क्षमता है। 12

मुसाफ़िरों के सन्दर्भ में हुआ है और यह तब बोला जाता है जब वे एक शहर से दूसरे शहर में उतरें या एक देश से दूसरे देश में सफ़र करके आएं और अरबी भाषा में नज़ील मुसाफ़िर को ही कहते हैं जो जानने वालों से छुपा नहीं।

तवफ़्फ़ी का शब्द जो क़ुरआन में हज़रत मसीह और दूसरों के बारे में पाया जाता है तो इसमें मृत्यु देने के अतिरक्त और कोई अर्थ नहीं हो सकते और मृत्यु देने के यह अर्थ हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके महान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के कथनों से लिए हैं, यह नहीं कि अपनी ओर से रच लिए हैं। तू जानता है कि मृत्यु देना एक शाश्वत सिद्ध विषय है और ख़ुदा तआला के प्राकृतिक नियमों में से है। कोई नबी ऐसा नहीं जिसका देहान्त न हुआ हो और हज़रत ईसा से पहले जितने नबी आए वे देहान्त पा चुके हैं और जब शब्द "नुज़ूल" और "तवफ़्फ़ी" में पस्पर एक-दूसरे के विपरीतता सिद्ध हुई, तो यदि हम हदीस की प्रमाणिकता को मान भी लें तब भी हमारे लिए आवश्यक है कि नुज़ूल के शब्द की तावील (भावार्थ) करें, क्योंकि वह वस्तुत: आसमान से उतरने के अर्थों के लिए उचित नहीं है बल्कि वह तो मुसाफ़िरों के नुज़ूल के लिए बनाया गया है। यह तो हमसे नहीं हो सकता कि हम उसके असल विषयवस्तु को छोड़ दें जिसके लिए वह बनाया गया है और क़ुरआन की स्पष्ट आयतों को ठुकरा दें। और हम किसी हदीस सहीह में आसमान का शब्द भी लिखा हुआ नहीं पाते और न ही नुज़ूल अर्थात् सशरीर आसमान से उतरने का कोई व्यवहारिक उदाहरण प्राचीन लोगों में पाते हैं।★ बल्कि क़िस्सा-ए-यूहन्ना में इसके विपरीत सिद्ध होता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह अक़ीदा जो मसीह के आसमान से नाज़िल होने का अक़ीदा है इसको एक बीमारी ही नहीं बल्कि कई बीमारियाँ लगी हुई हैं। यह क़ुरआन की खुली-खुली आयतों

★ **हाशिया -** क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि पहली किताबों अर्थात् तौरैत और इब्राहीम के सहीफ़ों में क़ुरआन की शिक्षा के बारे में वर्णन मौजूद हैं। लेकिन हम तौरैत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के ऊपर चढ़ने और उतरने का कोई वर्णन नहीं पाते और न ही इसका कोई व्यवहारिक उदाहरण पाते हैं। हालाँकि तौरैत तमाम् उदाहरणों के लिए इमाम है। इसीलिए ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में उसका नाम इमाम रखा है।

के विरुद्ध है और ख़त्म-ए-नबूवत् के विषय को झुठलाता है और अरब लोगों के मुहावरों के विरुद्ध है और उन हदीसों के उलट है जिनमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के देहान्त का खुला-खुला वर्णन है। अत: हे लोगो! अगर सोच -समझ सकते हो तो सोचो और समझो।

दूसरा भाग अर्थात् यह कि जैसा कि मूर्खों का विचार है कि मसीह मौऊद उतरने के बाद लड़ाइयाँ करेगा, यह हमारा अक़ीदा (मत) नहीं। हमारे निकट यह विचारधारा झूठी और व्यर्थ है जो स्वीकार्ययोग्य नहीं और सच और विश्वास से बहुत दूर है और इसके झूठा सिद्ध करने के लिए वह हदीस काफ़ी है जो सहीह बुख़ारी में लिखी है कि يضع الحرب (यज़उल हर्ब) जो आँहज़रत सल्लल्लाहु ने फ़रमाया था, जिसका अर्थ यह है कि मसीह मौऊद काफ़िरों (अधर्मियों) से नहीं लड़ेगा और न युद्ध करेगा, बल्कि वह जो कुछ करेगा अपनी दुआ और ठोस एवं अकाट्य तर्कों से करेगा और ख़ुदा उसकी दुआ में अजीबोग़रीब असर रख देगा और उसकी बातों में अनोखी बरकतें और उसकी बुद्धि और विवेक को तीर और तलवार की शक्ति देगा और उसको ठोस तर्कों से भरा हुआ बयान प्रदान करेगा और उसको ऐसे अकाट्य तर्क सिखलाएगा जो सर्कशों के बहानों को मलियामेट कर देगें। अत: यही वह आसमानी हथियार है जिसको इन्सान के हाथों ने नहीं बनाया बल्कि रहमान ख़ुदा के हाथों से मिला है और आसमान से नाज़िल हुआ है न कि ज़मीन वालों की कोशिशों से। सारांश यह है कि हमारी आस्था यही है जो हमने वर्णन कर दी, न कि यह जो इस नीच और मूर्ख आलोचक ने समझा है। वह हमारे निकट खुली-खुली ग़लती है और हम ऐसी बातें कहने वाले वाले को ख़ताकार (दोषी) कहते हैं। नि:सन्देह उसने ग़लती की जिसने ऐसा कहा और वह खुली-खुली गुमराही में पड़ गया। वह सच्चाई जिसे हमें युक्तिवान् और सर्वज्ञ ख़ुदा ने दिखलाई और बताया वह यही है कि मसीह मौऊद का हथियार आसमानी है न कि सांसारिक। उसकी लड़ाइयाँ दुआओं के साथ हैं न कि ज़ाहिरी हथियारों के साथ। वह दुश्मनों को बद्दुआ (श्राप) और ठोस एवं अकाट्य तर्कों से क़त्ल करेगा न कि तीर, तलवार और भाले से। उसकी बादशाहत आसमानी है न कि सांसारिक। वे लोग जो एक ऐसे मसीह की प्रतीक्षा करते हैं कि वह

लश्करों के साथ आएगा और शेरों की तरह निकलेगा और हर इक काफ़िर (अधर्मी) को जो ईमान न लाएगा क़त्ल कर देगा और आसमान से कड़ककर भस्म कर देने वाली एक बिजली की भाँति उतरेगा और रक्त-पात बहाने के अतिरिक्त उसका कोई काम न होगा और वह क़त्ल करने पर बड़ा उत्सुक होगा चाहे सूअर ही को क्यों न हो और इन्कार करने वालों के सामने अपने ठोस एवं अकाट्य तर्क प्रस्तुत करने से पहले आते ही हाथ में तलवार पकड़ लेगा। अत: हम उन लोगों में से नहीं हैं और न ही ऐसे मसीह को जानते हैं। हम ख़ुदा तआला की किताब (अर्थात् पवित्र क़ुरआन) में इन अक़ीदों का कुछ भी निशान नहीं पाते और हम ऐसे नहीं कि इन बातों को एक अन्धभक्त की तरह मान लें। सारांश यह कि यह बातें हमारे अक़ायद में नहीं हैं, बल्कि ये लोगों को गुमराह करने वाले शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशाअतुस्सुन्न: और उसके सहमतगणों के अक़ीदे हैं जो इस खेती को बोने वाले हैं। सारांशत: यह कि यह उन्हीं लोगों का मज़हब है जिस पर वे चल रहे हैं और यह उन्हीं के विचार हैं जो तुम देखते हो। वे इन विचारों पर मज़्बूती से अड़े हुए हैं और इनको छोड़ने वाले नहीं, बल्कि मेम्बरों पर चढ़-चढ़कर इन्हें फैलाते हैं और ख़ुश हो-होकर आपस में यह बातें करते हैं कि उनकी इच्छाओं में से एक बड़ी इच्छा यह है कि उनका ख़याली (कपोल-कल्पित) मसीह दुनिया में आवे और तमाम् काफ़िरों को क़त्ल करे और फिर लूटमार करके बहुत सा धन जमा करे और बटालवी और उसके भाइयों को मालदार बना दे। लेकिन हमारा ऐसा अक़ीदा (आस्था) नहीं है, हम जानते हैं कि वे इस सोच में ग़लती पर हैं और अज्ञानता के अन्धकार ने उन्हें ढाँप लिया और वे ज्ञान से बहुत दूर जा पड़े। अत: उन्होंने कुछ भी न समझा और समझने वालों के मत को छुआ भी नहीं और ख़ुदा और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अध्यात्म और रहस्यज्ञानों में से कुछ न हासिल किया। बल्कि इन्होंने उन लोगों का जूठन खाया जो इनसे पहले राह भटक चुके थे। ख़ुदा तआला की किताब को इन्होंने पीठ के पीछे फेंक दिया और धोखा देने वालों की बातों पर राज़ी हो गए। इस अक़ीदे का भेद बहुत रहस्यपूर्ण और गूढ़ विषयों में से था। इसलिए बुद्धिहीन और मोटी समझ रखने वाले इसको समझ न सके और दूसरी राहें जल्द अपना लीं।

फिर क्या था वह भविष्यवाणी पूरी हो गयी जो फ़ैज-ए-आवज (अर्थात् घोर अन्धकार युग) के बारे में सर्वाधिक सत्यवान रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने की थी। ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए इसमें एक दलील है। फिर ख़ुदा तआला ने हम पर कृपा की और अपनी कृपा और दया से हम पर यह भेद खोल दिया और वह सबसे बढ़कर दया करने वाला है। जिसको चाहता है तरक़्क़ी देता है और जिसको चाहता है नीचे गिरा देता है और जिसको चाहता है ब्रह्मज्ञानी बना देता है। अत: हमने उसके पढ़ाने से पढ़ा और उसके समझाने से समझा और उसने अपनी कृपा से हमारी सहायता की और वह सबसे बढ़कर और सबसे अच्छी सहायता करने वाला है और उसने हमें अपने इल्हाम से बताया कि मसीह मौऊद की लड़ाइयाँ रूहानी लड़ाइयाँ हैं जो रूहानी नज़र (अर्थात् दुआ) के साथ होंगी। मुझे आश्चर्य है कि यह लोग पढ़ते भी हैं कि वह ईसा याजूज माजूज से नहीं लड़ेगा बल्कि घोर कष्टों और शत्रुओं के मुक़ाबिल पर बद्दुआ करेगा। वे हदीसों में नज़र का शब्द भी पढ़ते हैं और फिर भूल जाते हैं और बुद्धिमानों की तरह नहीं सोचते। ख़ुदा ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, वे अध्यात्मज्ञान के गूढ़ रहस्यों में से किसी रहस्य को नहीं समझते और युक्ति के सूक्ष्म विषयों में से किसी विषय को नहीं जानते, बल्कि उनका दिमाग़ पूर्णत: ठण्डा पड़ गया है और दिमाग़ का पानी परत दर परत जम गया है। इसलिए वे किसी भी सच्चाई से ठीक नहीं हो सकते और रहस्यों को गहराई से देख नहीं सकते और शब्दों की सतह पर तैरते हैं और अर्थों के अथाह समुद्र में ग़ोता नहीं मार सकते और ऐसे आदमी को कौन समझाए जिसको ख़ुदा ने नहीं समझाया और जिसको ख़ुदा ने हिदायत नहीं दी वह कैसे हिदायत पा सकता है?

यह वही अक़ीदा है (आस्था) जिसको हमने अपनी किताबों में कई जगह वर्णन किया है और इन्हीं बातों के लिए हम काफ़िर ठहराए गए और सताए गए और झुठलाए गए और ऐसे अकेले छोड़ दिए गए जैसे कोई जंगल में अकेला छोड़ दिया जाता है। इसलिए हम इस समय एक ऐसे मुसाफ़िर की तरह हैं जो सरॉय में ठहरा हुआ हो, न कि ऐसे व्यक्ति की तरह जो अपने भाइयों की मदद से दंगे-फ़साद करने वाला हो। हम कोई सत्ता नहीं चाहते, हमने तो दरवेशी (फ़क़ीरी) अपनायी है और

राजसी वेश-भूसा उतार कर फेंक दी और फ़क़ीराना गुदड़ी अपना ली और देखने वालों की कटाक्ष और निन्दा की कोई परवाह न की। अत: हे पादरियों के प्याले चाटने वाले! बद्ज़न्नी में जल्दी मत कर और इतरा-इतराकर मत चल, क्योंकि हमारा काम खुला और स्पष्ट है। तेरे वश में कुछ नहीं और न तू शासक है। यदि तुझे यही पसन्द है कि नुक्ताचीनी की राहों को ढूँढ़े तो याद रख कि तेरी यह इच्छा कभी पूरी न होगी और तू हमेशा नामुराद रहेगा और तेरी बुरी आदतें ज़ाहिर होने के अतिरिक्त तुझे और कुछ न मिलेगा और तू इस पर समर्थ नहीं हो सकेगा कि ख़ुदा ने जिस चीज़ को ज़ाहिर कर दिया तू उसे छिपा सके और जिसकी ख़ुदा रक्षा करे तू उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, ख़ुदा सब रक्षकों से बढ़कर रक्षा करने वाला है। इसलिए तू इन बातों से बच और अपनी दुनिया की चमक-दमक में डूबा रह और दिन-रात शराब में मस्त रह और दुनिया की मुर्दार पर ख़ुश रह और तू उसमें दख़ल मत दे जिसके तू योग्य नहीं और ग़ुस्सा मत हो और भड़क मत, क्योंकि ख़ुदा तआला का प्रकोप तेरे प्रकोप से बढ़कर है और उसकी आग अन्याय और अत्याचार करने वालों को जलाकर राख कर देती है।

आश्चर्य है कि बड़े-बड़े पादरियों ने तुझे पहचानने में धोखा खाया और अब तक तुझे उस तरह नहीं पहचान सके जैसा कि पहचानने का हक़ है और तेरे भेद के पहचानने और तेरी तह तक पहुँचने में असमर्थ रहे। तूने धोखा देने वालों की तरह उनको खा लिया। उन पर अफ़सोस, कि वे क्यों तेरे जैसे लोगों पर अपने धन बर्बाद कर रहे हैं और क्यों दर्दनाक अनुभवों के बाद नहीं जागते और क्यों मक्कारों को नहीं पहचानते।

तेरी यह बात कि इस ज़माने के पादरी दज्जाल (छलिया) नहीं हैं तो यह तेरी सबसे बड़ी दज्जालियत (छल) है और तूने मुझसे इस दावे की दलील पूछी है तो तुझे ज्ञात हो कि यह केवल मेरा ही कहना नहीं बल्कि मुझसे पहले मसीह ने भी यही कहा है। इन्जील लूक़ा बाब तेरहवाँ आयत 24-30 पर ग़ौर कर तो हे निष्कलंकों के दुश्मन, यही हमारी बात विस्तार से पाएगा और वह यह है कि मसीह ने उनसे अर्थात् हवारियों से कहा कि कोशिश करो ताकि तंग दरवाज़े से दाख़िल हो सको, क्योंकि मैं

तुम्हें कहता हूँ कि बहुतेरे चाहेंगे कि दाख़िल हों पर दाख़िल नहीं हो सकेंगे इसके बाद घर का मालिक उठा और दरवाज़ा बन्द कर लिया और तुमने दरवाज़े के बाहर खड़े होकर यह बात कहते हुए दरवाज़ा खटखटाना शुरू किया कि हे हमारे मालिक, हे हमारे मालिक हमारे लिए दरवाज़ा खोल तो वह जवाब देगा और कहेगा कि मैं नहीं पहचानता कि तुम कहाँ से हो, उस समय तुम यह कहना शुरू करोगे कि हमने तेरे सामने खाया और तूने हमारी गलियों में शिक्षा दी तो वह कहेगा कि मैं तुम्हें कहता हूँ कि मैं तुम्हें नहीं पहचानता कि तुम कहाँ से आए हो, हे अन्याय और अत्याचार करने वाले गिरोह मेरे सामने से दूर हो जाओ, उस समय केवल रोना और दाँत पीसना ही रह जाएगा जब तुम देखोगे कि इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब और समस्त नबी ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल हुए और तुम बाहर निकाल दिए गए और वे लोग पूरब-पच्छिम और उत्तर-दक्षिण से आएँगे और ख़ुदा की बादशाहत में बैठेंगे तब जो पिछले हैं वे पहले होंगे और जो पहले हैं वे पिछले होंगे। यह वह बयान है जो हमने तुम्हारी इन्जील लूक़ा में से उसकी अरबी इबारत में से लिखा है। न हमने कुछ बढ़ाया और न कुछ कम किया बल्कि वह जैसा था वैसा ही नक़ल कर दिया है।

जो जानने या इन्कार करने के इच्छुक हैं उन्हें अधिकार है कि यदि हमारे लेख में कोई शक हो तो वे उस किताब को देख लें। अत: तू इसका इन्कार करके मुँह टेढ़ा मत कर, ऐसा न हो कि ईर्ष्या-द्वेष तुझको जला दे। इसलिए न्यायप्रियों की तरह सोच और इस बात पर ग़ौर कर कि हज़रत मसीह ने इस आयत में तुम्हारा नाम अन्यायी रखा है और कहा है कि क़यामत के दिन तुमसे मुँह फेर लूँगा और कहूँगा कि तुम मेरे अनुयायी नहीं और न इस लश्कर में से हो। इसलिए हे अन्यायी काफ़िरो दूर हो जाओ और इस बात की ओर इशारा करके कहा कि तुमने सच को झूठ के नीचे छुपा दिया है और तुम एक दज्जाली (छलिया) गिरोह हो। तुझे ज्ञात हो अन्याय और अत्याचार की वास्तविक परिभाषा यह यह है कि एक चीज़ को जानबूझकर अपने मौक़ा और महल से उठाकर दूसरे स्थान पर इसलिए रख दिया जाए ताकि सच्चाई छुप जाए और लाभ का मार्ग बन्द हो जाए और सन्मार्ग पर चलने वालों पर चिकने झूठ का पर्दा पड़ जाए। इसलिए ज़ालिम (अन्यायी और अत्याचारी) उसको

कहेंगे जो तहरीरों में हेरा-फेरी का काम करे और ख़ियानत करने वालों की तरह इबारतों को बदल दे और दिलेर होकर कम की जगह ज़्यादा बढ़ा दे और ज़्यादा की जगह कम कर दे, चाहे वह मात्रा की दृष्टि से हो या गुणवत्ता की, और अन्याय और झूठ की राह से वाक्यों को बिना किसी स्पष्ट सन्दर्भ या प्रसंग के एक अर्थ से दूसरे अर्थों की ओर ले जाए, और फिर उस आधार पर धोखा देने वालों की तरह लोगों को अपनी मनगढ़त बातों की ओर बुलाना शुरू करे। इसके अतिरिक्त दजल और दज्जालियत का और कोई अर्थ नहीं। अत: यदि कोई ग़ौर-फ़िक्र करने वालों में से है तो चाहिए कि वह इस पर सोच-विचार करे।

मेरे दिल में डाला गया है कि हज़रत मसीह ने आख़िरी ज़माना (अर्थात् कलियुग) के ईसाइयों का नाम दज्जाल (छलिया) रखा है, पहले ज़माना के ईसाइयों का नहीं। हालाँकि पहले ज़माने वाले ईसाई भी पथभ्रष्ट थे और किताबों में फेर-बदल करते थे। इसमें भेद यह है कि पहले ज़माने के ईसाई लोगों को गुमराह करने की इतनी बड़ी-बड़ी कोशिशें नहीं करते थे जितनी आख़िरी ज़माने अर्थात् आजकल के ईसाइयों ने कीं। पहले ज़माने के ईसाई इन कोशिशों में समर्थ न थे और ऐसे थे जैसे कि कोई ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ या रस्सियों में बँधा हुआ क़ैदी हो। लेकिन जो उनके बाद हमारे इस युग में आए वे दज्जालियत (छल) में अपने पूर्वजों से आगे बढ़ गए और ख़ुदा तआला ने अपने बन्दों की परीक्षा लेने के लिए उनकी हथकड़ियों और गले के बन्धनों को खोल दिया और उन ज़ंजीरों से उनको आज़ाद कर दिया जो उनके पैरों में पड़ी हुई थीं। यही प्रारम्भ से मुक़द्दर था। अत: एक हज़ार हिज्री सन् बीतने के बाद उनका उदय हुआ, यहाँ तक कि इन दिनों वे एक ऐसे देव की भाँति निकले जो जेल से निकलकर अपनी सवारी पर सवार हुआ और अपने उन स्वजनों और उस गिरोह की ओर गया हो जो उसी की प्रकृति के अनुसार पैदा किए गए थे और उसको स्वीकार करने के लिए तत्पर थे। फिर उन्होंने जिस तरह चाहा भाँति-भाति के कुफ्र (अधर्म) और भाँति-भाँति की भ्रम की बातें फैलायीं, क्योंकि वे धनाढ्य लोग हैं। यह वही भविष्यवाणी है जो पहले धर्मग्रन्थों में लिखी हुई है, कि अजगर की भाँति वह देव जो दज्जाल है एक हज़ार वर्ष तक क़ैद रहेगा फिर उसके बाद शैतानों की

एक बड़ी फ़ौज के साथ निकलेगा। यदि कोई नसीहत पकड़ने वालों में से है तो उसे चाहिए कि वह नसीहत पकड़े। अतएव इसी तरह वे हिज्री सन् के एक हज़ार वर्ष बाद निकले और ख़ुदा की प्रतिष्ठा को भुला दिया और उसके सारे वादों को तोड़ दिया और अहंकार करके अपने रब्ब को क्रोध दिलाया और अपनी सारी कोशिशें लोगों को गुमराह करने में लगा दीं और छुप-छुपकर तमाम् उपाय अपनाए और संयम और सदाचार को बर्बाद कर दिया और ऐसे कफ़्फ़ारा पर भरोसा कर बैठे जिसका कोई आधार नहीं और उन्होंने हर एक पाप किया और हर इक सज़ा को मज़ा समझ बैठे और पुण्यात्माओं (अवतारों) को झुठलाया और उनके दोष ढूँढने की कोशिश की और कहा कि हम मसीह के बन्दे (भक्त) और उसके प्यारे हैं। लेकिन यह कैसे हो सकता है कि ऐसे दुराचारियों के साथ सदाचारियों का मेलजोल हो। तू अभी सुन चुका है कि मसीह ने उनका नाम अन्यायी और दुराचारी रखा है और तूने यह भी सुन लिया है कि अन्याय और दजल (छल) एक ही चीज़ का नाम है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

اٰتَتۡ اُكُلَهَا وَ لَمۡ تَظۡلِمۡ مِّنۡهُ شَيۡـًٔا (अल् कहफ़- 18/34)

कि उस बाग़ ने अपना पूरा फल दिया और उसमें से कुछ कम न किया और ज़ुल्म शब्द का ऐसी कमी पर कहना या चरितार्थ करना जो यथास्थान न हो या ऐसी ज़्यादती पर कहना जो यथासमय न हो, एक ऐसा विषय है जो लोगों में मशहूर है और इसी का नाम दज्जालियत है जो समझदार लोगों से छिपा है।

अतएव इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस ज़माने के पादरी दज्जाल (छलिया) और गप्पी हैं जो भोलेभाले लोगों को अपने गप्प और धोखों से तबाह कर रहे हैं। धोखा उनके मस्तक पर चमकता है और सच पर पर्दा डालना उनके चेहरों से स्पष्ट है। हम उनके छल और धोखों का भूत एवं वर्तमान में कोई उदाहरण नहीं पाते और न इन्सानों में उन जैसा पाते हैं। वे अपने आपको पूरी तरह जान जोख़िम में डालकर लोगों को गुमराह करने के लिए निकल जाते हैं और उस आदमी पर बहुत सा धन ख़र्च करते हैं जो उनके धर्म में रुचि ले और झुकाव करे। तू हर एक छल में उनका एक बहुत बड़ा जाल पाएगा और हर धोखे में लम्बे-लम्बे हाथ। वे हर इक षड़यन्त्र

में दक्ष हैं। जिस तरह घोर अन्याय करने के कारण मसीह अलैहिस्सलाम ने उनका नाम दज्जाल रखा है उसी तरह क़ुरआन भी उनका नाम दज्जाल रखता है। अत: क़ुरआन करीम फ़रमाता है कि:-

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَ تَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(आले इमरान- 3/72)

(अर्थात हे अहले किताब! सच के साथ झूठ को क्यों मिलाते हो और तुम जानते बूझते हुए सच को छुपा रहे हो।) अर्थात् इस बात से तुम क्यों नहीं डरते कि ख़ुदा की बातों में हेर फेर करने में हद से बढ़े जाते हो और तुम अच्छी तरह जानते हो कि सच्चाई ही मुक्ति का साधन है और झूठ तबाही की पहचान, और सच के अपनाने में नेकनामी है और झूठ के अपनाने में आफ़त। इसलिए तुम झूठ से बचो और झूठों की राह छोड़ दो। अत: इस आयत में ख़ुदा तआला ने इस ओर संकेत किया है कि पादरी ही वस्तुत: दज्जाल और उपद्रवी हैं और ख़ुदा और उसकी इबादत करने वालों के दुश्मन हैं। उन्होंने क़ब्र के अज़ाब को भुला दिया है और उस डर को याद नहीं करते जो इस जगह हमने बयान किया है और वे काम-वासना में पूरी तरह डूब गए हैं और धर्म का निशान उनसे पूरी तरह ग़ायब हो गया है।

मेरा ज्ञान और विवेक मुझे यह बताता है कि यह क्रिस्टान (बपतिस्मी) ईसाई उस समय तक बिगाड़ फैलाने से नहीं रुकेंगे जब तक ख़ुदा तआला के उन पुरातन क़ानूनों को न देख लें जो पहले गुज़र चुके हैं अर्थात् जब तक ईर्ष्या-द्वेष की ऐसी भयानक भूख को न देख लें जो सीने को जलाती है और जब तक ऐसी दर्दनाक हालत का शिकार न हो जाएँ जैसा कि कोई मुसीबतों का मारा होता है। सारांश यह कि यही लोग इस ज़माने के दज्जाल हैं और मैं मसीह मौऊद हूँ और यह वह फ़ैसला है जिस पर क़ुरआन और इंजील दोनों सहमत हैं और इसको बड़े ज़ोर से ख़ुदा तआला ने बयान किया है। फिर क्या कारण है कि तुम ऐसे फ़ैसले को क़ुबूल नहीं करते जिस पर दो न्यायक पंच (अर्थात् क़ुरआन और इंजील) सहमत हैं। क्या तुम एक खुली-खुली बात से इन्कार करते हो और अपने सम्मान को रुसवाइयों का निशाना बनाते हो और एक सीख देने वाले की निश्छल नसीहत से भागते हो और

ग़ुस्से में आकर गालियाँ देते हो? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम इन बातों को सुनकर नहीं जागते और नहीं डरते और तुम्हारी आँखें आँसू नहीं बहातीं और तुम्हारे दिल नहीं डरते और तुम शर्मिन्दा होकर तौबा नहीं करते? क्या तुम नहीं देखते कि अजीबोग़रीब और असम्भव बातें तुम्हारे अक़ीदों में दाख़िल हैं और तुमने जड़ को छोड़ दिया है और व्यर्थ एवं निराधार बातों की ओर झुक गए और अगलों और पिछलों की तुमने मुख़ालिफ़त की? तुम क्यों एक बुलाने वाले की आवाज़ को नहीं सुनते और निगरान के पीछे नहीं चलते? बल्कि तुम साँपों की तरह डसते हो और भेड़ियों की तरह दौड़-दौड़कर हमला करते हो और अहंकार एवं घमण्ड में डूबकर बहरे, गूँगे और अन्धे बनकर चलते हो। तुम्हें बुलाने के समय हमारी मिसाल ऐसी है जैसे कोई गूँगे से बात करे या पत्थर पर सिर मारे या मुर्दों से बात करे। हाय अफ़सोस इन क्रिस्टानों (अर्थात् बनावटी तौर पर ईसाई बनने वाले-अनुवादक) पर कि वे खुली-खुली सच्चाई से मुँह फेर रहे हैं और ऐसे आँख बन्द कर ली है जैसे कोई बड़े आराम से सोता है, अच्छे अक़ीदों को छोड़कर बुरे और गन्दे अक़ीदों की ओर झुके जाते हैं और ख़ुदा के उपकारों को भूलकर ख़ुदा की नाफ़र्मानी करते हैं और ख़ुदा के आदेश को ऐसे फेंक दिया है जैसे कोई फटी-पुरानी जूती फेंक दी जाए और ऐसी किताब का जिस पर ख़ुदाई निशान है बड़ी धृष्टता और दुस्साहस से इन्कार कर दिया।

إلى الدنيا أوَى حزبُ الاجانى وحسبوها جَنًى حُلْوَ المجَانى

1- इन लोगों ने जो पूरी तरह गुनाह में डूबे हैं दुनिया को हमेशा रहने का अपना ठिकाना बना लिया है और आसानी से हासिल हो जाने वाली दुनिया को एक मीठी चीज़ और मेवा समझ लिया है।

نسوا مِن جهلهم يوم المعادِ وتركوا الدين مِن حُبّ الدِّنانِ

2- अपनी मूर्खता के कारण क़यामत के दिन को भुला दिया है और शराब के प्यालों से प्यार करके दीन (इस्लाम) को छोड़ दिया है।

تراهم مائلين إلى مُدامٍ وغِيدٍ والغوانى والاغانى

3- तू देखता है कि यह लोग शराब और ख़ूबसूरत एवं नाज़ुक मिज़ाज औरतों और

उनके राग-रंग की ओर हमेशा झुके रहते हैं ।

و كمْ منـهم أسارى عَينٍ عِينٍ و مشـغوفينَ بالبِيض الحِسانِ

4- इनमें से बहुतेरे बड़ी-बड़ी आँखों वाली औरतों के हुस्न में क़ैद हैं और बहुतेरे गोरी हसीनाओं के वशीभूत हैं।

ترى كُلاًّ كمنـطلق العِنانِ لهنَّ على بعولتهن حُـكم

5- वे अपने पतियों पर शासन करती हैं और पूर्णत: बेलगाम, बेपर्दा और शराबी हैं।

دماء العاشقـين لهـنَّ شغـلٌ بعينٍ أخجلتْ ظَبْـيَ القِـنانِ

6- अपने आशिक़ों को क़त्ल करना उन औरतों का धन्धा है और क़त्ल करने का हथियार उनकी आँख है जो पहाड़ी हिरनों को भी शर्मिन्दा करती है।

ومِن عَجَبٍ جفـونٌ فاتراتٌ أرينَ الخَـلْق أفعـالَ السّـنانِ

7- आश्चर्य तो यह है कि वे झुकी हुई पलकें लोगों पर बर्छियों का काम दिखला रही हैं।

بنـاظرةٍ تصـيد النـاسَ لمحًا تفـوق بلحظها رُمْحَ الطِّعانِ

8- वे औरतें अपनी नशीली आँखों से लोगों को घायल करती हैं, उनकी आँख का हल्का सा इशारा भी तीरों के घाव से बढ़कर असर करता है।

وأنَّى الامـن من تلك البلايا سوى الله الـذى مَلِكِ الامانِ

9- उन बलाओं से बचना उस ख़ुदा की कृपा के बिना असम्भव है जो बचाने वाला बादशाह है।

فعشّـاق الغـوانى والمثـانى أضاعوا الدين مِن تلك الامانى

10- जो लोग औरतों और राग-रंग के रसिया हैं, उन्होंने इन्हीं चाहतों के पीछे दीन (इस्लाम) को छोड़ दिया है।

يصُـدّون الورى مِن كل خيرٍ ويغـتاظون من تخلـيصِ عانى

11- वे लोगों को हर इक नेकी के काम से रोकते हैं और इस काम से क्रोधित होते हैं कि किसी क़ैदी को छोड़ दिया जाए।

عِمـايات الرجال تزيد منهم وفـتن الدهر تنـمو كل آنِ

12- इनके कारण लोगों में सबसे अधिक गुमराही फैलती जाती है और फ़ित्ने दिन-

प्रतिदिन बढ़ते जाते हैं।

وما من ملجأ من دون ربٍّ كريم قادرٍ كهف الزمانِ

13- इन आफ़तों से बचने के लिए उस ख़ुदा के सिवा कोई बचने की जगह नहीं जो सच्चा हितैषी, सामर्थ्यवान और समय की शरणस्थली है।

فنشكو هاربين من البلايا إلى الله الحفيظ المستعانِ

14- हम इन बलाओं से भागकर उसी ख़ुदा के समक्ष शिकवा करते हैं जो अपने बन्दों को बचाने वाला और बेचैनों की सहायता करने वाला है।

جرتْ حزنًا عيونٌ من عيونى بما شاهدتُ فتنًا كالدخانِ

15- जब मैंने इन फ़ित्नों को देखा जो धुएँ की तरह उठ रहे हैं तो ग़म के मारे मेरी आँखों से आँसू बह निकले।

فهل وجدتْ ثكالىٰ مثلَ وجدى أذًى أم هل لها شأن كشانِى

16- क्या वे औरतें जिनके लड़के मर जाएँ ऐसा ग़म करती हैं जैसा मैं करता हूँ। क्या दु:ख के समय उनका ऐसा हाल होता है जो मेरा है।

و كم من ظالم يبغى فسادًا وقسيسين أصل الافتنانِ

17- बहुतेरे ज़ालिम (अर्थात् अन्यायी और अत्याचारी) यही चाहते हैं कि दुनिया में बिगाड़ और गुनाह फैले और तौहीद (एकेश्वरवाद) में फ़ित्ना पैदा करने की जड़ पादरी ही हैं।

تفاحُشهم تجاوزَ كل حدّ كأن غذاء هم فحشُ اللسانِ

18- पादरियों की अश्लीलता हद से बढ़ गई है मानो अश्लीलता ही उनका भोजन है।

فكنتُ أطالعَنَّ كتابَ سابٍّ وتمطُر مُقْلَتى مثل الرَّثانِ

19- मैंने पादरियों में से एक ऐसे आदमी की गालियों से भरी हुई किताब पायी कि जब मैं उस किताब को देखता तो मेरी आँखों से वर्षा की तरह आँसू जारी हो जाते।

رأينا فيه كِلِمًا مُحفِظاتٍ وسبَّ المصطفٰى بحرَ الحنانِ

20- हमने उस किताब में वे बातें देखीं जो क्रोध दिलाने वाली थीं, उसने उसमें उस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गालियाँ दी हैं जो दया का सागर है।

صبرتُ عليه حتى عِيلَ صبرى ونار الغيظ صارت فى جَنانى

21- मैंने इस बात पर सब्र किया, यहाँ तक कि सब्र करते- करते थक गया और मेरे अन्दर क्रोध की ज्वाला भड़की।

وتـأتى ساعـةٌ إن شـاء ربى أُقِرُّ العـينَ بالخـصم المُـهانِ

22- यदि अल्लाह ने चाहा तो वह समय आता है कि हम दुश्मन की रुसवाई देखकर अपनी आँखें ठंडी करेंगे।

أخـذْنا السبَّ منهم مثلَ دَينٍ وعـزّتُنا لـديهم كالـرِّهانِ

23- उनकी गालियाँ हम पर क़र्ज़ के समान हैं और हमारा सम्मान उनके पास प्रतिभूति (गिरवी) की तरह है।

سنَغْـشاهم ببرهـان كعَضْبٍ رقيـقِ الشفـرتين أَخِ السنـانِ

24- हम शीघ्र ही टुकड़े-टुकड़े कर देने वाले तर्क के हथियार से उनको काबू करेंगे जो दोधारी नुकीले तीर का भाई है।

بفـأسٍ نختـلى تلك الخَـلا تا ورمـحٍ ذابـلٍ وقَنا البـيانِ

25- हम इस नीरस (सूखी) लकड़ी को तर्कों की कुल्हाड़ी से काटेंगे और दुआ की बारीक एवं नुकीली बर्छी और बयान के तीरों से भी।

بِجمجمة العدا قد حلَّ غُولٌ فنُـخرجـه بآيـات المـثانى

26- इन दुश्मनों की खोपड़ी में एक भूत घुस गया है, हम उसको सूर: फ़ातिहा से निकालेंगे।

لنـا دين ودنيـا للنصارى ومَقْتُ الضرّتـين من العِـيانِ

27- हमारे हिस्से में दीन(धर्म) आया और ईसाइयों के हिस्से में दुनिया, यह दो सौतनों की परस्पर दुश्मनी है जिसकी सच्चाई हर एक पर ज़ाहिर है।

سئمنا كلَّ نوعِ الضيم منهم ولكن سَبَّـهم صلَّى جـنانى

28- हमने हर एक ज़ुल्म उनका सहा, लेकिन उनकी गालियों ने हमारा दिल जलाया।

سعوا أن يجـعلوا أسدًا نِعاجًا ولـيثُ اللهِ لـيثٌ لا كضانِ

29- उन्होंने कोशिश की कि किसी तरह शेरों को भेंड़ें बनाएँ, पर शेर शेर ही हैं वे भेड़ की तरह नहीं हो सकते।

ووَثْبَـتُهم كسِرْحانٍ ضَـرِيٍّ وصورتهم كـذى حُبٍّ مُقانِ

30- इन लोगों का चेहरा एक मिलनसार मित्र की तरह है और इनका हमला उस भेड़िए की तरह है जो शिकार की ताक में है।

وباطنهم كجوف العَير قَفْرٌ من التقوى وبطنٌ كالجِفانِ

31- इनका दिल गधे के पेट की तरह ख़ुदा के ख़ौफ़ से खाली है और पेट उन कटोरों की तरह है जो खाने से भरे हुए हों।

أرى وَغْلًا جَهولًا وابنَ وَغْلٍ يُرِى كالمرهَفات لَظَى اللسانِ

32- मैं एक नीच से नीच मूर्ख को देखता हूँ कि वह तेज़ तलवारों की तरह अपनी ज़बान चलाता है।

هريرُ الكلب لا يحثو بنبحٍ على البدر المطهَّر مِن عُثانِ

33- कुत्ते का भौंकना उस चाँद पर धूल नहीं डाल सकता जिसको ख़ुदा ने धूल, मिट्टी और धुएँ से रहित पैदा किया है।

ألا يا أيها اللِّحْزُ الشحيحُ هوَيتَ كذى اللُّبانة فى الهوانِ

34- हे तंगनज़र (संकीर्णचित्त) धृष्ट और लालची! तू मोहताजों की तरह रुसवाई के गढ़े में गिर गया।

وما تدرى الهدى وحملتَ جهلًا أناجيلَ النصارى كالأَتانِ

35- तू नहीं जानता कि हिदायत क्या चीज़ है। तूने केवल मूर्खता से इंजीलों को उठा लिया है जैसा कि एक गधी भार उठाती है।

تُنَضْنِضُ مثلَ نضنضة الافاعى وتهذى مثل عادات الادانى

36- तू साँप की तरह ज़ुबान लपलपाता है और नीच और कमीनों की तरह बकवास करता है।

هَلُمّ إلى كتاب الله صدقًا وإيمانًا بتصديق الجنانِ

37- ख़ुदा की किताब की ओर सच्चे दिल और सच्चे ईमान से आ।

شُغِفتم أيها النُّوكَى بشوكٍ وأعرضتم عن الزهر الحِسانِ

38- हे मूर्खो! तुम काँटों पर मंत्रमुग्ध हो गए और ख़ूबसूरत फूलों से दूरी अपनायी।

وآثرتم أماعِزَ ذاتَ صخرٍ على مُخضرّةٍ قاعٍ هِجانِ

39- तुमने कंकरों-पत्थरों वाली पथरीली ज़मीन अपनायी और ऐसी ज़मीन को छोड़

दिया जो हरी-भरी, नर्म, अति उत्तम और लहलहाने वाली फसल के योग्य है।

وما القرآن إلّا مثلَ دُرَرٍ فرائدَ زانَها حسنُ البيانِ

40- क़ुरआन अपनी श्रेष्ठता में अद्वितीय मोतियों के समान है जिसके सुन्दर वर्णन से उसकी सुन्दरता और ख़ूबसूरती और भी बढ़ती है।

وما مسّتْ أكفُّ الكاشحينا معارفَه التي مثل الحَصانِ

41- दुश्मनों की हथेलियाँ उन गूढ़ सच्चाइयों को स्पर्श भी नहीं कर सकीं जो क़ुरआन में ऐसे छुपी हैं जैसे पर्दानशींन पावन स्त्री (पर्दे में) छुपी होती है।

به ما شئتَ مِن علم وعقل وأسرارٍ وأبكار المعانى

42- इसमें हर एक वह ज्ञान और युक्ति है जिसका तू इच्छुक है और इसमें तरह-तरह के रहस्य और सच्चाइयाँ भरी हैं।

يُسكِّت كلَّ مَن يعدو بضغنٍ يبكّت كلَّ كذّاب وجانى

43- यह हर एक ऐसे दुश्मन का मुँह बन्द करता है जो मुख़ालिफ़ाना तौर पर दौड़ पड़ता है और हर एक ऐसे व्यक्ति को अकाट्य एवं निर्णायक तर्क देता है जो झूठा और गुनहगार है।

رأينا دَرَّ مُزْنتِه كثيرًا فدَينا ربَّنا ذا الامتنانِ

44- हमने इसकी बारिश का पानी बार-बार देखा है। इसलिए हम उस ख़ुदा पर न्योछावर हैं जिसने ऐसे एहसान किए।

وما أدراك ما القرآن فيضًا خفيرٌ جالبٌ نحو الجِنانِ

45- तू नहीं जानता कि क़ुरआन फ़ैज़ (उपकार) की दृष्टि से क्या चीज़ है, वह एक मार्गदर्शक है जो स्वर्ग की ओर खींचता है।

له نورانِ نورٌ من علوم ونورٌ من بيان كالجُمانِ

46- इसमें दो नूर हैं एक तो विभिन्न प्रकार के ज्ञानों का, दूसरा सरसता और अलंकारिकता का। मोतियों की तरह जो चमकता है।

كلامٌ فائق ما راقَ طرفى جمالٌ بعده والنَّيِّرانِ

47- यह एक ऐसा कलाम है जो ख़ूबसूरती में हर इक कलाम से आगे बढ़ गया, इसके बाद मुझे सूरज चाँद भी अच्छे न दिखाई दिए।

أَياةُ الشمس عند سَناه دَخْنٌ وما لِلَّعْلِ والسِبْت اليمانى

48- सूरज की रोशनी इसकी चमक के सामने एक धुआँ सी है, लअ्ल (एक बहुमूल्य रत्न)से निरे लाल चमड़े की तुलना ही क्या, चाहे वह यमनी चमड़ा ही क्यों न हो।

وأين يكون للقرآن مِثلٌ وليس له بهذا الفضل ثانى

49- क़ुरआन के समान कोई दूसरी चीज़ कैसे हो सकती है, क्योंकि वह तो अपनी विशेषताओं में अनुपम और अद्वितीय है।

ورِثنَا الصُّحُفَ فاقتْ كلَّ كُتُبٍ وسبقتْ كلَّ أسفارٍ بشانِ

50- हम उस किताब के वारिस बनाए गए जो सब किताबों से श्रेष्ठ है, वह ऐसी किताब है जो अपनी श्रेष्ठताओं में सबसे आगे बढ़ गई है।

وجاءت بعد ما خرّتْ خيامٌ وخُرِّبت البيوت مع المبانى

51- और यह उस समय आई जब सारे पहले ख़ेमे मुँह के बल गिर चुके थे और तमाम् घर अपनी बुनियादों सहित ख़राब हो चुके थे।

محَتْ كلَّ الطرائق غيرَ بِرٍّ وجذّتْ رأسَ بدعات الزمانِ

52- नेकी से रहित हर एक व्यर्थ मार्ग को इसने समाप्त कर दिया और उन सारे आडम्बरों का सिर काट दिया जो ज़माने में फैल चुके थे।

كأنّ سيوفها كانت كنارٍ بها حُرقتْ مَخاريق الاِدانى

53- मानो इसकी तलवारें एक आग के समान थीं जिनसे वे सारी ढालें जल गयीं जो नीच और धृष्ट लोगों के हाथ में थीं।

إذا استدعى كتابُ الله مثلًا فعَىَّ القومُ واستتروا كفانى

54- जब क़ुरआन ने अपनी बराबरी की मिसाल माँगी तो लोग मुक़ाबले से लाचार हो गए और मुर्दों की तरह छुप गए।

و سُلبتْ جرأةُ الإسناف منهم مِن الهول الذى حلّ الجَنانِ

55- मुक़ाबले की हिम्मत उनसे छीन ली गयी और यह ख़ुदा का रौब ही था जो उनके दिल में बैठ गया।

فمِن عجبٍ أكبّوا مثلَ مَيْتٍ وقد مرَنوا على لطف البيانِ

56- यह आश्चर्य की बात है कि वे मुर्दों की तरह मुँह के बल गिर पड़े, हालाँकि वे

अलंकारिक बयान में पारंगत और अभ्यस्त थे।

وأنـزلَـه مهيـمنُنا حُـدَيًّا ففـرّوا كلـهم كالمستـهانِ

57- ख़ुदा तआला ने इसको अद्वितीय और मुक़ाबला करने वाला बनाकर अवतरित किया है, फिर क्या था काफ़िर (अधर्मी) इसकी मिसाल लाने पर समर्थ न हो सके और शर्मिन्दा होकर भाग गए।

وصارت عُصَـبُهم فِرقًا ثُبَينًا فمنـهم من أتى بعد الحِرانِ

58- उनके गिरोह कई फ़िर्क़ों में बँट गए और उनमें से कुछ ने अड़ियल रवैया छोड़ दिया।

ومنهم من تلبّبَ مستشـيطًا لحرب الصـادقين وللطّـعانِ

59- और कुछ क़ुरआन का मुक़ाबला न कर पाने के कारण ग़ुस्से से हथियार बाँधकर सच्चों के साथ लड़ने के लिए तैयार हो गए।

فأنتم قد سمعـتم ما أصيـبوا بضعضعة السيوف من الهـوانِ

60- तुम सुन चुके हो कि फिर उनको क्या-क्या सज़ाएँ मिलीं और वे तलवारों से कैसे अपमानित हुए।

و كان جزاء سَلِّ السّيف سَيْفًا فذاقـوا ما أذاقـوا كالجـبانِ

61- और तलवार उठाने का बदला तलवार ही था। अत: जो कुछ उन्होंने मुसलमानों को चखाया वह स्वयं भी उन्हें कायर होकर चखना पड़ा, अर्थात् तलवार उठाने वाले तलवार से ही मारे गए।

إذا دارت رحى البلوى عليهم فكانوا لُهْوَةً فوق الدِّهانِ

62- जब उन पर सख़्ती की गयी तो वे ऐसे हो गए जैसे कि आटे की एक मुट्ठी, जो चक्की के उस सुर्ख़ चमड़े पर होती है जो चक्की के नीचे बिछाया जाता है।

فطفقـوا يهربون كمثل جُبنٍ فأُخـذوا ثم قُتلوا مثل ضانِ

63- फिर उन्होंने एक कायर की तरह भागना शुरू किया और पकड़े गए और भेड़ों की तरह क़त्ल किए गए।

إذا ما شاهـدوا قتلَى كقُنَنٍ فرفـعوا طاعـةً عَلَـمَ الامانِ

64- और जब उन्होंने अपने मृतकों के ऊँचे-ऊँचे ढेर देखे तो अमन माँगने के लिए

झण्डियाँ बुलन्द कीं।

سرَاةُ الحیّ جاء وا نادمینا فرحِم المصطفٰی بحرُ الحنانِ

65- जब क़बीलों के सरदार शर्मिन्दा होकर आए तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो दया के सागर हैं उन सबके अपराध क्षमा कर दिए।

و أمّا الجاھلون فما أطاعوا فأعدمَھم فؤوسُ الاحتفانِ

66- लेकिन जब धृष्टों ने उनका आदेश न माना तो जड़ काटने वाले कुल्हाड़ों ने उनका अन्त कर दिया।

سُقوا کأس المنایا ثم سیقوا إلی نارٍ تلوِّحُ وجهَ جانی

67- उनको मौत के प्याले पिलाए गए फिर वे उस आग की तरफ़ ले जाए गए जो मुजरिम का मुँह जलाती है।

فھذا أجرُ جھل الجاھلینا من الرحمن عند الاستنانِ

68- यह मूर्खों की मूर्खता की सज़ा थी। यह सज़ा ख़ुदा तआला के आदेश से उस समय दी गयी जब वे अन्याय और अत्याचार में हद से बढ़ गए।

وما کان الرحیم مُذِلَّ قومٍ ولکن بعد ظلم وافتنانِ

69- जब तक कोई क़ौम अन्याय और अत्याचार न करे ख़ुदा उसे रुसवा नहीं करता।

وھل حُدِّثتَ مِن أنباء أممٍ رأوا قبحًا بأفعالٍ حِسانِ

70- क्या तू ऐसी क़ौमों का पता बता सकता है जिनको नेकी करते-करते रुसवाई का मुँह देखना पड़ा हो?

و کل النور فی القرآن لٰکنْ یمیل الھالکون إلی الدخانِ

71- हर एक प्रकार के नूर क़ुरआन ही में हैं मगर मरने वाले धुएँ की ओर ही दौड़ते हैं।

بہ نلنا تُراثَ الکاملینا بہ سِرْنا إلی أقصی المعانی

72- हमने इसके द्वारा नबियों की विरासत पाई और इसके माध्यम से सच्चाइयों के छोर तक सैर किया।

فقُمْ واطلُبْ معارفہ بجھدٍ وخَفْ شرَّ العواقب والھوانِ

73- इसलिए उठ और कोशिश करके इसके गूढ़ ज्ञान प्राप्त कर और उपेक्षा एवं

अपमान के दुष्परिणाम से डर।

أتخطُب عـزّةَ الدنيا الدنيّةْ أتطلب عيشها والعيش فانى

74- क्या तू इस नश्वर दुनिया के सम्मान का इच्छुक है और इसके भोग-विलास के आनन्दों को ढूँढ़ता है जिसके समस्त सुख नश्वर हैं?

أترضى يا أخى بالخان حمقًا وتنسٰى وقت تبـديل المكانِ

75- हे भाई! क्या तू अपनी मूर्खता से इस सरॉय (मृत्युलोक) में रहने से राज़ी हो गया! और उस समय को भुला दिया जो परलोक सिधारने का समय है?

علٰى بُستان هذا الدهر فأسٌ فكم شجر يجاح من الإهانِ

76- इस दुनिया के बाग़ पर कुल्हाड़ा रखा है और बहुत से पेड़ जड़ से उखेड़े जा रहे हैं।

وكم عنقٍ تكسّرها المنايا وكم كفٍّ وكم حسنِ البنانِ

77- और मौतें बहुत सी गर्दनों को तोड़ रही हैं और बहुत सी हथेलियाँ और जोड़ टूटते चले जा रहे हैं।

ترى فى ساعةٍ سُرَرًا لرجُلٍ وفى الاخرى تراه على الإرانِ

78- तू यह तमाशा देख रहा है कि एक क्षण एक आदमी के लिए कई सिंहासन बिछे होते हैं और दूसरे क्षण में तू उसे ताबूत में मुर्दा पड़ा देखता है।

وإنى ناصح خِلٌّ أمينٌ ويدرى نورَ علمى من يرانى

79- मैं एक नसीहत करने वाला अमानतदार दोस्त हूँ और जो व्यक्ति मुझे देखेगा वह मेरे ज्ञान की चमक को पहचान लेगा।

يُكرَّمُ جاهلٌ قبل ابتلاءٍ وقدرُ الحَبْر بعد الامتحانِ

80- मूर्ख की प्रतिष्ठा परीक्षा से पहले होती है और बुद्धिमान की परीक्षा के बाद।

وكفّرنى عدوّ الحق حمقًا فقلتُ اخْسأ يرانى من هدانى

81- सत्य के एक दुश्मन ने मूर्खता से मुझे काफ़िर ठहराया तो मैंने कहा, मुझसे दूर हो जा। वह मुझे देख रहा है जिसने मुझे हिदायत दी है।

صوارمه علىّ مسلّلاتٌ وإنى نحو وجه الحِبِّ رانى

82- उस दुश्मन की तलवारें मुझ पर खिंची हुई हैं और मैं अपने प्रियतम् ख़ुदा की

ओर देख रहा हूँ।

وإنى قد وصلتُ رياض حِبّى ويطلبنى خصيمى فى المَحانى

83- मैं अपने प्रियतम् के बाग़ों में पहुँचा हुआ हूँ और दुश्मन मुझे जंगलों में ढूँढ़ रहा है।

هوَيتُ الحِبَّ حتى صار روحى وأَرَنانى جِنانى فى جَنانى

84- मैंने उस प्रियतम् से यहाँ तक मुहब्बत की कि वह मेरी रूह (आत्मा) हो गया और मेरा स्वर्ग उसने मेरे दिल में ही दिखा दिया।

بوجه الحِبّ لستُ حريصَ مُلكٍ كفانى ما أرى نفسى كفانى

85- उस प्रियतम् की क़सम है कि मुझे किसी बादशाहत की लालच नहीं, मेरे लिए यह काफ़ी है कि मैं अपनी सांसारिक इच्छा और काम-वासनाओं को मरी हुई देखता हूँ।

عمود الخشْب لا أبغى لسقفى وحِبّى صار لى مثل البُوانِ

86- मैं अपनी छत के लिए लकड़ी की शहतीरें नहीं चाहता, बल्कि मेरा प्रियतम् मेरे लिए ऐसा हो गया है जैसे कि घर की शहतीर।

ورثنا المجد من ذى المجد حقًّا وصُبِّغْنا بمحبوب مُقانى

87- हमने महानप्रतापी ख़ुदा से सम्मान पाया और उस मिलने वाले प्रियतम् के रंग से रंगे गए।

دخلتُ النار حتى صرت نارًا ونخلى فاقَ أفكارَ الافانى

88- मैं आग में दाख़िल हुआ यहाँ तक कि मैं भी आग हो गया और मेरी ज़िन्दगी मौत के डर से बेपरवाह हो गयी।

خمورى منتقاة غيرُ كَدَرٍ مُشَعْشَعةٌ بماء الاقترانِ

89- मेरा नशा एक चुनी हुई पवित्र शराब है जिसमें ख़ुदा की मुहब्बत का पानी मिलाया गया है।

ولستُ مواريًا عن عين ربّى وإن الله خلّاقى يرانى

90- मैं अपने रब्ब की आँख से ओझल नहीं हूँ। ख़ुदा जो मेरा पालनहार है, वह मुझे देख रहा है।

يُدَهْدِئُ رأسَ كذّابٍ غيور ويُهلكه كصيدٍ مُستهانِ

91- वह ग़ैरतमन्द (स्वाभिमानी) है, झूठे के सम्मान को ख़ाक में मिलाता है और उसको उस शिकार की तरह हलाक करता है जो आतुर और बदहवास हो।

وإنا الناظرون إلىٰ قديرٍ قريب قادرٍ حِبٍّ مُدانى

92- हम उस सामर्थ्यवान् ख़ुदा की ओर देख रहे हैं जो निकट है और समर्थ है और भक्त और उसके दिल में उतर जाता है।

وإنّا الشاربون كؤوس جدٍّ وإنّا الكاسرون فؤوس خانى

93- हम रहस्य से भरी हुई बातों के प्याले पी रहे हैं और व्यर्थ बकने वालों के हथियारों को टुकड़े-टुकड़े कर रहे हैं।

وإنّا الواصلون قصور مجدٍ وإنّا الفاصلون من الادانى

94- हम सम्मान और प्रतिष्ठा के महलों तक पहुँच गए और नीच और धृष्ट लोगों से दूरी अपना ली।

وأبدَرَنا من الرحمن بدرٌ فنحن المبدَرون ولا نُمانى

95- हमारे लिए ख़ुदा तआला की ओर से एक चाँद निकला और हम उस चाँद को पाने वाले हैं प्रतीक्षा करने वालों में से नहीं।

ونحن الفائزون كمالَ فوزٍ ونحن المنعَمون ولا نعانى

96- हम एक बड़ी कामयाबी तक पहुँच गए और नेमतों में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, तंगी नहीं उठाते।

وبارزْنا العدا مُتسلّحينا ولسنا قاعدين كمثل وانى

97- हम आसमानी हथियारों से सुसज्जित होकर विरोधियों के मुक़ाबले पर निकल पड़े हैं और एक सुस्त आदमी की तरह बैठने वाले नहीं।

وما جئنا الورٰى فى غير وقت وذو حجر يرى وقت الرَّثانِ

98- हम दुनिया में बेवक़्त नहीं आए, अक़लमन्द जानता है कि बारिश का समय कौन सा है।

كخُذْرُوفٍ ندحرجُ رأسَ عجزٍ وتُبْنا من ملاعبِ صولجانِ

99- हम पतंग की तरह अपने विनम्र सिर को हिला रहे हैं और टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी के

नाटक से दूर हैं।

عريفُ فرسُ نفسى عند حرب ويدرى السرّ مِن شدّ البِطانِ

100- मेरी सोच का घोड़ा बड़ा दूरअंदेश है और लड़ाई के समय थोड़ा सा ज़ोर देने से समझ जाता है कि मतलब क्या है।

مِكَرٌّ ينزلنّ كمثل برق ولا تمضى عليه دقيقتانِ

101- वह बहुत तेज हमला करने वाला है जो बिजली की तरह गिरता है और दो मिनट की भी देरी नहीं करता।

وإنا سوف نُوجَرُ مِن مليكٍ ونُعطَى منه أجرَ الامتشانِ

102- हम बहुत शीघ्र अपने ख़ुदा से प्रतिफल पाएँगे और इस सिपाहियान: सेवा का फल हमको दिया जाएगा।

وكأسٍ قد شربنا فى وِهادٍ وأخرى نشرَبنْ فوق القِنانِ

103- (मुहब्बत के) कई प्याले तो हमने धरती पर पिए और कई और हैं जो आसमानों पर पिएँगे।

وهذا كله مِن فضل ربّى ملاذى عاصمى ممّن جفانى

104- यह सब मेरे रब्ब की कृपा है जो मेरी शरण है और हर एक दुष्ट से मुझे बचाने वाला है।

أرى أشجار رحمته عِظامًا مفرّحةً كزرع الزعفرانِ

105- मैं उसकी रहमत के पौधों को केसर के खेत की तरह बहुत आनन्ददायक पाता हूँ।

وقومى كفّرونى مِن عناد وإلحادٍ وتحريف البيانِ

106- मेरी क़ौम ने मुझे दुश्मनी से काफ़िर ठहराया, और अधर्म और बयान को तोड़-मरोड़ कर काफ़िर बनाने की कोशिश की।

فيا لَعّانِ لا تهلَكْ عَجولًا ولا تهجُرْ فترجِعْ كالمُهانِ

107-हे मुझ पर लानत डालने वाले! अपने आपको जल्दी तबाही में मत डाल और एक मुसलमान को अपनी जमाअत से जुदा मत कर, कि ऐसा करने में तेरी रुसवाई है।

ووشكُ البَين صعبٌ عند حُرٍّ وإن الحرّ كالحانى يقانى

108- सदाचारी आदमी के निकट जल्द जुदा हो जाना एक कष्टप्रद बात है, सज्जन आदमी तो एक दयालु मित्र की तरह मिलता है।

ولا تعجَبْ لقولى وادّعائى وقد عُلّمتُ مِن أخفى المعانى

109- मेरी बात और मेरे दावे से आश्चर्य मत कर, मुझे बहुत गूढ़ अर्थ बतलाए गए हैं।

وللرّحمٰن فى كلِمٍ رموزٌ و كم قولٍ أسرَّ كمثل كانى

110- ख़ुदा तआला अपनी बातों में कई रहस्य रखता है और कई बातें उसकी ऐसी हैं जैसे कोई संकेतों से बातें करता है।

و كم كلِمٍ مهفهفةٍ دُقاقٍ هضيمِ الكشح كالغِيد الحِسانِ

111- उसकी बहुत सी बातें गूढ़ और रहस्यपूर्ण हैं और ऐसी नाज़ुक हैं जैसे कि ख़ूबसूरत और नाज़ुक औरतें।

فيدرى الضامراتِ ذوو الضمورِ ولا يدرى سفيهٌ كالسِّمانِ

112- और गूढ़ एवं रहस्यपूर्ण बातों को वे लोग समझते हैं जो ऋषि, मुनि, तपस्वी और औलियाअल्लाह हैं, इन बातों को वह व्यक्ति नहीं जानता जो मोटी औरतों की तरह मोटी अक़्ल वाला हो।

فإنّ تبغى الدقائقَ مثل إبرٍ فَلِجْ فى سَمِّها ودَعِ الامانى

113- यदि तू सुई के समान गूढ़ रहस्यों को जानना चाहता है तो सुई के छिद्र में प्रवेश हो जा और समस्त सांसारिक वासनाओं को छोड़ दे।

وإن تستطلِعنّ أنباءَ موتى فمُتْ كالمحرَقين و كُنْ كفانى

114-और यदि तू मुर्दों की ख़बरें जानना चाहता है तो जलाए जाने वालों की तरह मर और मुर्दे की भाँति हो जा।

وبذلُ الجهد قانون قديم مَنى للطالبين قضاء مانى

115- कोशिश करना एक प्राकृतिक विधान है जिसे ख़ुदा ने ढूँढ़ने वालों के लिए बनाया है।

وإنى مُسلم والسِّلْمُ دينى فلا تُكفِرْ وخَفْ ربّ الزمانِ

116- मैं मुसलमान हूँ और इस्लाम मेरा मज़हब। अत: तू मुझे काफ़िर मत ठहरा और ख़ुदा तआला से डर।

وإن أزمعتَ تكفيري وعذلي فقُلْ ما شئت من شوق الجنانِ

117- यदि तूने यही इरादा किया है कि मुझे काफ़िर कहे और मेरी निन्दा करे, तो जो तेरी मर्ज़ी हो वह शौक़ से कहता रह।

ولا نخشى سهام اللاعنينا ولا نغتاظ من تكفير خانى

118- हम लानत डालने वालों की बातों से नहीं डरते और एक व्यर्थ बकने वाले के काफ़िर कहने से ग़ुस्सा नहीं होते।

جنحنا كاهلًا منّا ذَلولًا لاثقال المطاعن واللِّعانِ

119- हमने अपना जप, तप और इबादत में डूबा हुआ कन्धा कटाक्ष और लानत के बोझों के लिए झुका दिया है।

فإن شاء المهيمن ذو جلال يبرّء رحمةً مما ترانى

120- यदि महाप्रतापी ख़ुदा चाहेगा तो अपनी रहमत से मुझे इन इल्ज़ामों से बरी कर देगा जो तू मुझ पर लगाता है।

وفى فمّى لسانٌ غير أنى أُحبّ جوابَ ربٍّ مستعانِ

121- मेरे मुँह में भी ज़ुबान है लेकिन मैं चाहता हूँ कि सदा सहॉय ख़ुदा मेरी ओर से तुझको जवाब दे।

وآخر كلمنا حمدٌ وشكرٌ لرب محسن ذى الامتنانِ

122- हमारी आख़िरी बात उस ख़ुदा की स्तुति और धन्यवाद है जिसके हम पर अनगिनत एहसान (उपकार) हैं।

★ ★ ★

अन्धकार में डूबे इस भ्रष्ट आलोचक के ऐतराज़ों में से एक ऐतराज़ यह भी है जिसको उसने अपनी किताब "तौज़ीनुल अक़वाल" में अपने झूठे अक़ीदे की बुनियाद ठहराया है। उस ऐतराज़ की व्याख्या यह है कि उसने क़ुरआन करीम की इस पवित्र आयत को देखा:-

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلَآئِكَةُ (अल् नबा - 78/39)

और इससे उसने अरबी शब्द "रूह" को ऐसे उचक लिया जैसे कोई लालची व्यक्ति किसी चीज़ को उचक लेता है और चाहा कि इससे नुज़ूले मसीह (अर्थात् मसीह के आसमान से उतरने) का प्रमाण सिद्ध करे, इतना ही नहीं बल्कि निर्लज्जता से यह भी चाहा कि इससे हज़रत ईसा मसीह का ख़ुदा होना भी सिद्ध हो जाए। फिर क्या था प्रमाणसिद्ध करने का ख़्वाब देखकर झूठ के पुजारियों की तरह ख़ुश होकर उसने यह आयत लिखी।

अब इसके उत्तर में जान लो कि इस आयत ने उस व्यक्ति को कुछ भी फ़ायदा न दिया इस आयत से अगर कुछ सिद्ध होता है तो यही, कि यह आदमी महामूर्ख, अनाड़ी, अनभिज्ञ और जल्दबाज़ है। बड़े-बड़े उलमा (विद्वानों) से यह बात छिपी नहीं कि इस जगह "रूह" के शब्द से अभिप्राय ईसा मसीह ठहराना दजल (छल) और प्रपंच है। बल्कि तफ़्सीरों की दृष्टि से वह जिब्राईल अलैहिस्सलाम या कोई अन्य फ़रिश्ता है और पाठकों से यह बात छुपी नहीं कि यह दोनों प्रकार की रिवायतें पाई जाती हैं। जैसा कि देखने वालों पर छुपा हुआ नहीं। फिर आयत का सन्दर्भ भी खुला-खुला यह ज़ाहिर करता है और स्पष्टत: कहता है कि यह वर्णन क़यामत से सम्बन्धित है और उसके लिए एक निशान की तरह है। क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस वर्णन को बहिश्त (स्वर्ग) और उसकी अनन्त नेमतों के वर्णन के साथ बयान फ़रमाया है। फिर पुन: और भी स्पष्टता के साथ फ़रमाया कि यह वही हक़ (सच)के खुलने का दिन है जिसका क़ुरआन में "अल-यौमुल हक़" अर्थात् क़यामत नाम है। जिसको हर सत्यनिष्ठ विद्वान जानता है। अब ध्यानपूर्वक देख कि ख़ुदा तआला ने किस तरह खोलकर बयान कर दिया है कि यह वर्णन क़यामत से सम्बन्धित है। अब ग़ौर कर कि जिनके दिलों में टेढ़ापन है वे न तो ख़ुदा से डरते हैं

और न ही संयमी हैं और वे कैसी मनगढ़त बातें कर रहे हैं। सारांशत: यह कि यह आयत इस आलोचक के विचारधारा की कुछ भी सहायता नहीं करती बल्कि यह तो उसकी बात का पूर्णत: खण्डन करती है और इसके साथ यह बात उसी पर पड़ती है और यह आयत उसी को झूठा ठहराती है। क्योंकि इस आलोचक का यह कहना है कि ईसा ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा है और कहता है कि रूह ख़ुदा को ही कहते हैं और रूह और ख़ुदा दोनों एक ही चीज़ के नाम हैं। जबकि यह आयत स्पष्ट कर रही है कि यह उसका झूठ है और यह भी स्पष्ट कर रही है कि वह रूह जिसका इस जगह वर्णन है वह एक असहाय व्यक्ति है जिसको ख़ुदा के किसी काम में इख़्तियार नहीं। वह केवल फ़र्मांबर्दार (आज्ञापालक) है और यह भी स्पष्ट करती है कि उस रूह को शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने का अधिकार नहीं। शफ़ीअ (सिफ़ारिश करने वाला) वही होगा जिसको ख़ुदा तआला की ओर से आज्ञा मिले। क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस आयत-

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ قَالَ صَوَابًا (सूर: अल् नबा- 78/39)

में स्पष्ट रूप से फ़र्मा दिया है कि उस दिन अर्थात् क़यामत के दिन रूह और फ़रिश्ते खड़े होंगे और ख़ुदा तआला की ओर से बिना आज्ञा के शफ़ाअत के बारे में कोई बोल नहीं सकेगा अर्थात् कोई अपात्र शफ़ाअत सिफ़ारिश न करे। और इस आयत عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا (असा अंय्यबअसका रब्बुका मक़ामम् महमूदा) (सूर: बनी इस्राईल- 17/80)

में यह संकेत किया गया है कि अल्लाह तआला यह मक़ाम-ए-महमूद (प्रशंसित स्थान) अपने मनोनीत नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त और किसी को प्रदान नहीं करेगा और ख़ुदा ने मुझे बताया है कि इस आयत में रूह के शब्द से तात्पर्य रसूलों नबियों और मुहद्दसीन (अर्थात् अवतारों और ऋषियों, मुनियों) का गिरोह है जिनके दिलों में रूहुलक़ुदुस (अर्थात् जिब्राईल) उतरता है और वे ख़ुदा तआला से बातें करते हैं। लेकिन यह शक कि उनको रूह के शब्द से याद किया रूहों के शब्द से क्यों नहीं। तो इसके उत्तर में तुम्हें ज्ञात हो

कि क़ुरआन के वर्णन की शैली ऐसी है कि वह कभी एक वचन शब्द से बहुवचन तात्पर्य लेता है और कभी बहुवचन से एक वचन। यह क़ुरआन शरीफ़ की एक स्थायी शैली है और ख़ुदा तआला ने अपने नबियों (अवतारों) का रूह के नाम से वर्णन किया है अर्थात् ऐसा शब्द जो भौतिकता से बिल्कुल अलग-थलग पर संकेत करता है और यह इसलिए किया ताकि वह इस बात की ओर संकेत करे कि वे पवित्र लोग अपने इस सांसारिक जीवन में अपनी समस्त शक्तियों की दृष्टि से ख़ुदा की इच्छा और आदेशों में लीन हो गए थे और अपनी काम-वासनाओं से ऐसे बाहर आ गए थे जैसे कि रूह शरीर से बाहर आती है। फिर न उनका मन बाक़ी रहा, न उनकी मर्ज़ी। वे रूहुलक़ुदुस के बुलाए बोलते थे न कि अपनी इच्छा से। मानो वे रूहुलक़ुदुस ही हो गए थे जिसके साथ मन का लेशमात्र अंश नहीं। फ़िर जान कि सारे नबी (अवतार) एक ही जान की तरह हैं और यह नहीं कह सकते कि वे कई रूह हैं, बल्कि यह कहना चाहिए वह एक ही रूह है, और यह इसलिए कि उनमें रूहानी तौर पर उच्चकोटि की एकरूपता पाई जाती है और उनमें जौहर-ए-ईमानी (अर्थात् विश्वास) का अनुपात बहुत उँचा होता है। यह इसलिए है कि उन्होंने अपनी सारी सांसारिक भावनाओं को त्याग दिया मानो वे अपने जज़्बात से पूरी तरह मर गए और उनमें रूहुलक़ुदुस के अलावा कुछ शेष न रहा और सब चीज़ों से नाता तोड़कर ख़ुदा तआला से जा मिले। अत: ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस आयत में उनके वैराग्य और पवित्रता (अर्थात् सांसारिक त्याग और तपस्या) के स्थान को प्रकट करे और बयान करे कि वे तन और मन के मैलों से कितने दूर हैं। इसलिए उसने उनका नाम रूह अर्थात् रूहुलक़ुदुस रखा। ताकि इस शब्द से उनकी शान की बड़ाई और दिल की पाकीज़गी प्रकट हो जाए और क़यामत के दिन अवश्य वह इस उपाधि से पुकारे जाएँगे ताकि ख़ुदा तआला उनके सांसारिक त्याग के स्तर को लोगों पर प्रकट करे और पुनीतों और पापियों में अन्तर करके दिखलावे। ख़ुदा की क़सम यही बात सच है। तुम क़ुरआन करीम को ध्यानपूर्वक पढ़ो और जल्दबाज़ी से इन्कार मत करो। परन्तु ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में तो तू अच्छी तरह जानता है कि क़ुरआन उनका नाम ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा नहीं रखता, बल्कि उसको उन समस्त बातों से रहित

ठहराता है जो उसके बारे में अतिशयोक्ति या अल्पोक्ति के रूप में कहे गए थे और प्रमाणों से सिद्ध करता है कि वह ख़ुदा का एक प्यारा भक्त है और एक स्थान पर फ़रमाता है कि ईसाई कहते हैं-

وَ قَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ-------وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ

(सूरः अल् अम्बिया - 21/27-30)

कि ईसा ख़ुदा का बेटा है, हालाँकि ख़ुदा बेटों से रहित है बल्कि ये तो प्रतिष्ठित भक्त हैं और उनमें से जो यह कहे कि ख़ुदा के अलावा मैं भी ख़ुदा हूँ तो ऐसे व्यक्ति का दण्ड नर्क होगा और हम इसी तरह अधर्म करने वालों को दण्ड दिया करते हैं। क़ुरआन ने "ज़ालिमीन" शब्द के साथ "मिन दूनिही" शब्द की जो शर्त लगा दी है और कहा है कि जो व्यक्ति यह कहे कि मैं ख़ुदा के अतिरिक्त एक ख़ुदा हूँ तो यह "मिन दूनिही" अर्थात् अतिरिक्त की शर्त इसलिए लगाई है ताकि उन लोगों को ज़ालिम (अर्थात् अन्यायी और अधर्मी) होने वाले गिरोह से अलग रखे जिनके दिलों को उनके सच्चे दोस्त (अर्थात् ख़ुदा) ने अपनी ओर खींच लिया और उनके दिलों में बेचैनियाँ पैदा कर दीं। यहाँ तक कि उनके दिलों पर अन्तर्ध्यान, आनन्द और अनुरागियों का सा नशा छा गया और संसार त्याग की स्थिति और इलाही प्रेमाकर्षण के समय उनके मुँह से कुछ ऐसी बातें निकल गयीं और कुछ घटनाएँ उन पर ऐसी घटीं कि वे ख़ुदा से प्रेमाधिक्य के नशे में बेहोशों की तरह हो गए। इसलिए कुछ ने इस प्रेमाधिक्य की स्थिति में कहा कि मैं ख़ुदा के वेष में हूँ और कुछ ने कहा कि मेरा यह हाथ ख़ुदा का हाथ है और कुछ ने कहा कि मैं ही ख़ुदा का रूप हूँ जिसकी ओर तुम ध्यानाकर्षित हो, और मैं ही ख़ुदा का दिल हूँ जिसको तुमने छोटा समझा और कुछ ने कहा कि मैं ही कहता हूँ और मैं ही सुनता हूँ और मेरे सिवा दुनिया में कौन है और कुछ ने कहा कि मैं ही ख़ुदा हूँ। अतः यह सारे ख़ुदा के प्रेम में लीन ऐसे लोग हैं जिनके बारे में क़लम कुछ भी लिखने में असमर्थ है। क्योंकि वे ख़ुदा से अपार प्रेम में डूबकर बोले हैं न कि अभिमान और अहंकार से, और प्रेम की मस्ती और ख़ुदा की चाहतों ने उन्हें ढाँप लिया। अतः यह बातें संसार त्याग और ख़ुदा के

अपार प्रेम में डूबने से निकलीं न कि अहंकार में डूबकर, और ख़ुदा के सिवा वे किसी की चौखट पर नहीं झुके बल्कि ख़ुदा तआला में डूब गए। इसलिए इन शब्दों से उन पर कोई भर्त्सना नहीं, और उनकी इन बातों का अनुसरण ठीक नहीं और न यह उचित है कि उनकी बराबरी की इच्छा की जाए। यह बातें अन्तर्ध्यान योग्य हैं न कि बयान करने योग्य। ख़ुदा तआला उन्हें पकड़ता है जो जानबूझकर अपनी ओर से ऐसी बातें करते हैं।

और मुझे ईसाइयों पर आश्चर्य है, और हद से बढ़ने वालों पर कोई आश्चर्य भी नहीं, वे इक़रार करते हैं कि ईसा ख़ुदा का बन्दा और आदम की सन्तान था और कहा करता था कि मैं ख़ुदा का बन्दा और उसका रसूल हूँ और लोगों को एक ख़ुदा की इबादत की ओर प्रेरित करता था और ख़ुदा का साझीदार ठहराने से डराता था और विनम्रता उसमें इतनी थी कि उसने कहा कि मुझे नेक मत कहो। फिर यह लोग उसको ख़ुदा तआला का साझीदार ठहराते हैं और उसको रब्बुल आलमीन समझते हैं, और जो कहते हैं सो कहते हैं, क़यामत के दिन से भी नहीं डरते और यह समझ रहे हैं कि मसीह उनके गुनाहों के लिए सूली पर मरा और लानती हुआ और उनकी मुक्ति के लिए गिरफ़्तार और दण्डित हुआ, और लोगों ने बाप को अपने गुनाहों के कारण ग़ुस्सा दिलाया। बाप कठोर हृदय और शीघ्रकोपी था, दया और उपकार की आदत उसमें न थी। बल्कि ग़ुस्से से आग की तरह भड़का हुआ था और उसने चाहा कि लोगों को नर्क में डाले तो बेटा बद्कारों पर दया करके सिफ़ारिश के लिए खड़ा हो गया। चूँकि बेटा विनम्र, दयालु और नेक था इसलिए उसने अपने बाप को प्रकोप और ग़ुस्सा करने से रोका लेकिन बाप अपने इरादों से न रुका तो बेटे ने कहा कि हे बाप ! यदि तू यही चाहता है कि लोगों को तबाह करे और किसी तरह उनको क्षमा नहीं करता और न उन पर दया करता है तो मैं सारे लोगों के पाप अपने ऊपर ले लेता हूँ। इसलिए तू इनको क्षमा कर दे और जो इनको दण्ड देना है वह मुझे दे दे। इस बात से प्रकोपित बाप राज़ी हो गया और उसके आदेश से बेटे को सूली दे दी गयी, ताकि पापियों को छोड़ दिया जाए। उस निर्दोष पर पापियों की तरह प्रकोप ढाया गया। यह वे बातें हैं जो ईसाई कहते हैं। लेकिन बाप पर आश्चर्य है कि वह अपने बेटे को

सूली देते समय उस बात को भूल गया जो उसने तौरैत में कहा था कि मैं उसी को दण्डित करूँगा जो मेरी अवज्ञा करेगा और मैं एक की जगह दूसरे को नहीं पकड़ूँगा। अत: उसने वचन को तोड़ा और वादे के ख़िलाफ़ किया और पापियों को छोड़ दिया और ऐसे आदमी को दण्ड दिया जिसने कोई पाप नहीं किया था। शायद वह अपना पहला वचन बुढ़ापे और कमज़ोरी के कारण भूल गया, क्योंकि वयोवृद्ध था।

और बेटे पर यह आश्चर्य है कि वह अच्छी तरह जानता था कि बड़े-बड़े लोगों का गिरोह आम लोगों की तुलना में पापों में बहुत आगे बढ़ गया है और वे सीधा रास्ता नहीं अपनाते बल्कि अन्याय और अत्याचार में हद से ज़्यादा बढ़ गए हैं। फिर उसने उनके बारे में सुस्ती से काम लिया और उनकी हमदर्दी की ओर कुछ ध्यान न दिया और न चाहा कि उसके कफ़्फ़ार: से बड़े-बड़े लोगों का गिरोह लाभ उठाए और उनको उस रोज़-रोज़ की सज़ा से मुक्ति मिले जो उनके लिए तैयार की गयी है। अत: उसकी सूली की मौत ने बड़ों-बड़ों को कुछ भी फ़ायदा न दिया। हालाँकि वे उस पर ईमान लाते थे जैसा कि इस खुले-खुले बयान पर इंजील गवाही दे रही है। ऐसा लगता है कि बेटे ने अपने इस कफ़्फ़ार: की मेहमानी की तरफ़ उन पापियों को नहीं बुलाया और कंजूसों की तरह देर की। यह भी हो सकता है कि बाप का कोई दूसरा बेटा हो जो बड़े-बड़े लोगों के लिए सूली पर चढ़ाया गया हो। बल्कि यह तो अनिवार्यताओं में से है कि ऐसा ही हो, क्योंकि जब एक बेटा साधारण लोगों के लिए जो थोड़े से हैं सूली दिया गया हो तो कितना अनिवार्य है कि एक दूसरा बेटा बड़े-बड़े लोगों के लिए जो पाप और संख्या की दृष्टि से साधारणों की अपेक्षा अधिक हैं उनके लिए सूली पर चढ़ाया जाए। अन्यथा अकारण एक को दूसरे पर प्रधानता देना ठहरेगा और बाप एवं बेटों का तंगनज़र होना सिद्ध होगा। और यह स्पष्ट है कि एक क़ौम की मुक्ति की चिन्ता करना और दूसरी क़ौम को नज़रअंदाज़ करना खुला-खुला अन्याय और घोर अत्याचार है। बल्कि इससे तो बाप की मूर्खता सिद्ध होती है। क्या उसको ज्ञात नहीं था कि पापी गिरोह दो हैं केवल एक नहीं। इसलिए दो गिरोहों के लिए केवल एक बेटे को सूली देना पर्याप्त नहीं बल्कि व्यापक रूप से यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब दो बेटों को सूली दी जाती। यह बात

कहने योग्य नहीं कि बेटा तो केवल एक ही था और वह यही पसन्द करता था कि वह साधारण लोगों के लिए सूली पर चढ़ाया जाए और उसके अतिरिक्त कोई दूसरा बेटा न था जो बड़े-बड़े लोगों के लिए सूली पर चढ़ाया जाता। इसके जवाब में हम कहते हैं कि बाप तो इस बात पर समर्थ था कि वह इस बात के लिए कोई और बेटा पैदा करता जैसा कि उसने पहला बेटा पैदा किया। इससे स्पष्ट है कि उसने बड़े-बड़े लोगों के गिरोह को भूल से या जानबूझकर रोज़-रोज़ के अज़ाब में छोड़ा या केवल तंगनज़री से उनके लिए दूसरे बेटे को सूली पर न चढ़ाया। इसके अतिरिक्त यह भी गुमान हो सकता है कि शायद छोटा बेटा बड़े बेटे से अधिक प्यारा हो। बुद्धिमानों के निकट यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि कभी-कभी यह भी संयोग होता है कि छोटा बाप को बड़े से अधिक प्रिय होता है। अत: तू इस बात पर सोच-विचार कर कि उनका माबूद (उपास्य) बेटे और बेटियों वाला है और हमारा ख़ुदा इन बातों से रहित है जो अन्यायियों के मुँह से निकलती हैं।

इसके बाद हम देखते हैं कि इन्सानों में से ख़ुदा का पहला बेटा तो आदम था और ईसाइयों की इंजीलें इस बात को स्वीकार करती हैं। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट है कि वरिष्ठता (बड़प्पन) तो पहले आने वाले को मिलती है न कि उसे जो नक़ल करने वालों की तरह बाद में आए और पहले की बराबरी की कोई बात न कहे। ख़ुदा ने तो आदम को अपने हाथ से अपनी आकृति के अनुसार पैदा किया था और उसमें अपनी विशेष मुहब्बत की रूह फूँकी थी मगर मसीह तो बुनियाद की पहली ईंट नहीं थे, बल्कि वह तो आख़िरी लोगों में आए और बाद में आने वालों में से कहलाए। फिर आश्चर्य यह है कि ईसाइयों के ख़ुदा ने बेटा तो पैदा किया लेकिन बेटी कोई न पैदा की। मानो उसने दामादों का होना पसन्द न किया और यह न चाहा कि कोई विजातीय उसका दामाद हो या अपने जैसा कोई प्रतिष्ठित न पाया कि जिसको लड़की दे। अब बताओ क्या ईसाइयों के अक़ीदों के अजूबा की तरह कोई और भी अजूबा है या उनकी तरह तूने किसी और को भी घोर अन्धकार में चलते देखा है? जिसने ईसाइयों को इस अक़ीदे की ओर खींचा उसका मुख्य कारण उनका सांसारिक ऐश्वर्य में डूबना और उसके साथ-साथ तरह-तरह के गुनाह और

गन्दी सोच के साथ स्वर्ग की नेमतों का शौक़ है। तू जानता है कि लालच इन्साफ़ की आँख को बन्द कर देता है और लालची एवं जल्दबाज़ ऊँच-नीच कुछ नहीं देखता और उस रेत (मरीचिका) की ओर तेज़ी से भागता है जो पानी की तरह दिखाई देती है और एक झूठे की बात को सुनकर भरोसा कर लेता है और जब उस रेत पर पहुँचता है तो चिलचिलाती धूप से गर्म रेगिस्तान के अतिरिक्त और कुछ नहीं पाता। तब उस समय प्यास की आग भड़कती है और उस पर भेड़ियों की तरह हमला करती है और उसका दिल ऐसा जलता है जैसे कि कपड़े को आग लग जाती है। फिर वह बेचैन होकर ज़मीन पर गिर पड़ता है और उसकी रूह चिड़िया की तरह उड़ जाती है और मुर्दों से जा मिलती है।

अत: उन लोगों का उदाहरण जो अपनी मूर्खता और मूढ़ता के कारण कफ़्फ़ार: पर अड़े बैठे हैं उन मूर्खों की तरह है जो मूर्ख ईसाइयों का एक गिरोह था और ऐसा संयोग हुआ कि वे अधिक संतान और आय की कमी के कारण ऐसे परेशान हुए कि ग़रीबी ने उनको घास की तरह काट दिया और ज़मीन उनका बिछौना बन गई और घास-पात खाने पर मजबूर हो गए और मारे भूख के उनके चेहरे बूढ़ों जैसे हो गए और अपनी भूख और ग़रीबी से वे बहुत तंग आ गए। दुर्भाग्य से उनके लिए यह संयोग हुआ कि एक दुबला-पतला बूढ़ा उनके पास आया जिसके षड़यन्त्रों का जाल बहुत घना था। वह प्रतिष्ठित और सम्मानित नहीं था बल्कि उसमें मोहताजी और ग़रीबी के लक्षण स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। उसकी फटी-पुरानी जूती और पुरानी चादरें बतला रही थीं कि वह किस हैसियत का आदमी है। अत: वह इन ईसाइयों के घर में प्रवेश हुआ ऐसी हालत में कि उसके पास दो पुरानी चादरें थीं और हाथ में तस्बीह, जैसा कि ईसाई पादरियों के हाथ में हुआ करती है। वस्तुत: वह एक मोहताज और परेशानहाल आदमी था जो बहुत ग़रीब हो चुका था। यहाँ तक कि उसका रंग पीला पड़ चुका था और कमर झुक गई थी और जगह-जगह से कपड़े फटे हुए थे जिनको वह छुपा नहीं सकता था और उसकी हालत बता रही थी कि उसको थोड़ी सी भी बड़ाई और तरक़्क़ी हासिल नहीं और वह एक मुसीबत में है और इसी हालत में वह उनकी मंडली में दाख़िल हुआ और बातें बनाने लगा, ताकि अपनी झूठी और

लच्छेदार बातों से उनको धोखा दे। अत: उसने पहले तो सलाम किया फिर बातचीत शुरू की और कहा कि, क्या मैं तुम्हें एक ऐसे फ़ायदे का ढंग बताऊँ जो तुम्हें तंगी की हालत से मुक्ति दे और तुम उससे बड़ी धन-दौलत वाले हो जाओगे और तुम्हारे पास बड़े-बड़े बाग़ होंगे और शाही कपड़ों में घूमोगे और रुपयों से अपनी सन्दूक़ इस तरह भरोगे जिस तरह हौज़ों में पानी भरा होता है फिर तुम बड़े धनाढ़य में हो जाओगे। अत: इस तरह वे अपनी मूर्खता और लालच से दज्जाल (छलिया गिरोह) से धन-दौलत लेने के लिए ललचाए और उससे कहा कि आपका स्वागत है, आइए और हमें ऐसी राह बताइए। हम वही करेंगे जो आप कहेंगे और जिस जगह हाज़िर होने को कहोगे, हाज़िर हो जाएँगे। हमको आप आज्ञापालक और शुक्रगुज़ार पाओगे। फिर क्या था यह बातें सुनकर वह धोखेबाज़ बहुत ख़ुश हुआ और समझा कि षड़यन्त्र चल गया और शिकार मारा गया और वे मूर्ख उसके जाल में फँस गए और उसके झाँसे में आ गए और उसकी मीठी-मीठी बातें सुनकर उसके जाल के नीचे आ बैठे। फिर वह कहीं से कहीं लगाकर झूठी बातें सुनाने लगा और कहने लगा कि मुझे क्या हो गया है कि मुझे तुम पर बड़ी दया आती है। शायद ख़ुदा तआला ने मेरे बताए हुए रास्ते में तुम्हारी कुछ क़िस्मत लिखी है और मेरे घर में तुम्हारी आवभगत लिखी है और शायद ख़ुदा तआला ने चाहा है कि तुमको धनवान् बना दे। मुझे पहले से ज्ञात है कि तुम लोग कुलीन और बड़े ख़ानदान के लोग हो और बड़े-बड़े प्रतिष्ठित और धनवान् लोगों की सन्तान हो और अब मैं तुमको ग़रीबी की हालत में देख रहा हूँ। इसलिए मेरे दिल में डाला गया कि मैं तुम पर दया और उपकार करूँ और तुम्हारी हमदर्दी के लिए खड़ा हो जाऊँ और तुम्हारी मुसीबतों को दूर करूँ। मेरा स्वभाव इसी तरह का बना है क्योंकि नेक आदमी वही होता है जो लोगों को फ़ायदा पहुँचाए और ग़रीबों की मदद करे। तुम शीघ्र ही मेरे दावे की टहनी का फल खाओगे और मेरे फल की मिठास तुम्हें पता लग जाएगी। मैं सच्चा हूँ इसलिए तुम इस खाने को जो आसमान से उतरा है ख़ूब पेट भरकर और मज़े से खाओ और इस दौलत की ओर ध्यान दो जिसने तुम्हारी ओर आने का इरादा किया है और इस मुफ़्त माल को शुक्रगुज़ारी के साथ ले लो।

इसलिए अब अपने घरों की ओर जल्द जाओ ताकि तुमको तुम्हारी आज्ञापालन का फल मिले और मेरे पास वह सब माल ले आओ जो तुम्हारे पतन का कारण है अर्थात् जो सोने चाँदी के गहने तुम्हारे पास हैं, और अपने पड़ोसियों और मित्रों के भी गहने ले आओ और अपने घरों में कुछ न छोड़ो और जल्द वापिस आ जाओ। मैं उन गहनों पर एक मंत्र पढ़ूँगा और कुछ घंटों तक यह करता रहूँगा यहाँ तक कि गहनों में बढ़ने का एक जोश पैदा होगा और हर इक गहना फूलेगा और बढ़ेगा और उनका बढ़ना स्पष्टत: ज्ञात हो जाएगा। यहां तक कि वह गहना सौ गुना हो जाएगा और उस पर बड़ी -बड़ी बरकतें नाज़िल होंगी जिसे देखने वाले आश्चर्य में पड़ जाएँगे।

इस बात पर आश्चर्य मत करो क्योंकि यह भी एक ऐसा ही रहस्य है जैसे कि तस्लीस। इसलिए तुम फ़िलास्फ़रों की तरह इसके प्रमाण मत पूछो। काम अजीब है और समय बहुत थोड़ा है। इसके बाद तुम बड़े मालदार और ऐशोआराम वाले हो जाओगे। वे लोग इस झूठे और धोखेबाज़ की बात पर धोखा खा गए और इस छल को तस्लीस के रहस्यों में से समझा, क्योंकि मूर्खता के गधे ने उनको ज़ोरदार लात मारी और लालच की तलवार ने उनको दो टुकड़े कर दिया। फिर क्या था एक गुमराही ने उनको दूसरी गुमराही में डाल दिया और एक अंधकार से दूसरे अंधकार में जा पड़े। फिर उसकी ओर ऐसे झुक गए जैसा कि वे ईसाई अक़ीदों की ओर झुके थे और कहा कि हम तेरी बात का इन्कार नहीं करते तथा तेरे एहसान का बखान नहीं छोड़ेंगे। तू मुक्ति देने वाले फ़रिश्तों की भाँति हमारे लिए प्रकट हुआ। फिर वे लोग अपने घरों की ओर इस सोच के साथ चल पड़े कि जीविका का साधन हो जाए और ख़ुश्क ज़मीन लहलहाने लगे। उन्होंने कुछ सोच-विचार न किया और न ही क़दम बढ़ाने में कुछ देरी की, बल्कि उनमें से हर एक ने जल्दी की ताकि उससे सोना ले आवे और इसके अतिरिक्त कुछ और धन-दौलत हासिल करे। वे अपनी लालच के नशे में दीवानों की तरह हो रहे थे। फिर जब वे अपने घरों को ख़ुशी-ख़ुशी आए तो घर में घुसते ही कहने लगे गुड मॉरनिंग, फिर उनको सारी बात बतायी और हँस-हँसकर मुबारकबाद दी। फिर उन लोगों ने जो मूर्खता और पथभ्रष्टता में उन्हीं के समान थे उनकी बातों को सही ठहराया और ख़ुशी के मारे गाने लगे। फिर

उन्होंने अपनी औरतों के शरीर और नौकरानियों के कानों और लड़कियों के नाकों और बहनों के हाथों और माँओं के पैरों से गहने उतारे और इस पेशे में उन लोगों को भी शामिल कर लिया जो उनके मित्रों की औरतें और परिचितों की पत्नियाँ थीं बल्कि अपने पड़ोसियों की औरतों और हमपल्ला लोगों की कुँवारी लड़कियों को भी इसमें शामिल किया। फिर उन औरतों को ऐसी हालत में छोड़ा जैसे कि पेड़ों से फल उतार लिया जाता है और हर इक अपने घर को हथेली की तरह सफ़ाचट करके इस लालच से ख़ुशी-ख़ुशी वापिस आए कि माल बढ़ेगा और बहुत आराम होगा। फिर उस छलिया के आगे सारा ज़ेवर डाल दिया और ऐसा करते हुए वे बहुत ख़ुश थे। जब उस षड़यन्त्री ने देखा कि उसका थैला भर गया और उसकी भूख ख़त्म हो गई और इनकी मूर्खता और मूढ़ता देखी तो बहुत ख़ुश हुआ और अपने आप को एक बहुत बड़ा धनाढ्य समझा और कहने लगा कि मैं जानता हूँ कि तुम लोग बड़े ही सौभाग्यशाली हो और उनमें से हो जो कामयाब होते हैं और निकट ही तुम अपने काम का फल पाओगे और अपने ऊँट पर ख़ुशी-ख़ुशी इतराकर सवार होगे और हमेशा मुझे याद रखोगे।

फिर कहने लगा कि हे नेकों की टोलियो और इस देश की संतानो! आप नि:सन्देह समझो कि यह काम रहस्यों में से है और दूसरों से इसका छुपाना अनिवार्य है। और इस बढ़ोत्तरी के लिए जो मैंने तुम्हें बताया है यह शर्त है कि यह (मंत्र) अकेले में बैठकर किसी ऐसे जंगल के किनारे किया जाए जहाँ नहर भी हो। माहिरों (अभ्यस्तों) ने मुझे ऐसा ही सिखाया है। अब क्या आप लोग मुझे अनुमति देते हैं कि मैं वैसा ही करूँ और टीलों की तरह सोने को बढ़ाकर तुम्हारे पास वापिस लाऊँ ताकि तुम वह माल लेकर अपने सगे-सम्बन्धियों के पास जाओ जिसे किसी आँख ने न देखा हो? निकट ही तुम ढेरों ढेर सोना और ख़ूबसूरत माल देखोगे और मुक्ति (नजात) देने में मसीह के कफ़्फ़ार: के अतिरिक्त इसका कोई उदाहरण नहीं पाओगे। तुम्हारे दीन (धर्म) के लिए तो मसीह का कफ़्फ़ार: काफ़ी है और तुम्हारी दुनिया के लिए यह धनाढ्यता पर्याप्त है। इसलिए अब तुम दोनों लोकों में परिश्रम और प्रयास करने से मुक्त हो गए। उन्होंने कहा हम तेरी बात स्वीकार करते हैं और हमारे दिल

तेरे पास हैं, आज तू हमारी दृष्टि में प्रतिष्ठित और ईमानदार आदमी है। यह सुनकर उसने कहा, शाबाश! शीघ्र ही तुम पर ख़ुशी के दरवाज़े खुलेंगे और तुम्हें दौलत की कुंजियाँ दी जाएँगी बल्कि मैं तुम्हें यह मंत्र भी सिखला दूँगा ताकि मेरे न रहने पर तुम्हें कोई बेचैनी न हो और तुम्हें एक ऐसी महान सरकार मिले जो बहुत प्रतिष्ठित है और एक ऐसा देश मिले जिसका अन्त नहीं। उन्होंने कहा कि हमारे पास तेरा शुक्र अदा करने की ताक़त नहीं है, तू सब एहसान करने वालों से बढ़कर है। उसने जवाब में कहा कि तुम नि:सन्देह समझो कि यह मंत्र मैंने तुमसे पहले किसी को नहीं सिखाया और न तुम्हारे बाद किसी को सिखाऊँगा। फिर उन्होंने उससे इस विशिष्टता का राज़ जानना चाहा और इस चमक-दमक के सीमित रखने की युक्ति पूछी तो उसने उस अक़्नूम☆ की क़सम खाई जो पापी को पाप से मुक्ति देता है और कहा कि वह इस आदत में अक़्नूम-सानी (अर्थात् रूहुलक़ुदुस-अनुवादक) के समान है। जैसे दूसरे अक़्नूम ने हज़रत ईसा से पहले किसी और से सम्पर्क नहीं किया न बाद में करेगा। उसी तरह उसने इस क़ौम से यह सम्पर्क किया और कहा कि मैंने अक़्नूम-सानी के समान होकर तुम्हें मसीह की तरह अपने प्रेम से विशिष्ट कर लिया है। फिर उसने अपना दामन समेटा ताकि बाज़ की तरह उड़ जाए। फिर उसने चले जाने की नीयत से रात गुज़ारी और ऐसी सुबह की कि कभी कव्वे ने भी न की होगी और भागने के समय उनको कहने लगा कि हे शहरों के सरदारो और अंग्रेज़ों (अर्थात् अंग्रेज़ पादरियों) के प्रतिष्ठित लोगो! मैं दोपहर तक तुम्हारे पास आऊँगा। इसलिए तुम थोड़ी सी मेरी प्रतीक्षा करना और बेचैन मत होना, क्योंकि मंत्र बहुत लम्बा है और मंशा बहुत बड़ी है, और चाहत बहुत बड़ी है तबियत ठीक नहीं है, और दूर जाना है सर्दी बहुत है। मेरा दिल नहीं चाहता कि इस कमज़ोरी और बुढ़ापे की हालत में मैं अपने ऊपर यह मुसीबत डालूँ और मेरे शरीर में इतनी ताक़त भी नहीं कि इतनी लम्बी यात्रा कर सकूँ और मैं दुनिया के सारे काम छोड़ बैठा हूँ और मुझे इसके अतिरिक्त कुछ अच्छा नहीं दिखाई देता कि मसीह को याद करता रहूँ जो समस्त लोकों का पालनहार है।

☆**अक़्नूम** (ईसाइयों की आस्थानुसार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीन अक़्नूम कहलाते हैं)

लेकिन मैंने तुम्हारे लिए यह तकलीफ़ उठाई। क्योंकि मैंने तुम्हें शरीफ़ ख़ानदानों में से पाया और देखा कि तुम अमीरों के बचे-खुचे निशान हो और ऐशोआराम के बाद तंगी में पड़े हो और अब हम में और तुम में बहुत प्यार बढ़ गया है और मित्रता प्रगाढ़ हो चुकी है। इसलिए मेरी हमदर्दी और सहानुभूति तुम्हारे लिए उमड़ी और जोश मारी और तुम्हारे सौभाग्य और शुभ नक्षत्र ने मुझे अपनी ओर खींच लिया। इसलिए मैंने चाहा कि तुम्हें बादशाहों की तरह बना दूँ। मैं बहुत जल्द ताज़ा चुना हुआ मेवा तुम्हारे पास लेकर आऊँगा। इसलिए हृदयाभिलाषी होकर मेरी प्रतीक्षा करते रहो। शीघ्र ही तुम सोने और चाँदी के ऐसे जलवे देखोगे जैसे कि एक सुन्दर अप्सरा सामने आ जाती है। अत: वह यह कहकर उन्हें धोखे में छोड़कर चला गया और उन्होंने यह न समझा कि वह धोखा देकर भाग गया है। इधर इच्छापूर्ति के भ्रम में वे बहुत खुश हुए और उसी जगह ठहरकर इस तरह प्रतीक्षा करते रहे जैसे कि ईद के चाँद की प्रतीक्षा की जाती है और उसकी ऐसी प्रतीक्षा करते रहे जैसे कि एक मित्र दूसरे मित्र की प्रतीक्षा करता है। यहाँ तक कि सूरज ने शर्मिन्दों की भाँति अपना मुँह छिपा लिया और दुखित और शोकग्रस्त लोगों की तरह काले वस्त्र धारण कर लिए और अपने आप को धोखा खाने वालों के माल की तरह ओझल कर लिया अर्थात् आश्चर्य से मुँह ऐसा छुपाया जैसे कि शर्म से लोग मुँह छुपाते हैं। जब प्रतीक्षा की घड़ी लम्बी हो गई और उस छलिया के वादे का समय बीत गया और बहुत सा समय उन्होंने प्रतीक्षा में नष्ट कर दिया और स्पष्ट हो गया कि वह आदमी तो झूठ बोल गया है तो बड़े-बड़े ज़ेवरों की लालच और राज़ खुल जाने की चिन्ता से पागलों की तरह उसे ढूँढ़ते हुए चारों ओर दौड़े। जब उसके मिलने से क्रिस्टान (अर्थात् बनावटी तौर पर ईसाई बनने वाले-अनुवादक) मुर्दा की तरह नाउम्मीद हो चुके और रोते हुए औंधे मुँह गिरे और समझ गए कि हमें धोखा दिया गया और हमारी नाक काटी गयी और क़ौम से हम तिरस्कृत किए गए। तब उन्होंने अपने गालों पर यह कहते हुए तमॉचे मारे कि हाय हम पर अफ़सोस कि हम तो लूटे गए और धोखा दिए गए। फिर वे जंगल की ओर निकल गए और उनका चीखना चिल्लाना आसमान तक पहुँच गया। तब लोग उनकी चीख व पुकार सुनकर दौड़ते हुए उनके पास आए और उस नाज़िल

होने वाली मुसीबत और उसके जख़्म और दिलों को बेचैन कर देने वाली घटना के बारे में पूछा और उस मुसीबत और घटना का विस्तारपूर्वक कारण पूछा तो उन्होंने लोगों के लान तान और सब के सामने शर्मिन्दा होने के डर से उसे बयान न किया। इसके बावजूद वे चीख व पुकार कर रहे थे तो लोगों ने कहा कि क्या कारण है कि तुम्हारे आँसू नहीं थमते और तुम्हारा चिल्लाना कम नहीं होता, क्या तुम पर किसी दुश्मन ने अत्याचार ढाया है? तुम सच्चाई को क्यों छुपाते हो और अपने मित्रों की बेचैनी बढ़ाते हो? क्या तुम मित्रों के दर्द की जलन नहीं देखते? फिर उन्होंने नुकसान उठाने वालों तरह चीख मारी और छुपे हुए ग़म को ज़ाहिर करने से शर्म की। फिर असल बात बयान की और ग़ुस्सा ज़ाहिर किया। हालाँकि वे असल बात बताना नहीं चाहते थे लेकिन पूछने वालों की ज़िद के सामने विवश हो गए। फिर क्या था हर एक बुद्धिमान ने उन्हें शर्मिन्दा किया और हर तरफ़ से शर्मिन्दा करने वालों के तीर बरसे। फिर उन्होंने शर्म से अपने सिर झुका लिए। फिर शर्मिन्दा करने वालों से कहा, हे मूर्खो और मूढ़ों के सरदारो क्या तुम्हें पता नहीं था कि एक मोहताज तुम्हारे पास आया जिसकी शर्मिन्दगी उसके चेहरे से स्पष्ट थी और उसके पास धुएँ की तरह दो पुरानी चादरें थीं, और जिसके पास ख़ुद ही केवल दो पुरानी चादरें हों वह तुम्हें शाही कपड़े कहाँ से देता और किस तरह तुम्हारी माँगें पूरी करता? क्या तुमने उसमें ग़रीबी के निशान नहीं देखे थे? फिर तुम कैसे उसके वशीभूत हो गए, क्या तुम मनुष्य थे या जानवर? इसके अतिरिक्त उसकी यह मनगढ़त बातें भी प्रकृति के विरुद्ध थीं और ख़ुदा तआला के जारी विधान से दूर। यदि तुम बुद्धिमान थे तो कैसे उस व्यक्ति और उसकी बातों को स्वीकार कर बैठे?

तुम तथ्यज्ञानियों के अनुभवों को कैसे भूल गए? क्या तुम जानवर थे या शराब के नशे में चूर थे? तुमने कैसे समझ लिया कि वह सच्चा और अमानतदार है जबकि उसने समस्त सच्चों के विपरीत बात कही? क्या तुमने उसकी पुरानी चादरें नहीं देखीं थी? क्या तुमने छलियों के क़िस्से नहीं सुने थे? अब तुम किसी दूसरे को शर्मिन्दा न करो, बल्कि ख़ुद शर्मिन्दा हो। तुमने अपनी पत्नियों, अपने भाइयों, अपने मित्रों और अपने पड़ोसियों को तबाह कर दिया। अब चाहिए कि हर एक रोने वाला

तुम्हारी समझ पर रोए।

यह ईसाइयों और उनके कफ़्फ़ार: का उदाहरण है और उनकी मूर्खता और धोखे का नमूना। हमने पूरी निष्कपटता से मूर्खों के लिए यह नसीहत बयान की है और मसीह और उसके नेक सहाबा (सहचर) इस उदाहरण से बरी हैं। हमारा यह सम्बोधन केवल उन छलिया और बेईमान लोगों की ओर है जिनकी आदत भेड़िए की सी है और वेश-भूषा पादरियों की। उनकी विमुखता और भयानक दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है और यह स्पष्ट हो चुका है कि वे भ्रष्ट और झूठ के पुजारी हैं और उनकी सबसे बड़ी बेशर्मी यह है कि वे अपनी मूर्खता के बावजूद इस्लाम पर हमला करते हैं और लोगों को भटका रहे हैं और तरह-तरह के गुनाह फैला रहे हैं और वे दज्जाल (अर्थात् छलिया) लोग हैं। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे अपनी जल्दबाज़ी की आस्था पर शर्मिन्दा हों और अपने परलोक के घाटे से डरें। **मैं तो समस्त लोकों के प्रतिपालक की ओर से केवल एक सचेतक हूँ।**

إنّی من اللّٰہ العزیز الاکبرِ حقٌّ فھل من خائفٍ مُتدبّرِ

1-मैं उस ख़ुदा की ओर से हूँ जो सबसे महान और प्रभुत्ववान् है और यह पूर्णत: सत्य है। क्या कोई है जो ख़ुदा से डरे और सोचे!

جاءت مرابیع الھدی ورِھامُھا نزلتْ وجَوْدُ بعدھا کالعسکرِ

2-हिदायत की बहार के बादल आ गए और भीनी-भीनी वर्षा होने लगी, इसके बाद भारी वर्षा एक जनसमूह के रूप में आने वाली है।

جُعلت دیار الھند أرضَ نزولھا نصرًا بما صارت محلَّ تنصُّرِ

3-मदद हेतु इन वर्षाओं के होने का स्थान हिन्दुस्तान ठहराया गया है, क्योंकि मुसलमानों में ईसाइयत फैलने की यही जगह है।

فیھا جموع یشتمون نبیَّنا فیھا زروع من ضلالٍ مُوثَرِ

4-इस देश में ऐसे लोग हैं जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गालियाँ देते हैं और देश में गुमराही की ऐसी खेतीयाँ हैं जो पसन्द की गई है।

قوم یعادون التُّقٰی مِن خبثھم ویؤیدون أمورَ ضِدِّ تطھُّرِ

5-वे ऐसे लोग हैं जो अपनी दुष्टता के कारण सदाचारियों (संयमियों) से वैर रखते हैं

और अपवित्र बातों को फैला रहे हैं।

وتكنّستْ ذاتَ المِرار ظبيُّهمْ إذ صُلتُ عند تناضُلٍ كغضنفرِ

6-जब मैंने लड़ाई के वक़्त उन पर शेर की तरह हमला किया तो कई बार उनके हिरन मुझसे छुप गए।

منهم خبيث مفسد متفاحش أُخبِرتُ عنه وليتنى لم أُخبَرِ

7-उनमें से एक दुष्ट, अराजक, पिशुन गालियाँ देने वाला है मुझे उसके बारे में सूचना दी गयी है। काश कि वह पैदा ही न होता और उसकी ख़बर मुझे न दी जाती।

غُولٌ يسبّ نبيَّنا خيرَ الورٰى لُكَعٌ وليس بعالم متبحّرِ

8-वह एक ऐसा मूर्ख, नीच और दुष्ट पिशाच है जो हमारे सर्वश्रेष्ठ नबी को गालियाँ देता है और ऐसा नहीं है कि कोई प्रकाण्ड विद्वान हो।

يا غُولَ باديةِ الضلالة والهوىٰ تهذى هوًى مِن غير عينٍ تبصُّرِ

9-हे पथभ्रष्टता और लोभ-लालसा के जंगल के शैतान! तू केवल स्वार्थपरायणता से बड़बड़ा रहा है, तुझे विवेक और दूरदर्शिता का कुछ भी ज्ञान नहीं।

قطّعتَ قلب المسلمين جميعهم كم صارم لك يا عَبِيطُ وخنجرِ

10-तूने सारे मुसलमानों का दिल टुकड़े-टुकड़े कर दिया। हे झूठे सूरमा! हमें यह तो बता कि तेरे पास कितनी तलवारें और खंजर हैं।

إنا تصبَّرْنا على إيذائكم والنفس صارخة ولم تتصبرِ

11-हम ने तो तुम्हारे दु:ख देने पर ससंकोच सब्र किया। लेकिन रूह ख़ुदा के सामने फ़रियाद कर रही है और सब्र नहीं कर सकती।

إنا نرى فتنًا تذيب قلوبنا إنا نرى صورًا تهولُ بمنظرِ

12-हम वे फ़ित्ने (उपद्रव) देख रहे हैं जो दिलों को भयभीत करते हैं और उनके वे मुँह देख रहे हैं जो हमें डराते हैं।

جاءوا كمفترس بنابٍ داعسٍ دحسًا ككلب نابح متشذّرِ

13-वे एक शिकार करने वाले की भाँति चीरने-फाड़ने वाले नुकीले दाँतों के साथ आए, जो लोगों में फूट डालने और उपद्रव करने वाले हैं और उस कुत्ते की तरह हैं जो भौंकता है मगर मुक़ाबले के समय अपनी दुम दबा लेता है।

كانوا ذيابًا ثم وجدوا سَخْلَةً   فى البرّ منفـردًا أسيرَ تحسُّـرِ

14-वे भेड़िए थे फिर उन्होंने जंगल में एक अकेला भेड़ का बच्चा पाया जो थकावट और कमज़ोरी का मारा हुआ था।

وترى بطون المفسدين كأنها   قِربٌ بما نالـوا كمالِ تعَجُّرِ

15-और फ़ित्न: (उपद्रव) फैलाने वालों के पेटों को तू देखता है कि मानो वे पानी के मश्कीज़े हैं जिनके पेट इतने बढ़ गए हैं कि उनमें बल पड़ते हैं।

حاذت مطاياهم على أعناقنا   حتى تكسّـرنَا كعظـمٍ أنخَرِ

16-उन्होंने अपनी सवारियाँ हमारी गर्दनों पर ख़ूब दौड़ायी, यहाँ तक कि हम सड़ी-गली हड्डियों की तरह चूर-चूर हो गए।

فاض العيون من العيون كأنها   ماء جرى من عَنْدَمٍ متعصّـرِ

17-आँखों से नदियाँ बहने लगीं, मानो वह *दमुल अख़वैन*✻ का पानी है जो निचोड़ने से बह रहा है।

فنهضتُ أنصَحهم و كيف نصاحتى   قومًا أوابدَ معجَـبين كضيطَرِ

18-अत: मैं गालियाँ देने वालों को नसीहत करने के लिए खड़ा हुआ, और मेरा नसीहत करना ऐसे लोगों को क्या लाभ दे सकता है जो असभ्य, अहंकारी, नीच और अचेत की तरह हैं।

قد غُودِرَ الإسلام مِن جهلا تهم   وخلَتْ أماعزُ عن سحابٍ ممطرِ

19-मूर्ख लोगों ने उनके पैशाचिक विचारों से इस्लाम को छोड़ दिया और पथरीली ज़मीन बरसने वाले बादल से वंचित हो गयी।

شاقت قلوبَ الناس ظُعُنُ جِيائهم   فتأبّطوا بُرَحاءَهـم بتخـيُّرِ

20-बड़े-बड़े घरों की सुन्दर स्त्रियों ने लोगों के दिलों को अपनी ओर खींचा तो उन्होंने उनकी मुसीबत को जानबूझकर बग़ल में दबा लिया।

زُجَلٌ عمون منجّسو عرصاتِنا   فَجَأَتْ طوائحُهم كذِيْبٍ مُبكِرِ

21-मूर्ख लोगों के गिरोह हैं जो हमारे देश को नापाक (गन्दा) कर रहे हैं उनके हमलों के दुष्चक्र हम पर ऐसे अचानक आए जैसे कि भेड़िया सुबह-सुबह शिकार के लिए

✻ एक लाल गोंद का नाम जो अक्सर रंगने और दवा में डालने के काम आता है। अनुवादक

निकलता है।

والعين باكية وليس بكاؤنا شيئًا سِوى الفضل المنير المسفِرِ

22-आँख तो रो रही है, पर हमारा रोना उसकी विशेष कृपा के बिना कुछ चीज़ नहीं जो रौशन सुबह करने वाला है।

إن البلايا لا يـرُدُّرِ كابَـها إلا يدا مـلِكٍ قـدير أكـبرِ

23-यह ऐसी बलाएँ हैं कि उसके सवारों को उस बादशाह के हाथों के अतिरिक्त कोई नहीं रोक सकता जो सबसे बड़ा और सामर्थ्यवान् है।

إن المهيـمن لا يُضِـيع عباده فَافْرَحْ ولا تحزنْ بوقتٍ مُضجِرِ

24-ख़ुदा अपने बन्दों को कभी तबाह नहीं करेगा, इसलिए तू ख़ुश हो और ऐसे समय में ग़मगीन मत हो जो दिल को दर्द पहुँचाने वाला है।

हे ईसाइयो और हद से बढ़ने वाले अन्धो! तुमने एक विचित्र बात प्रस्तुत की है और सन्मार्ग को छोड़ दिया है। तुमने उसको ख़ुदा बनाया जो मर गया और परलोक सिधार गया, और सड़ी-गली हड्डियों की बड़ाई की, और सच्चों पर तुमने दोष मढ़े। और तुम में ऐसे भी हैं कि जब बात करते हैं तो गालियों से दिलों को ठेस पहुँचाते हैं और जब दुष्टता का जवाब न दिया जाए और न कोई नुकसान पहुँचाया जाए तो और भी रुकावट डालते हैं। अपने मुँह से तो यह कहते हो कि हमें विनम्रता सिखाई गयी है और भाईचारे की शिक्षा दी गयी है, लेकिन हम तुम में ऐसा आदमी नहीं पाते जो इस शिक्षा पर व्यवहृत हो और इन विशेषताओं से विभूषित हो। बल्कि हम तो तुमको दु:ख देने पर उतावला और शरारत करने पर तुला हुआ पाते हैं। तुम नेकों (सज्जनों) को गालियाँ देते हो और सच्चों पर लानत डालते हो और तुम्हारी नज़ाकत भरी चाल में घमण्ड भरा हुआ है और खेल-कूद और रसरंग के आशिक़ हो और ईसाई होने से तुम्हारे यही उद्देश्य हैं कि तुम्हारे तबेलों में घोड़े बँधे हों और बहुत सारी धन-दौलत मिल जाए और अहंकार से भरे हुए कपड़े पहनकर घूमो-फिरो और रोज़ी-रोटी की चिंता से मुक्त हो जाओ और तुम्हें वे सब चीज़ें मिल जाएँ जिनको तुम्हारे दिल चाहते हैं और जिनसे तुम्हारी आँखें आनन्द पाती हैं और तुम

अपनी पसन्द के चुने हुए फल बैठकर आराम से खाओ। ख़ुदा की क़सम! ईसाइयों का दुराचार दुनिया में बहुत बढ़ गया है और तरह-तरह की तबाहियों में लोगों को डाल दिया है। उनके शरीर गुनाहों के मैल से बहुत मैले हो गए हैं और उन्होंने न चाहा कि पानी का भरा हुआ मश्क उन्हें मिले। मैलों की अधिकता से वे मौत तक पहुँच गए लेकिन हम्माम (स्नान करने) की ओर ध्यान न दिया और चौपायों की तरह नंगे हो गए और ईशप्रदत्त वस्त्र (अर्थात् संयम रूपी वस्त्र-अनुवादक) की ओर ध्यान न दिया और सोने (अर्थात् चमक-दमक-अनुवादक) से प्यार किया और ईमान दिलों से निकल गया और ख़त्म हो गया। फिर क्या था दीन से नाउम्मीद होकर दुनिया पर गिरे और इसी तरह उनसे गुमराही के ज़हर फैले और ईमान की हवा थम गई। यहाँ तक कि ज़माना ऐसा हो गया जैसे कि घटाटोप काली अँधियारी रात जिसका बादल बरस रहा है। उन्होंने उस भलाई के मार्ग को छोड़ दिया जो प्रारम्भ से चला आ रहा था और मौत और बर्बादी की ओर लोगों को बुलाया। झूठ उनकी आदत बन गई और दुराचार उनका व्यवहार, और निष्पापों (अर्थात् नबियों) का अपमान करना उनकी प्रकृति बन गई और चन्दे का रुपया उनका शिकार करने के लिए जाल हो गया। वे न छोटे गुनाहों से डरते हैं न बड़े से, और न दु:साहस से बचते हैं और न पाप से। और लोगों को तरह-तरह के भ्रमों से आज़माइश में डालते हैं और ख़ुदा तआला के नबियों पर लांछन लगाते हैं और उनकी आदत यह है कि एक शिकार से दूसरे शिकार की ओर जाते हैं और एक छल से दूसरे छल की ओर बढ़ते हैं कभी औरतें दिखाते हैं और कभी चमक-दमक और सोना-चाँदी, और कभी अपने पानी की अधिकता और कभी वृक्ष, कभी फल। इसलिए अधिकतर मूर्ख उनके जाल में फँस गए और अधिकतर दुराचारी उनके गढ़े में जा गिरे और वे हर एक ऊँचाई से शिकार करने के लिए दौड़े।

أُنظُرْ إلى المتنصّرين وذاتِهِمْ وانظُرْ إلى ما بدأ مِن أدرانهمْ

1-ईसाइयों को देख और उनके दोषों को और उनकी बुराइयों को भी, जो उनसे

ज़ाहिर हुईं।

مِن كل حدب ينسِلون تشذّرًا وينجّسون الارض من أوثانهم

2- वे अपने छल की ज़ुल्म और ज़्यादतियों के साथ हर एक ऊँचाई से दौड़ पड़े हैं और अपने बुतों (मुजस्मों)★ से धरती को अपवित्र कर रहे हैं।

نشكو إلى الرحمن شرَّ زمانهم ونعوذ بالقدّوس من شيطانهم

3- हम इनके ज़माने की बुराइयों का ख़ुदा तआला से शिकवा करते हैं और इनके शैतान से ख़ुदा तआला की शरण में आते हैं।

هل مِن صَدوق يُوجدَنّ فى قومهم أم هل عرفتَ الصدق فى بلدانهم

4- क्या कोई सत्यनिष्ठ उन लोगों में पाया जाता है या तूने जाना कि उनके शहरों में सच्चाई भी है?

هم يعبدون الآدمى كمثلهم هم ينشرون الفسق فى أوطانهم

5- वे अपने जैसे आदमी की आराधना कर रहे हैं और अपने वतनों में दुराचार को फैला रहे हैं।

الماكرون الكائدون من الهوى والزور كالاثمار فى أغصانهم

6- लालच के कारण वे छलिया और धोखेबाज़ हैं और झूठ उनकी शाखों में फलों की तरह मौजूद है।

العين باكية على حالاتهم للعقل حسرات على هذيانهم

7- आँख उनके हालात पर रो रही है और बुद्धि को उनके अनर्गल आलाप पर सैकड़ों अफ़सोस हैं।

مكرٌ على مكر خيالُ قلوبهم كذبٌ على كذب بيانُ لسانهم

8- उनके दिलों में छल पर छल है और बातों में झूठ पर झूठ।

إنى أراهم كالبنين لِغُوّلِهم إن التطهر لا تحل بخانهم

9- मैं देखता हूँ कि वे अपने इब्लीस (शैतान) के लिए बेटों की तरह हैं और सच्चाई और पाकीज़गी उनके दिलों में नहीं उतरती।

كيف الرجاء وقد تأبّطَ قلبُهم شرًّا أراه دخيلَ جَذْرِ جنانهم

★अर्थात् मसीह, मरियम और कबूतर-अनुवादक

10- हम कैसे उनसे उम्मीद रखें जबकि उनके दिल दुष्टता को अपने साथ चिमटाए बैठे हैं और दुष्टता उनके दिलों में रच-बस चुकी है।

بل كذّبوا بالحق لما جاءهم وتمايلوا حقدًا على بهتانهم

11- यहां तक कि जब सत्य उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठला दिया और ईर्ष्या-द्वेष से लांछन लगाने पर तुल गए।

كم مِن سموم هبَّ عند ظهورهم كم مِن جَهول صِيدَ مِن أرسانهم

12- उनके बयानों से बहुत सी घातक हवाएँ चलीं और उनके चंगुल में फँसकर बहुत से मूर्ख शिकार हो गए।

هم أنكروا بحر العلوم بخبثهم واستغزروا ما كان فى كِيزانهم

13- उन्होंने अपनी दुष्टता से ज्ञान के सागर से मुँह मोड़ लिया और जो कुछ उनके कुल्हड़ों में था उसी को सब कुछ समझ बैठे।

لا يعلم النوكى دخيلةَ أمرهم مِن غيرِ رقّتهم ولينِ لسانهم

14- मूर्ख लोग उनके मुख्य उद्देश्य को नहीं जानते, बल्कि केवल इतना ही जानते हैं कि वे बहुत विनम्र हैं।

واللهِ لولا ضنكُ عيشٍ مُقلِقٍ ما مالَ مرتدّ إلى أديانهم

15- ख़ुदा की क़सम! अगर रोज़ी-रोटी की तंगी किसी को तकलीफ़ न देती तो कोई मुर्तद उनके दीन (मज़हब) की ओर न झुकता।

قد جاءهم قوم بحرصٍ لبانهم ولينفُضَنْ ما كان فى أردانهم

16- बहुत से लोग उनकी धन-दौलत की लालच से उनके पास आये ताकि जो कुछ उनके पास है उसे वे झाड़ लें।

كانوا كذئب البَرِّ مكلومِ الحشا مِن جوعهم فسعوا إلى عمرانهم

17- वे जंगल के भेड़िए की तरह भूख से अन्दर से टूट चुके थे इसलिए वे उनकी आबादी की ओर दौड़े।

قوم سُقوا كأس الحتوف بوعظهم قوم خَروفٌ فى يدَى سِرحانهم

18- एक क़ौम ने उनके प्रवचन से मौत के प्याले पी लिए और एक अन्य क़ौम जो मेमना (भेड़ का बच्चा) की भाँति उन भेड़ियों के हाथों में हैं।

عمّتْ بلاياهم وزاد فسادهم واشتدّ سيل الفتن من طغيانهم

19-उनका झूठ, पाखण्ड़, छलकपट इत्यादि बहुत फैल गया और उनका उपद्रव बहुत बढ़ गया, और उनकी सर्कशी से फ़ित्नों का सैलाब पूरे उफ़ान पर है।

يا رَبِّ خُذْهم مثلَ أخذِك مفسدًا قد أفسدَ الآفاقَ طولُ زمانهم

20- हे ख़ुदा! तू उनको पकड़, जैसे कि एक उत्पाती को पकड़ता है। उनकी इतनी लम्बी मोहलत ने दुनिया को बिगाड़ दिया है।

أدرِكْ رجالًا يا قديرُ ونسوةً رحمًا ونَجِّ الخَلْق من طوفانهم

21- हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! तू अपनी दया से नर-नारियों की शीघ्र सुध ले और लोगों को इस तूफ़ान से मुक्ति दे।

حلّتْ بأرض المسلمين جنودهم فسرَتْ غوائلهم إلى نسوانهم

22- उनकी टोलियाँ मुसलमानों की ज़मीन पर उतर आयीं और उनकी छलपूर्ण बुराइयों और मक्कारियों का असर मुसलमानों की औरतों तक में भी दाख़िल हो गया।

يا ربَّ أحمدَ يا إلٰهَ محمّدٍ اِعصِمْ عبادك من سموم دخانهم

23- हे अहमद के रब्ब! हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माबूद (आराध्य) अपने बन्दों को उनकी ज़हरीली हवाओं से बचा ले।

يا عونَنا انصُرْ مَن سواك ملاذنا ضاقت علينا الارض من أعوانهم

24- हे हमारे मददगार! तेरे सिवा हमारी कहाँ शरण है। हमें उन लोगों के मददगारों ने जीना मुश्किल कर दिया है।

كَسِّرْ زُجاجتهم إلهى بالصفا واعصِمْ عبادك من سموم بيانهم

25- हे ख़ुदा! पत्थरों से उनके शीशे को तोड़ दे और उनके बयान के ज़हर से अपने बन्दों को बचा ले।

سبُّوا نبيَّك بالعناد و كذّبوا خيرَ الورٰى فانظرْ إلى عدوانهم

26- तेरे नबी को जो सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ है उन्होंने दुश्मनी से गालियाँ दीं और झुठलाया इसलिए तू उनके ज़ुल्म को देख।

يا ربّ سحِّقْهم كسحقك طاغيًا وَانْزِلْ بساحتهم لهدم مكانهم

27- हे मेरे रब्ब! तू उनको ऐसा पीस जैसा कि एक बाग़ी को पीसता है और उनकी

इमारतों को ध्वस्त करने के लिए उनके अहाते में उतर आ।

يا رب مَزِّقْهم وفَرِّق شَمْلَهم يا ربِّ قَوِّدْهم إلى ذوبانهم

28- हे मेरे रब्ब! उनको टुकड़े-टुकड़े कर और उनकी मंडली को चूर-चूर कर दे, हे मेरे रब्ब! उनको उनकी विनम्रता की ओर खींच।

قد أزمعوا إضلالنا ووبالَنا فاضرِبْ مكايدهم على أبدانهم

29- उन्होंने हमें गुमराह करने और मुसीबत में डालने के लिए ठान लिया है इसलिए तू उनके षड़यन्त्र उन्हीं पर उल्टा दे।

وإذا رميتَ فإن سهمك قاتلٌ حَدٌّ كأسياف على شجعانهم

30-जब तू तीर चलाता है तो तेरा तीर संहार करने वाला तेज है और पलक झपकते ही तलवारों की भाँति उनके बहादुरों पर पड़ता है।

صِرْنا حَمولةَ جورِهم وجفائهم زُمّتْ ركاب الهجر مِن وثبانهم

31-हमने उनके ज़ुल्म व ज़्यादती का बोझ उठाया और उनके हमलों के कारण जुदाई पर मजबूरे हो गए।

لولا تَعافَيْنا تعاقُبَ سَبِّهم لرميتُ سهم النار عند عُثانهم

32-यदि हम उनकी गालियों का जवाब देना नापसन्द न करते, तो मैं उनके धुएँ के मुक़ाबले पर आग के तीर बरसाता।

ما يظلم الاشرار إلا نفسهم سترى بندم القلب عَضَّ بنانِهم

33- ज़ालिम अपने आप के सिवा किसी पर ज़ुल्म नहीं करते, तू अति शीघ्र देखेगा कि वे शर्मिन्दगी से अपनी ऊँगलियाँ काटेंगे।

ظنّوا بأن الله مخلِفُ وعده فبغوا بأرض الله من طغيانهم

34-उन्होंने सोचा कि ख़ुदा तआला अपना वादा पूरा नहीं करेगा, तभी वे ख़ुदा तआला की ज़मीन में अपनी सर्कशी(षड़यन्त्र) के कारण बाग़ी हो गए।

وقبولُ أمر الحق عارٌ عندهم صعبٌ على السفهاء عطفُ عِنانهم

35- सच को स्वीकार करना उनके निकट एक शर्म है और मूर्खों पर सच की ओर झुकाव करना बहुत मुश्किल पड़ता है।

سُودٌ كخافية الغراب قلوبهم والخلْقَ مخدوعون من لمعانهم

36- उनके दिल ऐसे काले हैं जैसे कव्वे के वे पर, जो उसकी पीठ की ओर होते हैं और लोग उनकी ज़ाहिरी चमक-दमक से धोखा खा रहे हैं।

فارَ قُبْ إذا صاحبتَهم بمحبّةٍ فتنًا بدينك عند اِسْتحسانهم

37- अत: जब तू उनकी संगति अपनाए तो तुझे उनको पसन्द करने के कारण अपने धर्म के फ़ित्नों का उम्मीदवार रहना चाहिए।

ولقد دعوتُ الرب عند تناضُلی واللّٰهُ تُرْسی عند ضرب سِنانهم

38-और मैंने अपने मुक़ाबला के समय अपने रब्ब को पुकारा, और उनके तीरों के वार से बचने के लिए ख़ुदा मेरी ढाल है।

یا مستعانی لیس دونك مَلجأی فانصُرْ وأیِّدْنا لهدم قِنانهم

39- हे मेरे मददगार! तेरे सिवा मेरी कोई पनाह नहीं, अत: तू उनके बड़े-बड़े पहाड़ों को धूल में मिलाने के लिए हमारी सहायता और समर्थन कर।

یا من یعیّرنی بموت إلٰههم أفلا ترٰی ما جَذَّ أصلَ إهانهم

40-हे वह व्यक्ति! जो मुझे केवल इसलिए कष्ट देता है कि मैं उनके बनावटी ख़ुदा अर्थात् हज़रत ईसा की मौत का क़ाइल (स्वीकारी) हूँ। क्या तू देखता नहीं कि इस आस्था ने उनकी जड़ काट दी है।

واللّٰهِ إن حیاة عیسی حیّةٌ تسعی لتُهلِك کلَّ مَن فی خانهم

41- ख़ुदा की क़सम! हज़रत ईसा के भौतिक रूप से जीवित होने का अक़ीदा (आस्था) एक साँप है और वह कोशिश करता है कि उन सबको हलाक (अर्थात् पथभ्रष्ट) कर दे जो उसकी सरॉय में हैं।

جعَل المهیمن حکمةً من عنده فی موت عیسی قَطْعَ عرقِ جِرانهم

42- ख़ुदा तआला ने इस बात में यह हिकमत रखी है, कि हज़रत ईसा की मौत के द्वारा ही उनके मज़हब का अन्त किया जाए।

کیف الحیاة و قد تُوُفِّیَ مثله حزبٌ وخیرُ الخَلق بعد زمانهم

43- यह कैसे हो सकता है कि हज़रत ईसा ज़िन्दा हों और उनसे पहले जितने नबी आए वे सारे देहान्त पा गए और वह भी स्वर्ग सिधार गया जो सबसे श्रेष्ठ था और सबसे बाद में आया।

هل غادرَ الحتفُ المفاجئ مرسلًا أم هل سمعتَ الحيّ من أقرانهم

44- क्या अचानक आ पकड़ने वाली मौत ने किसी रसूल को भी छोड़ा है, या तूने कभी सुना है कि उनके हमपल्लों में से कोई ज़िन्दा रहा?

أتغيظُ ربَّك لابن مريم حِشنةً وتحيد عن مولى إلى إنسانهم

45- क्या तू अपने रब्ब को इब्नि मरियम के लिए ग़ुस्सा दिलाता है या क्या कुछ द्वेष है, जो तू ख़ुदा से दूर होकर ईसाइयों के इन्सान की ओर जाता है।

فاطلُبْ هُداه وما أخالُك تطلبُ فَاخْسَأْ وكُنْ منهم ومن إخوانهم

46-तू अल्लाह की हिदायत को ढूँढ़ और मुझे उम्मीद नहीं कि तू ढूँढ़ेगा। अतः दूर हो, जा ईसाइयों में और उनके भाइयों में से हो जा।

يا مَن تظنّى البولَ مائًا باردًا أخطأتَ مِن جهلٍ بِإِسْتِسْمانهم

47- हे वह आदमी! जिसने पेशाब को ठण्डा पानी समझ लिया, तूने अपनी मूर्खता से ग़लती की और उन कमज़ोरों को मोटा समझ लिया।

يا ربِّ أَرِنى يومَ كسرِ صليبهم يا ربّ سلِّطْنى على جدرانهم

48- हे मेरे रब्ब! उनकी सलीब के टूटने का दिन मुझे दिखा और उनकी दीवारों पर मुझे ग़ल्बा (विजय) दे।

فإذا تكلَّمْنا فسيفُ قولُنا رمحٌ مبيد لا كمِثل بيانهم

49- जब हम तर्क दें तो हमारा तर्क एक तलवार हो और निढ़ाल करने वाला एक तीर, न कि उनके बयान की तरह।

ولقد أُمرتُ من المهيمن بعدما هاجت دخان الفتن من نيرانهم

50- जब पादरियों की आग से फ़ित्नों के धुएँ उठे तो ख़ुदा की ओर से मैं नियुक्त (आदेशित) किया गया।

ما قلت بل قال المهيمن هكذا ما جئتُهم بل جاء وقت هوانهم

51- यह मैंने नहीं कहा बल्कि ख़ुदा तआला ने इसी तरह कहा कि, मैं उनके पास नहीं आया बल्कि उनकी रुसवाई का समय आ गया है।

طورًا أحارب بالسهام وتارةً أَهوى بأسياف إلى إثخانهم

52- कभी मैं उनसे तीरों के साथ लड़ता हूँ और कभी तलवारों से उन्हें निढाल करने

की ओर बढ़ता हूँ।

بمهنّدٍ صافِ الحديد جذمتُهم وعصایَ قد أفنَتْ قُوَى ثعبانهم

53- श्रेष्ठ और अत्युत्तम तलवार से मैंने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और मेरी लाठी ने उनके साँप की सारी शक्तियों का अन्त कर दिया है।

روحی بروح الانبیاء مضمَّخٌ جادتْ علیّ الجَودُ من فیضانهم

54- मेरी रूह नबियों की रूह से महकाई गयी है और उनके उपकार का एक बड़ा बादल मुझ पर बरसा।

إنّا نرجّع صوتنا بغنائهم إنّا سُقینا من کؤوس دِنانهم

55- हम उन्हीं के गीत को सुरों के साथ गाते हैं और हम उन्हीं के प्यालों में से पिलाए गए हैं।

قوم فنوا فی سبلِ مَربَعِ ربّهم والعُمی لا یدرون مطلع شأنهم

56- वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा की राह में अपना जीवन न्योछावर कर दिया, पर अन्धे उनकी शान के उजागर करने वाले को नहीं जानते।

کم من شریر أُهلکوا بعنادهم ورأوا مُدَی نحرٍ وراء کُبانهم

57- बहुत से ऐसे दुष्ट हैं जो अपनी ईर्ष्या-द्वेष के कारण तबाह व बर्बाद किए गए और अपनी बीमारी के बाद उन्होंने ज़िबह करने वाली छूरियाँ देख लीं।

وسیُرغِم اللّٰهُ القدیر أنوفهم ویُری المهیمن ذُلَّ دایٍ خُنانهم

58- शीघ्र ही ख़ुदा तआला उनकी नाकों को मिट्टी में मिलाएगा और उनके घमण्ड को चूर-चूर कर देगा।

الیوم قد فرحوا برجسِ تنصُّرٍ والحق لا یخطو إلٰی آذانهم

59- आज वे लोग ईसाइयत की गन्दगी से ख़ुश हो रहे हैं और सच्चाई उनके कानों को सुनाई नहीं देती।

قوم تمیل مع الهوی أفکارهم وعفَتْ نقوشُ الصدق من حیطانهم

60- ये ऐसे लोग हैं जिनकी सोच स्वार्थपरायणता की ओर झुक जाती है और सच्चाई के निशान इनकी दीवारों से मिट चुके हैं।

ظهرَت کأثر السمّ ثورةُ وعظهم رحلتْ تُقاة الخَلق من إدجانهم

61- ज़हर के असर की तरह इनके भाषणों का उबाल ज़ाहिर है, इनके मक़ाम व मर्तबा से लोगों का सम्मान समाप्त हो गया है।

هل شاهدتْ عيناك قومًا مثلهم أم هل سمعتَ نظيرهم فى ذانهم

62- क्या तूने अपनी आँख से कोई और भी ऐसी क़ौम देखी है या उनकी बुराइयों में उनकी कोई दूसरी मिसाल भी सुनी है!

بطريقةٍ سنّتْ لهم آباؤهم يدعو إلى الجَهْلات صوت كِرانهم

63- इस चाल से जो उनके बाप-दादों ने अपनायी है, उनकी वीणा झूठी बातों की ओर बुला रही है।

فكأنّ أبواب المكائد كلها فُتحتْ لفتنتنا علىٰ رُهبانهم

64- मानो उन पर सारे छलकपट के द्वार इसलिए खोले गए, ताकि हमारी परीक्षा हो।

قد آثروا طرق الضلال تعمّدًا ما زاد خسران علىٰ خُسرانهم

65- गुमराही की समस्त राहों को उन्होंने जानबूझकर पसन्द किया, जिस घाटे में वे पड़े हैं उससे बढ़कर और कोई घाटा नहीं।

إن الصليب سيُكْسَرَنْ ويُدَقَّقَنْ جاء الجِيادُ وزهَق وقتُ أتانهم

66- सलीब निकट ही टूट जाएगी और टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी क्योंकि घोड़े आ गए और गधियाँ भागीं।

الكذب مجبنةٌ لكل مُباحث لكنهم تركوا حياء جنانهم

67- झूठ बोलना हर बहस करने वाले के लिए नफ़रत का कारण होता है, पर उन्होंने तो अपने दिलों से शर्म ही निकाल दी।

سمٌّ مبيد مهلكٌ فى لبنهم مَكْرٌ مُضِلٌّ الخَلقِ فى هَدَجانهم

68- उनके दूध में ज़हर है जो तबाह व बर्बाद करने वाला है और उनकी बड़प्पन दिखाने वाली चाल में एक छल है जो लोगों को पथभ्रष्ट करने वाली है।

فارْبَأْ بدينك عند رؤية وجههم واقنَعْ بشَوكٍ مِن جَنى بستانهم

69- अत: जब तू उनसे मिले तो अपने दीन(धर्म) की निगरानी रख और उनकी जन्नत के फल से विमुख होकर काँटों पर संतोष कर।

الموت خير للفتىٰ من خبزهم فاصبرْ ولا تجنَحْ إلى تَهْتانهم

70- धीर (बहादुर) के लिए मरना उनकी रोटी से बेहतर है, इसलिए धैर्य रख और उनकी एक पल की बारिश की ओर मत झुक।

و نضارة الدنيا تزول بطرفةٍ فاقنَعْ ولا تنظُرْ إلى أفنانهم

71- दुनिया की चमक-दमक एक पल में समाप्त हो जाती है, इसलिए तू संतोष कर और उनकी चमक-दमक की शाख़ों की ओर मत देख।

النار تسقط كالصواعق عندهم فتجافَ يا مغرورُ عن أحضانهم

72- आग उनके पास बिजली की तरह गिर रही है, इसलिए हे धोखा खाने वाले! उनकी गोद से एक तरफ़ हो जा।

أينَ المفرّ من القضاء إذا دنا إلّا إلى رَبٍّ مُزيلِ قِنانهم

73- ख़ुदा के निर्णय से कहाँ भागें जब वह हमारे पास आ गया, (बचाव के लिए) केवल ख़ुदा की शरण ही है जो उनके पहाड़ों को चकनाचूर करने वाला है।

يَسْبون جهّالًا برقّة لفظهم أينَ المفرّ من القضاء إذا دنا

74- वे जाहिलों (मूर्खों) को अपनी नर्मी से ग़ुलाम बना लेते हैं और अपने एहसानों से लोगों के दिल अपनी ओर खींचते हैं।

فلذا يُحِبُّ مزوِّرُ أديارَهم مِن شحّه ميلًا إلى مرجانهم

75- इसीलिए एक धूर्त अपनी लालच से उनके मोती लेने के लिए उनके गिरजाओं से प्यार करता है।

ولو انتقدتَ جموعهم فى دَيرهم لوجدتَ سقطًا شيخهم كعَوَانهم

76- यदि तू उनके गिरजाओं में उनके गिरोहों की पड़ताल करे तो उनके बूढ़े को भी ऐसा ही गिरा हुआ पाएगा जैसा कि उनके जवान।

ما الفرق بين المشركين وبينهم بل هم بنوا قصرًا على بنيانهم

77- इनमें और मुश्रिकों (बहुदेववादी) में अन्तर ही क्या है, बल्कि इन्होंने तो मुश्रिकों की बुनियाद को एक महल बना दिया।

يهوى إليهم كلُّ نِكْسٍ فاسقٍ ليبيت شَبْعانًا بلحم جِفانهم

78- हर इक नीच और दुराचारी उनकी ओर गिरता है ताकि वह उनकी शराब और गोश्त से पेट भरकर रात गुज़ारे।

فى قلبنا وجعٌ وشوكُ دعابةٍ من نَخْزِهم خبثًا وطولِ لسانهم

79-उनके ठट्ठों के कारण हमारे दिल में एक दर्द और चुभन है, क्योंकि उन्होंने अपनी दुष्टता और गालियों से हमारे दिल को दु:खाया है।

ما إنْ أرى أثر الدلائل عندهم أصبَوا قلوبَ الخلق من عِقيانهم

80- मैं उनके पास दलाइल (प्रमाण) का असर नहीं देखता, उन्होंने अपनी धन-दौलत की चमक-दमक से लोगों के दिल खींच लिए हैं।

قد عاث فى الاقوام ذئب شيوخهم حدثتْ فنون الفسق مِن حدثانهم

81- उनके बूढ़ों के बूढ़े भेड़िए ने लोगों में तबाही डाली और उनके जवानों से तरह-तरह के दुराचार फैले।

تعريسهم آثارُ عزمِ رحيلهم يُخفُون فى الاِرْدان حبلَ ظِعانهم

82- रात को जाना उनके कूच की निशानी है और उन्होंने अपनी आस्तीनों में चीज़ें बाँधने की लम्बी-लम्बी रस्सियाँ छुपा रखी हैं।

عارٌ على الفَطِن الزكيّ طعامُهم ضارٌ لخلق الله مائُ شِنانهم

83- एक स्वच्छ प्रकृति बुद्धिमान के लिए शर्म है कि उनका खाना खाए और लोगों के लिए उनकी पुरानी मश्कीज़ों का पानी नुकसानदेह है।

للمرء قربُ المؤذيات جميعها خيرٌ لحفظ الدين من قربانهم

84-अपना दीन (धर्म) बचाने के लिए इन्सान के लिए समस्त कष्टदायक पशुओं से मित्रता उनकी मित्रता से बेहतर है।

لكَ كلَّ يومٍ ربِّ شأنٌ معجِبٌ فانصُرْ عبادك ربّ فى ميدانهم

85- हे मेरे रब्ब! हर एक दिन तेरी अजीब शान है, तू अपने भक्तों की उनके मैदान में सहायता कर।

نَقنِي التضرّعَ والبكاء تصبّرًا نأوى إلى الرّحمٰن من رُكبانهم

86- हम सब्र करते हुए ख़ुदा से दुआ करते हैं और उनके सवारों (अर्थात् मंडलियों) से ख़ुदा तआला की पनाह (शरण) माँगते हैं।

لِلّٰهِ سهمٌ لا يطيش إذا رمٰى للحقّ سلطان على سلطانهم

87- (यह) ख़ुदा का वह तीर है कि जब छूटा तो व्यर्थ नहीं जाता, और ख़ुदा का

कोप उनके कोप से बढ़कर है।

أَنزِلْ جنودك يا قديرُ لنصرنا إنا لقِينا الموت من لُقْيانهم

88- हे सर्वशक्तिमान ख़ुदा! हमारे लिए अपनी फ़ौज उतार, क्योंकि हम उनके मिलने से मौत में जा मिले।

يا ربّ قد بلَغ القلوب حناجرا يا ربّ نَجِّ الخَلق من ثعبانهم

89- हे मेरे रब्ब! दिल बेचैन हैं, तू लोगों को उनके अज़दहा (अर्थात् दज्जाल-अनुवादक) से बचा।

إن القلوب من الكروب تقطعتْ فارحَمْ وخَلِّصْ روحنا من جانهم

90- दिल दु:खों से टुकड़े-टुकड़े हो गए, अत: तू हम पर रहम कर और हमें उनके राक्षस (अर्थात् दज्जाल-अनुवादक) से बचा।

ودَعِ العِدا جَزَرَ السِّباع يَنُشْنَهم واشفِ القلوب بخزيهم وهوانهم

91- और दुश्मनों को भेड़ियों की बकरी बना, कि वे उन्हें पकड़ें और नोच-नोचकर खाएँ, और उन्हें रुसवा और शर्मिन्दा करके हमारे दिलों को चैन प्रदान कर।

☆ ☆ ☆

और इस फ़ित्न: फैलाने वाले आपत्तिकर्ता के ढंग से मुझे आश्चर्य है कि यह अनर्गल आलाप से बाज़ नहीं आता और शराबियों की तरह व्यर्थ बातें कर रहा है और कहता है कि ईसा मसीह वही रूह है जिसका क़ुरआन में जगह-जगह वर्णन पाया जाता है और इसी तरह दूसरी किताबों में भी वर्णन पाया जाता है जो ख़ुदा तआला की ओर से नाज़िल हुई थीं। हालाँकि वह इस दावे में सरासर झूठ बोल रहा है। इसलिए हे सत्याभिलाषियो! तुम यह नि:सन्देह समझो कि वह केवल एक ऐसी मरीचिका (अर्थात् धूप से चमकने के कारण पानी की तरह दिखाई देने वाला रेगिस्तान) की ओर दौड़ता है जिसमें पानी नहीं, और सच की ओर क़दम नहीं बढ़ाता और उसकी बातों में एक अजीब तरह का छल और धोखा है और खुला-खुला झूठ है। क्या नहीं जानता कि रूह! (यहाँ अल् रूह से तात्पर्य रूहुलक़ुदुस नामक एक फ़रिश्ता है जिसे जिब्राईल भी कहते हैं-अनुवादक) जिस तरह हज़रत ईसा पर नाज़िल

हुआ उसी तरह हज़रत मूसा पर नाज़िल हुआ और इसी तरह दूसरे नबियों पर भी? वह अच्छाई के साथ बुराई को मिलाने वाले दज्जाल की तरह सच को झूठ के साथ क्यों मिलाता है? क्या वह इन्जील मती के तीसरे अध्याय को नहीं पढ़ता कि अचानक उसके लिए आसमानों के दरवाज़े खुल गए तो उसने ख़ुदा की रूह★ को अपने ऊपर कबूतर की तरह आते और उतरते देखा.....फिर युसु रूह से जंगल की ओर चला गया ताकि शैतान से आज़माया जाए। अत: इससे सिद्ध हुआ कि मसीह पर रूहुलक़ुदुस इस तरह नाज़िल हुआ जैसा कि इब्राहीम, इस्माईल और अन्य नबियों पर। इसलिए ख़ुदा से डर और सच्ची बात ढूँढ़ने की चिन्ता कर, और इस चिन्ता में कोशिश कर और सुस्ती को छोड़ दे। क्या उतरने वाला और जिस पर उतरा, दोनों एक चीज़ हो सकते हैं? बल्कि यह आवश्यक है कि वे दोनों अलग-अलग चीज़ें हों, जैसा कि बुद्धिमानों और विवेकशीलों से छिपा नहीं। अत: उन न्यायप्रियों के लिए इससे बढ़कर और कौन सा प्रमाण होगा जो सच की ओर चिन्तन मनन करके दौड़ते हैं और राह को अन्धों की तरह नहीं छोड़ते? और उन दो रूहों में कौन सा अन्तर है जो ख़ुदा की ओर से हज़रत ईसा और हज़रत मूसा पर नाज़िल हुईं? हे अन्यायियो और अत्याचारियो! क्या तुम कुछ भी सोचते नहीं और झूठों की अफ़वाहों पर गिरे जाते हो? क्या तुम तौरात के ग्यारहवें अध्याय में वे बातें नहीं पढ़ते जिसमें कहा गया है कि उस ख़ुदा की बातें हैं जो अपनी बातों में सबसे बढ़कर सच्चा है और वे यह हैं कि रब्ब ने मूसा से कहा कि मैं उतरूँगा और तुझसे बातें करूँगा और उस रूह में से लूँगा जो तुझ पर है और उन पर डालूँगा जो उसकी उम्मत के प्रतिष्ठित लोग थे अर्थात् बनी इस्राईल के बड़े-बड़े लोगों पर जो सत्तर आदमी थे और इसी तरह यह रूह हज़रत ईसा के दादे और उसके पीर (धर्मगुरू) दाऊद व यह्या और दूसरे नबियों पर भी नाज़िल हुई। अब कोई आवश्यकता नहीं कि हम इस बात को और लम्बी करें और समय नष्ट करें और झगड़े को बढ़ाएँ। क्योंकि ईसाइयों में से हर एक इन सब बातों को जानते हैं और वे इसके इन्कारी नहीं। इसलिए हे मूर्ख! पहली किताबों को तू ध्यान से क्यों नहीं पढ़ता? और नसीहत को क्यों स्वीकार नहीं करता और सही

★अर्थात् रूहुलक़ुदुस नामक एक फ़रिश्ता है जिसे जिब्राईल भी कहते हैं-अनुवादक

अक़ीदे का दुश्मन बन रहा है और सन्मार्ग पकड़ने वालों में से नहीं बनता? हम तुझे प्यास बुझाने वाला एक शहद देते हैं और तू एक घातक विष की ओर दौड़ता है ताकि उसको पी ले, क्या तेरा मरने का इरादा है?

और यह जो तूने सोच रखा है कि अल्लाह तआला क़ुरआन में मसीह का नाम अल्लाह की रूह रखता है और उसका नाम मनुष्य नहीं रखता और उसे इन्सानों में से नहीं ठहराता। इसलिए मुझे आश्चर्य है कि तुम लोग लांछन को क्यों नापसन्द नहीं करते और अनर्गल अलापते समय तुम्हें शर्म क्यों नहीं आती और अजगर की तरह ज़बान लपलपाते हो और बाज़ नहीं आते और मारे ग़म और गुस्सा के नशेड़ियों की तरह मस्त होकर चलते हो और ऊँच-नीच कुछ भी नहीं देखते और गड्ढे में गिरने से भी नहीं डरते। क्या झूठ बोलने में ही तुम्हारी आँखों की ठंडक और दिल की ख़ुशी है और तुम इस बात पर ख़ुश हो गए कि सच को छोड़ दो और ख़ुदा की रस्सी को जो तुम्हारे बहुत निकट है फेंक दो? क्या तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो? तुम पर अफ़सोस कि तुम एक खण्डहर पर गिरे और जन्नत (बाग़) से दूरी अपनायी, बल्कि तुमने पेड़-पौधों वाली हरी-भरी ज़मीन को छोड़ा और मुर्दा ज़मीन को अपनाया और सवारी से उतर बैठे और ख़राब और मुश्किल राह अपना ली और झूठ से प्यार करने वालों के पीछे चल पड़े।

यदि तुम्हें यह गुमान है कि क़ुरआन तुम्हारी बात का सत्यापन करता है और तुम्हारा समर्थन करता है और ईसा के बारे में उसने कहा है कि वह ख़ुदा की रूह में से है और इस बात को स्वीकार कर लिया है कि वह उससे निकला है तो यह तुम्हारी सोच खुली-खुली मूर्खता और दूषित भ्रम है और एक स्पष्ट ग़लती है। फिर यदि हम मान भी लें कि "रूहुन मिन्हु" का शब्द हज़रत ईसा की शान (प्रतिष्ठा) बढ़ाता है और उसको अल्लाह का बेटा सिद्ध करता है और उसको सबसे उच्च और सबसे प्रतिष्ठित ठहराता है तो इससे यह अनिवार्य ठहरता है कि हज़रत आदम का स्थान हज़रत मसीह से ऊँचा हो बल्कि सबसे ऊँचा हो और पहला बेटा ख़ुदा तआला का हज़रत आदम ही हो। क्योंकि हज़रत आदम की शान (प्रतिष्ठा) में हज़रत ईसा की अपेक्षा अधिक प्रशंसा बयान की गई है। अत: बुद्धिमानों की तरह आयत के शब्द فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ

(फ़ क़ऊ लहू साजिदीन। सूरः अल् हिज्र-15/30 अर्थात- तो तुम उसके लिए सजदा करना)- को ध्यान से पढ़ और फिर इस शब्द पर विचार कर जो خلقتُ بیدی (ख़लक़्तु बि यदी अर्थात मैंने अपने हाथ से पैदा किया) और शब्द سَوَّیْتُهُ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ (सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही- सूरः अल् हिज्र-15/30) (अर्थात जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँकूँ) है और दूसरे शब्दों पर भी विचार कर। ताकि तुझ पर हज़रत आदम की बुलंद शान प्रकट हो क्योंकि आयत का बयान सिद्ध करता है कि रूहुल्लाह (अर्थात् जिब्राईल-अनुवादक) आदम में उतरा था और वह उतरना अपेक्षाकृत अत्यन्त स्पष्ट और रौशन था, यहाँ तक कि आदम फ़रिश्तों का अनुकरणीय ठहरा और बड़ी-बड़ी चमकारों का द्योतक बना और निस्पृह ख़ुदा के बहुत निकट हुआ और सब फ़रिश्तों से अधिक विद्वान और श्रेष्ठ ठहरा और धरती वालों पर ख़ुदा तआला का ख़लीफ़ा बना। लेकिन वह आयत जो हज़रत ईसा की शान (प्रतिष्ठा) में नाज़िल हुई है वह तो उसको अधिक विद्वान और श्रेष्ठ नहीं बताती और न ही अधिक शुद्ध और पवित्र ठहराती है। बल्कि उससे तो केवल इतना सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा अन्य लोगों की भाँति ख़ुदा तआला की ओर से एक रूह और उसके विनम्र भक्त हैं। इसके अतिरिक्त यह भी सिद्ध होता है कि वह एक इन्सान है और इब्लीस (शैतान) ने उसका अनुकरण नहीं किया, बल्कि उसने उलटा कहा कि वह इब्लीस (शैतान) का अनुकरण करे। इसके साथ ही उस दुष्ट ने उसकी परीक्षा ली। आदम का सब फ़रिश्तों ने अनुकरण किया और आदम ने फ़रिश्तों को सारी चीज़ों के नाम बताए। इससे सिद्ध हुआ कि वह उनसे अधिक विद्वान था और उसका मर्मज्ञान धरती और आसमान पर छाया हुआ था। परन्तु हज़रत ईसा ने तो ख़ुद इक़रार किया कि उसको क़यामत का ज्ञान नहीं कि वह कब आएगी और इस बात की ओर भी इशारा किया कि फ़रिश्ते ज्ञान, संयम और आज्ञापालन में उससे बढ़कर हैं। अतएव इस बात को सोचो और अन्धों की तरह मत चलो। फिर यदि तू ध्यानपूर्वक देखे और मौजूद वर्णनों पर गौर करे तो तुझ पर स्पष्ट हो जाएगा कि अल्लाह तआला का यह कथन कि "रूहुन मिन्हु" ऐसा ही कथन है जैसा कि उसका दूसरा कथन। इसलिए घोर मूर्खता की बात है कि "रूहुन मिन्हु" के शब्द से हज़रत ईसा की ख़ुदाई

तो साबित करे और "जमीअन् मिन्हु" के शब्द से कुत्तों, बिल्लियों, सूअरों इत्यादि एवं अन्य समस्ते चीज़ों को ख़ुदा न माने। क्योंकि आयत का वर्णन बता रहा है कि हर एक चीज़ "जमीअन् मिन्हु" के अन्दर दाख़िल है अर्थात् सारी रूहें ख़ुदा से ही निकली हैं। अब शर्मिन्दगी से डूब मर यदि तुझ में थोड़ी सी भी शर्म है। हे ईसाइयो! इस बात में ख़ूब अच्छी तरह ग़ौर करो, क्या तुम में कोई भी चिंतन-मनन करने वाला नहीं है? और कदापि सम्भव नहीं कि तू हमारा जवाब दे सके, चाहे इस सोच-विचार में मर भी जाय। क्योंकि झूठा आदमी एक गेंद की तरह होता है जो हमेशा लुढ़कता रहता है और सच्चों के सामने कभी ठहर नहीं सकता।

ईर्ष्या-द्वेष से भरे हुए इस संकीर्ण विचारधारा रखने वाले बेईमान के ऐतिराज़ों में से एक ऐतिराज़ यह भी है कि वह अपनी किताब "तौज़ीनुल अक़्वाल" में जो शैतानों का बुना हुआ एक छत्ता है लिखता है कि, क़ुरआन की वह्यी (ईशवाणी) शैतान की ओर से थी रूहुलअमीन (यह रूहुलक़ुदुस का ही दूसरा नाम है - अनुवादक) की ओर से नहीं। और "शदीदुल क़ुवा" और "ज़ू मिर्रह" के शब्द की उसने दुष्टता और स्वार्थपरायणता के कारण बुद्धि के विपरीत छल से कुछ की कुछ तावील (व्याख्या) की है और मोमिनों के दिल को दु:खाया है और शर्म व हया को छोड़कर नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में यह कहा कि नऊज़बिल्लाह उन पर जिन्न (भूत-प्रेत) का असर था, और सच्चाई से ऐसा दूर जा पड़ा जैसे कि गोह, जो शुष्क ज़मीन पर रहती है और पानी से दूर रहती है, और सदाचारी सुधारकों से दुश्मनी की, और सच्चाई को यथार्थत: खोलकर बयान कर देने वाली क़ुरआन की सरसता और अलंकारिकता पर ऐतिराज़ किया, ताकि इन बातों से वह एक तबाह होने वाली क़ौम को ख़ुश करे। इसके अतिरिक्त यह व्यक्ति मूर्ख अन्धों की तरह है। ख़ुदा की क़सम! यह व्यक्ति नितान्त मूर्ख और अरबी भाषा से पूर्णत: अनभिज्ञ है। अपशब्दों के अतिरिक्त इसके पास कुछ भी नहीं। इसलिए इसकी किताबों में गालियों और अनर्गल बातों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। वह पूरी कोशिश करने के बावजूद सच को न छिपा सका और न उस पर कोई दोष मढ़ सका। फिर वह लाचार होकर दुश्मनों की भाँति अपमान करने की ओर दौड़ा। हमने आज तक कोई ऐसी किताब

नहीं पढ़ी जो उसकी किताब से अधिक ग़ुस्सा दिलाने वाली हो और कोई ऐसा भयानक तूफ़ान नहीं देखा जो उसके झूठ से बढ़कर हो और उसकी गालियों जैसी किसी की गालियाँ नहीं सुनीं और उसके छलों जैसा किसी में छल नहीं देखा। अत: उसके फ़ित्ने से हम ख़ुदा तआला की पनाह की ओर झुकते हैं जो सबसे अच्छा मददगार है और उसके फ़ित्नों से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं और उसकी ओछी बातों पर हम ख़ुदा तआला से ही शिकवा करते हैं। हम नहीं समझते कि यह व्यक्ति बिना किसी दण्ड के फ़साद फैलाने से रुकेगा। फ़साद फैलाने वालों की यही आदत हुआ करती है। और उसके बारे में उसके मित्र एवं हमदर्द भाई पादरी रजब अली ने सच कहा है:-

उसका कथन है कि जब से हमारा भाई पादरी इमादुद्दीन इस्लाम के रद्द (खण्डन) में किताबें लिखने लगा और तस्लीस की दलीलें प्रकाशित कीं तो उनमें कोई भी सच्ची दलील न थी जिसके कारण हमें बहुत शर्मिन्दा होना पड़ा और हम रुसवाई का निशाना बन गए। क्योंकि वे दलीलें झूठ का पुलिन्दा थीं। उसके बाद हम शर्म के मारे ऐसे हो गए कि इस लायक़ न रहे कि मुसलमानों को अपना मुँह दिखा सकें।☆

☆ **हाशिया:**- हम उचित समझते हैं कि इस जगह कुछ बुद्धिमानों की वे बातें लिखें जो उन्होंने पादरी इमादुद्दीन की किताबों के बारे में लिखी हैं। इसलिए हम उन्हीं की तहरीर को प्रतिलिपित कर देते हैं जो किताब "अक़ूबतुल ज़ाल्लीन" मुद्रित नुसरतुल मुताबेअ देहली में लिखी हुई हैं और अक़ूबतुल ज़ाल्लीन वह किताब है जिसे एक व्यक्ति ने "रद्दे हिदायतुल मुस्लिमीन" में लिखा है और वह यह है:-

हिन्दू प्रकाश, अमृतसर और आफ़ताब-ए-पंजाब, लाहौर, अख़बारों की राय, इन दोनों अख़बारों के संचालक हिन्दू भ्राता हैं।

"चूँकि पादरी इमादुद्दीन साहिब अमृतसर में पादरी का काम करते हैं वहीं के अख़बार हिन्दू प्रकाश जिल्द-2 अंक-4 मुद्रित 12 अक्टूबर सन् 1874 ई. पृष्ठ 10-11 में जो अमृतसर के हिन्दू भाइयों की ओर से संचालित है लिखा है कि, क्या पादरी इमादुद्दीन की किताबें तारीख़-ए--मुहम्मदी व ग़ैरहू (ग़ैरहू से तात्पर्य हिदायतुल मुस्लिमीन) कुछ उस किताब से उपद्रव भड़काने में कमतर थीं जिसने मुम्बई के मुसलमानों और पारसियों की सैकड़ों वर्षों की दोस्ती और प्रेम को फूट और नफ़रत में बदल दिया और दोनों को अचानक तबाही और ख़ून-ख़राबा का मुँह दिखाया? यहाँ पादरी साहिब की किताबें "तारीख़-ए-मुहम्मदी" और "हिदायतुल मुस्लिमीन"

इसके अतिरिक्त इस व्यक्ति का "शदीदुल क़ुवा" के शब्द से शैतान का अस्तित्व सिद्ध करना और यह गुमान करना कि "शदीदुल क़ुवा" इसलिए क़ुरआन में शैतान का नाम है कि सारी शक्तियाँ इसी भेड़िए को प्राप्त हैं, न कि ख़ुदा तआला और उसके फ़रिश्तों को। इसलिए हम उसकी इन बातों का भेद नहीं समझते और उसमें किसी दलील के आसार नहीं पाते। ज्ञात होता है कि शायद उसने इसी तरह इन्जील में पढ़ा है या इस विचार को मसीह के उस क़िस्से से सिद्ध करने की कोशिश की है कि जब शैतान हाथी की तरह उसके पास आया और एक बड़ी ताक़त के साथ गलील के एक पहाड़ पर उसको ले गया और अपने छलों से उसको आज़माया और मसीह से यह न हो सका कि उसके साथ उसकी ओर जाने से अपने आप को रोक सके और उसके पहाड़

शेष हाशिया- और "तफ़सीरे मुकाशिफ़ात" शान्ति-व्यवस्था के भंग करने में किस लिए नाकाम रहीं? इसलिए कि पंजाबी मुसलमान अधिकतर ग़रीब बुजदिल और मूर्ख हैं या वे उन (किताबों) को समझते नहीं जो केवल मुसलमानों का अंग्रेज़ी गवर्नमेन्ट से दिल फाड़ने के उद्देश्य से लिखी गई हैं। अगर मान भी लें कि वे सारे आरोप सच्चे समझे जायँ तब भी बेचारे पादरी साहिब के काम भारतीय दण्ड अधिनियम की धारा 494 के आरोप से बाहर नहीं। क्योंकि इसमें हर ऐसे काम का जनहित की नीयत से होना, रिआयत (छूट) के लिए शर्त है। उपरोक्त वाक्य हमने अख़बार आफ़ताब-ए-पंजाब जिल्द-2 अंक-39 से उद्धृत किए हैं। जिस आधार पर उल्लिखित अख़बार के एडीटर साहिब ने वह सारा लेख लिखा है हम उससे केवल चुनिन्दा वाक्यों के बारे में अपनी सहमति व्यक्त करते हैं और पादरी इमादुद्दीन की किताबों के बारे में एडीटर साहिब जो शिकायत करते हैं उसके सम्बन्ध में राष्ट्रीय मस्लहतों की दृष्टि से हम इतना कहते हैं कि उसकी किताबों से जिसका प्रमाण ऊपर दर्ज है नि:सन्देह राष्ट्र की शान्ति-व्यवस्था में बाधा पड़ सकती है और वे कुछ अजीब ढंग से संकलित हुई हैं कि जिनको सारांशत: दंगा या चिंगारी भड़काने वाली कहना तनिक भी झूठ नहीं। देश में ऐसे-ऐसे फ़साद और हंगामों के सम्बन्ध में जो इस प्रकार की किताबों से पैदा होता है संवाददाता महोदय के कथनानुसार सरकार की ओर से उचित प्रबन्ध करना अनिवार्य है। हम बतला सकते हैं कि इस प्रकार के विषयों में बुद्धिमान सरकार ने हस्तक्षेप किया है। अत: इसी हिन्दुस्तान के अन्दर भूतपूर्व गवर्नर जनरल लार्ड विल्जले साहिब ने सन् 1798 ई. में हिन्दुओं की "जलपर्वा" नामक कुप्रथा को आदेश

की ओर क़दम न उठावे और उसके सिर को पकड़ ले और अपने ज्ञान से उसकी आग को बुझा दे, बल्कि मसीह तो उसके पीछे कमज़ोरों की तरह चल पड़ा। अत: यदि इस भ्रम का मुख्य कारण यही विचार है जो मैं समझता हूँ तो हम इस क़िस्से से इन्कार नहीं करते और सही घटना की तरह उसको मान लेते हैं और हम मान लेते हैं कि ऐसे मसीह का शैतान वस्तुत: शदीदुल क़ुवा ही था। इसी वजह से तो वह उसको पहाड़ों की ओर खींचकर ले गया और कहा कि मेरी बात मान, मैं तुझे एक बड़ा साम्राज्य दूँगा और बादशाहत भी, और उसने एक कमज़ोर मुसाफ़िर के ईमान में लालच भर दिया और लालची भेड़िए की तरह हमला किया और फिर किसी समय दोबारा आने का उसे एक पक्का वादा देकर चला गया और "हीन" (अर्थात् समय) का शब्द लूक़ा की इन्जील में

शेष हाशिया- देकर बन्द करवा दिया था और सन् 1827 ई. के अन्दर लार्ड विलियम बेन्टिंग साहिब गवर्नर जनरल ने !सती प्रथा! नामक प्राचीन कुप्रथा को क़ानून बनाकर समाप्त कर दिया। सरकार इस बात का संज्ञान ले कि हिन्दुस्तान के ईसाई लेखकों में से सारे लोग पादरी इमादुद्दीन ही को क्यों विख्यात करते हैं। इसका कारण यह है कि वह भी यही चाहता है कि मेरी किताबों से लोग धार्मिक जोश में आकर और उत्तेजना के वशीभूत होकर दंगा-फ़साद करें और सरकार में बाग़ी और विद्रोही समझे जाएँ। हमने सुना है कि पंजाब ट्रैक्ट सोसाइटी की पब्लिशिंग कमेटी ने उपरोक्त भड़काऊ किताब के दूसरे भाग को इसी कारण से रीजेक्ट किया है कि उसमें पहले भाग से बढ़कर दिल को ठेस पहुँचाने वाली बातें लिखी हुई हैं। यदि यह बात सत्य है तो बहुत अच्छा किया। !! तहरीर समाप्त, हिन्दू प्रकाश।

पादरी साहिबों के "शम्सुल अख़बार" लखनऊ, मुद्रित अमरीकन मिशन प्रेस 15 अक्टूबर सन् 1875 ई. अंक-15 जिल्द 7 प्रबन्धक पादरी क्रयून साहिब पृष्ठ-9 में लिखा है कि !नियाज़नामा! जिसके लेखक सफ़दर अली साहिब बहादुर ईसाई स्क्सट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर जिला सागर मध्य भारत हैं, इमादुद्दीन की किताबों की तरह नफ़रत फैलाने वाली नहीं कि जिसमें गालियाँ लिखी हुई हैं और यदि सन् 1857 ई. की तरह फिर ग़दर हुआ तो इस व्यक्ति की गालियों और धृष्टताओं से होगा। जब इनको बाहर कोई पन्द्रह रुपये को भी न पूछे और मिशन से सत्तर रुपये प्रति माह और कोठी मिले, जिसके अहाता के अन्दर चाहें तो तेल निकालने का कोल्हू भी बना लें। ऐसे लालचियों को क्या कहना चाहिए। समाप्त (मूल की प्रतिलिपि से अनुवादित)

नि:सन्देह मौजूद है जिसका जी चाहे देख ले और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि जब शैतान दूसरी बार आया तो उसने तस्लीस सिखलायी और मरने वालों को मारा। क्योंकि दूसरी बार आना शैतान का वादा था। लेकिन मसीह के शैतान "शदीदुल क़ुवा" का आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आने के बारे में गुमान करना औचित्यहीन और अनुपमेय है और ऐसा सोचना बहुत बड़ी बेशर्मी है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर को कहा था कि यदि शैतान तुझको किसी राह में मिले तो तू दूसरी राह इख़्तियार कर, तो वह तुझसे डरेगा। इस प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि शैतान हज़रत उमर से एक कायर और डरपोक की तरह भागता है। लेकिन हज़रत मसीह ने अपने एक बड़े सहाबी को इन्जील में शैतान कहा है। अत: ख़ुदा से डरकर देख कि इन दोनों बातों में कितना अन्तर है और शैतानों के मार्ग की ओर मत दौड़। जब सारी ताक़तें शैतान में ही थीं तो तुम्हारे उस कमज़ोर ख़ुदा का क्या हाल है जो उससे मुक़ाबला न कर सका, बल्कि एक हारे हुए और ज़रूरतमन्द की तरह उसके पीछे चल पड़ा और शैतान ने एक अजीब छल के साथ उसको अपनी ओर खींचा और एक अजीब धोखे की ओर बुलाया, और आश्चर्य यह कि ख़ुदाई के दावे और अल्लाह का बेटा होने के गर्व के बावजूद वह शैतान के पीछे चल पड़ा और यह न सोचा कि वह बहुत बड़ा छलिया और ठग है। उसका वादा बिन बरसने वाले बादल की तरह है और वह झूठों का सरदार है, और तुम जानते हो कि यहूदी मसीह को कहा करते थे कि तू ख़ुदा की तरफ़ से निशान नहीं दिखलाता बल्कि एक शैतान की मदद से दिखाता है। फिर यदि हम मान भी लें कि सारी ताक़तें शैतान ही के पास हैं तो इस दशा में इन्जील की वह बात सही न होगी बल्कि खुली-खुली झूठ और फेरबदल करने वालों की परिवर्तित की हुई कहलाएगी कि यीसु गलील की ओर रूह की ताक़त से गया था, बल्कि यह कहना पड़ेगा कि रूह से तात्पर्य शैतान है।

फिर तूने यह बयान किया है कि क़ुरआन अपनी अलंकारिकता में चमत्कार की सीमा तक नहीं पहुँचता बल्कि उसमें बनावट और बेचैनी की बू पायी जाती

है और वह कठोर और सौम्य शब्दों में अन्तर नहीं करता और अश्लीलता में आगे बढ़ा हुआ है और उसमें अशिष्ट शब्द और अज्ञात बातें हैं और सरस सुबोध अरबी नहीं। इसलिए अब मैं तेरा जवाब लिखता हूँ। अत: जान ले कि तेरी और तेरे जैसे औरों की यह बात बहुत ही अजीब है और कोई भी न्यायप्रिय इसे पसन्द नहीं करेगा। हे उतावले! क्या तू जानता नहीं कि तू मूर्खों में से एक मूर्ख व्यक्ति है और पथभ्रष्टता के छलावों के अतिरिक्त और कुछ जानता नहीं और न ही अरबी भाषा की शैली और उसके वाक्यों की आलंकारिकता से परिचित है? बल्कि मैं समझता हूँ कि तू अरबी का एक शब्द भी नहीं जानता, फिर किस तरह तूने इस घृणित आवाज़ से हिम्मत की? हे काहिल मूर्ख! क्या तू उस क़ुरआन पर हमला करता है जिसने युग के बड़े-बड़े अलंकर्ताओं का मुँह बन्द कर दिया और ज़माने के मशहूर वाग्मियों (अर्थात् मँझी हुई सरस सुबोध भाषा बोलने वालों) पर अपना अकाट्य और निर्णायक तर्क पूर्ण किया और उसके सामने साहित्यकारों की गर्दनें झुक गयीं और बड़े-बड़े सुवक्ता कवि (शायर) उस पर ईमान ले आए और उसे स्वीकार किया और विनम्रता धारण की। क्या भाषा की पहचान में तू उनसे ज़्यादा विद्वान है और सही और ग़लत में अन्तर करने में ज़्यादा सक्षम है या पागल है? क्या तुझे मालूम नहीं कि वे लोग भाषाविद थे और मँझी हुई सुन्दर और सरस सुबोध भाषा के दूध से पोषित थे और रंगारंग के अजीब लेखों और सुन्दर एवं दिलचस्प साहित्य एवं अद्भुत इशारों से दिलों को अपनी ओर खींच लेते थे और उन विषयों और उनकी विशेषताओं के वर्णन में दक्ष थे? क्या तुझे मालूम नहीं कि क़ुरआन ने अलंकारिकता के चमत्कार का दावा अखाड़े के मैदान में किया है। क्योंकि अरब इसके ज़माने में उच्चकोटि के वाग्मी और अलंकर्ता थे और उनके गर्व का पारस्परिक आधार मँझी हुई भाषा और बयानों की चमक-दमक पर था और भाषण के फलों और फूलों पर भी गर्व करते थे और उनकी लड़ाइयाँ नए-नए उच्चकोटि के वीरकाव्य और कथाओं के वर्णन के साथ हुआ करती थीं, लेकिन उनमें युक्तिपूर्ण रहस्यों के साथ बात करने की शिष्टता और शालीनता न थी और बयान में अध्यात्मज्ञान का नामोनिशान न था। बल्कि उनकी

सोचों का लक्ष्य केवल इश्क़िया शैरों और हँसने-हँसाने और बेसुध करने वाले शैरों तक था और युक्तिसंगत विषयों को मोतियों की तरह पिरोने में वे समर्थ न थे। हालाँकि वे एक ज़माने से भिन्न-भिन्न प्रकार के काव्य, गद्य एवं हास्योक्ति और व्यंग्य विनोद के आदी थे और अपनी क़ौम में मान्य और लोकप्रिय थे और भाषा एवं युद्ध के क्षेत्रों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने वाले थे। अत: अल्लाह ने उन्हें सम्बोधित करके फ़रमाया कि:-

وَ اِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰى عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ... فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَ لَنۡ تَفۡعَلُوۡا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ وَ الۡحِجَارَةُ ۚ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ (अल् बक़र: - 2/24-25)

अर्थात "यदि तुम्हें इस कलाम (अर्थात् क़ुरआन) के बारे में कुछ सन्देह है जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है तो तुम भी इस जैसी कोई सूर: (अध्याय) रचकर ले आओ, ...और यदि न रच सको और याद रखो कि तुम कदापि न रच सकोगे, इसलिए उस आग से डरो जिसके भड़काने का ईंधन आदमी और पत्थर हैं और वह आग काफ़िरों (अधर्मियों) के लिए तैयार की गई है।"

फिर फ़रमाया कि:-

قُلۡ لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَ الۡجِنُّ عَلٰٓى اَنۡ يَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا يَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَ لَوۡ كَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ ظَهِيۡرًا (बनी इस्राईल-17/89)

अर्थात "यदि सारे लोग इस बात के लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस क़ुरआन की कोई हमतुल्य किताब बनाएँ तो वे कदापि नहीं बना सकेंगे, चाहे वे इस काम में एक-दूसरे की सहायता भी करें।"

फिर क्या था कुफ़्फ़ार (अधर्मी) इसका हमतुल्य बनाने से बेबस हो गए और हार कर पीठें फेर लीं, और जब मधुर और सुस्वर बयान की सरसता और अलंकारिकता का सामना न कर सके तो शर्मिन्दा और क्रोधित होकर तीर और तलवारों की ओर झुक गए और उनमें से बहुत से क़ुरआन की अलंकारिकता के चमत्कार को देखकर ईमान ले आए, जैसे कि लबीद इब्नि रबीअ: अलआमरी

जो चौथे मुअल्लक़: का लेखक है। उसने इस्लाम का ज़माना पाया और इस्लाम स्वीकार करके पूरी निष्ठा दिखाई और सन् 41 हिज्री में मृत्यु पायी। इसी तरह उनमें से बहुतों ने क़ुरआन शरीफ़ की अलंकारिकता एवं वाग्मिता को स्वीकार कर लिया और मान लिया कि वास्तव में क़ुरआन पवित्र बातों और मनोहर रूपकों से भरा हुआ है और सुन्दर सलोनी बातों से सुसज्जित युक्तिसंगत बातों का सागर है। जिसने इसको ध्यानपूर्वक देखा वह इस्लाम की ओर दौड़ा और मोमिनों में से हो गया। यदि क़ुरआन वाग्मिता और अलंकारिकता के उच्चतम् स्तर से गिरा हुआ होता तो विरोधियों पर यह बात बहुत आसान हो जाती और वे यह कह सकते थे कि हे व्यक्ति जो कलाम (वाणी) तूने हमारे सामने प्रस्तुत किया है और जो बात तू हमारे सामने लाया है वह वाग्मी नहीं है बल्कि सहीह भी नहीं है और इसमें परित्यक्त और घिसे-पिटे अर्थों के अतिरिक्त हम कुछ नहीं पाते और इसमें बहुत हल्के शब्द मौजूद हैं। तू अधिक मधुर और उत्तम कलाम नहीं लाया, बल्कि इसमें तो ऐसे-ऐसे शब्द हैं और कोई रहस्य की बात नहीं,बल्कि तूने अपने कलाम में ग़लती की है और अपने उद्देश्य से दूर जा पड़ा है और तू प्रशंसितों में से नहीं है। इसलिए हमें कोई आवश्यकता नहीं कि हम इसका हमतुल्य बनाएँ या इसकी बराबरी का मुक़ाबला करें। हम से दूर हो और अपने कलाम की प्रशंसा छोड़ दे, क्योंकि तेरा कलाम प्रसिद्ध साहित्यकारों के निकट तुच्छ है। लेकिन अरब के काफ़िरों (अधर्मियों) ने ऐसा न किया और इस दावे में कुछ जिरह-बहस न की बल्कि उन्होंने तो क़ुरआन की उच्चकोटि की अलंकारिकता को स्वीकार किया और उसकी सर्वोत्कृष्ट वाग्मिता से आश्चर्य में पड़ गए और कहा कि यह तो खुला-खुला जादू है। उनमें से अधिकतर क़ुरआन के इस चमत्कार पर ईमान ले आए और मान लिया कि इस बाज़ की पकड़ें बहुत मज़बूत हैं और वे इसकी थाह मापने से असमर्थ हो गए और कहा कि यह एक ऐसा कलाम है जो इन्सान की बातों से बहुत आगे बढ़ गया है और वह पूरे का पूरा सार है और उसके साथ कोई छिलका नहीं और उसमें एक तेज और माधुर्य है और वह एक अथाह और अनन्त पवित्र जल है जो पीने वालों के पीने से कभी समाप्त न होगा। फिर

वे क़ुरआन की निन्दा और अपमान में कोई शब्द मुँह पर न लाए और उसकी जिरह-बहस में कोई बात मुँह से न निकाली। किन्तु उसके मैदान में उन्होंने सोच के घोड़े दौड़ाए परन्तु उसके तेज के सामने डरकर और शर्मिन्दा होकर लौटे और उनमें से अधिकतर क़ुरआन को सुनकर रोते और सिज्दे में गिर जाते थे।

यह वह वर्णन है जो हम क़ुरआन करीम में पाते हैं और नबी रहमतुल् लिलआलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में पढ़ते हैं। हमने इस बात को पूरी ईमानदारी और दियानतदारी से अमानत के तौर पर लिखा है और हम इसके उलट कोई ऐसी बात नहीं पाते जो उस समय के ईसाइयों और मुश्रिकों (मूर्तिपूजकों) के मुँह से क़ुरआन की गरिमा के ख़िलाफ़ निकली हो। हे मूर्खो! वे ईसाई क़ुरआन के परखने में तुमसे बेहतर थे। और यह जो तूने समझा है कि क़ुरआन में कई ऐसे शब्द हैं जो क़ुरैश की भाषा के विपरीत हैं तो यह तेरी बात खुली-खुली मूर्खता और क्रोध के कारण से है न कि अन्तर्विवेक से।

हे मूर्ख और क्षुद्रप्रकृति! तुझे ज्ञात हो कि वाग्मिता का आधार मशहूर और लोकप्रिय शब्दों पर हुआ करता है चाहे वे शब्द क़ौम की मूल भाषा में से हों या आलंकारिक भाषा में बात करने वाली किसी क़ौम के प्रयोग में आ चुके हों और चाहे वे एक ही क़ौम के शब्दकोश में से हों या उनके दायमी बोले जाने वाले मुहावरों में से हों या ऐसे शब्द उनमें मिल गए हों जो क़ौम के अलंकर्ताओं को सौम्य, शिष्ट और मधुर लगे हों और उन्होंने उनका प्रयोग अपनी गद्य और पद्य में रवा (विहित) रखा हो और किसी निंदक की निंदा से न डरे हों और न किसी विवशता से वे शब्द प्रयुक्त किए हों। अतएव जब आलंकारिकता का आधार इसी नियम पर है तो यही क़ायदा उन अलंकारिक बातों के लिए पैमाना है जो आलंकारिकता के चर्मोत्कर्ष को पहुँची हुई हैं। इसलिए इस बात में कुछ भी हर्ज नहीं कि एक दूसरी भाषा के लोकप्रिय शब्द को भाषाविद और अलंकर्ताओं ने स्वीकार कर लिया हो। बल्कि इस ढंग से तो कभी-कभी आलंकारिकता और भी बढ़ जाती है और बातों में दृढ़ता पैदा हो जाती है। बल्कि कई जगहों पर इस शैली को वाग्मी और अलंकर्ता आकर्षक और

मनमोहक समझते हैं और विद्वान उससे आनन्द उठाते हैं। लेकिन हे आपत्तिकर्ता! तू तो एक मन्दबुद्धि और मूर्ख है और इसके साथ-साथ जल्दबाज़ और सच्चाई का दुश्मन भी है, इसलिए तू ईर्ष्या-द्वेष और मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता और गड्ढे के अतिरिक्त और किसी जगह क़दम नहीं रखता और तू नहीं जानता कि अरबी भाषा क्या चीज़ है, और वाग्मिता किसे कहते हैं। तेरे मुँह से बेहयाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं निकलता, तुझे तो किसी ने सिखाया है कि तू पवित्र और सदाचारियों को गालियाँ देता फिरे।

इसलिए हे बेसुध! दुष्टों की आदत छोड़ दे और कुछ शर्म कर और ज़रा अपने मुँह को चिन्तन-मनन के शीशे में देख कि क्या तूने अभी तक अपनी उम्र में कभी साहित्यकला में से कुछ पढ़ा है या बातों की वाग्मिता और आलंकारिकता के उतार-चढ़ाव तुझे मालूम हैं या तूने कभी दो अरबी वाक्यों को जोड़ा है या एक-दो दोहे पिरोये हैं? यदि तुझे इस बात का दावा है तो प्रमाण प्रस्तुत कर। तुझे ज्ञात है कि जब तूने क़ुरआन शरीफ़ और इस्लाम पर हमला किया था तो मैंने बराहीन में भी तुझे सम्बोधित किया था और मेरा तुझे सम्बोधित करना केवल इसलिए था ताकि तेरी घोर मूर्खता और मूढ़ता लोगों पर स्पष्ट हो जाए। इसलिए मैंने कहा कि यदि तू यह समझता है कि तू अरबी का विद्वान है तो हमें अपनी साहित्य कुशलता दिखला और हम किसी भाषा में तुझे एक क़िस्सा सुनाएँगे और तुझ पर अनिवार्य होगा कि यदि तू उसमें भाषाविद है तो उन बातों का अरबी साहित्य में अनुवाद करके दिखला। यदि तूने अनुवाद कर दिया तो हम तुझे 50 रुपया नकद इनाम देंगे और तुम्हारी विद्वता और प्रतिष्ठा को स्वीकार कर लेंगे और तुझको प्रकाण्ड मुस्लिम विद्वानों में से समझेंगे, किन्तु तू चौपायों की तरह चुप हो गया और इनाम लेने की ओर मुड़कर न देखा और तूने अच्छा या बुरा कोई जवाब न दिया। क्योंकि इसमें तेरा भंडाफोड़ और रुसवाई थी। इससे सिद्ध हो गया कि तू एक मूर्ख और छोटी सोच का आदमी है और तुझे अरबी भाषा का कुछ भी ज्ञान नहीं और तूने इनाम लेने की ओर कोई भी क़दम न बढ़ाया। क्योंकि तू चौपायों के समान एक मूर्ख है और विद्वानों में से नहीं है और तुझे

अरबी भाषा का कुछ भी ज्ञान नहीं। बल्कि तू सड़े हुए पानी में पड़कर बेहोश होने वालों में से है। मुझे पूर्णत: विश्वास हो गया कि तू अरबी भाषा से पूर्णत: अनभिज्ञ है और तुझे सामर्थ्य नहीं कि तू उसको समझ सके और उसके गूढ़ रहस्यों को जान सके। तुझमें तो केवल डंक और डंक मारना है और तेरे पास ज्ञान के सागर में से एक बूँद भी नहीं है, इसलिए हे निकृष्ट! बहुत घमण्ड न कर और ज़्यादा मुंशीगीरी मत दिखला। क्या तू अपनी इस मूर्खता के बावजूद क़ुरआन पर जिरह-बहस करता है और इस किताब में दोष ढूँढ़ता है जिसकी वाग्मिता मानव जाति की वाग्मिताओं से आगे बढ़ गई। हे दीन (धर्म) और अक़्ल के दुश्मन! क्या तू अपनी हालत को नहीं देखता और अपने ज्ञान के दायरे को नहीं पहचानता, कि यह तू क्या करता है? यदि तू अपने आप को कुछ समझता है और सोचता है कि तू भी एक साहित्यकारों में से है तो सावधान हो जा, कि मैं तेरे दिलगुर्दे की आग निकालने के लिए खड़ा हो गया हूँ और तेरी तलवार का जौहर देखने के लिए उठ खड़ा हुआ हूँ और त्वरित इस पुस्तक को अरबी में इसीलिए लिखा है, जो स्वर्णिम अलंकारों और अद्भुत मोतियों से भरी हुई है और साहित्य की लावण्यता और उसकी अनुपम विशिष्टताओं पर आधारित है और मैंने इसको उच्चकोटि की उपमाओं और सूक्ष्म रहस्यों के मोतियों से सजाया और पिरोया है जिसमें अरबी उदाहरण और साहित्यिक गूढ़ताओं की भरमार है और नई शैली के दोहे और उच्चकोटि के क़सीदे भी हैं और मैंने इसमें अजनबी शैर (दोहे) नहीं लिखे बल्कि वे सब मेरी सोच और मेरे दिल में पैदा होने वाली बातों के फल हैं और यह मैंने इसलिए लिखा ताकि तेरी गूढ़ बुद्धि और विद्वता के स्तर को आजमाऊँ और तेरे ज्ञान और बखान की आलंकारिकता और गूढ़ता को देखूँ कि क्या तू अपने दावे में सच्चा और अपने शोरगोगे का पात्र है, और क्या तुझे हक़ (अधिकार) है कि तू अल्लाह की किताब "क़ुरआन" पर हमला करे और उसके महान ग्रन्थ की आलंकारिकता और उसकी कुश्ती के अखाड़े के बारे में नुक्ताचीनी करे? इसलिए मैंने चाहा कि देखूँ कि तू अपने दावे में सच्चा है या झूठे दज्जालों में से है। मुझे ख़ुदा तआला ने आकाशवाणी की है कि तू मेरा मुक़ाबला

नहीं कर सकेगा और ख़ुदा तेरी असमर्थता प्रकट कर देगा और तुझे शर्मिन्दा कर देगा और सिद्ध करेगा कि तू मूर्खता और पथभ्रष्टता में क़ैद है। चाहे तेरी सारी क़ौम इस मुक़ाबले में तेरे साथ हो जाए लेकिन अन्ततः तुम पराजित होगे। मेरे इस इक़रार के बावजूद यह विदित हो कि मेरी यह किताब अपनी आलंकारिकता में कोई उच्चतम् स्तर की विशेषताओं पर आधारित नहीं है, बल्कि मैंने जल्द-जल्द इसको घसीट दिया है और जानता हूँ कि इस जैसी लिखना साहित्यकारों के लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं है, बल्कि इसकी हमतुल्य लिखने के लिए उनकी छोटी सी कोशिश पर्याप्त है। यदि तू साहित्यकला में कुशल है तो कोई आश्चर्य नहीं कि तू इससे अधिक मनोहर और आलंकारिक लिख ले, और तुझको यह भी अनुमति है कि तू लिखने में अपनी सारी क़ौम की सहायता भी ले ले, क्योंकि तुम्हें उनसे मदद लेने में हमारी ओर से कोई रोक नहीं। मैंने इस किताब में किसी दूसरे से मदद नहीं ली और जो कुछ मैंने कहा वह ख़ुदा तआला की कृपा से कुछ ही दिनों के अन्दर आशुकवि★ की तरह अपनी ओर से कहा है और इसके बावजूद मैं तुझे और तेरे भाइयों और तेरे मित्रों और तेरी क़ौम और तेरे मददगारों को जो यह कहते हैं कि हम मौलवी हैं पूरे दो माह का समय देता हूँ और यह ढील मेरे प्रकाशन की तिथि से है ताकि तुम अपनी आलंकारिकता की दक्षता को दिखलाओ। यदि तुम इस किताब के समान किताब बना लाए और इस अवधि में जो एक लम्बी अवधि है तुमने हर इक सदृशता और समानता की दृष्टि से बनाकर प्रस्तुत कर दिया और हमने देख लिया कि तुमने बराबरी का मुक़ाबला कर दिखाया तो इस दशा में हम तुम्हें पाँच हज़ार रुपया इनाम देंगे और यह वादा निःसन्देहतः अल्लाह तआला की क़सम खाकर करता हूँ और यदि तुझे ईमानी क़समों पर भरोसा न हो तो हम यह रक़म ब्रिटिश सरकार के कोष में जमा करा देंगे ताकि तू सन्तुष्ट हो सके, और हम ख़ुदा की क़सम खाकर यह वादा करते हैं कि मुक़ाबला करने वाले को उसका हक़ उसके विजयी होने के पश्चात् तुरन्त दे देंगे और यदि हमने वादा तोड़ा तो फिर झूठे ठहरेंगे और इस बात के निर्णय

★ बिना तैयारी किए तत्काल अपनी बात कहने वाला-अनुवादक

के लिए हम ब्रिटिश सरकार को न्यायक (सरपंच) ठहराते हैं और ब्रिटिश सरकार को यह अधिकार प्राप्त होगा कि वह हमारा यह इनाम उसको दे दे जो मुक़ाबला के समय पूरा उतरे और हमारी शर्त के अनुसार हमारे गद्य और पद्य की भाँति लिख लावे और पद्य अपनी श्रेष्ठता और आलंकारिकता एवं सत्यता और युक्ति की अनिवार्यताओं में पद्य के समान हो और गद्य गद्य के समान हो और उन पर ख़ुदा की लानत (धिक्कार) हो जो वादे को पूरा न करें। इसके अतिरिक्त ईसाइयों को यह अधिकार होगा कि वे इस मुक़ाबले में एक-दूसरे की सहायता भी ले लें और सब एक होकर इस मुक़ाबले के लिए उठें और एक-दूसरे के मददगार बन जाएँ और चाहिए कि अज्ञानी ज्ञानी से पूछ ले और दूर और निकट से अपने लिए हर इक सहायक और मददगार बुला लें और मसीह से भी मदद ले लें जो उनकी दृष्टि में उनका रब्ब है, हालाँकि अल्लाह के अतिरिक्त कोई रब्ब नहीं जो हमेशा से अपने बल पर क़ायम है और सारे लोक उसके बल पर क़ायम हैं। यदि वे अपने दावे में सच्चे हैं तो उन्हें चाहिए कि वे अपने उस रूहुल्लाह★ से भी मदद ले लें जो बोलियाँ सिखाता था।

यह वह बात है जिस पर हम हृदयपूर्वक सहमत हैं और इस बात पर भी सहमत हैं कि ब्रिटिश सरकार हम में और हमारे मुख़ालिफ़ों (विरोधियों) में न्यायक बन जाए। फिर यदि सरकार उन लोगों को अपने दावों में सच्चा पाए जो क़ुरआन करीम की आलंकारिकता एवं वाग्मिता पर हमला करते हैं और कहते हैं कि हम भी मुसलमानों के उलमा की तरह मौलवी हैं मूर्ख नहीं, और बातों में बल और भोंड़ापन और वाग्मिता एवं अवाग्मिता परखने की विशेष योग्यता रखते हैं। यदि सरकार इस परीक्षा में उनको सच्चा और विजयी पाए तो उस पर अनिवार्य होगा कि हमारा इनाम उनको दे दे और हमारी बातों को झूठा समझे और उनके ज्ञान की धुरन्धरता को देश-विदेशों में मशहूर कर दे और संसार के कोने कोने तक उनकी विद्वता फैला दे और उनके नाम विद्वानों में लिख ले और यदि सरकार उनको साहित्यिक विद्वान न पाए बल्कि मूर्खों और मूढ़ों की एक टोली समझे जो

★**रूहुल्लाह-** ईसाइयों के निकट यह हज़रत ईसा मसीह का लक़ब है- अनुवादक

इस प्रकार की विशेषताओं से रहित और परित्यक्त हैं, तो हम ब्रिटिश सकार के न्याय से यह आशा रखते हैं कि इसके बाद उन झूठों को इस बात से रोक देगी कि वे अपने आप को मौलवी के नाम से नामित करें और मूर्ख होने के बावजूद क़ुरआन करीम की आलंकारिकता पर ऐतराज़ करें।

हमारे इस आमन्त्रण और धर्मयुद्ध में हमारा पहला संबोधित और आमन्त्रित पादरी इमादुद्दीन है। क्योंकि वह क़ुरआन शरीफ़ की वाग्मिता और अलंकारिकता का इन्कार करता है और अपनी हर एक किताब में निर्लज्जता दिखाता है और कहता है कि मैं एक प्रकाण्ड विद्वान हूँ और क़ुरआन सरस सुबोध नहीं बल्कि सहीह भी नहीं है और मैं उसमें कोई अलंकारिकता और वाग्मिता नहीं देखता जैसा कि समझा गया है, और कहता है कि मैं बहुत जल्द उसकी तफ़्सीर प्रकाशित करूँगा और इसी तरह की हम और भी बातें उसकी तक़रीरों में सुनते हैं और वह अरबी में महारत का दावा करता है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ी निर्लज्जता और धृष्टता से गालियाँ देता है और मूर्ख और मूढ़ होने के बावजूद मुंशी समझकर ऐसे घमण्ड और दावे से क़ुरआन शरीफ़ और उसकी वाग्मिता पर ऐसे आरोप लगाता है कि मानो वह इमराउल क़ैस का चाचा या मौसेरा भाई है और अपने आप को मौलवी कहता है और अहंकारियों की तरह अकड़-अकड़कर चलता है।

इसके बाद हम हर एक क्रिस्टान को जो अपने आप को मौलवी कहता है सम्बोधित करते हैं और उन सब के नाम हमने हाशिए में लिख दिए हैं★और हम उन सब को मुक़ाबले के लिए बुलाते हैं। यदि वे इस किताब के सदृश और अनुरूप कोई किताब बना लावें तो हमारी ओर से उनको पाँच हज़ार रुपए इनाम है। जैसा कि हम इस भाग में पहले लिख चुके हैं कि मुक़ाबले पर किताब लिखने

★**हाशिया**- मौलवी करमदीन, मौलवी निज़ामदीन, मौलवी इलाही बख़्श, मौलवी हमीदुल्लाह ख़ान, मौलवी नूरुद्दीन, मौलवी सैयद अली, मौलवी अब्दुल्लाह बेग, मौलवी हुस्सामुद्दीन बम्बई, मौलवी हुस्सामुद्दीन, मौलवी निज़ामुद्दीन, मौलवी क़ाज़ी सफ़दर अली, मौलवी अब्दुर्रहमान, मौलवी हसन अली इत्यादि इत्यादि।

वालों के लिए हमारी ओर से तीन माह की मोहलत है और यदि वे मुक़ाबला करने के लिए न निकलें और नि:सन्देह जान लो कि वे न निकलेंगे तो जान लो कि वे पक्के झूठे हैं।

ज्ञात रहे कि यह पुरस्कार इस दशा में है कि जब मुक़ाबले पर लिखी जाने वाली किताब ठीक हमारी किताब के समान हो और समानता और समरूपता को सिद्ध करे। यदि लिखने से इन्कार करें और लोमड़ियों की तरह पीठ फेरकर भागें और इन अर्थों के बयान करने पर समर्थ न हो सकें और क़ुरआन शरीफ़ के अपमान की आदत को न छोड़ें और उसकी निन्दा से न रुकें और ख़ातमुन्नबीयीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गालियाँ देने से न रुकें और न इस व्यर्थ अलापने से अपने आप को रोकें कि क़ुरआन सरस सुबोध नहीं और न अनादर और अपमान के मार्ग को छोड़ें, तो उन पर ख़ुदा तआला की ओर से हज़ार लानत (धिक्कार) है। अत: चाहिए कि सारी क़ौम इस पर आमीन (तथास्तु) कहे-

1-लानत	2-लानत	3-लानत
4-लानत	5-लानत	6-लानत
7-लानत	8-लानत	9-लानत
10-लानत	11-लानत	12-लानत
13-लानत	14-लानत	15-लानत
16-लानत	17-लानत	18-लानत
19-लानत	20-लानत	21-लानत
22-लानत	23-लानत	24-लानत
25-लानत	26-लानत	27-लानत
28-लानत	29-लानत	30-लानत
31-लानत	32-लानत	33-लानत
34-लानत	35-लानत	36-लानत

37-लानत 38-लानत 39-लानत
40-लानत 41-लानत 42-लानत
43-लानत 44-लानत 45-लानत
46-लानत 47-लानत 48-लानत
49-लानत 50-लानत 51-लानत
52-लानत 53-लानत 54-लानत
55-लानत 56-लानत 57-लानत
58-लानत 59-लानत 60-लानत
61-लानत 62-लानत 63-लानत
64-लानत 65-लानत 66-लानत
67-लानत 68-लानत 69-लानत
70-लानत 71-लानत 72-लानत
73-लानत 74-लानत 75-लानत
76-लानत 77-लानत 78-लानत
79-लानत 80-लानत 81-लानत
82-लानत 83-लानत 84-लानत
85-लानत 86-लानत 87-लानत
88-लानत 89-लानत 90-लानत
91-लानत 92-लानत 93-लानत
94-लानत 95-लानत 96-लानत
97-लानत 98-लानत 99-लानत
100-लानत 101-लानत 102-लानत
103-लानत 104-लानत 105- लानत
105-लानत 106-लानत 107-लानत
108-लानत 109-लानत 110-लानत
111-लानत 112-लानत 113-लानत

114-लानत	115-लानत	116-लानत
117-लानत	118-लानत	119-लानत
120-लानत	121-लानत	122-लानत
123-लानत	124-लानत	125-लानत
126-लानत	127-लानत	128-लानत
129-लानत	130-लानत	131-लानत
132-लानत	133-लानत	134-लानत
135-लानत	136-लानत	137-लानत
138-लानत	139-लानत	140-लानत
141-लानत	142-लानत	143-लानत
144-लानत	145-लानत	146-लानत
147-लानत	148-लानत	149-लानत
150-लानत	151-लानत	152-लानत
153-लानत	154-लानत	155-लानत
156-लानत	157-लानत	158-लानत
159-लानत	160-लानत	161-लानत
162-लानत	163-लानत	164-लानत
165-लानत	166-लानत	167-लानत
168-लानत	169-लानत	170-लानत
171-लानत	172-लानत	173-लानत
174-लानत	175-लानत	176-लानत
177-लानत	178-लानत	179-लानत
180-लानत	181-लानत	182-लानत
183-लानत	184-लानत	185-लानत
186-लानत	187-लानत	188-लानत
189-लानत	190-लानत	191-लानत

192-लानत 193-लानत 194-लानत
195-लानत 196-लानत 197-लानत
198-लानत 199-लानत 200-लानत
201-लानत 202-लानत 203-लानत
204-लानत 205-लानत 206-लानत
207-लानत 208-लानत 209-लानत
210-लानत 211-लानत 212-लानत
213-लानत 214-लानत 215-लानत
216-लानत 217-लानत 218-लानत
219-लानत 220-लानत 221-लानत
222-लानत 223-लानत 224-लानत
225-लानत 226-लानत 227-लानत
228-लानत 229-लानत 230-लानत
231-लानत 232-लानत 233-लानत
234-लानत 235-लानत 236-लानत
237-लानत 238-लानत 239-लानत
240-लानत 241-लानत 242-लानत
243-लानत 244-लानत 245-लानत
246-लानत 247-लानत 248-लानत
249-लानत 250-लानत 251-लानत
252-लानत 253-लानत 254-लानत
255-लानत 256-लानत 257-लानत
258-लानत 259-लानत 260-लानत
261-लानत 262-लानत 263-लानत
264-लानत 265-लानत 266-लानत
267-लानत 268-लानत 269-लानत

270-लानत	271-लानत	272-लानत
273-लानत	274-लानत	275-लानत
276-लानत	277-लानत	278-लानत
279-लानत	280-लानत	281-लानत
282-लानत	283-लानत	284-लानत
285-लानत	286-लानत	287-लानत
288-लानत	289-लानत	300-लानत
301-लानत	302-लानत	303-लानत
304-लानत	305-लानत	306-लानत
307-लानत	308-लानत	309-लानत
310-लानत	311-लानत	312-लानत
313-लानत	314-लानत	315-लानत
316-लानत	317-लानत	318-लानत
319-लानत	320-लानत	321-लानत
322-लानत	323-लानत	324-लानत
325-लानत	326-लानत	327-लानत
328-लानत	329-लानत	330-लानत
331-लानत	332-लानत	333-लानत
334-लानत	335-लानत	336-लानत
337-लानत	338-लानत	339-लानत
340-लानत	341-लानत	342-लानत
343-लानत	344-लानत	345-लानत
346-लानत	347-लानत	348-लानत
349-लानत	350-लानत	351-लानत
352-लानत	353-लानत	354-लानत
355-लानत	356-लानत	357-लानत

358-लानत 359-लानत 360-लानत
361-लानत 362-लानत 363-लानत
364-लानत 365-लानत 366-लानत
367-लानत 368-लानत 369-लानत
370-लानत 371-लानत 372-लानत
373-लानत 374-लानत 375-लानत
376-लानत 377-लानत 378-लानत
379-लानत 380-लानत 381-लानत
382-लानत 383-लानत 384-लानत
385-लानत 386-लानत 387-लानत
388-लानत 389-लानत 390-लानत
391-लानत 392-लानत 393-लानत
394-लानत 395-लानत 396-लानत
397-लानत 398-लानत 399-लानत
400-लानत 401-लानत 402-लानत
403-लानत 404-लानत 405-लानत
406-लानत 407-लानत 408-लानत
409-लानत 410-लानत 411-लानत
412-लानत 413-लानत 114-लानत
415-लानत 416-लानत 417-लानत
418-लानत 419-लानत 420-लानत
421-लानत 422-लानत 423-लानत
424-लानत 425-लानत 426-लानत
427-लानत 428-लानत 429-लानत
430-लानत 431-लानत 432-लानत
433-लानत 434-लानत 435-लानत

436-लानत 437-लानत 438-लानत
439-लानत 440-लानत 441-लानत
442-लानत 443-लानत 444-लानत
445-लानत 446-लानत 447-लानत
448-लानत 449-लानत 450-लानत
451-लानत 452-लानत 453-लानत
454-लानत 455-लानत 456-लानत
457-लानत 458-लानत 459-लानत
460-लानत 461-लानत 462-लानत
463-लानत 464-लानत 465-लानत
466-लानत 467-लानत 468-लानत
469-लानत 470-लानत 471-लानत
472-लानत 473-लानत 474-लानत
475-लानत 476-लानत 477-लानत
478-लानत 479-लानत 480-लानत
481-लानत 482-लानत 483-लानत
484-लानत 485-लानत 486-लानत
487-लानत 488-लानत 489-लानत
490-लानत 491-लानत 492-लानत
493-लानत 494-लानत 495-लानत
496-लानत 497-लानत 498-लानत
499-लानत 500-लानत 501-लानत
502-लानत 503-लानत 504-लानत
505-लानत 506-लानत 507-लानत
508-लानत 509-लानत 510-लानत
511-लानत 512-लानत 513-लानत

514-लानत 515-लानत 516-लानत
517-लानत 518-लानत 519-लानत
520-लानत 521-लानत 522-लानत
523-लानत 524-लानत 525-लानत
526-लानत 527-लानत 528-लानत
529-लानत 530-लानत 531-लानत
532-लानत 533-लानत 534-लानत
535-लानत 536-लानत 537-लानत
538-लानत 539-लानत 540-लानत
541-लानत 542-लानत 543-लानत
544-लानत 545-लानत 546-लानत
547-लानत 548-लानत 549-लानत
550-लानत 551-लानत 552-लानत
553-लानत 554-लानत 555-लानत
556-लानत 557-लानत 558-लानत
559-लानत 560-लानत 561-लानत
562-लानत 563-लानत 564-लानत
565-लानत 566-लानत 567-लानत
568-लानत 569-लानत 570-लानत
571-लानत 572-लानत 573-लानत
574-लानत 575-लानत 576-लानत
577-लानत 578-लानत 579-लानत
580-लानत 581-लानत 582-लानत
583-लानत 584-लानत 585-लानत
586-लानत 587-लानत 588-लानत
589-लानत 590-लानत 591-लानत

592-लानत 593-लानत 594-लानत
595-लानत 596-लानत 597-लानत
598-लानत 599-लानत 600-लानत
601-लानत 602-लानत 603-लानत
604-लानत 605-लानत 606-लानत
607-लानत 608-लानत 609-लानत
610-लानत 611-लानत 612-लानत
613-लानत 614-लानत 615-लानत
616-लानत 617-लानत 618-लानत
619-लानत 620-लानत 621-लानत
622-लानत 623-लानत 624-लानत
625-लानत 626-लानत 627-लानत
628-लानत 629-लानत 630-लानत
631-लानत 632-लानत 633-लानत
634-लानत 635-लानत 636-लानत
637-लानत 638-लानत 639-लानत
640-लानत 641-लानत 642-लानत
643-लानत 644-लानत 645-लानत
646-लानत 647-लानत 648-लानत
649-लानत 650-लानत 651-लानत
652-लानत 653-लानत 654-लानत
655-लानत 657-लानत 658-लानत
659-लानत 660-लानत 661-लानत
662-लानत 663-लानत 664-लानत
665-लानत 666-लानत 667-लानत
668-लानत 669-लानत 670-लानत

671-लानत 672-लानत 673-लानत
674-लानत 675-लानत 676-लानत
677-लानत 678-लानत 679-लानत
680-लानत 681-लानत 682-लानत
683-लानत 684-लानत 685-लानत
686-लानत 687-लानत 688-लानत
689-लानत 690-लानत 691-लानत
692-लानत 693-लानत 694-लानत
695-लानत 696-लानत 697-लानत
698-लानत 699-लानत 700-लानत
701-लानत 702-लानत 703-लानत
704-लानत 705-लानत 706-लानत
707-लानत 708-लानत 709-लानत
710-लानत 711-लानत 712-लानत
713-लानत 714-लानत 715-लानत
716-लानत 717-लानत 718-लानत
719-लानत 720-लानत 721-लानत
722-लानत 723-लानत 724-लानत
725-लानत 726-लानत 727-लानत
728-लानत 729-लानत 730-लानत
731-लानत 732-लानत 733-लानत
734-लानत 735-लानत 736-लानत
737-लानत 738-लानत 739-लानत
740-लानत 741-लानत 742-लानत
743-लानत 744-लानत 745-लानत
746-लानत 747-लानत 748-लानत

749-लानत	750-लानत	751-लानत
752-लानत	753-लानत	754-लानत
755-लानत	756-लानत	757-लानत
758-लानत	759-लानत	760-लानत
761-लानत	762-लानत	763-लानत
764-लानत	765-लानत	766-लानत
767-लानत	768-लानत	769-लानत
770-लानत	771-लानत	772-लानत
773-लानत	774-लानत	775-लानत
776-लानत	777-लानत	778-लानत
779-लानत	780-लानत	781-लानत
782-लानत	783-लानत	784-लानत
785-लानत	786-लानत	787-लानत
788-लानत	789-लानत	790-लानत
791-लानत	792-लानत	793-लानत
794-लानत	795-लानत	796-लानत
797-लानत	798-लानत	799-लानत
800-लानत	801-लानत	802-लानत
803-लानत	804-लानत	805-लानत
806-लानत	807-लानत	808-लानत
809-लानत	810-लानत	811-लानत
812-लानत	813-लानत	814-लानत
815-लानत	816-लानत	817-लानत
818-लानत	819-लानत	820-लानत
821-लानत	822-लानत	823-लानत
824-लानत	825-लानत	826-लानत

827-लानत 828-लानत 829-लानत
830-लानत 831-लानत 832-लानत
833-लानत 834-लानत 835-लानत
836-लानत 837-लानत 838-लानत
839-लानत 840-लानत 841-लानत
842-लानत 843-लानत 844-लानत
845-लानत 846-लानत 847-लानत
848-लानत 849-लानत 850-लानत
851-लानत 852-लानत 853-लानत
854-लानत 855-लानत 856-लानत
857-लानत 858-लानत 859-लानत
860-लानत 861-लानत 862-लानत
863-लानत 864-लानत 865-लानत
866-लानत 867-लानत 868-लानत
869-लानत 870-लानत 871-लानत
872-लानत 873-लानत 874-लानत
875-लानत 876-लानत 877-लानत
878-लानत 879-लानत 880-लानत
881-लानत 882-लानत 883-लानत
884-लानत 885-लानत 886-लानत
887-लानत 888-लानत 889-लानत
890-लानत 891-लानत 892-लानत
893-लानत 894-लानत 895-लानत
896-लानत 897-लानत 898-लानत
899-लानत 900-लानत 901-लानत
902-लानत 903-लानत 904-लानत

905-लानत 906-लानत 907-लानत
908-लानत 909-लानत 910-लानत
911-लानत 912-लानत 913-लानत
914-लानत 915-लानत 916-लानत
917-लानत 918-लानत 919-लानत
920-लानत 921-लानत 922-लानत
923-लानत 924-लानत 925-लानत
926-लानत 927-लानत 928-लानत
929-लानत 930-लानत 931-लानत
932-लानत 933-लानत 934-लानत
935-लानत 936-लानत 937-लानत
938-लानत 939-लानत 940-लानत
941-लानत 942-लानत 943-लानत
944-लानत 945-लानत 946-लानत
947-लानत 948-लानत 949-लानत
950-लानत 951-लानत 952-लानत
953-लानत 954-लानत 955-लानत
956-लानत 957-लानत 958-लानत
959-लानत 960-लानत 961-लानत
962-लानत 963-लानत 964-लानत
965-लानत 966-लानत 967-लानत
968-लानत 969-लानत 970-लानत
971-लानत 972-लानत 973-लानत
974-लानत 975-लानत 976-लानत
977-लानत 978-लानत 979-लानत
980-लानत 981-लानत 982-लानत

983-लानत	984-लानत	985-लानत
986-लानत	987-लानत	988-लानत
989-लानत	990-लानत	991-लानत
992-लानत	993-लानत	994-लानत
995-लानत	996-लानत	997-लानत
998-लानत	999-लानत	1000-लानत

आज मैं स्वाधीनों और पराधीनों को गवाह ठहराकर ईसाइयों के सामने बरकत और लानत रखता हूँ। बरकत से तात्पर्य दुनिया की बरकत है जो किताब के मुक़ाबले के समय उनको मिलेगी और विजय और प्रभुत्व के साथ-साथ वे बहुत सा पुरस्कार पाएँगे या तौबा (पश्चाताप) करने और क़ुरआन के अपमान से रुकने के कारण उनको परलोक की भलाइयाँ मिलेंगी। लानत उन पर केवल इस दशा में पड़ेगी कि जब वे जवाब देने से मुँह फेरेंगे और इसके साथ-साथ क़ुरआन करीम के अनादर और अपमान से नहीं रुकेंगे।

जान लो कि हर एक व्यक्ति जो औरस पुत्र है और कुलच्छन स्त्रियों और दज्जाल (छलियों) की संतान में से नहीं है वह दो बातों में से एक बात अवश्य अपनाएगा अर्थात् या तो इसके बाद झूठ और मनगढ़त बातें करने से रुक जाएगा या हमारी इस पुस्तक जैसी पुस्तक लिखकर प्रस्तुत करेगा और लेख को हमारे लेख की तरह हीरे-मोती के दानों की तरह पिरोकर अलंकृत करेगा। लेकिन वह व्यक्ति जिसने न तो हमारी पुस्तक जैसी पुस्तक लिखी और न क़ुरआन करीम का अनादर और अपमान करना छोड़ा और न क़ुरआन की वाग्मिता (सरसता) पर अकारण हमला करने से रुका तो उस पर वे सब बातें चरितार्थ होंगी जो हम इस पुस्तक में लिख चुके हैं और उस पर ख़ुदा और फ़रिश्तों और तमाम् लोगों की लानत है। अत: चाहिए कि सारे लोग आमीन, आमीन, आमीन कहें।

क़सीदः

ख़ुदा की पवित्र पुस्तक क़ुरआन की श्रेष्ठता और सम्मान में

لَمَّا أرى الفرقانُ مَيْسمَه تردَّى مَن طغى
مَن كان نابِغَ وقتِه جاء المواطنَ ألثغَا

1-जब क़ुरआन ने अपनी छटा दिखलाई तो हर मायावी औंधे मुँह गिर गया और जो अपने समय का वाग्मी और वाक्पटु था वह हकलाकर मैदान में आया।

و إذا أرى وجهًا بأنوار الجمال مُصبَّغا
فدَرَى المعارضُ أنه ألغى الفصاحة أو لغا

2-जब क़ुरआन ने ऐसा मार्ग दिखलाया जो ब्रह्मज्ञानों से भरा हुआ था तो विरोधी समझ गया कि वह क़ुरआन के सामने वाग्मिता और आलंकारिकता से रहित है और व्यर्थ बक रहा है।

من كان ذا عينِ النهى فإلى محاسنه صغٰى
إلّا الذى مِن جهله أبغى الضلالة أو بغٰى

3-जो व्यक्ति बुद्धिमान था वह क़ुरआन की विशेषताओं की ओर झुक गया और वह शेष रहा जो मूर्खता में आगे बढ़ा और जिसने अत्याचार किया।

عينُ المعارف كلّها آتاه حِبٌّ مُبتغٰى
لا يُنبِئنّ ببحره الزخّار كلبًا مولغا

4-क़ुरआन को ख़ुदा ने समस्त अध्यात्मज्ञानों का सागर बनाया है और उसके ठाठें मारते हुए सागर के बारे में उस कुत्ते को ख़बर नहीं दी जाती जिसको थोड़ा सा पानी पिलाया जाता है।

اِقْبَلْ عيونَ علومه أو أَعرِضَنْ مُستولِغا
واتْبَعْ هداه أَوِ اعْصِه إن كنتَ مُلْغًى مُتّعا

5-उसकी ज्ञान की धाराओं को ग्रहण कर या बेशर्म बेबाक की तरह दूर हो जा। और

उसकी शिक्षाओं का अनुसरण कर। और यदि तू मूर्ख, अपशब्द बकने वाला और धर्म को नष्ट करने वाला है तो अवज्ञाकारी बन जा।

ما غادرَ القرآنُ فی المیدان شابًا بُرْزَغا
قتَل العِدا رعبًا و إن باری العدوّ مُسبَّغا

6-क़ुरआन ने युद्ध में किसी ग़द्दार को नहीं छोड़ा, उसने दुश्मनों को अपनी धाक (तेज) से क़त्ल किया चाहे दुश्मन कवच पहनकर ही क्यों न आया हो।

قد أنکروا جهلًا و ما بلغوه علمًا مَبْلغًا
حتی انثنَوا کالخائبین و أضرموا نار الوغی

7-विरोधियों ने मूर्खता से उसका इन्कार किया और उसके शिखर तक उनका ज्ञान न पहुँच सका और उसके मुक़ाबले से हताश होकर उन्होंने युद्ध की आग को भड़काया।

نورٌ علی نور هُدًی، یومًا فیومًا فی الثغا
مَن کان مُنکِرَ نوره قد جئتُه متفرّغا

8-उसकी शिक्षाएँ अत्यन्त शुभ (कल्याणकारी) और देदीप्यमान हैं और दिन-प्रतिदिन वे फैल रही हैं और जिसे उसकी शिक्षाओं पर विश्वास नहीं है मैं उसी के लिए निश्चिन्त होकर आया हूँ।

فیها العلوم جمیعها و حلیبُها لمن ارتغا
فیها المعارف کلّها و قلیبُها بل أبلغا

9-उसमें सारे ज्ञान हैं और उसका दूध उसी के लिए है जो उसका झाग पीता है और उसमें समस्त अध्यात्मज्ञान हैं और उन ज्ञानों का कुआँ इससे भी गहरा है।

أعطی الوری بدِلائه ماءً مَعینًا سیّغَا
أروی الخلائقَ کلّهم إلا لئیمًا أبْدَغا

10-उसने लोगों को अपने डोल से चित्तानुकूल (रुचिकर) पानी पिलाया और कमीने तथा बुराई में लिप्त व्यक्ति के अतिरिक्त सब को तृप्त किया।

مَن جاءه متبخترًا و أری مُدًی أو مِبْزَغا
فتراه مغلوبًا علیٰ تُرْبِ الهوان ممرَّغا

11-जो उसके पास अहंकार से भरकर आया और अपनी छुरियाँ और चाकू दिखलाए

तो तू उसको असफलता और अपमान के गढ़े में गिरा हुआ देखेगा।

سيفٌ يكسّر ضرسَ مَن بارى وجاء مُثَغِّثِ
أسدٌ يمزّق صولُه إن رَاغَ جملٌ أو رغا

12- वह एक ऐसी तलवार है कि जो उसका सामना करने के लिए निकलता है तो वह उसके दाँत तोड़ देती है। वह एक ऐसा शेर है कि उसका हमला उस ऊँट को टुकड़े-टुकड़े कर देता है जो उसकी ओर मुँह खोलता या चिल्लाता है।

ويلٌ لِكَفّارٍ لديغٍ لا يفارق مَلدَغا
ويل لمن بزَغتْ له شمس فعادى مَبْزَغا

13-उस डसे हुए काफ़िर (अधर्मी) पर अफ़सोस है जो उस जगह से दूर नहीं होता जहाँ डसा गया है और उस पर भी अफ़सोस कि जिसके लिए सूरज चमका और वह चमकते सूरज से दुश्मनी करने लगा।

مَن فرَّ من فيضانه الاعلى ومما أفرغا
ما كان قلبًا تائبا بل كان لحمًا أسلَغا

14-जो व्यक्ति उसके महान उपकार से और उससे जिस पर उपकार किया गया, दूर भागा तो वह तौब: करने वाला दिल नहीं था, बल्कि वह एक ऐसा मांस था जो नर्म न हुआ।

इसके अतिरिक्त इस फ़ित्न: भड़काने वाले आपत्तिकर्ता का यह कथन कि "ज़ी मिर्रह" शैतान का नाम है और जो उसने कहा कि मिर्रह पित्त को कहते हैं और इसके उलट हर एक राय झूठी है। तो यह सारा उसका झूठ, छल और मनगढ़न्त है और हम फ़ित्न: भड़काने वाले दज्जालों से ख़ुदा की शरण चाहते हैं। बल्कि वह ठोस और प्रामाणिक बात जिसके उदाहरण अरबी भाषा के अलंकर्ताओं और वाग्मियों के कथनों में पाये जाते हैं यह है कि जब धागा को वटकर मज़बूत करते हैं तो उस मज़बूत करने का नाम "मिर्रह" है और मिर्रह का मूल अर्थ यह है कि धागे को इतना वटा और मरोड़ा जाए कि वह मज़बूत हो जाए और इसके यही अर्थ "ताजुल उरूस" और "शारह क़ामूस" के लेखकों ने भी किए हैं। फिर इस शब्द को मरोड़ने और बट पर बट चढ़ाने के अर्थों से

आगे बढ़ाकर उसके परिणाम अर्थात् उस मज़बूती और ताक़त की ओर ले आए जो बट चढ़ाने के बाद पैदा होती है। क्योंकि जब धागे को बट जाए तो यह अनिवार्य है कि उसमें मज़बूती और ताक़त पैदा हो और वह एक मज़बूत चीज़ बन जाए। फिर यह शब्द बुद्धि के अर्थों की ओर स्थानान्तरित किया गया जैसा कि "हक़्ल" का शब्द, जिसका अर्थ है खेतीबाड़ी योग्य ज़मीन। "हक़्ल" अर्थात् हरे-भरे खेत की ओर स्थानान्तरित किया गया। क्योंकि बुद्धि भी एक ताक़त है जो प्रारम्भिक विषयों को पूरे ध्यान से सुनने देखने और कसने के बाद पैदा होती है और ज्ञानेन्द्रियों में से बाह्य इन्द्रिय ख़ुदा के आदेश से उन अवलोकनों द्वारा ज्ञान शक्ति प्राप्त करती है। फिर यह शब्द शारीरिक धातुओं में से चौथी धातु अर्थात् पित्त की ओर स्थानान्तरित किया गया जो चार शारीरिक मूल धातुओं★ में से एक है। क्योंकि पित्त अपनी शक्ति, दृढ़ता और तरलता में शेष धातुओं से बढ़कर है। इसीलिए इस स्वभाव वाला मूलत: बड़े-बड़े काम करने वाला शूर और साहसी होता है और उससे ऐसे काम होते हैं जो कायरता के विपरीत हैं। अत: यदि तू सत्या अभिलाषी है तो सोच-विचार कर।

और यदि तू गुमराही के ज़माने के मशहूर शायरों, वाग्मियों और अलंकर्ताओं के शैरों (दोहों) में से इसका उदाहरण ढूँढ़ना चाहे तो तेरे लिए इमराउल क़ैस के क़सीदा लामिय: का एक शैर पर्याप्त है। क्योंकि उसने कहा है:-

اَمَرَّهٗ (अमर्रहु) अर्थात् बट दिया और मरोड़ दिया।

इसी तरह अम्र इब्नि कुलसूम का एक शैर है और वह भी अपने समय का आशुकवि था और उसने यह शैर सब्आ मुअल्लक़: के क़सीदा ख़ामसा (पाँचवे क़सीदा) में कहा है कि: اُمِرَّتْ (उमिर्रत) अर्थात् चक्कर दिया जाय और फिराया जाय।

और मिर्रह शब्द की विशेषताओं में से यह है कि वह अपने अर्थ "बटने" और "मरोड़ने" के सन्दर्भ में अरबी और हिन्दी में पाया जाता है। क्योंकि हिन्दी लोग "इमरार" को मरोड़ना कहते हैं जो हिन्दी लोगों से छुपा नहीं, और यह स्पष्ट

★अर्थात् ख़ून, बलग़म, वात, पित्त- अनुवादक

प्रमाण बिना किसी शक और सन्देह के है। इस वास्तविकता का निचोड़ इससे निकलता है जो दो भाषाओं में प्रचलित है और इसमें एक रहस्य है जो ढूँढ़ने और खोजबीन करने वालों को भाता है।

और यह कि जो "ज़ी मिर्र:" का शब्द बुद्धि के अर्थ में प्रयुक्त होता है यदि इस विवरण की प्रामाणिकता के लिए हमसे इसका उदाहरण माँगो तो ज्ञात रहे कि "ताजुलउरूस" के लेखक ने जो "क़ामूस" का व्याख्याकार भी है ज़ी मिर्र: शब्द को "ज़ी अक़्ल" अर्थात् बुद्धिमान के शब्द से परिभाषित किया है और उदाहरण देते हुए कहा है कि अरब के लोग जब اِنّهٗ لَذُوْ مِرَّةٍ (इन्नहू ल ज़ू मिर्र:) बोलते हैं तो इससे तात्पर्य اِنّهٗ لَذُوْ عَقْلٍ (इन्नहू ल ज़ू अक़्ल, अर्थात्) बुद्धि वाला समझते हैं और यदि तेरे लिए यह उदाहरण पर्याप्त न हो हालाँकि वह पर्याप्त है। और इसके अतिरिक्त इसके समर्थन में यदि तू गुमराही के ज़माने का कोई शैर माँगे तो यह शैर ग़ौर से पढ़ जो "सबआ मुअल्लक़:" में से चौथे क़सीदा का शैर है जिसका लेखक अपने युग के साहित्यकारों और अलंकर्ताओं में से सबसे बढ़कर था और डेढ़ सौ वर्ष तक ज़िन्दा रहा।

حَصِدٍ وَنُجْحُ صَرِيمةٍ إِبرامُها رَجَعا بِأَمرِهِما إِلى ذى مِرَّةٍ

अनुवाद- वे दोनों ज़ि मिर्र: अर्थात् बुद्धि की ओर लौटे, और दृढ़ संकल्प से उद्देश्य प्राप्त हो जाते हैं।

ज्ञात रहे कि यह क़सीदे ऐसे मशहूर हैं जैसे कि चमकता हुआ सूरज। इसके अतिरिक्त समस्त साहित्यिक कवि इस पर सहमत हैं कि ये शैर वाग्मिता और आलंकारिकता के उच्च स्तर पर हैं और उनकी कलात्मकता और लाक्षणिकता पर सारे कवि एकमत हैं और अंग्रेज़ी सरकार ने इस किताब को अपने स्कूलों के विद्यार्थियों और कालेजों में पढ़ने वालों और साहित्यकला में दक्षता प्राप्त करने वालों की शिक्षापूर्ति के उद्देश्य से शामिल किया है। इससे तेरे जैसे मूर्ख, दुष्ट और अन्धे के अतिरिक्त और कोई इन्कार नहीं कर सकता।

यह प्राचीन और लोकप्रिय कवियों के वे प्रसिद्ध उदाहरण हैं जिनसे तुझे दोषी सिद्ध करना और तर्क द्वारा चुप कराना उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त वह

विषय जो क़ुरआन करीम की अगली-पिछली इबारत और उसकी मोतियों की लड़ियों की तरह पिरोयी हुई शैली के रहस्यों से स्पष्ट होता है कि वह शैली सीख और सन्मार्ग की चाहत रखने वालों के लिए बहुत ही निकट है। क्योंकि अल्लाह तआला ने जिस तरह रूहुलक़ुदुस को अपने कथन-

ذُوۡ مِرَّةٍ (ज़ू मिर्रः) (सूरः अन्नजम आयत 7) के साथ विशेष्य किया है उसी तरह उसे दूसरे स्थान पर ذِیۡ قُوَّةٍ عِنۡدَ ذِی الۡعَرۡشِ مَکِیۡنٍ (ज़ि क़ुव्वतः) (सूरः अत्तक्वीर आयत -21) के साथ विशेष्य किया है और कहा है कि ख़ुदा के निकट "शक्ति वाला" है। अतः एक स्थान पर ख़ुदा तआला का जिब्राईल को ज़ू मिर्रः कहना और दूसरे स्थान पर ज़ू मिर्रः की जगह ज़ू क़ुव्वतः कहना, यह वर्णन की शैलियों में ज़ू मिर्रः के अर्थ की एक गूढ़ व्याख्या है, जो दूसरे ढंग से वर्णन में की गई है। इसी तरह क़ुरआन करीम में ख़ुदा तआला का यही विधान जारी है कि क़ुरआन के कई स्थान उसके कई दूसरे स्थानों के लिए व्याख्या के रूप में हैं ताकि ख़ुदा तआला अपनी किताब को ख़ियानत करने वालों की हेरा-फेरी और रद्दोबदल से बचाए।

ख़ुदा तआला ने अपनी सुदृढ़ और निर्णायक किताब पवित्र क़ुरआन और अन्य प्रतिष्ठित ग्रन्थों में रूहुलक़ुदुस (अर्थात् जिब्राईल) की और भी विशेषताएँ वर्णन की हैं और अपने निकट उसकी पवित्रता, सच्चाई, अमानतदारी और निकटता का वर्णन किया है। अतः उसको शैतान वही समझेगा जो ख़ुद शैतान है।

क़यामत के दिन से बेपरवाह इस उद्दण्ड के इन आरोपों के अतिरिक्त उसका यह भी आरोप है कि वह कहता है कि मानो क़ुरआन करीम ने ईसाइयों के धर्म के वर्णन और उनके अक़ीदों (आस्थाओं) की व्याख्या में ग़लती की है। और मानो क़ुरआन शरीफ़ ने ईसाइयों के पादरियों के मतलब को नहीं समझा और उनकी ओर वे बातें मन्सूब कीं जो उनके अक़ीदों के विरुद्ध हैं। अतः जानना चाहिए कि उसका यह बयान सरासर लांछन और खुला-खुला झूठ है। सच यह है कि जब क़ुरआन करीम दुनिया में आया तो ईसाई कई फ़िर्क़ों में बँटे थे। कुछ ख़ुदा तआला की उपासना की भाँति हज़रत मसीह की उपासना करते थे और कुछ मसीह के साथ उनकी माँ की भी उपासना करते थे और कुछ उनकी तस्वीरों के

भी पुजारी थे और उनके अन्दर लड़ाई-झगड़े बहुत बढ़ गए थे और थोड़े से लोगों के अतिरिक्त सब के सब सन्मार्ग से भटक चुके थे। थोड़े बहुत जो एक ख़ुदा पर आस्था रखते थे उन्होंने भी दूसरी नई-नई रस्में अपना रखी थीं मानो अन्धों की तरह थे। अत: क़ुरआन ने जो देखा बयान कर दिया और अपने स्पष्ट और देदीप्यमान वर्णन से उनको आरोपी और निरुत्तर ठहराया और कहा कि तुम लोग ख़ुदा को छोड़कर मनुष्य की पूजा करते हो और अपने सबसे बड़े पालनहार की वंदना नहीं करते। अत: वे लोग अपने आप को इस आरोप से बरी न कर सके और ऐसे चुप हुए जैसे कि निरुत्तर होने वाले स्वयं चुप हो जाते हैं। अत: उन पर अकाट्य और निर्णायक तर्क सिद्ध हुआ और एक प्रमाण बना और उनके निरुत्तर और चुप हो जाने से यह सिद्ध हो गया कि वे ऐसी ही आस्था रखते थे जो क़ुरआन ने स्पष्ट किया। क्योंकि वे मुश्रिक (बहुदेववादी) थे। फिर उनके बाद ईसाइयों की दूसरी पीढ़ी आयी और अपने बाप-दादों के पगचिन्हों को अपनाया, फिर उन्होंने फ़लसफ़ा (दर्शन) की पुस्तकें पढ़ीं और उसके नियम सिद्धान्तों को सीखा और पूर्णत: उनके लती हो गए, फिर जब उन्होंने अपने आपको देखा कि उन्होंने अपने मज़हब में केवल ग़लती ही नहीं की बल्कि नाफ़र्मानी और धृष्टता भी की है तो वे स्तब्ध रह गए और ऐसे हो गए जैसे कि कोई नशे में होता है, और उन्होंने अपने आपको शिर्क (अनेकेश्वरवाद) में क़ैदियों की तरह जकड़ा हुआ पाया। फिर उनको अपने मज़हब पर बहुत अफ़सोस हुआ और शर्म आयी। फिर वे इस सोच में लग गए कि किसी तरह अपने दूषित मज़हब का सुधार करें और अपनी तुच्छ सोच को प्रचलित करें। लेकिन वे तबाह हो गए क्योंकि सुधार के लिए उन्होंने केवल षड़यन्त्र भरी चालें सोचीं और दूषित अक़ीदों और आस्थाओं में से कुछ भी न बदला, बल्कि बदला तो केवल प्रवचनों और उपदेशों का ढंग बदल दिया लेकिन इसके बावजूद निचोड़ वही था। इसलिए दुराचारियों का नाश हो। कैसी-कैसी गुमराही की आफ़तों ने उनको घेर लिया और बातों के निचोड़ में वे अपने पहले भाइयों जैसे हो गए और गम्भीरता से न देखा। लोगों को ख़ुश करने के लिए ख़ुदा को नाराज़ कर दिया और ख़ुदा तआला के वादों

और चेतावनियों को भुला दिया और नबियों की शिक्षाओं को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह के अतिरिक्त एक और ख़ुदा बना लिया है और उनके निकट वही क़यामत (अर्थात् अन्तिम हिसाब-किताब) के दिन का मालिक है और कहते हैं कि क़यामत के दिन उस पर मनुष्य होने का कोई लक्षण न होगा अर्थात् इसके बावजूद कि मनुष्यों की भाँति उसका शरीर होगा और हड्डियाँ और माँस भी, लेकिन नि:सन्देह वह ख़ुदा होगा। यह उनका और उन लोगों का अक़ीदा है जो उनसे पहले अन्धकार में चले गए और इस्लाम के प्रादुर्भाव के समय उपद्रव किया। फिर जैसा कि हम लिख चुके हैं कि इस ज़माने में उनकी आँखें खुलीं और अन्धकार कुछ कम हुआ। क्योंकि इस ज़माने में जब तर्क एवं दर्शनशास्त्र की विद्याएँ फैलीं तो वे अपने धर्म और मंतव्य की असंभव और निराधार बातों को ताड़ गए। फिर वे तावीलों (व्याख्याओं) की ओर दौड़े ताकि निन्दा, उपहास और व्यंग करने वालों से अपना बचाव करें। क्योंकि इन्सानी प्रवृत्ति इस नीच अक़ीदा और व्यर्थ बातों के स्वीकार करने से इन्कार करती है, क्योंकि वह स्त्रियों और पुरुषों के निकट खुला-खुला झूठ है। इस ज़माने में विशेषत: सन्तुलित सोच रखने वाले बुद्धिजीवी तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर झुक रहे हैं और हर तरफ़ से ख़ुदा के एक और अद्वितीय होने की हवा चल रही है और मुश्रिकों (बहुदेववादियों) के बाज़ार बेबसी का पात्र बन गए हैं। अब यह उनके लिए संभव नहीं कि अपने अक़ीदों के खुलने और फैलने के बाद उनको छिपा सकें। क्या वे ऐसे विषय को छुपा सकते हैं जो देश-विदेशों में फैल गया है? जिन्होंने अच्छी बातों को बुरी बातों में बदलकर पेश किया और नेकियों को छोड़ दिया और बुराइयों की ओर दौड़े और अपनी कमज़ोरियों को ढाँपने और व्यर्थ और अनर्गल बातों के बयान करने और व्याख्या में ख़ुदा तआला से नहीं डरते, उनका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जो विष्ठा खाया करता था और एक लम्बे समय से उसका यही काम था और वह सविष्ठा एक आधुनिक स्वादिष्ट भोजनों में से समझता था और उसके बारे में वह किसी से यह नहीं कहता था कि यह तो गन्दगी और

विष्ठा है, न कि इन्सानों का भोजन। फिर उसको एक ऐसा व्यक्ति मिला जो एक स्वच्छ प्रकृति, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली और मर्मज्ञ था। जब उस मर्मज्ञ ने उसे विष्ठा खाते हुए देखा तो उसे ऐसा डाँटा-डपटा जैसे कि बादशाह एक दुराचारी को डाँटता-डपटता है और कहा कि ऐसा मत कर, हे धूर्तों के कलंक! क्या तू विष्ठा खाता है? यह सुनकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ और दिल में सोचने लगा कि इस झिड़की के दाग़ को कैसे दूर करूँ और इस शर्मिन्दगी से कैसे बचूँ। फिर उसने उन लोगों की तरह जो दिखावे के तौर पर अपने खारे पानी को मीठा कहते हैं एक मनगढ़त जवाब रचा और कहा कि मैं विष्ठा नहीं खाता और न उसे अपने लिए इकट्ठा करता हूँ। इसलिए मैं किसी की डाँट-डपट और डराने की परवाह नहीं करता और मैंने इस काम की ओर जो अत्यन्त घृणीय है कभी क़दम नहीं उठाए। यह झूठे और लाँछन लगाने वाले की केवल एक तोहमत है और मैं इससे पूर्णत: बरी हूँ। आरोपक दुश्मन ने वास्तविकता को नहीं समझा और जल्दी से तोहमत लगा दी और प्रकृति को भूल गया। क्योंकि मैं तो भोजन के उन हिस्सों को खाता हूँ जो ख़ुदा के आदेशानुसार अमाशय में पचने से बच जाते हैं और फिर प्रकृति उनको आँतों की ओर स्थानान्तरित कर देती है। अत: वे बचे हुए हिस्से थोड़े से पित्त के साथ विष्ठा से निकलते हैं। इसलिए यह और चीज़ है विष्ठा नहीं, जो दुश्मनों ने समझ रखा है। बल्कि यह तो एक स्वादिष्ट भोजन है जो हम जैसे पवित्र लोगों के लिए तैयार किया गया है।

इसलिए ऐसा उदाहरण देने से डरो और मसीह की जीवनी और उन बातों पर ग़ौर करो जो उसने कहीं, और जो कुछ अल्लाह के नबी ईसा ने फ़रमाया था वह तो एक पवित्र शिक्षा थी। लेकिन उन पर अफ़सोस जिन्होंने इन बातों को न समझा और शिक्षा को बदल दिया। हम दुराचारियों और दु:ख देने वालों और हृदय को कष्ट पहुँचाने वालों के हाल पर रोते हैं और दुआ करते हैं कि ख़ुदा उनको सन्मार्ग दिखाए और उन की हालत पर रहम करे और वह सबसे बढ़कर रहम करने वाला है। ख़ुदा की क़सम! हम तुम पर हँसते नहीं, बल्कि हमें तुम्हारे हाल पर रोना आता है कि तुम असल बात को छुपाते हो और बनावट और दिखावे से काम लेते हो। हे दुराचारियो! तुम्हें क्या हो

गया है कि तुम समझते नहीं और हम तुम्हें दिखलाते हैं तुम देखते नहीं और हम तुम्हें देते हैं तुम लेते नहीं, झूठ गढ़ते हो और शर्म नहीं करते, तुम्हें जगाया जाता है और तुम जागते नहीं, क्या तुम उससे डरते नहीं जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे या तुम यह समझते हो कि तुम्हें यूँ ही बिना हिसाब-किताब के छोड़ दिया जाएगा?

मैं अभी कह चुका हूँ कि क़ुरआन ने ईसाइयों का हाल एक ही तर्ज़ पर बयान नहीं किया बल्कि कुछ को कुछ पर गवाह के रूप में ठहराया है और कहा है कि कुछ मसीह की उपासना करते हैं और उसको जानबूझकर ख़ुदा बना रखा है और कुछ उसके साथ उसकी माँ की भी वन्दना करते हैं और उसकी प्रशंसा में लीन हैं और थोड़े से लोग ऐसे भी हैं जो केवल एक ख़ुदा की उपासना करते हैं और ख़ुदा तआला को रहीम और रहमान समझते हैं और मसीह को केवल मनुष्य समझते हैं यह तीनों फ़िर्क़े नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मौजूद थे और सैकड़ो वर्ष उनके सामने क़ुरआन पढ़ा गया लेकिन उनमें से किसी ने ऐतराज़ न किया कि क़ुरआन हमारी ओर ऐसे अक़ीदे मन्सूब करता है जो हमारे अक़ीदों के विपरीत हैं और किसी ने यह नहीं कहा कि क़ुरआन हमारे अक्नूमे सलासा - बाप, बेटा, रूहुल क़ुदुस के भेदों को नहीं जानता और हमारी शिक्षाओं के बयान करने में ग़लती करता है और यदि तेरा गुमान है कि किसी ने ऐसा कहा है या तूने कोई ऐसी किताब देखी है जो इन बातों पर गवाह हो तो तुझ पर अनिवार्य है कि तू यदि सच्चा है तो हमारे सामने वह किताब प्रस्तुत कर और यदि प्रस्तुत न कर सके तो ख़ुदा तआला से डर और दुराचारियों की बातों का अनुसरण मत कर।

तुम अच्छी तरह याद रखो कि तुम्हारे दिल इस ज़माने में जो गम्भीरतापूर्वक छानबीन और चिन्तन-मनन का ज़माना है ख़ूब अच्छी तरह समझ चुके हैं कि तुम्हारे अक़ीदे झूठे, निराधार, व्यर्थ और बकवास हैं और उनमें ऐसी बड़ी-बड़ी मुसीबतें हैं कि जिनको सुनकर तुम पर बच्चे और औरतें भी हँसती हैं और तुम चाहते हो कि उन पर तावीलों (व्याख्याओं) की चादर ढक दो ताकि तुम बदनामियों और लानतों से बच जाओ। अत: तुमने झूठ को सजाकर प्रस्तुत किया,

ताकि सच को उसके द्वारा झूठा ठहराओ और तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो और तुम्हारे अक़ीदों का गन्दा होना ऐसी बात नहीं जो लोगों से छुपी रह सके या एक बुद्धिमान की आँख और अभिकल्पना से छुप सके। क्या तुम इस ज़माने में हज़रत ईसा की उपासना नहीं करते जैसा कि क़ुरआन के अवतरण के समय किया करते थे? क्या तुम ख़ुदा तआला की तरह उसकी श्रेष्ठता, पवित्रता और महानता बयान नहीं करते? क्या तुम यह नहीं कहते कि हर एक काम ईसा के सुपुर्द कर दिया गया है और वही इस लोक और उस लोक का ख़ुदा है और वही है जिसकी ओर तुम लौटाए जाओगे और जिसके पास हाज़िर किए जाओगे, जो तुम्हारे बीच अतिप्रतिष्ठित और अति महान बादशाह की तरह निर्णय करेगा और तुम उसको उसके चेहरे से पहचान लोगे कि यह मरियम का बेटा है? हे मुश्रिको (बहुदेववादियो)! शर्म से डूब मरो। अब तुम अपने शिर्क को किस तरह छुपा सकते हो, अब तो उसके भेद खुल गए और बातें फैल गयीं। तुमने बड़ी तेज़ी से अपने अक़ीदे फैलाए और ऐसे दौड़े जैसे कि शुतुरमुर्ग का बच्चा दौड़ता है और हमने तुम्हें और तुम्हारे छल - कपट को पहचान लिया। यह सब कुछ जानने के बाद फिर हम किस तरह तुम पर सुधारणा रखें? तुम वे लोग हो जिन्होंने लोगों को छल-प्रपंचों के द्वारा पथभ्रष्ट कर दिया ताकि वे तुम्हारी झूठी बातों की ओर झुकाव करें और तुम्हारी व्यर्थ और अनर्गल बातों को स्वीकार कर लें और छले हुए लोगों की भाँति तुम्हारे पास आ जाएँ। हमने तुमसे झूठ और मनगढ़त बातों के साथ-साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में अपशब्द सुने और हम दो प्रकार की आग से जलाए गए, अर्थात् एक अपशब्दों की और दूसरी झूठ की। हम इसकी अल्लाह के सिवा किसी से शिकायत नहीं करते, वह सबसे अच्छी सहायता करने वाला है।

अद्भुत क़सीदः

जो रेत के टीलों को ध्वस्त करता है और आँख के अन्धेपन को दूर करता है और मुँह फेरने वाले को पकड़ लेता है चाहे वह काकेशिया के ख़बसूरत पहाड़ पर ही क्यों न चढ़ जाए

تر كتم أيها النَّو كى طر يقَ الر شد تز و يرا
على عيسَى افْتر يتم مِن ضلالتكم دَقار يرا

1-हे मूर्खों! तुमने सीधी राह को झूठी बातें गढ़ते हुए छोड़ दिया और अपनी गुमराही कारण ईसा अलैहिस्सलाम पर कई मनगढ़त बातें गढ़ीं।

فقلتم إنه المختارُ إحياءً و تدميرا
هو الله الذى قد قدّر الاشياء تقديرا

2-तुमने कहा कि उसी को मारने और ज़िन्दा करने का अधिकार है और वही ख़ुदा है जिसने तमाम् चीज़ों की तक़्दीरें लिखीं।

قد اغتاظ الابُ الحاضِى فقام الابن تذكيرا
فما نفعتْ نصائحُه فقَبِلَ الابنُ تعزيرا

3-बाप ने अपना ग़ुस्सा प्रकट किया तो बेटा नसीहत करने के लिए उठा, परन्तु जब बेटे की नसीहतों ने कुछ फ़ायदा न पहुँचाया तो बेटे ने कष्ट स्वीकार कर लिया।

أحبَّ الوالدُ المُغتال إهلاكا و تخسيرا
فجاء الابنُ كالمُنْجِى و نادَى الخَلْقَ تبشيرا

4-ख़ूनी बाप ने लोगों को मारना और तबाह करना पसन्द किया तो बेटा मुक्तिदाता बनकर आया और उसने लोगों को शुभसूचना दी।

و قلتم إنه رَدَّ الامورَ إليه تَوقيرا
كأنّ أباه قد شاخا و نابَ الابنُ تخييرا

5-और तुमने कहा कि सारे अधिकार उसको दे दिए गए हैं, मानो उसका बाप बूढ़ा हो गया और बेटे को अपना उत्तराधिकारी बना दिया।

وقلتم إنه الحامی ونبغی منه تَخْفِيرًا
وهذا كله شِركٌ فَدَعْ كذبًا وتَسْحِيرًا

6-और तुमने कहा कि वही सहायक है और हम उसी से सहायता माँगते हैं। यह सब शिर्क (अर्थात् ख़ुदा का स्थानापन्न ठहराना) है, इसलिए झूठ और धोखाधड़ी को छोड़ दो।

وما فی نورنا ریب ولن تخفوه تغییرا
فهل حُرٌّ یخاف الله لما جئتُ تحذیرا

7-हमारी साफ़ सुथरी बात में किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं, तुम उसको किसी तरह छुपा नहीं सकते। क्या तुम में से कोई आज़ाद व्यक्ति है जो अल्लाह से डरे, क्योंकि मैं उसकी ओर से सचेत करने के लिए आया हूँ।

وهذا قولنا حَقٌّ وطهَّرناه تطهیرا
ولکن النصاری آثَروا خُبْثًا وخنزیرا

8-और यह हमारी बात पूर्णत: सत्य है और पूरी तरह पवित्र है लेकिन ईसाइयों ने गन्दगी और सूअर को अपनाया है।

ومِن تلبیسهم قد حرَّفوا الالفاظ تفسیرا
وقد بانتْ ضلالتُهم ولو ألقوا المعاذیرا

9- उनका एक छल यह है कि वे तफ़सीर (व्याख्या) में शब्दों का हेरफेर करते हैं, अब उनकी पथभ्रष्टता खुल चुकी है चाहे वे कितनी ही बातें बनाएँ।

क़ुरआन करीम पर आरोप लगाने वाले ईसाइयों तथा अन्य आरोपकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण घोषणा

हम बार-बार लिख चुके हैं कि क़ुरआन करीम ने समस्त महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं को संग्रहीत किया है और बुद्धि और विवेक को चरम तक पहुँचाया है और वह अगलों और पिछलों के अध्यात्मज्ञानों पर आधारित है। वह अपनी महानता में समुद्रों की भाँति है न कि हौज़ और तालाबों के समान। वह अपनी व्यापक सारगर्भिता के कारण समस्त नदियों पर प्रधान है और उसमें सूर्य के प्रकाश से बढ़कर स्पष्ट और खुला-खुला तेज है। वह हर प्रकार के दोष एवं मैल-कुचैल से रहित है। वह पवित्र ग्रन्थों पर आधारित है जिनमें शाश्वत रहने वाले आदेश और चकित कर देने वाले रहस्य हैं जो अपने अन्दर उच्चकोटि की वाग्मिता और आलंकारिकता को समोए हुए हैं और वह पढ़ने वालों को अपनी ओर खींचती और खुश करती है।

क़ुरआन करीम शब्दों की वाग्मिता, वाक्यों की आलंकारिकता एवं महानतम् अध्यात्मज्ञानों और अछूते रहस्यों के कारण एक महान चमत्कार है। लेकिन ईसाइयों और उनके सहमतगणों ने उसकी इस विशिष्टता का इन्कार किया है और कई प्रकार के भ्रम गढ़ लिए हैं और अपनी बातों को सजाकर प्रस्तुत किया है और खुले-खुले छल से काम लिया है। उनमें से कुछ ने कहा कि क़ुरआन नि:सन्देह वाग्मी है और हम उसकी वाग्मिता का इन्कार नहीं करते और निर्लज्जता का मार्ग नहीं अपनाते, लेकिन उसकी शिक्षा पवित्र नहीं है और उसमें सुन्दर, सुरम्य, नूतन और मनोरम उपदेश नहीं पाए जाते बल्कि वह तो घृणित बातों का आदेश देता है और नेक बातों से रोकता है, उसकी सारी शिक्षा निश्चेष्ट (बेहोश) रोगी के समान रद्दी और व्यर्थ है और सदाचारियों की दशानुकूल नहीं।

मैं कहता हूँ जो कुछ तुमने कहा वह पूर्णत: झूठ है और ऐसी बात केवल वही व्यक्ति कह सकता है जो सरासर निर्लज्ज हो या झूठी बातें रचने वालों में से हो। असल बात यह है कि तुम लोग सच्चे और ठोस प्रमाणों की दृष्टि से निष्पक्ष जाँच-पड़ताल नहीं करना चाहते और केवल ईर्ष्या-द्वेष की परम्पराओं पर अग्रसर हो। तुम अन्याय की परम्पराओं के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते और तुम्हें न्याय की शिक्षा नहीं दी गई। मेरी दृष्टि में तुम अन्यायी हो। क्या तुमने क़ुरआन की वास्तविकता को समझ लिया हालांकि तुम सिरे से अरबी भाषा से अनभिज्ञ हो और अध्यात्म के मार्गों से दूर पड़े हो? क्या तुम समुद्र को एक छुपी हुई मृगतृष्णा समझ बैठे हो जबकि स्वयं सिरे से अन्धे और काने हो? तुम अरबी भाषा का एक अक्षर तक नहीं जानते और साहित्य के बागों में से एक तिनका भी तुम्हारे पास नहीं है बल्कि मैं तुम्हें उस मोहताज भाई की तरह पाता हूँ जो मूर्खता के घोर अन्धकार में भटका हुआ हो। तुम लोग मूर्खता और गुमराही के मारे हो, इनके अलावा तरह-तरह के छल-फ़रेब के साथ शिक्षाओं के सूर्य का इन्कार करते हो। इसके बावजूद तुम्हारे यह बड़े-बड़े दावे घोर अहंकार और पुरातन दुराचार नहीं तो और क्या हैं? अत: हमारा रब्ब कितना ही महान और पवित्र है कि इस तरह के दुराचारियों को भी ढील दिए जाता है।

हे मूर्खो! तुम एक ऐसी महान पुस्तक पर आरोप लगाते हो जिसके एक-एक शब्द के अन्दर ज्ञानों का भण्डार छुपा है जिसकी प्रसिद्धि और चर्चा हर एक के मुँह पर है, जिसकी पवित्रता और प्रतिष्ठा मशहूर है, जिसकी कांति और सुरम्यता मान्य है और जिसका प्रताप और प्रभाव विश्वविख्यात हो चुका है। अत: इसका इन्कार कोई धृष्ट और बेईमान (अन्यायी) ही करेगा। क्या तुम उस क़िले को नहीं देखते जिसे क़ुरआन ने अभेद्ध और सर्वोत्तम आदर्श बनाया है और उन ज्ञानों को नहीं देख रहे जिन्हें क़ुरआन ने चर्मोत्कर्ष तक पहुँचा दिया है और क्या तुम उन ज्योतियों को नहीं देखते जो रहमान ख़ुदा ने उसमें भर दी हैं? ख़ुदा की क़सम ! मुर्दे ज़िन्दा करने और सड़ी-गली हड्डियों में जान डालने में क़ुरआन का कोई हमतुल्य नहीं। वह ऐसे समय में आया जब सदाचारियों की सारी कोशिशें

ख़त्म हो गयीं। वह घोर अन्धकार छा जाने के बाद उदय हुआ और उसने लोगों को कंकाल और कंगाल या घोर निद्रा में डूबे हुए व्यक्ति की तरह पाया। तब क़ुरआन ने लोगों की अक़्ल को ऐसा ज्ञान दिया कि दिन का उजाला भी उसके सामने माँद पड़ गया। उसने उन्हें ज्ञान के अनमोल माणिक मोतियों और भाँति-भाँति के प्रताप और प्रभाव से भर दिया। थोड़ा सा मुड़कर देख तो सही, क्या तू प्रभाव में उसका कोई हमतुल्य पाता है? फिर दोबारा विचार कर और देख, क्या इसका कोई भी सदृश तूझे दिखाई देता है? क्या तू इन्जील के अन्धकार के दिनों को भूल गया? क्या तुझ तक धरती में ख़ूब चक्कर लगाने वाली उस क़ौम की ख़बर नहीं पहुँची? और किस तरह पूरी दुनिया में हर प्रकार के अन्धकार छा चुके थे? क्या तूने पढ़ा नहीं या किसी जानकार से सुना नहीं कि मानो वे क़ब्र तक जा पहुँचे थे और उन्होंने हर वह वादा तोड़ दिया जो किया था और उनकी अनीतियाँ और बदचलनियाँ उन्हें ऐसे खा गई थीं जैसे कीड़े लाश को खा जाते हैं और उनका ईमान ऐसे खोखला हो चुका था जैसे दीमक खायी हुई लकड़ी। क्या तूने उस दौर के हालात नहीं पढ़े? और क्या उनको याद करके तेरी आँखें नम नहीं होतीं? फिर किस चीज़ ने अन्धकार के बाद ज़माने को सन्मार्ग दिखाया और बुतों (पुतलों) के गुणगान से बचाकर ख़ुदा का प्रशंसक बनाया और मौत के घाट उतारने वाले खौलते पानी के बाद ठण्डा और मीठा जीवनदायक शर्बत लाया? तू जान ले कि वह पवित्र क़ुरआन ही है जिसने लोगों को पापमय जीवन से मुक्ति दिलायी और क़ब्रों में पड़े हुए मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया और घोर अज्ञानता के दिनों के बाद ज्ञान की रहमत बरसायी। जिससे हम क़ुरआन की आवश्यकता और उससे मानवजाति को होने वाले लाभों के बारे में समझ सकते हैं और यदि तू इन्जील से अपने निराधार प्रेम को नहीं छोड़ता और अपनी बीमारी को स्वास्थ्य समझने की सुधारणा से बाहर नहीं निकलता और अपनी बातों से तौबा नहीं करता तो फिर मैं दज्जाल के छल से अल्लाह तआला की शरण माँगते हुए मुक़ाबला के लिए तुझे आमन्त्रित करता हूँ और सन्मार्ग और कुमार्ग में अन्तर पैदा करने के लिए तुझे ललकारता हूँ। क्या तू इस मुक़ाबले के लिए तैयार है

ताकि असलियत खुल जाए? तू क़ुरआन करीम की प्रतिष्ठा और प्रमाण को गिराना चाहता है और हम चाहते हैं कि इन्जील का खण्डन करके उसके दोषों का तुझे दरर्शन करवाएं। ख़ुदा की क़सम! हम सच्चे हैं, झूठे और लाँछन लगाने वाले नहीं और ख़ुदा की क़सम! तुम्हारी वर्तमान इन्जील पूर्णत: व्यर्थ, तबाही और बर्बादी है। वह हिकमत का पाठ नहीं पढ़ाती बल्कि केवल क़िस्से और निराधार बातें बयान करती है। इसलिए उसके दोषरहित होने का ढिंढोरा पीटकर उसकी प्रशंसा करना पूर्णत: निर्लज्जता है और उस पर जिरह और बहस करना पूर्णत: व्यर्थ है। हम उसमें कोई उपकार नहीं देखते बल्कि अपकार और हानि पाते हैं और हम उसके फ़ित्ने (उपद्रव) और घोर नुकसान से अल्लाह की शरण चाहते हैं और उसके प्रशंसकों की नादानी और नासमझी पर अफ़सोस करते हैं। वह कुमार्ग की ओर ले जाने वाली एक किताब है जो लोगों को केवल निषिद्ध बातों की ही ओर नहीं बल्कि तबाहियों और बर्बादियों की ओर भी बुला रही है और उन पर दुर्वृत्तियों, दुराचारों और अविहित बातों को विहित ठहराने और मुर्दापरस्ती के द्वार खोलती है और उन्हें बहुदेववादी बनाती है। उसकी कई बातें तो अत्यन्त अशुभ और अनिष्ट हैं और कुछ उनमें से शुभ और कल्याणकर भी हैं और उसमें यह विशेषता नहीं कि बुद्धिमानों की तरह बीच की राह अपनाए। इसीलिए स्वयं उस क़ौम के फ़िलास्फ़रों ने उसे व्यंग और कटाक्ष का निशाना बनाया और निन्दा के तीरों से उसे छलनी किया और यहाँ तक कह दिया कि उसके खण्डन की भी आवश्यकता नहीं क्योंकि वह स्वयं अपने खण्डन के लिए पर्याप्त है और हम उनको अभी तक अपने इस विचार पर अडिग पाते हैं और वे ईसाई हैं और उनके सम्प्रदाय के बड़े और प्रतिष्ठित लोगों में से ही हैं और बड़े-बड़े बुद्धिमानों में से हैं, इन जैसे मूर्खों में से नहीं। तू उनमें से एक बड़ी संख्या को नबी शिरोमणि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बातों को स्वीकार करने वाला पाएगा जो इस्लाम के पेशवा और ख़ातमुन्नबीयीन हैं।

हे ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले ईसाइयो! और शिर्क (बहुदेववाद) के जाल में जकड़े हुए लोगो! क्यों शराबियों की सी बहकी-बहकी बातें करते हो और सच को झूठ से

मिलाते हो और उस योद्धा से डरकर भाग रहे हो जो तुम्हें मुक़ाबला के लिए ललकार रहा है? यदि तुम महानों और सत्यनिष्ठों में से हो तो मुक़ाबले के लिए निकलो। तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि सत्य की खोज करना एक स्वाभाविक विशेषता है और अकारण हमले करना जंगली जानवरों की प्रकृति। इसलिए तुम्हारे लिए उचित यही है कि गाली-गलौज और धृष्टता को छोड़कर सामना और धर्मयुद्ध (अर्थात् शास्त्रार्थ) के लिए आओ। हम इस लड़ाई में तुम्हारे ही कुछ बुद्धिमानों को मध्यस्थ बना लेंगे और हम अल्लाह तआला से यह वादा करते हैं कि वे जो भी निर्णय करेंगे हम उसे अविलम्ब स्वीकार कर लेंगे। अब बताओ कि क्या तुम्हें इन्जील की शिक्षाएँ और उसके गूढ़ रहस्य हमारे सामने प्रस्तुत करने की हिम्मत है? इसी तरह हम भी तुम्हारे सामने क़ुरआन की शिक्षाएँ और उसमें पाए जाने वाले गूढ़ रहस्यों को लिखकर प्रस्तुत करेंगे। फिर मध्यस्थ बुद्धि और विवेक के पैमाने से क़ुरआन और इन्जील में अन्तर करके दोनों पक्षों के मध्य निर्णय कर देगा। फिर यदि हम पराजित हो गए तो हमें यह स्वीकार्य होगा कि हमें मुजरिमों की तरह सज़ा दी जाए और झूठों एवं दुराचारियों की तरह क़त्ल किया जाए। लेकिन यदि हम विजयी रहे तो ईसाइयों से केवल इतनी ही माँग करेंगे कि वे इस्लाम स्वीकार कर लें।

अत: हे सत्य के वैरी! तूने इन्जील की प्रशंसा में धरती और आसमान के छोर मिला दिए, मनगढ़त बातें रचीं और उसके चमत्कारों के गीत गाए। अब ऐसे दावों के बाद सामना करने से क्यों भाग रहा है और इक़रार के बाद क्यों इन्कार कर रहा है? अब तू भागकर कहाँ जाएगा? तेरी रुसवाई का समय आ गया है। अब अपना चेहरा अपने कपड़े से मत ढाँप। यदि तू बिना झूठ बोले इन्जील की उत्कृष्टता सिद्ध कर दे तो तुझे दो हज़ार रुपए नक़द इनाम दिया जाएगा। लेकिन हे झूठों के सरग़ना! तुझे यह सामर्थ्य कहाँ? हे क्रिस्टानो! तुमने आँख को रौशन करने के लिए नहीं बल्कि सांसारिक धन-दौलत जमा करने और उदर और वासना की भूख मिटाने के लिए ईसाइयत को क़ुबूल किया है और शराब और कबाब के मज़े के लिए अपने सुधार की कोशिशें छोड़ दी हैं। तुम दिल से तो मसीह की शिक्षा और मुक्ति के ढंग के बजाय भोगविलास और स्वाद के साधनों के

प्रशंसक हो और पवित्रात्माओं (अर्थात् ऋषि, मुनि, अवतारों) का अपमान करते हो, ताकि तुम्हारे हाथों पर पादरियों के बर्तनों से उँड़ेला जाए। तुम पर अफ़सोस है कि तुमने अतिप्रतिष्ठित और अतिप्रतापी हस्ती (अर्थात् ख़ुदा -अनुवादक) से नाता तोड़ा। मूसलाधार बारिश से मुँह मोड़ा और ओस से प्यास बुझानी चाही। तुमने ईसा के बारे में कभी गहराई से सोच-विचार नहीं किया और उम्मीद की झूठी आशाओं में प्यारी उम्र बर्बाद कर दी। मुझे कोई ऐसी किताब तो दिखलाओ जिसके ज्ञान से तुम्हारा कुछ भी सम्बन्ध हो या फिर क़ुरआन की महानताएँ एवं उसके उत्तम और विचित्र चमत्कार मुझसे सुनो और इन्जील की बड़ाइयाँ करने और उसकी साहियिक विशेषताओं का वर्णन करने से तौबा करो। क्या वह मर्मों के बयान में क़ुरआन के समान है या स्थान में उसके हमपल्ला, या रहस्यपूर्ण बातों के बयान करने में उसके बराबर है? कदापि नहीं। क़ुरआन मजीद ख़ुदा की व्यापक विशेषताओं और ब्रह्मज्ञानों (अर्थात् अध्यात्मज्ञान) के प्रस्तुत करने और उच्चकोटि की विशेषताओं में गिनी जाने वाली एक विशिष्ट पुस्तक है, जो मध्यम मार्ग (दरमियानी राह) दिखाने में अद्वितीय है। चौदहवीं के चाँद और काली अँधियारी रात में भला क्या समानता? क्या तुम उस किताब को महानता देते हो जो घृणित बातों से भरी है और संतुलित मार्गदर्शन (दरम्यानी राह)से गिरी हुई है और बुराइयों की ओर आमन्त्रित करती है? क्या तुम उसकी बनावटी और चिकनी-चुपड़ी और रंग-विरंगी छल से भरी हुई चालाकियों से धोखा खा गए और उसकी हालत को परखने से पहले ही उसके प्रशंसक बन गए? हालाँकि तुमने देख लिया कि वह न तो अध्यात्मज्ञानों की प्राप्ति के ढंग सिखलाती है और न जप-तप के उन मार्गों की ओर मार्गदर्शन करती है जो सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार तक पहुँचाते हैं, न ख़ुदा के आदेशों का विवरण बयान करती है और न ही इबादतों की ओर प्रेरित करती है, बल्कि लोगों को अय्याशी, मद्यपान और आरामतलबी की ओर बुलाती है और ईमानी जोश को ठण्डा करती है और उनके घर को हथेली की तरह सफाचट कर छोड़ती है। अत: हे बेसुधो! मौत को याद रखो, हे आलसियो! कमर कस लो और सच को ढूँढ़ो। केवल गुमानों (संशयों)

का अनुसरण मत करो बल्कि विवेकवानों और दूरदर्शियों की तरह सोच-समझ से काम लो और जेबकतरे (पाकेटमार) की तरह लोगों को बचे-खुचे ईमान से महरूम (ख़ाली) न करो। उठो और ख़ुदा की ओर से आने वाले की आवाज़ को कान लगाकर होश से सुनो और पीठ फेरकर भागने वाले की तरह न भागो और दोपहर की लू को भोर की ठंडक और बाग़ की सैर और फल खाने पर प्राथमिकता न दो, कल्याण के मोती चुनने के लिए आगे बढ़ो और सच्ची नीयत से मेरी ओर आओ और जान लो कि अल्लाह तआला तुम्हारे गुप्त षड़यन्त्रों, ज़ाहिरी मशवरों और सारी कानाफ़ूसियों को अच्छी तरह जानता है। उसकी अपार अनुकंपाओं ने तुम्हें दुनिया में ढाँप रखा है, इसके बावजूद तुम सर्कशों की तरह आख़िरत को क्यों भूल बैठे हो? क्या तुमने इस दुनिया को ही पूरी तरह अपना लिया है जो नश्वर और वृद्ध व्यभिचारिणी के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अन्ततः तुम शीघ्र अल्लाह की ओर लौटाए जाओगे जो समस्त लोकों का पालनहार है। तब तुम अपनी सारी वासनाओं से ऐसे जुदा किए जाओगे जैसे छिलका गूदे से। फिर हसरत और जुदाई की आग में जलते रहोगे और अन्धे कुएँ की तह में धुत्कार कर छोड़ दिए जाओगे। मैंने तुम्हारे अन्दर की आग निकालने और तुम्हारी तलवार की धार (अर्थात् दलील का दम-अनुवादक) देखने के लिए यह किताब लिखी है। ताकि लोगों पर जो बातें संशययुक्त हैं उन्हें सुस्पष्ट कर दूँ और लोगों को धोखा देने वाले और भ्रमों में डालने वाले शैतान से बचाऊँ। इसलिए गुमराही का चोला उतार फेंको और अपने झूठे एवं निराधार विचारों को लपेटकर दफ़्न करने की ओर लौटो। क्योंकि बुद्धिमान सत्य को स्वीकार करता है और धृष्ट (सरकश) की तरह पीछे नहीं हटता और डंडे का मोहताज नहीं। क्या तुम दम तोड़ती इन्जील के दामन से चिमटे रहना चाहते हो जबकि प्रतापी ख़ुदा की तलवार (अर्थात् ख़ुदा की ओर से आने वाला अवतार-अनुवादक) ने उसके चिथड़े उड़ा दिए हैं? अतः कुंठ कंजूस की तरह मुँह न मोड़ो और उपद्रवी बनकर धरती में उपद्रव न फैलाओ। क्या तुम उस चीज़ को ऊँचा उठाना चाहते हो जो गिर गयी और उस चीज़ से नाता जोड़ना चाहते हो जिसे ख़ुदा ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया

और कमज़ोर कर दिया? अत: पागलों की तरह अल्लाह से न लड़ो, अन्धकार से निकलकर अल्लाह के नूर (अध्यात्मज्ञान) में आ जाओ और सज्जनों और सत्कर्मों में आगे बढ़ जाने वाले सत्यनिष्ठों की तरह सत्य की ओर तेज़ी से क़दम बढ़ाओ और बाग़ (जन्नत) में दाख़िल हो जाओ और आग (जहन्नुम) से दूर हो जाओ और राहत और रैहान (अर्थात् सुख और सुगन्ध) से आनन्द उठाओ और तरोताज़ा फल चुनो और काँटों और शैतान से दामन बचाओ। याद रखो कि तुम्हें कोई ढील न दी जाएगी जिस तरह कि तुम्हारे बाप-दादों को ढील नहीं दी गई थी। तुम्हारे दिल पत्थर क्यों हो चुके हैं और तुम्हारी इच्छाएँ क्यों सरकश (बाग़ी) हो गयी हैं? अल्लाह तआला शीघ्र ही अपने बन्दे और अपने दीन की सहायता करेगा और तुम उसे कुछ भी नुकसान न पहुँचा सकोगे और न ही अल्लाह के नूर का बुझाने की सामर्थ्य पाओगे, चाहे तुम इस प्रयत्न में मर ही जाओ। अब हमने अपनी बात ख़त्म की और लिखना बन्द किया। यदि तू ख़ुदा से डरता है और सत्य का अभिलाषी है तो तेरे लिए इतना पर्याप्त है। हर प्रकार की प्रशंसा ख़ुदा तआला के लिए है और वही सबसे अच्छा मौला और मददगार (अर्थात् स्वामी और सहायक) है।

हे मुझे अस्वीकार करने वाले मेरी बात पर चिन्तन-मनन कर और अपना क़दम एक, एवं अद्वय ख़ुदा की ओर बढ़ा और अन्य ज़ियारत गाहों (तीर्थ स्थानों) और संस्थाओं की चर्चा छोड़ दे

मेरे प्यारे! अगर तू सुनना चाहे तो मैं अपना क़िस्सा तुझे सुनाता हूँ और शाबाशी है तुझे अगर तू अनुपालन करे। मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लगाने में जल्दी करने वालों की बातें तो तू सुन ही चुका है। अत: अब मैं अपनी बातों को तेरे सामने स्पष्ट करता हूँ। तेरी मर्ज़ी है चाहे तू मेरी बात स्वीकार कर या चाहे मेरी निन्दा करने वालों में शामिल हो। मैं मुसलमान हूँ, अल्लाह और उसकी किताबों और उसके रसूलों और पुरुषों में सर्वोत्तम हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता हूँ और उन लोगों में से नहीं हूँ जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों के ख़िलाफ़ दुस्साहस करते हैं, बल्कि उन लोगों में से हूँ जो अल्लाह से डरते हैं और अपने विचारों को पवित्र करते हैं। मुझे नबियों और रसूलों का स्थान दिया गया है और मेरे रब्ब ने मुझे ज्ञान दिया है और उसने अत्युत्तम बातों की ओर मेरा मार्गदर्शन किया है और मुझे वर्तमान युग का महदी और मुजद्दिद (सुधारक) बनाया है। लेकिन काफ़िर-काफ़िर कहने वालों ने मेरी बात को समझे बिना और मेरे उद्देश्य पर गहन चिन्तन-मनन करने से पहले ही मुझ पर कुफ़्र का फ़त्वा लगा दिया। मैंने ख़ुदा की क़समें खाकर कहा कि मैं कदापि काफ़िर नहीं और मेरा रब्ब मेरे इस्लाम को जानता है। फिर भी उन्होंने काफ़िर-काफ़िर कहना न छोड़ा, बल्कि अपने रवैये पर अड़े रहे और वक्तव्य और लेख में फेरबदल और अन्याय से काम लिया और काफ़िर और कज़्ज़ाब (अर्थात् अधर्मी और झूठा) कहते रहे और यह भी कहते रहे कि हम तो इस व्यक्ति पर अज़ाब उतरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन ख़ुदा जानता है कि वे झूठे और लाँछन लगाने वाले हैं या फिर मूर्ख और जल्दबाज़। क्या मैंने दीन की कोशिश में अपनी आयु का पचास साल से अधिक समय गुज़ारने के बाद अचानक अल्लाह तआला के बारे में मनगढ़त बातें रचकर झूठ बोला है? मेरे रब्ब ने अपनी कृपा से मुझे शैतान की राहों से बचाया और सारी उम्र मेरा एक ही उद्देश्य आँहज़रत के दीन की सहायता और इस्लामी शिक्षाओं का उत्थान रहा। अत: गवाह के तौर पर अल्लाह पर्याप्त है और वही सर्व श्रेष्ठ गवाह है।

हे मेरे रब्ब! हे असहायों और व्याकुलों के रब्ब! क्या मैं तेरी ओर से नहीं? बता, कि तू बताने वालों में सबसे श्रेष्ठ है। लाँछन और कुफ़्र के फ़त्वे बहुत बढ़ गए हैं और झूठ गढ़ना मेरी ओर मन्सूब किया गया है। हे सामर्थ्यवान् ख़ुदा! तूने यह सब कुछ सुना और देखा, अब तू हमारे मध्य सत्य के साथ निर्णय कर और तू निर्णय करने वालों में से सबसे श्रेष्ठ है। मुझे धृष्ट उलेमा और उनके प्रपंचों एवं अहंकारों और दुस्साहसों से बचा और अन्यायी और अत्याचारी

लोगों से मुक्ति दे, और आसमान से सहायता कर और इस मुसीबत के समय अपने बन्दे का हाथ थाम ले और काफ़िरों (अधर्मियों) पर अपना प्रचण्ड प्रकोप अवतरित कर। मैं नीच और निकृष्ट लोगों की तरह लोगों के निकट तिरस्कृत और निन्दित हूँ। अत: तू उस तरह हमारी सहायता कर जिस तरह तूने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जंग-ए-बदर के दिन की थी। हे सर्वश्रेष्ठ रक्षक! हमारी रक्षा कर। नि:सन्देह तू पालनहार और दयावान् है और अपने पर तूने दया अनिवार्य ठहरा ली है। अत: उसका एक बड़ा हिस्सा हमारे लिए विशिष्ट कर और अपनी सहायता का नज़ारा दिखला और हम पर दया कर और हमारी ओर दयादृष्टि के साथ आकृष्ट हो और तू सबसे बढ़कर उपकार करने वाला है। हे मेरे रब्ब! उनके बद् इरादों से मुझे बचा और उनके षड़यन्त्रों से मेरी रक्षा कर और मुझे अपनी मदद पाने वालों में सम्मिलित कर। हे मेरे रब्ब! मेरी बेचैनी दूर कर और मेरा अन्त भला कर, और मेरे महान उद्देश्य में मुझे सफल कर और मुझे मेरी ख़ुशी के दिन दिखला और हे मेरे रब्ब! मेरा हो जा। हे मेरे संकल्प और इरादों के ज्ञाता! और हे असहायों के उपास्य! मुझे शुद्ध और विशिष्ट कर और मुझे चैन प्रदान कर। हर इक झूठे ने मुझे झुठलाया और हर इक मूर्ख ने मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा दिया। तेरे उपकार का अभिलाषी होने और तेरी मदद और सहायता माँगने के अतिरिक्त मेरे पास कोई चारा नहीं। हे मनोकामनाओं को पूरा करने वाले! शायद तू मेरा दिन उस समय लौटाएगा जब मेरा सूरज डूबने को होगा और दिल बेचैनियों से व्याकुल होगा। ख़ुदा की क़सम! मेरा यह करुण क्रन्दन (गिड़गिड़ाहट) इसलिए नहीं कि मेरी ख़ुशी और ऐश्वर्य के दिन जाते रहे बल्कि मेरी यह गिड़गिड़ाहटें उस इस्लाम के लिए हैं जिस पर दुश्मनों ने हमला कर दिया है और उसका सूरज डूब गया है और काली अँधियारी रात लम्बी हो गई है और इस्लामी फ़िर्क़ों में पारस्परिक गुप्त वैमनस्यताएँ ज़ाहिर हो चुकीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में फूट पड़ गई है। जहाँ तक कुफ़्फ़ार और कमीनों (अधर्मियों और नीचों) के गिरोहों का सम्बन्ध है तो वे एक ही लय (ताल) की लड़ी में पिरोए गए हैं। दूसरा दु:ख यह है कि हमारे

यहाँ उलेमा (ज्ञानी), इस्लामी फ़िक़्ह: के प्रकाण्ड विद्वान और भाषाविद् भी हैं। लेकिन किंचितमात्र के अतिरिक्त वे सब बिगड़ गए हैं और मुसीबतों ने उन्हें घेर लिया है। हे मेरे रब्ब! रहम कर और हमारी दुआ क़ुबूल फ़र्मा। हमारा करुण क्रन्दन और हमारी दुआ तेरी चौखट पर है। वे उलेमा कहते हैं कि केवल हम ही इस्लाम के प्रकाण्ड विद्वान और स्तम्भ हैं, पर मुझे तो उनमें से एक भी ऐसा नज़र नहीं आता जो साहस से बोलने वाला बहादुर और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन से नि:स्वार्थ प्रेम करने वाले ख़ादिम (सेवक) की तरह हो। इसके उलट ये तो सब भाँति-भाँति की वासनाओं और बड़े-बड़े दावे और दिखावे में पड़े हैं। मैं उनमें से अधिकतर को दुराचारी पाता हूँ। प्रारम्भिक दिनों में मेरा यह विचार था कि वे सब या उनमें से अधिकतर मेरे मददगार हैं, लेकिन परीक्षा के समय उन्होंने पीठ फेर ली और ख़ुदा की ओर से यही निर्णीत था। अब मैं इस समय उस व्यक्ति की भाँति अकेला हूँ जिसे सुनसान जंगल में तनहा रात गुज़ारनी पड़े या मेरा हाल उस आदमी की तरह है जो उजड्ड गँवारों और जंगली लोगों के बीच में बैठा हो। इस समय मेरे सारे उपाय व्यर्थ हैं और सारी शक्ति क्षीण। मेरी क़ौम और मेरे ख़ानदान में मेरी बेबसी के चर्चे हैं। हे समस्त लोकों के रब्ब! तेरे बिना मुझमें कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं। मैं तेरे समक्ष झुकता हूँ और तुझ पर ही भरोसा करता हूँ और तुझसे ही राज़ी हूँ। हे मेरे रब्ब! मेरी कमज़ोरियों को ढाँप ले और मेरी घबराहटों को अमन में बदल दे और मुझे तनहा न छोड़ कि तू ही सर्वश्रेष्ठ वारिस प्रदान करने वाला है और समस्त उपकार एवं उपहार और प्रतिष्ठा एवं महानता तेरे हाथ में है। तू जब आता है तो कोई दैवीय आपत्ति नहीं आती, और जब तू अवतरण करता है तो हर इक कष्ट दूर हो जाता है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, तेरे अतिरिक्त कोई महानता प्रदान करने वाला नहीं, तेरे अतिरिक्त कोई कष्टों और विपदाओं को दूर करने वाला नहीं। तुझ ही पर मैं विश्वास करता हूँ और तेरे समक्ष झुकता हूँ। तू ही विश्वास करने वालों की शरणस्थली है। हे मुझ पर उपकार करने वाले ख़ुदा! मुझ पर उपकार कर। तेरे अतिरिक्त मैं किसी उपकारी

को नहीं जानता। हे ख़ुदा! अपने रसूल और नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेज और उसकी शान् को और बढ़ा और लोगों को उसकी सच्चाई का प्रमाण दिखा। हम उसके दीन के लिए रोते हुए तेरे पास आए हैं। तू हमारे दिलों के भेद को जानता है और हमारे दिलों के पाताल तक तू देखता है। हम हृदयपूर्वक तेरे साथ हैं। हम तेरे लिए प्राण न्यौछावर करने में कोई कमी नहीं करते। यदि तू हमें हिदायत न दे तो हम में कोई सामर्थ्य नहीं कि हम हिदायत पा सकें। हमने वही पाया जो तूने हमें दिया। हर इक प्रशंसा केवल तुझे ही शोभनीय है और तू प्रशंसकों की हर प्रशंसा का केन्द्र है। तू नि:सन्देह रब्ब और रहीम है और अति प्रतिष्ठित व असीम दानी मालिक भी। अत: जो तेरे समक्ष आए और तुझसे मित्रता और प्रेम करे और तुझे विशुद्धत: अपनाए, तो तू उसे नामुराद न रखना। अत: ख़ुशख़बरी (मंगलमय) हो उन लोगों को, जिनका तू रब्ब है और उस क़ौम को जिनका तू मालिक (स्वामी) है। तेरी दया तेरे प्रकोप से बढ़कर है और तू अपने धर्मनिष्ठ और निश्छल भक्तों को कभी असफल नहीं करता। समस्त प्रशंसाएँ आदि और अन्त में और हर पल तेरे लिए हैं।

★ ★ ★

नूरुल हक़
(सत्य का तेज)

भाग - 2

प्रथम संस्करण अरबी का शीर्षक पृष्ठ

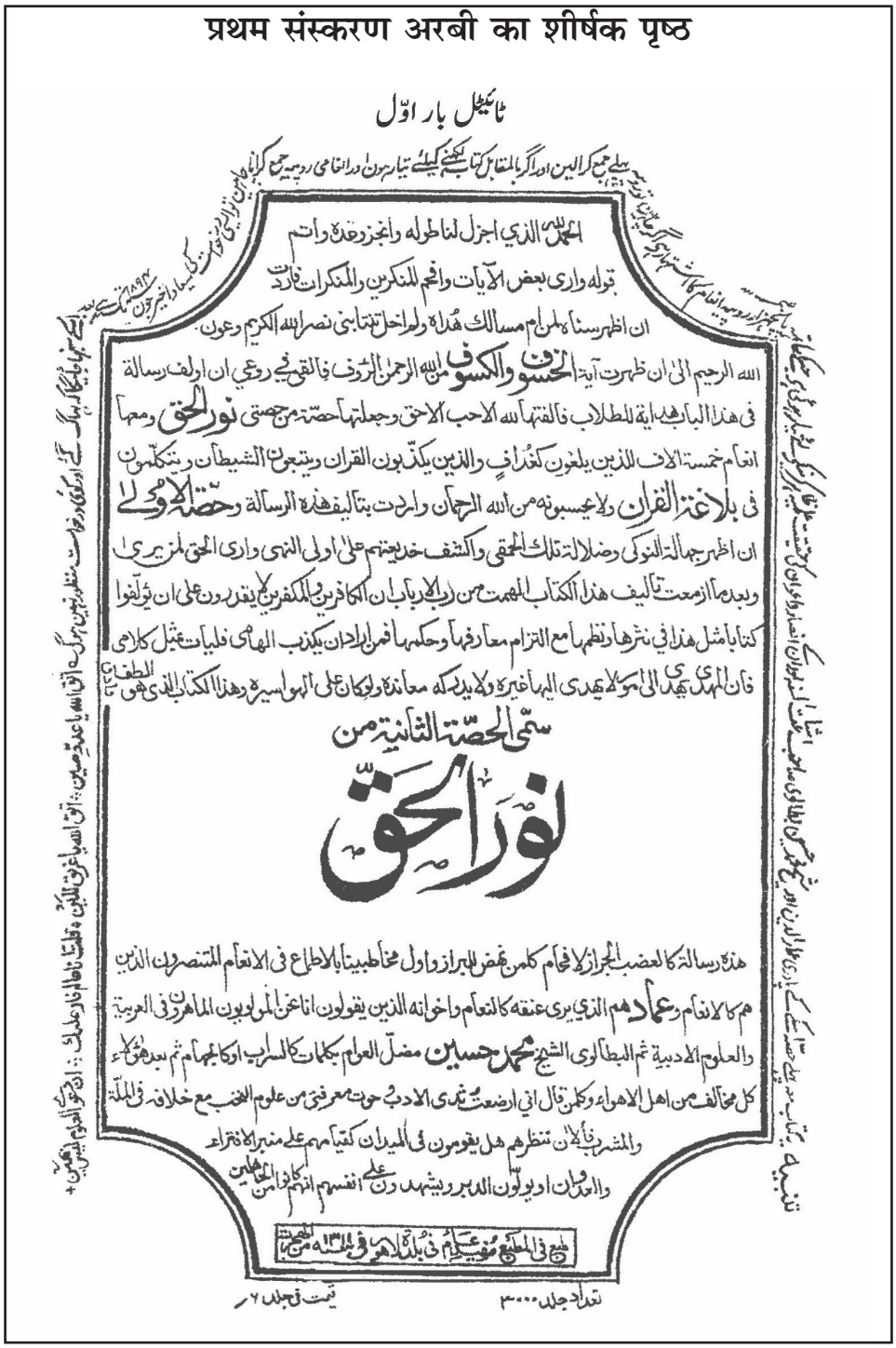

ٹائیٹل بار اوّل

پہلے جمع کرالیں اور اگر بالمقابل کتاب لکھنے کیلئے تیار ہوں اور انعامی روپیہ جمع کرانا

الحمد لله الذي اجزل لنا طوله وانجز وعده واتم

قوله واری بعض الآیات وافحم المنكرين والمنكرات فاردت

ان اظهر سناه لمن رام مسالك هداه ولما احل تتابع نصر الله الكريم وعون

الله الرحيم الى ان ظهرت آية الخسوف والكسوف من الله الرحمن الرؤف فالقى في روعي ان اولف رسالة

فی هذا الباب هداية للطلاب فالفتها لله الاحب الاحق وجعلتها حصة من حصتی **نور الحق** ومعها

انعام خمسة الاف للذين يلغون كغراف والذين يكذبون القران ويتبعون الشيطان ويتكلمون

فی **بلاغة القران** ولا يحسبونه من الله الرحمان واردت بتاليف هذه الرسالة **وحصة الاولى**

ان اظهر جهالة النوکی وضلالة تلك الحمقى واكشف خديعتهم على اولى النهى وارى الحق لمن يرى

وبعد ما ازمعت تاليف هذا الكتاب الملهمة من رب الارباب ان الكافرين والمكفرين لا يقدرون على ان يؤلفوا

كتابا مثل هذا في نثرها ونظمها مع التزام معارفها وحكمها فمن اراد ان يكذب الهامی فليأت بمثل كلامی

فان المهدى يهدى الى الهدى ولا يهدى اليها غيره ولا يدركه معانده ولو كان على الهوا سيره وهذا الكتاب الذي هو الطفاء

سمى الحصة الثانية من

نور الحق

هذه رسالة كالعضب الجراز لافحام كل من نهض للبراز واول مخاطبينا بالاطلاع فى الانعام المتنصرون الذين

هم كالانعام وعمادهم الذي يرى عنقه كالنعام واخوانه الذين يقولون انا نحن المولويون الماهرون فى العربية

والعلوم الادبية ثم البطالوى الشيخ **محمد حسين** مضل العوام بكلمات كالسراب او كالجهام ثم بعد هؤلاء

كل مخالف من اهل الاهواء وكل من قال اني ارضعت ثدى الادب وحوت معرفتي من علوم النخب مع خلافه فى الملة

والمشرب فالان ننظرهم هل يقومون فى الميدان كقيامهم على منبر الافتراء

والعدوان او يولون الدبر ويشهدون على انفسهم انهم كانوا من الجاهلين

طبع فى المطبع مفيد عام فى بلدة لاهور فى سنه ۱۳۱۱ من الهجرة

قيمت فی جلد ٦/ تعداد جلد ۳۰۰۰

शीर्षक पृष्ठ पर लिखित लेख का अनुवाद

अनुवाद- समस्त प्रशंसाएँ उस ख़ुदा के योग्य हैं जिसने हम पर महान कृपा की और अपना वादा निभाया और वचन पूरा किया और कई निशान दिखलाए और इन्कार करने वाले नर-नारियों के मुँह बन्द कर दिए। अत: मैंने चाहा कि उसकी चमकार उन लोगों के लिए स्पष्ट करूँ जिन्होंने उसकी हिदायत पर चलने का इरादा किया। ख़ुदा का सहयोग और समर्थन हमेशा मेरे साथ रहा, यहाँ तक कि जब अत्यन्त उपकार करने वाले ख़ुदा की ओर से सूर्य-चन्द्र ग्रहण का निशान प्रकट हो गया तो मेरे दिल में डाला गया कि मैं इस बारे में एक किताब संकलित करूँ जो सत्याभिलाषियों के लिए सन्मार्गप्राप्ति का कारण हो। इसलिए मैंने उस ख़ुदा के आदेश से जो सबसे अधिक सच्चा और सबसे बढ़कर प्रेम करने वाला है यह किताब लिखी और इसे नूरुल हक़ के दो भागों में से एक भाग ठहराया और इसके साथ उन लोगों के लिए 5000 (पाँच हज़ार) रुपए का इनाम रखा जो कव्वे की तरह शोर मचाते हैं और क़ुरआन को झुठलाते हैं और शैतान की पैरवी करते हैं और क़ुरआन करीम की आलंकारिकता एवं वाग्मिता पर ऐतराज़ करते हैं और उसे महान उपकारी ख़ुदा की ओर से नहीं समझते। इस किताब और इसके भाग-1 के लिखने से मेरा तात्पर्य यह है कि मूर्खों की मूर्खता और मूढ़ों की मूढ़ता सुस्पष्ट करूँ और बुद्धिमानों पर उनके छल को बेनक़ाब करूँ और चिंतन-मनन करने वालों को सच दिखलाऊँ। मैंने जब इस किताब के लिखने का इरादा किया तो उसके बाद समस्त लोकों के रब्ब की ओर से मुझे यह इल्हाम हुआ कि अधर्मी और झुठलाने वाले इस जैसी किताब लिखकर प्रस्तुत करने का कभी सामर्थ्य नहीं पाएँगे, जो मेरी इस किताब की सी गद्य और पद्य पर आधारित हो और इसके जैसे अध्यात्म और रहस्यज्ञान अपने अन्दर रखती हो। अत: जो मेरे इल्हाम को झूठा साबित करना चाहे वह मेरी किताब के हमतुल्य किताब

लिखकर प्रस्तुत करे। क्योंकि महदी (अर्थात् ख़ुदा की ओर से शिक्षा पाने वाले) को ऐसी-ऐसी गूढ़ बातें समझायी जाती हैं जिनको दूसरा नहीं समझ सकता और उसका दुश्मन उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सकता चाहे वह जितने जतन करे। अत: इस उच्चकोटि की मर्मस्थ और गूढ़ किताब का नाम-

नूरुल हक़ भाग- 2

रखा गया है। यह किताब सामना करने वाले का मुँह बन्द करने के लिए दोधारी तलवार है और इनाम के लोभ में हमारे सर्वप्रथम संबोधित ईसाई साहिबान हैं जो पशुवृत्ति समान हैं और उनका इमाद (अर्थात् इमादुद्दीन) जो घमंड के कारण शुतुर्मुर्ग की तरह गर्दन उछालता है और उसके वे भाई लोग भी संबोधित हैं जो यह कहते हैं कि हम मौलवी हैं और अरबी भाषा एवं साहित्यज्ञानों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। फिर शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी संबोधित है जो झूठी आशा और बिन पानी बादल जैसी छल-प्रपंच की व्यर्थ बातों से लोगों को गुमराह कर रहा है। फिर इन सब के बाद हर एक विरोधी जो मुक़ाबले की इच्छा रखता है और हर एक वह जो यह कहता है कि मैं साहित्य का प्रकाण्ड विद्वान हूँ और मुझे विद्याओं की आधारभूत बातों का पूर्ण ज्ञान है। हालाँकि वे धर्म और धारणा में परस्पर भिन्न-भिन्न हैं। अब हम देखते हैं कि क्या वे मुक़ाबला के मैदान में इसी शान से खड़े होते हैं जिस शान से झुठलाने और दुश्मनी करने के लिए मिम्बर पर सीना तानकर खड़े होते हैं, या पीठ फेरते हैं और अपने ख़िलाफ़ गवाही देते हैं कि वे मूर्खों में से हैं।

यह किताब मुफ़ीद-ए-आम प्रेस लाहौर में 1311 हिज्री में प्रकाशित हुई
संख्या- 3000

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कृपालु ख़ुदा के निशानों में से चन्द्र-सूर्य ग्रहण का निशान

उस महान ख़ुदा की भूरि-भूरि प्रशंसा, जो अत्यन्त उपकार करने वाला और ग़मों को दूर करने वाला है और उसके रसूल (अवतार) पर दुरूद व सलाम हो जो समस्त मानवजाति का मार्गदर्शक है और दिलों को संयम तथा स्वर्ग की ओर मार्गदर्शन करने वाला है इसके अतिरिक्त उसके उन सहचरों पर भी सलामती हो जो ईमान के स्रोतों की ओर प्यासों की तरह दौड़े और मूर्खता के घोर अन्धकार में सर्वोत्कृष्ट ज्ञान और आदर्श से विभूषित किए गए और उसके अनुयायियों पर भी दुरूद व सलाम हो जो नबूवत रूपी वृक्ष की शाख़ों के समान हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ुशबू के लिए रैहान (तुलसी) की भाँति हैं। तत्पश्चात् हे भाइयो और मित्रो! तुम्हें ज्ञात हो कि ख़ुदा तआला के (चेहरा दिखलाने के) दिन निकट आ गए और ख़ुदा का निशान ज़ाहिर हो गया और ख़ूब स्पष्ट हो गया और रमज़ान में दो ऐसे रौशन निशान प्रकट हो गए जो एक-दूसरे की सच्चाई को दृढ़ता प्रदान करते हैं। अत: आग के बुझाने के लिए पानी आ गया है। इसलिए हे मुसलमानो! तुम्हें मुबारक हो और हे मोमिनों के गिरोह! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो।

القصيدة فى الخسوف والكسوف واقتضبتُها لقتل السِّرحان وتنجية الخَروفِ

क़सीद:

चन्द्र-सूर्य ग्रहण से सम्बन्धित एक क़सीद: जिसे मैंने दुष्टों के संहार और भोले-भाले भक्तों (मोमिनों) की रक्षा हेतु रचा है।

غَسا النَّيِّرانِ هدايةً لِلْكَودَنِ يقولانِ لا تترُكْ هُدًى وتَدَيَّنِ

1-मूर्ख की हिदायत के लिए सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लग गया मानो वे कह रहे हैं कि हिदायत को मत छोड़ और सन्मार्ग को अपना।

وإنّهما كالشاهدينِ تظاهَرَا هما العدل قد قاما فهل من مؤمنِ

2-वे दोनों गवाहों की तरह एक-दूसरे की सच्चाई के लिए प्रकट हुए और न्याय की गवाही देने के लिए खड़े हो गए। क्या कोई ईमानदार है जो इस ओर ध्यान दे?

وقد فرّ قومی نخوةً وتعصّبًا وأين المفرّ من الدليل البيّنِ

3-और मेरी क़ौम ने केवल अहंकार और ईर्ष्या-द्वेष से मुँह मोड़ा, लेकिन खुले-खुले प्रमाण से इन्सान कहाँ भाग सकता है?

فسادًا و كبرًا مع دَعاوِی التسنّنِ وتركوا حديث المصطفٰی خيرَ الورىٰ

4-और उन्होंने पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस को छोड़ दिया और उनका यह छोड़ना केवल फ़साद और अहंकार के कारण था, जबकि वे अहले सुन्नत होने का दावा करते थे।

وما بقِی لِلنُّوکیٰ مفرٌّ بَعْده وإنّی أراهم كالاسير المقرَّنِ

5-इसके बाद मूर्खों के लिए कोई भागने की जगह न बची। मैं उनको उस क़ैदी की तरह देख रहा हूँ जो ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हो।

وقد نبذوا التقوى وراء ظهورهم وأَلْهَتْهُمُ الدنيا عن المولى الغَنِیّ

6-उन्होंने तक़्वा (संयम) को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और दुनियादारी ने उन्हें ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दिया।

ووالله إن اليوم يوم مبارك يذكّرنا أيامَ نصرِ المُهيمنِ

7-ख़ुदा की क़सम यह दिन बहुत ही शुभ दिन है जो हमें ख़ुदा की मदद का ज़माना याद दिलाता है।

وهذا عطاءٌ مِّن قديرٍ مُكوِّنٍ وفضلٌ من اللهِ النّصير المهوِّنِ

8-यह उस सामर्थ्यवान् ख़ुदा का इनाम (पुरस्कार) है जो ब्रह्माण्ड का रचयिता है और यह उस ख़ुदा की कृपा है जो हमेशा मदद करने वाला और मुश्किलों को दूर

करने वाला है।

ففاضت دموع العين منّى تأثُّرًا إذا ما رأيتُ حنانَ ربٍّ محسنِ

9-जब मैंने कृपालु ख़ुदा के यह उपकार देखे तो उसके असर से मेरी आँखों से आँसू जारी हो गए।

قد انكسفت شمسُ الضُّحٰى لضيائنا لِيظهَرَ ضوئُ ذُكائنا عند مُمعِنِ

10-सूर्य हमारी रौशनी के लिए गहना गया ताकि हमारे सूर्य की रौशनी इन लोगों पर प्रकट हो।

ترى أَنوارَ الدِّين فى ظلماتها ولُمّاتِها كأنها أرضُ مخزن

11-तू उसके ग्रहण में इस्लाम के नूर (अर्थात् सच्चाइयाँ) देखता है और उसकी किरणें मानो ख़ज़ाने से भरी हुई ज़मीन की ओर इशारा करती हैं।

وليس كُسوفًا ما ترى مثلَ عَندَمٍ بل احمرَّ وجهُ الشمس غضبًا على ال

12-और यह वह सूर्य ग्रहण नहीं जो लाल रंग के गोंद की तरह तुझे लाल दिखाई देता है, बल्कि एक धृष्ट पर अत्यन्त गुस्सा करने के कारण सूर्य का चेहरा लाल हो गया है।

وحُمّرتُها غيظٌ ترىٰ فى خدِّهَا علىٰ جهلات القوم فانظُرْ وامْعِنِ

13-उसकी लाली एक ग़ुस्सा है जो उसके गालों में दिखाई दे रही है और यह ग़ुस्सा क़ौम की धृष्टताओं के कारण है, अब तू देख और ध्यान से देख।

ظَلَامٌ مُنيرٌ يملأ العَينَ قرّةً ويسقى عطاشَ الحق كأس التّيقنِ

14-यह सच्चाई को स्पष्ट कर देने वाला एक ग्रहण है जो आँख को ठण्डक से भर देता है और सत्य के प्यासों को विश्वास का पानी पिलाता है।

ولو قبلَ رؤيتهٖ أنابَ مخالفى لَهُدِىَ إلى الاسرار قبل التَّفَكُّنِ

15-यदि मेरा मुख़ालिफ़ इसके देखने से पहले सत्य की ओर झुकता तो शर्मिन्दा होने से पहले ख़ुदा के भेदों को पा लेता।

ولكنّه عادىٰ وقفَّل قلبه فقُلْنا اهْلَكَنْ فى جهلك المتمكّنِ

16-किन्तु उसने सत्य से वैर किया और अपने दिल पर ताला जड़ दिया तो हमने कहा कि, अपनी ढ़िठाई की मूर्खता में मर जा।

رأيت ذوى الآراء لا يُنكرونني وذى لَوثةٍ يعوى لوجعِ التَّسكّنِ

17-मैंने बुद्धिमानों को देखा कि वे मेरा इन्कार नहीं करते, लेकिन एक मूर्ख व्यक्ति भूख मिटाने के लिए भेड़िए की तरह चिल्ला रहा है।

فإن كنتَ تبغى الله فاطلُبْ رضاءه وإن كنت تبغى النَّحرَ فى الحجّ فَامْتَنِ

18-इसलिए यदि तू ख़ुदा का प्यार पाना चाहता है तो उसकी इच्छा ढूँढ़, और यदि हज में क़ुर्बानी करना चाहता है तो मिना (के मैदान) में जा।

يقِى خاطبُ الدنيا الدنيّة مالَها ومن أزمعَ العقبى فللّهِ يقتنى

19-दुनिया का भूखा दुनिया की धन-दौलत पर निगाह रखता है और जो अंजाम की सोचता है वह अन्त के लिए नेकियों का ढेर जमा करता है।

وقد ظهر الحقُّ الصريح ونورُهٗ فلا تتبعوا جهلًا عماياتِ ضَيْزَنى

20-खुला-खुला सच और उसकी चमक ज़ाहिर हो चुकी है इसलिए तुम अपनी मूर्खता से दुश्मन की झूठी बातों का अनुसरण मत करो।

أيضًا فى الخسوف والكسوف لدعوة الضالين والامر بالمعروف

(निम्नलिखित क़सीदा भी चन्द्र-सूर्य ग्रहण के बारे में है और इसमें गुमराहों को हिदायत की ओर दावत दी गई है और अच्छी बातों का आदेश दिया गया है)

ظهَر الخسوف وفيه نورٌ والهدى خيرٌ لنا ولخيرنا أمرٌ بَدَا

21-चंद्रमा को ग्रहण लग गया और इसमें ज्ञान और मार्गदर्शन है। यह हमारे लिए एक उपकार है और हमारी भलाई के लिए एक निशान है जो प्रकट हो चुका।

هبّتْ رياحُ النّصر من محبوبنا مشمولةٌ قد برّدَتْ حرَّ العِدَا

22-हमारे प्रिय महबूब (ख़ुदा) की ओर से मदद की ठण्डी हवाएँ चलने लगीं, जिन्होंने दुश्मनों की गर्मी को ठण्डा कर दिया।

فى ليلةٍ قُدَّتْ ثيابُ غَمامها برقُ الرَّواعِدِ كان فيها مُرْجِدا

23-चन्द्रग्रहण की रात घोर काले बादलों के कपड़े फाड़े गए और गरजने वाले

बादलों के अन्दर की चमक दिलों को झिंझोड़ने लगी।

قمرٌ مُعينُ الصَّادِقِينَ مباركٌ   حَكَمٌ مُهِينُ الكَاذِبِيْنَ تهدُّدَا

24-यह शुभसूचक चंद्रमा (अपने ग्रहण द्वारा) सच्चों का मददगार है और हम में और हमारे दुश्मनों में न्याय करने वाला है और झूठों को धमकी देकर शर्मिन्दा कर रहा है।

ردِفَ الكسوفُ خسوفَه من ربّنا   ليُهِينَ فتّانًا شريرًا مُفْسِدا

25-हमारे रब्ब की ओर से चन्द्रग्रहण के बाद एक ही महीने में सूर्य को ग्रहण लगा ताकि ख़ुदा उपद्रवी, दुष्ट और फ़ित्न: फैलाने वाले को शर्मिन्दा करे।

شمس الضحىٰ برزتْ برعبِ مُبارِزٍ   أفتلك أَمْ سيفٌ مبيدٌ جُرِّدَا

26-सूर्य (अपने ग्रहण द्वारा) रौद्र रूप में एक योद्धा की भाँति प्रकट हुआ, क्या यह एक सूर्य है या सोंती हुई तलवार।

سقطتْ على رأس المخالف صخرةٌ   كالسَّمْهَرِيَّةِ شَجَّهٗ أو كَالمُدىٰ

27-मुख़ालिफ़ के सिर पर एक पत्थर गिरा जिसने बर्छी या छूरियों की भाँति उसके सिर को तोड़ दिया।

إنّا صفحنا عن تفاحُشِ قولِهٖ   قلنا جَهُوْلٌ قد هَذَى متجلّدا

28-हमने उसकी गालियों से दरगुज़र किया और कहा कि यह एक मूर्ख है जो जल्दबाज़ी से अनर्गल बक रहा है।

لكنْ مُؤيِّدُنا الَّذِى هو ناظرٌ   ما شاء أن يُّؤذِى العَبِيطُ مُؤيَّدا

29- पर वह हमारा समर्थक जो देख रहा है उसने न चाहा कि एक झूठा और प्रपंची उसके समर्थनप्राप्त को दु:ख देवे।

نصرٌ من اللهِ القريب بِفَضْلِهٖ   إن المُهَيْمِنَ لا يُؤخِّر مَوْعِدا

30-यह ख़ुदा तआला की ओर से आने वाली एक सहायता है जो उसकी कृपा से बहुत जल्द आई है, ख़ुदा अपने वादा में कभी देरी नहीं करता।

قُضِىَ النِّزاعُ وشَاهِدَان تظاهرا   لِيُبَكِّتَ الْمَوْلىٰ أَلَدًّا أَسْمَدَا

31-मतभेद का निर्णय हो गया और दो गवाहों ने गवाही दी जो एक-दूसरे को दृढ़ता प्रदान करते हैं ताकि ख़ुदा तआला एक बड़े झगड़ालू और अहंकारी को दोषी ठहरावे।

قمرٌ كمثل حمامَةٍ بِدَلَالِهٖ   شمس بتبشيرٍ تُشَابِهُ هُدْهُدَا

32-चंद्रमा अपनी गम्भीरता में कबूतर की तरह है और सूर्य शुभसन्देश देने में हुदहुद के समान।

قِطْعَاتُهَا تَهْدِى الْقُلُوْب كأنها زُبُرٌ تجدّ نقوشَ شمسٍ مُقْتَدَا

33-उसकी किरणें दिलों को राह दिखाती हैं मानो वे ऐसी पवित्र पुस्तकें हैं जो हमारे सूर्य (अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के निशानों की पुनरावृत्ति करती हैं।

أَوَ مِثْلُ وَاشِمَةٍ أُسِفَّ نَؤُورُها خدًّا كمخدُودٍ ووَجْهًا أَغْيَدَا

34-या उसकी गर्मी उस भाप की तरह है जो एक धूलधूसित सुन्दर सलोनी स्त्री के चेहरे को निखारने के लिए दी जाती है।

يا أيها المتجرّمون بعجلةٍ حَسَدًا تَجَرَّمَ غَيْمُكم وتقدَّدا

35-हे वे लोगो जो जल्दबाज़ी और ईर्ष्या से झूठे आरोप लगाते हो तुम्हारे भ्रम का काला बादल छट गया और टुकड़े-टुकड़े हो गया।

كنّا نَرىٰ أَسَفًا تأجُّلَ بَهْمِكم فاليَوْم صَفُّ المفسدين تبدَّدا

36-हम अफ़सोस से तुम्हारे भोले-भाले लोगों को देखा करते थे, लेकिन आज उपद्रव फैलाने वालों की क़तारें (अर्थात् दल) अलग हो गईं।

وَقَدِ اسْتَبَاحَ الغُولُ جَوْهرَ عقله حَتَّى انْثَنٰى مِنْ أَمْرِهٖ مُتَرَدَّدَا

37-और एक धूर्त ने अपने विवेक का समूल विनाश कर लिया, यहाँ तक कि वह अपने ख़ुदा के बारे में शक में पड़ गया।

إنّ السّعيد يجيئُ مُلتَقِطَ النُّهٰى ولقِيْطةُ الشَّيْطَانِ يزرى مُلْحِدَا

38-सज्जन व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के लिए आता है और शैतान का चेला नास्तिक बनकर दोष ढूँढ़ता रहता है।

إنّا سَلَخْنَا شَهْرَ رَمَضَانَ الَّذِىْ فيهِ الخُسُوفُ مع الكُسُوْفِ تفرَّدَا

39-हम उस रमज़ान के अंत तक पहुँच गए जिसका चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण अद्भुत और अद्वितीय है।

القمرُ ساريةٌ ومثلُ عشيّةٍ والشمس غادٍ مُدجِنٌ قَطْرَ النَّدَا

40-रमज़ान (के चन्द्रग्रहण) का यह चंद्रमा उस बादल की तरह है जो रात के प्रारम्भ

में आता है और घोर अन्धकार की तरह छा जाता है, और (सूर्यग्रहण का यह) सूर्य उस बादल की तरह है जो प्रात:काल आता है और कल्याण के मोती बरसाता है।

هذا من الله المهيمن آيةٌ لِيُبِيْد مَن تَرَك الهُدىٰ مُتعمّدا

41-यह निगरान (निरीक्षक) ख़ुदा की ओर से एक निशान है (और उसने यह इसलिए प्रकट किया) ताकि वह उसे रुसवा करे जो जानबूझकर हिदायत को छोड़ता है।

فاسعَوا زُرَافَاتٍ وَوُحْدَانًا لهٗ مُتَنَدِّمين وبَادِرِيْنَ إِلَى الهدىٰ

42-इसलिए तुम पश्चाताप करते हुए गिरोह दर गिरोह और अकेले-अकेले भी उसकी ओर दौड़ो और हिदायत की ओर जल्द क़दम उठाओ।

ظهرت خطاياكم وحصحصَ صدقُنا فابكوا كثَكْلىٰ فى الزَّوايا سُجَّد

43-तुम्हारी ग़लती ज़ाहिर हो गई और हमारा सच खुल गया। अब तुम उस औरत की तरह जिसका लड़का मर जाता है तनहाइयों में सिज्दा करते हुए रोओ और गिड़गिड़ाओ।

صارت ديار الهند أرضَ ظهورها لِيُسَكِّتَ الرحْمٰن غُوْلًا مُفْنِدا

44-हिन्द की ज़मीन इस निशान के प्रकट होने का स्थान ठहरी, ताकि ख़ुदा तआला धूर्त को दोषी ठहराए।

فأَذِبَّةُ الإِوْهَامِ قُصَّ جناحُها رُحمًا علىٰ قوم أطاعُوا أحمدا

45-उसने भ्रम की मक्खियों के पर काट दिए और उन लोगों पर रहम किया जिन्होंने अहमद मुज्तबा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की (बात का) अनुसरण किया।

فتَجافَ عن أيّامِ فَيجٍ أعوجٍ حِججٌ خلَوْنَ تغافُلًا وتمرُّدا

46-तू गुमराही के दिनों से अलग हो जा, वे ऐसे साल हैं जो आलस्य और उद्दंडता में गुज़र गए।

كانت شَرِيْعَتُنَا كَزَرْعٍ مُعْجِبٍ فيها تعرّتْ مثلَ أَزْعَرَ أَرْبَدا

47-मुसलमान एक लहलहाती खेती की तरह थे, लेकिन इन दिनों वे एक अस्त-व्यस्त और अकालग्रस्त बन्जर भूमि के समान हो गए।

اَلعَيْنُ بَاكيةٌ عَلىٰ أطلالِهَا يا ربِّ فاعمُرْ خَرْبَها مُتَوَحِّدَا

48-आँख इस्लाम की इस हालत को देखकर रो रही है, हे मेरे रब्ब! अब तू ही इसमें

फैली हुई ख़राबियों को दूर कर और पुनः लहलहा।

अब हम इस स्थान पर इस वर्णन की कुछ व्याख्या करना चाहते हैं। हे मुसलमानो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों का अनुकरण करने वालो! तुम्हें ज्ञात हो कि वह निशान जिसका अल्लाह की किताब (क़ुरआन करीम) में तुमसे वादा किया गया था और अन्धकार को दूर करने वाले समस्त नबियों के सरदार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो तुम्हें ख़ुशख़बरी मिली थी कि रमज़ान के महीने में सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लगेगा। अतः ख़ुदा के फ़ज़्ल से वह निशान हमारे देश में प्रकट हो गया और चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लगा और वे दोनों निशान प्रकट हो गए। इसलिए ख़ुदा तआला को सिज्दा करते हुए उसका शुक्र अदा करो।

तुम जानते हो कि ख़ुदा तआला ने इस महान घटना के बारे में अपनी पवित्र किताब क़ुरआन करीम में सूचना दी है और समझाने और जतलाने के लिए फ़रमाया है कि-

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ۔ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۔ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۔ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ۔

(सूरः क़ियामत आयत नं. 75/8-11)

अर्थात जिस समय आँखें पथरा जाएँगी और चंद्र ग्रहण होगा और सूर्य और चंद्रमा दोनों जमा किए जाएँगे अर्थात् सूर्य को भी ग्रहण लगेगा। उस दिन इन्सान कहेगा कि अब भागने की जगह कहाँ है।

इसलिए इस निशान पर स्वच्छ और पाकदिल के साथ ग़ौर करो। क्योंकि यह भविष्यवाणी क़ियामत की आसार (निशानियों) में से है न कि क़ियामत में घटित होने वाली घटनाओं में से, जो विद्वानों के निकट अत्यन्त सुस्पष्ट और रौशन है। क़ियामत से यह हालत तात्पर्य है कि उस दिन इस संसार का सारा विधान उथल-पुथल कर दिया जाएगा और एक नया विशाल संसार पैदा किया

जाएगा। अत: इस संसार के उथल-पुथल होने की दशा में वह चन्द्र-सूर्य ग्रहण किस तरह हो सकता है जिसके नियम और सिद्धान्त नि:सन्देह रूप से तुम्हें ज्ञात हैं और उसके घटित होने के समय और सिद्धान्त तुम ख़ूब अच्छी तरह समझते हो। फिर चन्द्र-सूर्य ग्रहण का वह विषय जो सांसारिक विधान का एक अपरिहार्य (अभिन्न) अंग है संसार के पूर्णत: उथल-पुथल होने की दशा में कैसे प्रकट हो सकता है? क्योंकि तुम जानते हो कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण प्राकृतिक विधान से पैदा होते हैं और उनका प्रकट होना पहले से रचे हुए निर्धारित विधान पर आधारित है जो उन मशहूर और निर्धारित समयों और दिनों पर प्रकट होते हैं जो खगोलविद्या में बयान किए गए हैं। फिर किस तरह उन निशानों को उस क़ियामत (प्रलय) की ओर संबद्ध किया जाए जिसमें न कोई सम्बन्ध होंगे न सिद्धान्त, न व्यवस्था न स्थायित्व? इसलिए इस पर अच्छी तरह विचार करो यदि कुछ कर सकते हो। फिर चन्द्र और सूर्य ग्रहण की अनिवार्यताओं में से एक यह भी है कि सूर्य और चंद्रमा अपनी पहली स्थिति और कार्य की ओर लौटें और चन्द्र-सूर्य ग्रहण के अर्थों में यह बात सम्मिलित है कि वे अपनी पहली दशा की ओर लौटें। लेकिन क़ियामत के दिन सूर्य-चंद्रमा को लपेटना वह एक दूसरी सच्चाई है और लपेटने के समय उन दोनों की रौशनी अपनी पहली हालत की ओर नहीं लौटेगी। बल्कि लपेटने की घटना धरती और आसमान के पूर्णत: उथल-पुथल होने के समय होगी और ख़ुदा तआला ने उसका नाम चन्द्र-सूर्य ग्रहण नहीं रखा, बल्कि उसका नाम तक्वीर और कशत (अर्थात् सितारों का लपेटना और रोक हटाना) रखा है। जैसा कि तुम ख़ुदा तआला की किताब में पढ़ते हो। अत: इस बात से हर एक पर सिद्ध हो गया कि चंद्रमा-सूर्य ग्रहण का जो निशान क़ुरआन शरीफ़ की इस आयत★ में लिखा है वह संसार से सम्बन्ध रखता है न कि संसार के समाप्त हो जाने से, और उसको क़ियामत (प्रलय) की घटना से जोड़ना और उसके समर्थन में किसी रिवायत को प्रस्तुत करना सूझबूझ की ग़लती है। बल्कि वह आख़िरी ज़माना (अर्थात् कलयुग) और क़ियामत के निकट आने की भविष्यवाणियों में से

★ देखो सूर: क़ियामत आयत नं. 10

एक भविष्यवाणी है जो सोच-विचार करने वालों से छुपी नहीं और इसका समर्थन वह हदीस करती है जो दारक़ुतनी ने इमाम मुहम्मद बाक़र बिन ज़ैनुल आबिदीन से रिवायत की है कि हमारे महदी के लिए दो ऐसे निशान हैं कि जब से धरती और आसमान पैदा किए गए कभी किसी दूसरे के लिए प्रकट नहीं हुए और वे यह हैं कि रमज़ान के महीने में (चंद्र ग्रहण की रातों में से) पहली रात को चंद्र ग्रहण होगा और उसी महीने के शेष दिनों में (सूर्य ग्रहण की तिथियों में से) मध्य तिथि को सूर्य ग्रहण होगा। इसी तरह की एक हदीस बेहक़ी ने भी अपनी किताब में लिखी है और इसी तरह कई अन्य मुहद्दसीन ने भी लिखा है। शाह रफ़ीउद्दीन साहिब देहलवी एडीटर रिसाला हश्रिया ने भी जो उलमा-ए-इस्लाम में से एक प्रकाण्ड विद्वान हैं, उसने कहा है कि मक्का के कुछ लोग अपने अन्तर्विवेक से महदी को पहचान लेंगे और वह उस समय रुक्न और मक़ाम के मध्य तवाफ़ कर रहा होगा, तब वे उसकी बैअत करेंगे और वह उनकी बैअत को नापसन्द करेगा। इस्लाम के मुहद्दसीन के अनुसार इस बात की निशानी यह है कि इस घटना से पहले रमज़ान में चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लगेगा, लेकिन हम इन रिवायतों की ठोस सनदों (प्रमाणों) से अवगत नहीं हो सके और मिली-जुली प्रामाणिकता के अलावा हमें उन रिवायतों की ठोस प्रामाणिकता के ढंग ज्ञात नहीं हुए। मिली-जुली प्रामाणिकता वही है जिसे हमने रिवायतों की तवातुर (क्रमिकता), हुस्ने दिरायत (सुबुद्धिपरक सूझबूझ), वृत्तांतावलोकन और तर्क स्थापित करके ज्ञात किया है और क़ुरआन करीम उससे सहमत है चाहे संक्षिप्त वर्णन में ही हो। इसके अतिरिक्त हम उन निशानों को देख रहे हैं कि मक्का वालों में एक जोश पैदा हुआ है जो इन भविष्यवाणियों को सच्चा ठहराता है और मैंने एक पत्र में पढ़ा है कि वे चन्द्र-सूर्य ग्रहण की बड़ी अधीरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं और उसकी ऐसी प्रतीक्षा कर रहे हैं जैसे कि ईद के चंद्रमा की होती है और मक्का में कोई ऐसा घर शेष नहीं रहा जिसके रहने वाले सोते-जागते यही वर्णन न करते हों। अत: यह उस ख़ुदा की ओर से एक क्रान्ति है जिसने इन नूरों के फैलाने का इरादा किया है और मैं देखता हूँ कि मक्का वाले सर्वशक्तिमान ख़ुदा की जमाअत में

फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो जाएँगे। यह आसमान के ख़ुदा की ओर से है और दुनिया के लोगों की आँखों में एक आश्चर्य। इस युग के कुछ लोगों ने कहा है कि तेरह रमज़ान को रात में चन्द्रग्रहण होगा और सत्ताईस रमज़ान को सूर्यग्रहण होगा। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसा वर्णन है कि इसमें और दारक़ुतनी के बयान में ग़ौर करने वालों की दृष्टि में कुछ ज़्यादा अन्तर नहीं। क्योंकि दारक़ुतनी की इबारत एक स्पष्ट वर्णन और ठोस एवं सुस्पष्ट सन्दर्भ के साथ इस बात पर संकेत करती है कि चन्द्रग्रहण रमज़ान की पहली तिथि को कदापि नहीं होगा और ऐसी कोई पद्धति नहीं कि उसे पहली रात को ग्रहण लगे। क्योंकि उसकी इबारत में क़मर का शब्द मौजूद है और तीन रात तक के चंद्रमा को क़मर नहीं बोला जाता, बल्कि तीन रात के बाद माह के अन्त तक उसे क़मर बोला जाता है। क़मर उसका नाम इसलिए रखा गया है कि वह उन दिनों ख़ूब चमकदार होता है और इसमें किसी को सन्देह नहीं कि तीन रात से पहले का चंद्रमा हिलाल कहलाता है। यह वह बात है★ जिस पर सारा अरब आज तक सहमत है और अरबों में से कोई इसका मुख़ालिफ़ नहीं। जिसका विवेक खो गया और अक़्ल मर गई उसके सिवा कोई इसका इन्कार नहीं कर सकता और मूर्ख या ईर्ष्यालु जो जानबूझकर मूर्ख बनता हो उसके मुँह के अतिरिक्त किसी के मुँह से यह बात नहीं निकलेगी और बुद्धिमानों के मुँहों से तू ऐसी बात कभी नहीं सुनेगा।

यदि तुझे सन्देह हो तो क़ामूस, ताजुल उरूस, प्रामाणिक हदीसें, लिसानुल अरब, और इसी तरह शब्दकोष की सारी पुस्तकें, साहित्य और शायरों के शे'र और प्राचीन कवियों के क़सीदे ध्यानपूर्वक देख। यदि तू इसके विपरीत सिद्ध कर दे तो हम तुझे एक हज़ार रुपया इनाम देंगे। इसलिए तू नबियों के सरदार और

★**हाशिया-** ताजुल उरूस के संकलनकर्ता ने कहा है कि महीने की पहली दो रातों के चंद्रमा को हिलाल कहते हैं और बुख़ारी एवं मुस्लिम के अनुसार तीसरी रात के बाद से लेकर पूरे महीने तक के चंद्रमा को क़मर कहते हैं और कुछ का कहना है कि पहली सात रातों तक के चंद्रमा को हिलाल कहते हैं, अबू इस्हाक़ और मेरे एवं अधिकांश के निकट चंद्रमा को पहली दो रातों तक हिलाल कहते हैं और तीसरी रात उसका प्रकाश स्पष्ट हो जाता है। इसी से

अलंकर्ताओं के अलंकर्ता और वाग्मियों के वाग्मी की बातों को उनके मूल अर्थों से मत फेर। हे असहाय! ख़ुदा तआला से डर और संसार के उस सबसे महान कुशल और वाग्मी पर आरोप लगाने की कोशिश मत कर जो समस्त संसार में लोकप्रिय है। क्या तेरा दिल इस बात का फ़त्वा देता है और इस बात पर ख़ुश है कि वह महाज्ञानी और महान अलंकर्ता जिसको ठोस और व्यापक बातें प्रदान की गईं और ठोस और व्यापक किताब (अर्थात् क़ुरआन मजीद) मिली और उसकी सारी बातें सरसता और अलंकारिकता के मोतियों और अरबी के अद्भुत और अद्वितीय विषयों और साहित्यिक गूढ़ताओं और शब्दकोष के निष्कर्षों और युक्तियों की तथ्यात्मकता से भरी हुई थीं वही इस भ्रम का शिकार हो और ठोस एवं सरस शब्द छोड़कर एक मुहावराहीन, निरर्थक और ग़लत शब्द प्रयोग करे और क़ौम और युग के बड़े-बड़े साहित्यकारों के मशहूर शब्दों को छोड़ दे और उपहास करने वालों की हँसी का पात्र बन जाए? ख़ुदा की क़सम! यह खुली-खुली ग़लती और तुच्छ भूल किसी मूर्ख और बुद्धिहीन से भी नहीं हो सकती, फिर यह उससे कैसे हो सकती है जो इस मैदान का घुड़सवार है। बल्कि वह घुड़सवारों का सरदार है। हे हद से बढ़ने वाले गिरोह! तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल का सम्मान नहीं करते? क्या तुम्हें तुम्हारी ईर्ष्या ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपेक्षा अधिक प्रिय और रुचिकर है? क्या तुम नहीं जानते कि यह शब्द इस स्थान पर मुहावरे के ख़िलाफ़ है और अस्पष्ट और अपरिचित है और भाषाविद् की बातों में इसका प्रयोग सिद्ध नहीं और किसी अलंकर्ता या भद्रपुरुष के लेख में यह शब्द नहीं पाया गया और बेचैनी के समय भी झूठी-सच्ची बातें एकत्र करने वाले किसी मूर्ख ने भी इस शब्द को नहीं लिखा तो फिर यह सरसता के सम्राट और घुड़सवारों के सरदार के मुँह से किस तरह निकल सकता था? इस शब्द से तुम्हारी अक़्ल की गहराई और नक़ल की हालत आज़माई गई और तुम्हारी विद्या, विद्वता, साहित्यज्ञान और लच्छेदार बातों की सारी पोल खुल गई। क्योंकि तुमने नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर उस बात को मन्सूब किया जो किसी मूर्ख से मूर्ख की ओर भी नहीं मन्सूब कर सकते। निकट

है कि इस धृष्टता और दुस्साहस से आसमान फट जाएँ। इसलिए तुम उस ख़ुदा से डरो जो अत्यन्त महान है और सत्य की पुकार स्वीकार करो, जिस तरह संमार्ग प्राप्त करने वाले स्वीकार करते हैं। जो निशान प्रकट होना था वह हो चुका। अब तुम झगड़े की ओर मत झुको और उस नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात का अनुसरण करो जिनका इशारा आदेश है और उनका आज्ञापालन अत्युत्तम है और तुम दुष्टों में से मत बनो। चाहिए कि तुम्हारे सन्देह रहस्यों को स्पष्ट करने के बजाय शब्दों के शाब्दिक (ज़ाहिरी) अर्थों की ओर न झुक जाएँ और नेक नीयत के साथ सच्चाई की राह को पहचान लो और धार्मिक विषयों में बच्चों की तरह छल मत करो। यदि तुम झूठ और छल की राह को छोड़ दो और उस बात को मान लो जो सूर्य की तरह स्पष्ट हो चुकी है, तो तुम्हारा क्या नुकसान है? मैं तुम्हारा सच्चा और निष्कपट हितैषी सदुपदेशक हूँ और मेरा अन्तर्यामी ख़ुदा मुझे देख रहा है और वह सच्चों और झूठों को अच्छी तरह पहचानता है।

मैं इस बात पर ख़ुश हूँ कि सच्चाई को प्रकट करूँ चाहे दुश्मनों के अन्याय से दज्जाल के साथ गिना जाऊँ।

अत: यह वाक्य कि रमज़ान की पहली रात को चंद्र ग्रहण लगेगा, इसका सच्चा, ठोस और प्रामाणिक अर्थ यह है कि उन तीन रातों में से जिनमें चाँदनी पूरी रात रहती है उनमें से पहली रात में चंद्रमा को ग्रहण लगेगा और क़मरी माह की चाँदनी रातों को तू ख़ूब जानता है जिसके बयान करने की आवश्यकता नहीं। इसके साथ इस बात की ओर भी इशारा है कि जब चंद्र ग्रहण उन तीन चमकदार रातों में से पहली चाँदनी रात में होगा तो रात के प्रारम्भ होते ही हो जाएगा न कि कुछ रात गुज़रने के बाद।★जैसा कि यह बात एक पवित्र प्रबुद्ध के निकट

★**हाशिया-** कुछ कमअक़्ल लोगों ने कुछ रिवायतों में लिख दिया है कि रमज़ान की पहली रात को सूर्य ग्रहण होगा, हालाँकि यह स्पष्टत: झूठ है। उन वर्णनकर्ताओं के हाल पर मुझे आश्चर्य होता है कि क्या उन्हें खुली-खुली बातों का भी ज्ञान नहीं था, क्या वे यह नहीं जानते थे कि सूर्यग्रहण रात को नहीं हुआ करता बल्कि दिन को होता है। हे प्रबुद्धजनो! जब सूर्य चढ़ा तो फिर रात कहाँ? इसी से

स्पष्ट है और चन्द्रग्रहण इसी तरह हुआ जिसे इस देश के लोगों में से बहुतों ने देखा, और जो तूने देखा वह तेरे लिए पर्याप्त है बल्कि उसे देखकर तूने नमाज़ भी पढ़ी। सच निखरकर स्पष्ट हो गया और सारे बहाने ख़त्म हो गए। इसलिए अब तू शक करने वालों में से मत बन।

हे वह आदमी! जो बुद्धि और विवेक का दावा करता है तू कब तक झूठ और भ्रम को अपनाएगा?

क्या तू ख़ुदा तआला के अज़ाब (प्रकोप) की आग को जीविका समझता है और ख़ुदा तआला के प्रकोप के तीर को सफलता का एक भाग समझता है?

यह कहना सच नहीं कि रमज़ान में रात के प्रथम भाग में चन्द्रग्रहण केवल पंजाब और उसके पास-पड़ोस के देशों में ही लगा है और उसका निशान दूसरे देशों में नहीं देखा गया इसलिए यह तर्क अधूरा है। क्योंकि भविष्यवाणी हम कहते हैं कि इस पेशगोई का उद्देश्य भी प्रथमदृष्टया इन्हीं देशों से सीमित है क्योंकि यही देश आख़िरी ज़माने (अर्थात् कलियुग) में प्रकट होने वाले मसीह मौऊद व महदी माहूद के प्रकटन के लिए निर्धारित है न कि दूसरे देश, उनमें न महदी है न ईसा। इसी कारण चन्द्र-सूर्य ग्रहण अरब और शाम (सीरिया) में नहीं लगा, ताकि ख़ुदा तआला जनसाधारण के भ्रमों को दूर कर दे और झूठों की विचारधाराओं का खण्डन करे, और इसमें रहस्य यह है कि हमारा पंजाब ख़ुदा तआला के निकट मसीह मौऊद व महदी माहूद की जन्मभूमि था। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि निशानों और लक्षणों को विशिष्ट करके लोगों का उसकी ओर मार्गदर्शन करे, ताकि लोग मसीह व महदी के दावेदार को उसके निशानों और चमत्कारों से पहचान लें। यदि हम यह कहें कि महदी का निशान तो हमारे देश में प्रकट हुआ लेकिन महदी का प्रादुर्भाव किसी अन्य देश में होगा तो यह बात बुद्धिपरक नहीं और उदाहृत प्रमाणों में इसका कोई प्रमाण नहीं। इसके अतिरिक्त दूसरे देशों में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं पाया जाता जिसने इस युग में ख़ुदा की ओर से महदी और मुर्सल (रसूल) होने का दावा किया हो। अत: अध्यात्मज्ञानियों के निकट मुख़ालिफ़ के तर्क के सामने हमारी सच्चाई सिद्ध हुई। अत: हे सन्देहों और

भ्रमों का अनुसरण करने वाले! इस गूढ़ बात में अच्छी तरह विचार कर, शायद ख़ुदा तआला तुझे शैतानों के जाल से छुटकारा दे और विश्वास का प्याला पिला दे। अपने सांसारिक मित्रों पर भरोसा मत कर। क्योंकि जब ख़ुदा तआला तुझे दुश्मन ठहरा देगा तो वे भी तुझसे दुश्मनी करने लगेंगे, फिर तू अपमानित और तिरस्कृत होकर रोएगा और निन्दितों में से हो जाएगा।

*-बहुत से शराब पीने वाले आपस में प्यालों से प्याले टकराकर एक-दूसरे का अभिवादन किया करते थे लेकिन अन्त में एक-दूसरे के सिर फोड़े।

*-कहाँ तक तू दुष्ट और अत्याचारी की आवभगत करेगा, उसे छोड़ और उस दिन को याद कर जो बहुत लम्बी तंगी का दिन है।

*-उन लोगों से मत डर जो शरीर को दण्ड देते हैं बल्कि उस रब्ब के प्रकोप से डर जो प्राणों को दण्ड देता है।

अत: इस गहन तहक़ीक़ और छानबीन से सिद्ध हुआ कि इमाम बाक़र की हदीस में जो निस्फ़ (मध्य) का शब्द आया है उससे तात्पर्य यह नहीं कि सूर्य ग्रहण उस माह के मध्य में होगा जैसा कि कुछ नासमझ लोगों ने समझ रखा है और इस पर ऐसे अड़ गए हैं जैसे कि एक मन्दबुद्धि मूर्ख या धृष्ट दुश्मन अड़ता है और न्यायप्रिय बुद्धिमानों की तरह नहीं सोचा। बल्कि उसके इस कथन से कि सूर्य ग्रहण उसके मध्य में होगा इससे यह तात्पर्य है कि, सूर्यग्रहण इस तरह प्रकट होगा कि वह सूर्यग्रहण होने वाले दिनों में से मध्य वाले दिन में होगा और सूर्यग्रहण के होने वाले दिनों में से दूसरे दिन के मध्यान्ह से आगे नहीं बढ़ेगा, क्योंकि वही मध्य की सीमा है। अत: जिस तरह ख़ुदा ने यह निर्णय किया कि ग्रहण की रातों में से पहली रात को चन्द्रग्रहण हो उसी तरह यह भी निर्णय किया कि सूर्यग्रहण के दिनों में से जो समय मध्य में आए उसमें सूर्यग्रहण हो। अत: वह उसी तरह घटित हुआ जिस तरह निर्णय किया गया था और जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी और

فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ

"ख़ुदा तआला अपने ऐसे प्रिय रसूलों (अवतारों) के अतिरिक्त जिन्हें वह

समाज सुधार के लिए भेजता है, किसी दूसरे पर अपनी परोक्ष की बातें प्रकट नहीं करता" (सूरः जिन्न आयत नं. 27-28) परोक्ष की बातों में से यह एक महान रहस्य है और बुद्धि की पहुँच से बहुत दूर। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह हदीस नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की है और इस हदीस की प्रामाणिकता के लिए और भी ढंग हैं जो इसकी सच्चाई पर गवाही देते हैं★और क़ुरआन ने इसका सत्यापन किया है। धूर्त और अधर्मी के सिवा कोई इसका इन्कार नहीं करेगा और राक्षस के सिवा इसे कोई नहीं झुठलाएगा। दुश्मनों और ईर्ष्या-द्वेष रखने वाले मौलवियों ने यह कहना शुरू कर दिया कि यह हदीस सच्ची नहीं है बल्कि किसी झूठे और नीच की कही हुई बात है, लेकिन उनके पास इसे झुठलाने के लिए कोई तर्क नहीं। क्या ही बुरी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है। वे सरासर झूठ बोलते हैं। उन्होंने उस हदीस को झुठलाया है जिसकी सच्चाई को ख़ुदा तआला ने सूर्य की तरह स्पष्ट कर दिया है। इसलिए यह हदीस ऐसी नहीं जो इन्सान की मनगढ़त कहला सके। लेकिन उनका विवेक जाता रहा और दिलों पर ताला पड़ गया। उन पर अफ़सोस! क्योंकि वे दुश्मन बनकर क्यों सच का इन्कार करते हैं? उन्हें क्या हो गया है कि वे बहुत बड़े हिसाब-किताब के दिन (अर्थात् क़यामत) से नहीं डरते? उन्हें क्या हो गया है कि वे सोचते नहीं कि यह एक ऐसी हदीस है कि जिसकी सच्चाई सूर्य की तरह स्पष्ट हो गई। ख़ुदा तआला झूठों की बात का कभी सत्यापन नहीं करता। ख़ुदा ऐसा नहीं जो झूठे दज्जाल को जो सच्चों का दुश्मन है उसे अपने परोक्ष के रहस्यों

★**हाशिया-** तू जानता है कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी क़ुरआन में मौजूद है और ख़ुदा तआला ने इसे क़यामत की निशानियों में से ठहराया है और शिया फ़िर्क़ा वालों की पुस्तकों में भी यह भविष्यवाणी उसी तरह पाई जाती है जिस तरह कि अहले सुन्नत वल् जमाअत की किताबों में और हम हर एक फ़िर्क़ा को इस पर सहमत पाते हैं। इसी तरह अश्अया (यशियाह) नबी की किताब बाब-13 और यूएल (JOEL) नबी की किताब के बाब-2 और इन्जील मती के बाब-24 में भी यह भविष्यवाणी मौजूद है। व्याख्या की आवश्यकता नहीं, किताबें मौजूद हैं ग़ौर फ़िक्र करने वालों की तरह उन्हें ध्यान से पढ़। इसी से सम्बन्धित

से अवगत करे। इस बारे में जो कुछ क़ुरआन में है वह तुझे मालूम है और वे किस तरह इसका इन्कार करते हैं हालाँकि भविष्यवाणी का सच्चा हो जाना यह स्पष्ट गवाही दे रहा है कि यह हदीस रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की है जो सुदूक़ और अमीन है।

इमाम मुहम्मद बाक़र ख़ुदा से सन्मार्गप्राप्त इमामों में से थे और इमाम ज़ैनुल आबिदीन के जिगर का टुकड़ा थे। इसके अतिरिक्त हदीसों के एकत्र करने की प्रणाली में ऐसे सच्चे आदमी भी मौजूद थे जो झूठों और उनके झूठ को पहचान लेते थे और जल्दबाज़ न थे। उनसे यह असम्भव था कि वे एक हदीस को निराधार और उसके वर्णनकर्ताओं को झूठा और छलिया जानने के बावजूद उसे अपनी सिहाह (हदीसों की प्रामाणिक पुस्तकों) में लिखते। क्या उन्होंने झूठे के झूठ को जानते-बूझते हुए उसे सच से मिला दिया? यदि यही सच है तो उन लोगों के बारे में क्या कहना है जिन्होंने झूठ को सच के साथ मिला दिया और वे मनगढ़त बातें बनाने वालों के हालात से भी अच्छी तरह परिचित थे, क्या वे तेरे निकट नेक और सदाचारी हैं? नहीं, बल्कि वे पहले दर्जे के दुराचारी हैं। (क़ुरआन करीम फ़रमाता है कि) وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللهِ كَذِبًا (अर्थात उससे बड़ा अन्यायी (राक्षस) कौन है जो ख़ुदा तआला पर झूठ बाँधता है या झूठों की रिवायतों (बातों) का समर्थक है?) (सूरः अल् अनाम आयत नं. 21) क्या तू गवाही देता है कि "दार क़ुतनी" और इस हदीस के सारे रावी (वर्णनकर्ता) और वे सारे लोग जिन्होंने अपनी किताबों में इस हदीस को प्रतिलिपित किया और इसको हदीसों में मिलाया वे शुरू से अन्त तक सारे उपद्रवी और दुराचारी थे और नेक तथा सदाचारी बिल्कुल न थे? तू क़ौम की किताबों को इस हदीस से भरी हुई पाएगा जिसका नाम तू मौज़ूअ (मनगढ़त) हदीस रखता है। इसके अतिरिक्त उनका ज्ञान तुझसे और तुझ जैसे लोगों से अधिक था। वे तेरे विचार की अपेक्षा मूल सच्चाई से अधिक अवगत थे। तू अपनी मनोवांछित बातों का अनुसरण मत कर और मुत्तक़ियों (संयमियों) की तरह सोच। क्या तू उस हदीस पर शक करता है जिसकी शुद्धता और प्रामाणिकता खुलकर स्पष्ट हो गई है?

क्या वह लोगों की दृष्टि में ज़ईफ़ (निराधार) हदीस है या निन्दायोग्य है या उसके राावियों (वर्णनकर्ताओं) में से कोई रावी धिक्कृत है? क्या यह सन्देह का स्थान है या तू विक्षिप्तों (पागलों) में से है? ख़ुदा तआला ने इस हदीस को सच्चा साबित कर दिया है और प्रमाण को दोपहर के सूर्य की तरह स्पष्ट कर दिया है और राावियों को लोगों के लाँछनों से बरी कर दिया है और इस हदीस की सच्चाई की वास्तविकता को पूरी स्पष्टता से खोलकर दिखा दिया है। क्या ऐसे बड़े निशानों के बाद भी कोई शक बाक़ी रह गया? क्या तुम दोपहर के चमकते हुए सूर्य पर शक करते हो? क्या तुम रौशनी को अंधेरे की तरह समझते हो? क्या तुम जानबूझकर अन्धे बनते हो या सचमुच अन्धे हो? क्या तुम इन्सान की गवाही को स्वीकार करते हो और ख़ुदा की गवाही को स्वीकार नहीं करते और हद से बढ़ते हो? क्या तू यह विश्वास रखता है कि ख़ुदा तआला अपने ग़ैब (रहस्य) से ऐसे लोगों को अवगत करता है जो अत्यन्त झूठे, मनगढ़त बातें बनाने वाले और छलिया हैं? क्या तू उन भविष्यवाणियों पर शक करता है जिनकी सच्चाई प्रकट हो चुकी है? सच्चाई प्रकट होने के बाद केवल वही लोग शक करते हैं जो हद से आगे बढ़ते हैं। यह वह विषय है जो किसी परिभाषा या स्पष्टीकरण का मोहताज नहीं, और न किसी पवित्र धर्मपरायण या बुद्धिमान मुसलमान से छुपा रह सकता है और न उस व्यक्ति से छुपा रह सकता है जो ग़ौर फ़िक्र करने वालों की तरह गहरी नज़र से देखता है। हे दो आँखों वाले! जान ले कि हदीस में निस्फ़ (मध्य) का शब्द द्विअर्थी है। अत: जैसा कि शब्द *अव्वल* जो हदीस में है मशहूर और शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से रात के प्रारम्भिक समय की ओर संकेत करता है और इसके साथ-साथ चन्द्रग्रहण की पहली रात की ओर भी संकेत करता है। इसी तरह हदीस में निस्फ़ (मध्य) का शब्द आया है जो प्रशंसित माह के दो अर्ध भागों में से दूसरे अर्ध भाग की ओर संकेत करता है और इसके साथ-साथ सूर्यग्रहण के उस विभाजित करने वाले समय की ओर भी संकेत करता है जिसने सूर्यग्रहण के दिनों को अपने घटित होने से आधा-आधा कर दिया और वह रमज़ान की अट्ठाईसवीं तिथि का दोपहर तक का समय था और सूर्यग्रहण के दिनों के बारे

में यदि कोई प्रश्न हो तो जानना चाहिए कि ज्योतिषियों के निकट इसके लिए तीन दिन निर्धारित हैं और वे चन्द्रमास की सत्ताईस से उन्तीस तक की तिथियाँ हैं और सूर्यग्रहण इन तिथियों में से किसी एक तिथि को उस समय होता है जब चंद्रमा विशेष परिस्थिति में सूर्य और पृथ्वी के मध्य हो, जैसा कि ज्योतिषियों के अनुभव इस पर गवाही देते हैं। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भविष्यवाणी की थी कि सूर्यग्रहण महदी के प्रादुर्भाव के समय सूर्यग्रहण के दिनों में से मध्य वाले दिन होगा, अर्थात् अट्ठाईसवीं तिथि को दोपहर से पहले। अत: वह इसी तरह प्रकट हुआ जो बुद्धिमानों से छिपा नहीं। अत: देख कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात किस तरह शब्दश: पूरी हो गई। अब ख़ुदा से डर और शक करने वालों में से मत बन। इस जगह यह बात भी स्पष्ट हो गई कि जिस व्यक्ति ने इसके उलट बयान किया और यह समझा कि हदीस का यह अर्थ है कि सूर्यग्रहण रमज़ान की सत्ताईसवीं तिथि में हो या पन्द्रहवीं, तो उसने बहुत बड़ा धोखा खाया और झूठ बोला है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस को नहीं समझा और उसके मर्म को नहीं जाना बल्कि अपने अल्पज्ञान और बुद्धिहीनता के कारण उसके समझने में ग़लती की है। जिस तरह कि उसने चन्द्रग्रहण को चंद्रमा की पहली रात में होने को ठहराकर ग़लती की है और वास्तविकता को नहीं समझा। यह सब कुछ मैंने अपनी ओर से नहीं कहा बल्कि समस्त लोकों के प्रतिपालक ख़ुदा के आदेश से कहा है और यह वह युग है जिसमें हर क़ौम के लोग जमा किए जाएँगे, जिस तरह सूर्य और चंद्रमा जमा किए गए और प्रकोप (अज़ाब) का समय निकट किया गया। अत: हे लोगो! सचेत हो जाओ, क्या कारण है कि तुम नींद से जागते नहीं? जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की ओर से हो उसका कोई पतन नहीं। तुम हर एक छल कर लो, तुम्हारे छलों से पहाड़ झुक नहीं सकते। और हे भ्रष्टों की सन्तानों! तुम ख़ुदा तआला को विवश नहीं कर सकते, वह अतिप्रतापी और प्रभुत्ववान् है। उसने तुम्हारे दिलों पर पर्दे डाल दिए, इसलिए तुम उसके भेदों को समझ नहीं सकते। अत: तुम एक ऐसी क़ौम बन गए हो जिनके दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं।

शैतान ने तुमको तुम्हारी कई करनियों और कथनियों के कारण डगमगा दिया और तुमने सच को न समझा और शक में पड़ गए और सबसे बुरे साथी (शैतान) की पैरवी करने लगे, और जो बात खुलकर सिद्ध और स्पष्ट हो गई उसको तुम एक नीच और निर्लज्ज की तरह क़बूल नहीं करते और गुमान करते हो कि वह हदीस सहीह नहीं है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से नहीं है। यदि तुम सच्चे हो तो पहले युगों में से इसका उदाहरण प्रस्तुत करो और हमको कोई ऐसी किताब दिखलाओ जिसमें ऐसे आदमी का वर्णन हो कि उसने यह दावा किया हो कि वह अल्लाह तआला की ओर से है और वह ही मसीह मौऊद और महदी मअहूद और अल् क़ायम है और दुश्मनों की भड़कती हुई आग को बुझाने के लिए आया है और वह ख़ुदा तआला की ओर से लोगों के सुधार के लिए भेजा गया है ताकि दीन (धर्म) को ज़िन्दा करे और ईमान के तरीक़े सिखलाए। फिर उसका दावा ख़ुदा के इस निशान के साथ संयुक्त हो और ख़ुदा तआला उसके दावे के ज़माने में रमज़ान के महीने में चंद्रमा तथा सूर्य को ग्रहण लगा दिया हो चाहे वह सच्चा हो या झूठा। यदि तुम इसका उदाहरण न प्रस्तुत कर सको और याद रखो कि कदापि न प्रस्तुत कर सकोगे। तुम्हारे पास झाग उगलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। तुम जान लो कि वह मेरे सच्चे ख़ुदा की ओर से मेरे लिए एक निशान है। वही मेरा रब्ब है जिसने अपनी ओर से मेरी सहायता की और अपने पास से मुझे ज्ञान सिखाया और मुझे अपना मीत बनाया और मुझ पर उन सत्यनिष्ठों के ज्ञान प्रकट किए जो मुझसे पहले गुज़रे हैं और मुझे वारिसों (उत्तराधिकारियों) में से बनाया। तुम पर अफ़सोस कि तुमने ख़ुदा तआला के निशान को तो झुठलाया लेकिन इस जैसा उदाहरण न प्रस्तुत कर सके। तुम में से कुछ वे लोग हैं जिन्होंने बहुत सोच-विचार और गहरी नज़र से देखने के बाद सच्चा जाना। अत: हे जल्दबाज़ो! सोचो और ग़ौर करो कि इन दोनों दलों में से कौन सा दल अमन का सबसे अधिक पात्र है? क्या तुम डरते नहीं कि तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस को झुठलाया? जबकि उसकी सच्चाई दोपहर के सूर्य की तरह स्पष्ट हो चुकी

है। क्या तुम इसका उदाहरण पहले ज़मानों में से किसी ज़माने का प्रस्तुत कर सकते हो? क्या तुमने किसी किताब में पढ़ा है कि किसी व्यक्ति ने यह दावा किया हो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूँ और फिर उसके ज़माने में रमज़ान के महीने में सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लगा हो, जैसा कि अब तुमने देखा। हे इन्कार करने वालो! यदि तुम उसको जानते हो तो बयान करो और यदि तुम ऐसा कर दिखाओ तो तुम्हें मेरी ओर से एक हज़ार रुपया इनाम मिलेगा। यदि तुम यह साबित कर दो तो यह इनाम ले लो और मैं ख़ुदा तआला को अपने इस वचन पर गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो और ख़ुदा सब गवाहों से श्रेष्ठ गवाह है और यदि तुम साबित न कर सको और याद रखो कि कदापि साबित न कर सकोगे, तो उस नर्क से डरो जो उपद्रव फैलाने वालों के लिए तैयार किया गया है।

قضَى بيننا المولىٰ فلا تَعْصِ قاضيا وأَطْفِئْ لَظَى الطَّغْوى وفارِقْ حاضيا

1-ख़ुदा तआला ने हमारे मध्य फ़ैसला कर दिया है। अत: तू फ़ैसला करने वाले की अवज्ञा मत कर और उद्दंडता की ज्वाला को बुझा और जो लड़ाई की आग को भड़काने वाला है उससे अलग हो जा।

ووَدِّعْ وُجودَ الظالمين وَجُودَهم ولا تذكُرَنْ يُسرًا وعُسْرًا ماضيا

2- अन्यायियों की संगति और उनकी मेहरबानियों को छोड़ दे और पुरानी तंगी और ख़ुशहाली को मत याद कर।

وغادِرْ ذَرَى أهلِ الهوى ورِضائَهُمْ وبادِرْ إلى الرحمن واطلُبْ تَراضيا

3-दुनियादारों (लंपटजन) की शरण और उनकी ख़ुशनूदी को छोड़ दे और रहमान ख़ुदा की ओर जल्द क़दम उठा और कोशिश कर कि वह तुझ से राज़ी हो और तू उससे।

ولا تَشْظَيَنْ مِثل الشَّذَى أو ضالِعٍ وكُنْ فى شوارِعِه ضَلِيعًا نَاضِيا

4-कुत्ते की मक्खी और लंगड़े घोड़े की तरह आगे बढ़ने से मत रुक, बल्कि ख़ुदा तआला की राहों में सबसे आगे बढ़ने वाला एक तेज़ और ताक़तवर घोड़ा बन जा।

وإنْ لَعَنَك السفهاءُ مِن طلبِ الهُدىٰ فَكُنْ فى مَراضى الله باللَّعْنِ راضيا

5-यदि हिदायत की ओर आकृष्ट होने के कारण मूर्ख लोग तुझ पर लानत डालें, तो ख़ुदा तआला की रज़ामन्दी पाने के लिए लानत पर राज़ी हो जा।

जब सूर्य ग्रहण की वास्तविकता खुली-खुली और मशहूर व्याख्या के अनुसार यह ठहरी कि वह खगोलीय पिंडों के उस स्थिति में पहुँचने का नाम है कि जब मास के आख़िरी दिनों में सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्रमा आ जाए, तो कैसे सम्भव है कि जो संसार के समस्त लोगों से बढ़कर भाषाविद् है वह ऐसा शब्द बोले जो क़ौम के साहित्य, शब्दकोश और मुहावरों से बिल्कुल उलट हो? और किस तरह उचित है कि ऐसा शब्द बोला जाए जो भाषाविदों के निकट एक विशेष अर्थ के लिए बना है, फिर उसको बिना किसी सन्दर्भ और प्रसंग के और बिना किसी परिचर्चा और स्पष्टीकरण के उस अर्थ से फेर दिया जाए? क्योंकि किसी शब्द का मुहावरा और अर्थ उसके प्रयुक्त आशय के अतिरिक्त बिना किसी ठोस सन्दर्भ और प्रसंग के दूसरी ओर फेरना साहित्यकारों और कोशकारों के निकट वैध नहीं, और हम वर्णन कर चुके हैं कि क़ुरआन इस बयान का सत्यापन करता है। यदि चन्द्र-सूर्य ग्रहण ऐसे दिनों में होता जो प्राकृतिक विधान में निर्धारित नहीं है तो क़ुरआन इसका नाम ख़ुसूफ़-कुसूफ़ (चन्द्र-सूर्य ग्रहण) न रखता, बल्कि दूसरे शब्द से बयान करता। लेकिन क़ुरआन ने ऐसा नहीं किया जैसा कि तू देखता है, बल्कि उसका नाम ख़ुसूफ़ (चन्द्र ग्रहण) ही रखा ताकि लोगों को समझावे कि यह ख़ुसूफ़ प्रकृति के अनुसार है कोई अन्य चीज़ नहीं। हाँ क़ुरआन ने कुसूफ़ को कुसूफ़ के नाम से बयान नहीं किया ताकि वह एक और नई बात की ओर संकेत करे। क्योंकि यह सूर्यग्रहण जो चन्द्रग्रहण के बाद हुआ एक अद्भुत और असाधारण बिगुल था। यदि तू इस पर कोई गवाह माँगता है या देखने वालों के बारे में जानना चाहता है तो तू ख़ुद उस सूर्यग्रहण के अद्भुत आकार और प्रकारों को देख चुका है। फिर उसकी गवाही के लिए तेरे लिए वह ख़बर भी पर्याप्त है जो दो लोकप्रिय और मशहूर अंग्रेज़ी अख़बार अर्थात् पायनियर और सिविल मिलिट्री गजट में प्रकाशित हुई है और वे दोनों अख़बार मार्च 1894 ई. के महीने में प्रकाशित हुए हैं। जिनकी गवाहियों का विवरण यह

है कि उन दोनों अख़बारों में लिखा है कि यह सूर्यग्रहण अपनी विचित्रताओं में अनुपम और असाधारण है, अर्थात् वह एक ऐसा सूर्यग्रहण है कि उस जैसा पहले कभी नहीं देखा गया और उसके आकार और प्रकार अद्भुत और अनुपम हैं और वह एक ख़ुदाई चमत्कार है और प्राकृतिक नियमों के विपरीत भी है। इसलिए वह असाधारण होना सिद्ध हुआ। जिसका वर्णन क़ुरआन करीम और ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस में मौजूद है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रमज़ान में इन विचित्रताओं के साथ चन्द्र-सूर्य ग्रहण होना एक ख़ुदाई (ईश्वरीय) चमत्कार है। जब तूने इसके साथ एक ऐसे आदमी को देखा जो यह कहता है कि मैं मसीह मौऊद और महदी मअहूद हूँ और ख़ुदा की ओर से इल्हाम पाता हूँ और रसूल भी हूँ और उसका प्रादुर्भाव चन्द्र-सूर्य ग्रहण के इस निशान से सम्बद्ध है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सारे विषय ऐसे हैं कि इससे पहले किसी युग में इनका इकट्ठे होना सुना नहीं गया। जो यह दावा करे कि यह चन्द्र-सूर्य ग्रहण इससे पहले किसी और महदी के दावेदार की ज़िन्दगी में लग चुका है तो उस पर अनिवार्य है कि वह सिद्ध करके दिखलावे। हे मुसलमानो! जब यह निशान इसी देश और इसी जगह में प्रकट हुआ और अरब और शाम★ में इसका कुछ नामोनिशान न पाया गया तो यह हमारे दावे की सच्चाई पर ख़ुदा तआला की ओर से एक गवाही है। अत: चाहिए कि तुम एक-एक करके इसके सत्यापन के लिए खड़े हो जाओ और जो व्यक्ति तंगनज़र (ईर्ष्यालु) और दुश्मन हो उसको छोड़ दो, मैं फिर कहता हूँ कि पुन: चिन्तन-मनन करो और दुश्मनी को छोड़ दो और अपने आपको हलाकत (तबाही) की राहों में मत डालो और फ़साद मत फैलाओ और जल्दबाज़ों की तरह विमुख मत हो। हे अल्लाह के बन्दो! अल्लाह तुम पर रहम करे, अल्लाह से डरो, अहंकार मत करो, सोचो और ग़ौर करो। क्या तुम्हारे निकट यह उचित है कि महदी तो अरब और शाम (सीरिया) में पैदा हो और उसका निशान हमारे देश में प्रकट हो? तुम जानते हो कि ख़ुदा की हिकमत (युक्ति) निशान को उसके पात्र से दूर नहीं करती। फिर कैसे सम्भव

★यह शाम का इलाक़ा आजकल सीरिया के नाम से जाना जाता है- अनुवादक

है कि महदी तो पश्चिम में पैदा हो और उसका निशान पूरब में प्रकट हो? यदि तुम सत्य के अभिलाषी हो तो तुम्हारे लिए इतना काफ़ी है।

फिर यह भी तुमसे छिपा नहीं कि अरब और शाम (सीरिया) ऐसे मुद्दई से ख़ाली हैं और वहाँ ऐसे मुद्दई का कोई नामोनिशान नहीं पाया जाता, लेकिन तुम जानते हो कि मैं कई वर्षों से ख़ुदा के आदेश से यह घोषणा कर रहा हूँ कि मैं मसीह मौऊद और महदी मस्ऊद हूँ और तुम मुझे काफ़िर (अधर्मी) ठहराते हो और मुझ पर लानत डालते हो और मुझे झुठलाते हो। जबकि तुम्हारे पास खुली-खुली निशानियाँ आ चुकीं और तुम्हारे संदेह दूर किए गए, फिर भी तुम काफ़िर-काफ़िर कहने पर अड़े रहे। क्या तुम इस बात से आश्चर्य में पड़ गए कि तुम में से एक सचेत करने वाला सदी (शताब्दी) के प्रारम्भ में उस समय आया जब दीन-ए-इस्लाम पर मुसीबतों की बौछार हो रही थी और घोर अंधकार छा गया था और इससे पहले तुम (ईद के) चाँद की तरह उसकी प्रतीक्षा करते थे और वह उस समय तुम्हारे पास आया जब घोर अन्धकार छा चुका था। लोगों ने सच्चाई को छोड़ दिया था और धर्म की जगह अधर्म ने ले ली थी, लोग सन्मार्ग (आध्यात्मिकता) से दूर जा पड़े थे। क्या तुम देखते नहीं या अन्धों की तरह हो गए? क्या तुम उन बातों को याद नहीं करते जो ख़ुदा ने कहीं और उसने क़ुरआन मजीद में एक इमाम के आने की तुम्हें शुभसूचना दी और कहा-

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ (वाक़िया आयत नं. 40-41)

(अर्थात- एक गिरोह पहलों में से और एक बाद वालों में से होगा।) और हर एक गिरोह के लिए एक इमाम (मार्गदर्शक) होता है। अब सोचो कि क्या इसमें कोई शक है अब तुम आख़रीन के इमाम (अर्थात् बाद में आने वालों के इमाम) से कहाँ भाग रहे हो?

क़सीदः

بُشرىٰ لكم يا معشرَ الإخوانِ طُوبىٰ لكم يا مَجمَعَ الخُلّانِ

1-हे भ्राताओ! तुम्हें बधाई हो, हे मित्रो! तुम्हें मुबारक हो।

ظهرت بُروقُ عناية الحنّانِ وبدا الصراط لمن له العينانِ

2-ख़ुदा तआला की कृपा की चमकारें ज़ाहिर हो गईं और जिसके पास आँखें हैं उसके लिए सिरात-ए-मुस्तक़ीम (सन्मार्ग) की राहें खुल गयीं।

النَّيِّرانِ بهذه البُلدانِ خُسِفَا بإذن الله فى رمضانِ

3-ख़ुदा के आदेश से रमज़ान के महीने में यहाँ चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लग चुका।

و بشارةٌ مِن سيّدٍ خيرِ الورىٰ ظهرتْ مُطهّرةً من الاِدرانِ

4-और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी इस तरह प्रकट हो गई कि उसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह शेष न रह गया।

ولها كصاعقة السّماء مَهابةٌ وتشذُّرٌ كتشذُّر الفرسانِ

5-इन निशानों में आकाशीय बिजली की तरह एक धाक और आक्रामकता है और जंगी घुड़सवारों की तरह एक चेतावनी और डाँट-डपट भी।

اليومَ يومٌ فيه حصحصَ صدقُنا قد مات كلُّ مكذِّبٍ فتّانِ

6-आज वह दिन है जिसमें हमारी सच्चाई प्रकट हो गई और हर एक झुठलाने और फ़ित्ना फैलाने वाला नाकाम हो गया।

اليومَ يبكى كلُّ أهل بصيرةٍ متذكِّرًا لمراحم الرحمٰنِ

7-आज हर इक विवेकवान् (बुद्धिमान) रो रहा है और उनके रोने का कारण ख़ुदा की रहमतों (उपकारों) को याद करना है।

ومصدِّقًا أنوارَ نبأ نبيّنا ومعظِّمًا لمواهب المنّانِ

8-और रोने का दूसरा कारण यह है कि वे हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी का सत्यापन करते हैं और महान उपकारी ख़ुदा के उपकारों को याद कर रहे हैं।

اليوم كلُّ مبايع ذى فطنة ازداد إيمانا علىٰ إيمانِ

9-आज बैअत करने वाला (अर्थात् मुझे स्वीकार करने वाला) हर एक बुद्धिमान अपने ईमान में ऐसा बढ़ गया है कि मानो उसने नया ईमान पाया।

اليوم من عادى رأى خُسرانَه والتاحَ مقعدُه من النّيرانِ

10-आज हर इक दुश्मन ने अपना नुकसान देख लिया और उसका आग (नर्क) में ठिकाना होना स्पष्ट हो गया।

اليوم كلُّ موافق ذى قربةٍ قد شدَّ رَبْطَ جنانه بجنانى

11-आज हर एक अच्छे और न्यायसंगत मित्र ने अपने दिल का रिश्ता मेरे दिल से मज़बूत जोड़ लिया।

ظهرتْ كمثل الشمس حجّةُ صدقنا أو كالخيول الصافناتِ بشانِ

12-हमारी सच्चाई का प्रमाण अपनी शान् में सूर्य की तरह या हिनहिनाते जंगी घोड़ों की तरह ज़ाहिर हो गया।

مات العِدا بتفكُّنٍ وتندُّمٍ والحق بانَ كصارمٍ عريانِ

13-दुश्मन लज्जा और शर्म से मर गए और सत्य ऐसे प्रकट हो गया जैसे कि म्यान से निकली हुई तलवार।

اللهُ أكبر كيف أبدى آيةً كشَف الغطا بإنارة البرهانِ

14-क्या ही महान ख़ुदा है कि उसने किस तरह निशान प्रकट किया कि प्रमाण को ख़ूब स्पष्ट करके रहस्य को खोल दिया।

هلّ كان هذا فعلَ ربٍّ قادرٍ أم هل تراه مكائدَ الإنسانِ

15-क्या यह ख़ुदा तआला का काम है या तू उसे इन्सान का षड़यन्त्र समझता है?

هذا نجومٌ أو من الجَفْر الذى فكّرتَ فيه كمفترٍ فتّانِ

16-क्या यह नजूम (अर्थात सितारों की सहायता से भविष्यवाणी करना) है या वह जफ़्र (अर्थात परोक्ष की बातों को जानने का ज्ञान) जिसके बारे में तूने झूठ गढ़ने और फ़ित्ना फ़ैलाने वालों की तरह सोच से काम लिया है।

فارجِعْ إلى الحق الذى أخزى العدا وأهانَ كلَّ مكفِّرٍ لعَّانِ

17-तू उस ख़ुदा की ओर झुक जिसने दुश्मनों को शर्मिन्दा किया और हर इक काफ़िर

(अधर्मी) ठहराने वाले और लानत डालने वाले को रुसवा कर दिया।

اليوم بعدَ مرور شهر صيامنا عِيدٌ لاقوامٍ لنا عِيدانِ

18-आज रमज़ान के गुज़रने के बाद लोगों के लिए एक ईद है और हमारे लिए दो ईदें।

اليوم يومٌ طيّب ومبارکٌ يُخزى بآيته ذوى الطغيانِ

19-आज का दिन बहुत पवित्र और मुबारक है जो अपने निशानों के साथ उद्दंडता करने वालों को अपमानित कर रहा है।

مَن حارب المقبولَ حاربَ ربَّهُ فهوى شَقًا فى هُوّة الخسرانِ

20-जिसने ख़ुदा के चुने हुए भक्त से जंग की उसने अपने रब्ब से जंग की, फिर क्या था वह अपनी दुष्टता के कारण नुकसान के गढ़े में ख़ुद जा गिरा।

مَن كان فى حفظ الإلٰه وعَوْنِهِ مَن يُهلكَنّه وإنْ سعى الثَّقَلانِ

21-जो व्यक्ति ख़ुदा तआला की सुरक्षा और सहायता में हो उसको कौन मार सकता है चाहे दुनिया वाले मिलकर कितनी ही कोशिश कर लें।

كِيدُوا جميعًا كلُّكم لإهانتى ثم انظُروا إكرامَ من صافانى

22-तुम सब मिलकर मेरी तौहीन (तिरस्कार) के लिए षड़यन्त्र रचो, फिर देखो कि वह किस तरह मुझे प्रतिष्ठा प्रदान करता है जिसने मुझे अपने प्यार के लिए विशिष्ट किया है।

قُوموا لتحقيرى بعزمٍ واحدٍ ثم انظُروا إعظامَ من والانى

23-तुम मेरे अपमान के लिए एक उत्साह से उठ खड़े हुए हो, अब देखो कि वह किस तरह मुझे प्रतिष्ठा प्रदान करता है जिसने मुझे अपना मित्र बनाया।

كونوا كذئبٍ ثم صُولوا بالمُدىٰ ثم انظُروا إقدام مَن ناجانى

24-तुम भेड़िए बन जाओ और छूरियों से हमला करो, फिर देखो कि वह तुम्हारे विरुद्ध कैसे मैदान में आता है जो मेरा हमराज़ (मित्र) है।

هل يستوى أهل السعادة والشقا أفأنت أعمى أو أخُ الشيطانِ

25-क्या शिष्ट और दुष्ट बराबर हो सकते हैं? क्या तू अन्धा है या शैतान का भाई?

الوقت يدعو مصلحًا ومجدّدًا فارُنوا بنظرٍ طاهرٍ وجنانِ

26-तुम एक सच्चे दिल और दृष्टि से सोचो कि ज़माना एक सुधारक और अवतार को बुला रहा है।

أتظنّ أنّ اللّٰه يخلف وعده أفأنت تُنكر موعدَ الفرقانِ

27-क्या तू सोचता है कि ख़ुदा तआला अपने वादा को पूरा नहीं करेगा? और क्या तू क़ुरआन के वादा से इन्कार करता है?

يا أيها الناس اترُكوا طرق الإبا كُونوا لوجه اللّٰه من أعوانى

28-हे लोगो! उद्दंडता और दुष्टता की राहों को छोड़ दो और सच्चे दिल से ख़ुदा के लिए मेरे मददगारों में से बन जाओ।

يا أيها العادون فى جهلا تهم توبوا من الإفساد والطغيانِ

29-हे दुश्मनों! जो अपनी झूठी बातों में हद से आगे बढ़ गए हो फ़साद और उद्दंडता से तौबा करो।

لا تُغْضبوا المولىٰ وتُوبوا واتّقوا و كخائف خِرّوا على الاذقانِ

30-तुम अपने मौला (ख़ुदा) को क्रोधित मत करो, तौबा करो और उससे डरो और डरने वालों की तरह उसके सामने सिज्दों में गिर जाओ।

القمر يهديكم إلى نور الهدىٰ والشمس تدعوكم إلى الإيمانِ

31-चंद्रमा तुम्हें हिदायत (सन्मार्ग) की ओर मार्गदर्शन करता है और सूर्य तुम्हें ईमान की ओर बुला रहा है।

ظهرتْ لكم آياتُ خلّاق الورى فى مُلْكِكم لمؤيَّدٍ سُبْحانِيْ

32-तुम्हारी भलाई के लिए ख़ुदा तआला की ओर से निशान प्रकट हो गए, जो तुम्हारे ही देश में ख़ुदा तआला से सहायता प्राप्त के समर्थन में प्रकट हुए।

هل هذه مِن قسمِ عملِ مُنجِّمٍ أو آيةٌ عُظمٰى عظيم الشّانِ

33-क्या यह किसी ज्योतिषी का काम है या ख़ुदा तआला का एक बहुत बड़ा अद्भुत निशान है?

هٰذا حديثٌ مِن نبيٍّ مصطفٰى كهفِ الانام وسيّد الشجعانِ

34-यह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस है, जो लोगों की शरण और शूरवीरों का शूरवीर है।

جلتِ الفتوحُ وبان صدق كلامنا وتبيّنتْ طرق الهدى ومكانى

35-सफलताएँ ज़ाहिर हो गईं और हमारी बातों की सच्चाई खुल गई और हिदायत (सन्मार्ग) के रास्ते और मेरा स्थान स्पष्ट हो गया।

أفبعدَ ما كُشِف الغطا بقِى الإبا ويلٌ لمجترىءٍ مُصِرٍّ جانِ

36-क्या रहस्य खुलने के बाद भी कोई इन्कार शेष है? उस धृष्ट के लिए घोर कष्ट है जो (सच्चाई प्रकट होने के बावजूद भी) हठधर्मी और गुनाह पर अड़ा है।

ما كان قطُّ ولا يكون كمثلهِ شهرٌ بهذا الوصف فى الازمانِ

37-इस महीने की तरह न कभी हुआ है और न कभी होगा, इस विशिष्टता का महीना किसी युग में नहीं पाया गया।

شهدتْ يد المولىٰ فهل منكم فتًى يُبْدِى المحبّة بعد ما عادانى

38-ख़ुदा तआला के हाथ ने गवाही दे दी। अब क्या तुम में से कोई दिलेर है जो मुझसे दुश्मनी के बाद मुहब्बत प्रकट करे?

وأراد ربّى أن يُرِى آياتِهِ ويمزّق الدجّال ذا الهذيانِ

39-मेरे रब्ब ने चाहा है कि वह अपने निशानों को प्रकट करे और अनर्गल बकने वाले दज्जाल को टुकड़े-टुकड़े कर दे।

إنى أرى كالميّتِ مَن آذانى لا تسمعَنّ أصواتَه آذانى

40-जिसने मुझे दु:ख दिया मैं उसे मुर्दे के समान देख रहा हूँ, मेरे कान उसकी आवाज़ को नहीं सुनते।

هذا زمان قد سمعتم ذكره مِن خيرِ خلقِ الله والقرآنِ

41-यह वह ज़माना है जिसका वर्णन तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुरआन से सुन चुके हो।

مَن فاته هذا الزمان فقد هوى واختار جهلا وادِىَ الخذلانِ

42-जिसने अपने इस ज़माने को नज़र अंदाज़ किया वह नाकाम हो गया और उसने अपनी मूर्खता से रुसवाइयों के जंगल को पसन्द कर लिया।

كم من عدو يشتُمون تعصّبًا ويرون آياتى ونورَ بيانى

43-बहुत से ऐसे दुश्मन हैं जो केवल पक्षपात से गालियाँ देते हैं, हालाँकि वे मेरे

निशान और बयान का तेज देख रहे हैं।

وخيالهم يطفو كحُوتٍ ميّتٍ لا ينـظرون مواقـعَ الإمعـانِ

44-उनका विचार मुर्दा मछली की तरह ऊपर-ऊपर तैरता है, वे गहराइयों पर सोच-विचार नहीं करते।

شهدتْ لهم شمس السماء ومثلها قمـرٌ فيرتابـون بعد عِيانِ

45-आसमान के सूर्य ने उन्हें गवाही दी और इसी तरह चंद्रमा ने भी। लेकिन वे देखने के बाद भी शक में पड़े हैं।

خرجوا من التقوى وتركوا طرقهُ بوساوسٍ دخلتْ من الشيطانِ

46-वे उन भ्रमों के कारण जो शैतान की ओर से उनके दिलों में जम गए तक़्वा (संयम) से दूर हो गए और उसकी राहें छोड़ दीं।

يا مُكفِرِى أهلِ السعادة والهدىٰ اليـوم أُنزِلتـم بـدارِ هـوانِ

47-हे वे लोगो! जो नेक लोगों (सदाचारियों) को काफ़िर (अधर्मी) ठहराते हो आज तुम अपमान के गढ़े में उतारे गए।

توبوا من الهفوات يغفر ذنبكم واللّٰهُ بَـرٌّ واسعُ الغـفـرانِ

48-तुम अपनी अनर्गल और झूठी बातों से तौबा करो ताकि वह तुम्हारे गुनाह (पाप) क्षमा करे, ख़ुदा नेक वर्ताव करने वाला और बहुत क्षमा करने वाला है।

قد جاء مَهْدِيُكم وظهرتْ آيةٌ فاسعوا بصدق القلب يا فتيانى

49-तुम्हारा महदी आ चुका और निशान ज़ाहिर हो गया, इसलिए हे मेरे जवानो! सच्चे दिल से उसकी ओर दौड़ो।

عندى شهادات فهل من مؤمن نورٌ يرى الدانى فهل من دانى

50-मेरे पास गवाहियाँ हैं, क्या कोई ईमान लाने वाला है? एक नूर (तेज) है, जो मेरे निकट आता है वह उसको देखता है। क्या कोई है जो मेरे पास आए?

ظهرتْ شهادات فبعد ظهورها ما عذركم فى حضرة السلطانِ

51-गवाहियाँ प्रकट हो चुकीं, अब उनके प्रकट होने के बाद अल्लाह तआला के समक्ष क्या बहाना बनाओगे?

هذا أوان النصر من رب السّما ذى مُصْمِـياتٍ مُوبِقِ الفتّانِ

52-यह महान ख़ुदा की ओर से सहायता का समय है। उसके तीर व्यर्थ नहीं जाते, वह दुष्टों और उपद्रवियों का विनाश करता है।

نزلتْ ملائكة السماء لنصرنا رَعَبَ العدا من عسكرٍ روحانى

53-हमारी सहायता के लिए आसमान से फ़रिश्ते उतर आए और रूहानी फ़ौज से दुश्मन डर गए।

دخلتْ بروق الدّين فى أرض العدا وبدا الهُدىٰ كالدّرر فى اللمعانِ

54-धर्म की ज्योति अधर्मियों की धरती में दाख़िल हो गई और सन्मार्ग चमकते हुए मोती के समान स्पष्ट हो गया।

أفترقُبون كظالمين جهالةً رجلا حريصَ السفك والإثخانِ

55-क्या तुम अपनी मूर्खता से अत्याचारियों की तरह ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हो जो रक्तपात का उत्सुक और अत्यन्त ख़ून बहाने वाला हो?

لستم بأهلٍ للمعارف والهدى فتلاعبوا بالدّين كالصّبيانِ

56-तुम इस बात के योग्य नहीं हो कि रहस्य और सन्मार्ग की बातों को ज्ञात कर सको, तुम तो बच्चों की तरह दीन (मज़हब) से खेलते हो।

لا تعرفون نكات صحفِ إلٰهنا تتلون ألفاظًا بغير معانِى

57-तुम हमारे ख़ुदा के सहीफ़ों (धर्मग्रन्थों) के रहस्यों को नहीं पहचानते और शब्दों को बिना अर्थ के पढ़ते हो।

قد جئتكم مثلَ ابن مريم غربةً حقٌّ وربّى يسمعَنْ ويرانى

58-मैं तुम्हारे पास इब्नि मरियम की तरह परदेसी होकर आया हूँ, यह अवश्यमेव सत्य है। मेरा रब्ब यह सब कुछ सुन रहा है और देख रहा है।

السيفُ أنفاسى ورُمحى كلمتى ما جئتكم كمحاربٍ بسِنانِ

59-मेरे दम (श्राप) मेरी तलवार हैं और मेरे शब्द मेरे तीर, मैं लड़ाकुओं की तरह बर्छी और भाले लेकर नहीं आया।

حقٌّ فلا يسع الورىٰ إنكارُهُ فاترُكْ مِرائَ الجهل والكفرانِ

60-यही सत्य है, लोगों को इससे इन्कार की कोई जगह नहीं। इसलिए मूर्खता और स्वार्थपरायणता की लड़ाई को छोड़ दो।

يا طالبَ الرحمٰن ذى الإحسان قُمْ وَالِهًا واطلُبْه كالظمآنِ

61-हे उपकारी और रहमान ख़ुदा को पाने के इच्छुक! व्याकुल की तरह उठ और प्यासे की तरह उसको ढूँढ़।

بادِرْ إلىّ سأُخبرنّك مشفِقًا عن ذٰلك الوجه الذى أصبانى

62-मेरी तरफ़ दौड़ कि मैं तुझे सहानुभूतिपूर्वक उस ख़ुदा की ओर से बताऊँगा जिसने मुझे अपनी ओर खींचा।

أَحرِقْ قراطيس البغاوة والإبا وارْكَنْ إلى الإيقان والإذعانِ

63-बग़ावत और उद्दंडता के काग़जों को जला दे और यक़ीन एवं इक़रार की ओर झुक जा।

أُعطيتُ نورًا مِن ذُكاء مهيمنى لِأُنيرَ وجهَ البرِّ والعمرانِ

64-मुझे अपने ख़ुदा के सूर्य से एक रौशनी मिली है ताकि मैं सारी दुनिया को उससे रौशन करूँ।

بارزتُ لِلّٰهِ المهيمنِ غيرةً أدعو عدوَّ الدّين فى الميدانِ

65-मैं अल्लाह तआला के लिए ग़ैरत से मैदान में निकला हूँ और दीन (धर्म) के दुश्मन को मैदान में बुलाता हूँ।

والله إنّى أوّلُ الشجعانِ وستعرفَنَّ إذا التقَى الجمعانِ

66-ख़ुदा की क़सम! मैं सब शूरवीरों से शूरवीर हूँ और तू शीघ्र ही जान लेगा जब दो लश्कर (दल) आमने-सामने मिलेंगे।

من كان خصمى كانَ ربّى خَصْمَهُ قد بارزَ المولىٰ لمن بارانى

67-जो मेरा दुश्मन है, ख़ुदा तआला उसका दुश्मन है और ख़ुदा उसके मुक़ाबले पर निकल चुका है जिसने मेरा मुक़ाबला किया।

إنّى رأيتُ يد المهيمن حافِظى ومؤيِّدى فى سائر الاحيانِ

68-मैंने अपनी रक्षा में ख़ुदा का हाथ देखा और हर पल अपना सहायक पाया।

مِن فضله إنى كتبتُ معارفا أدخلتُ بحر العلم فى الكيزانِ

69-उसकी कृपा से ही मैंने यह रहस्योद्घाटक बातें लिखीं और गागर में ज्ञान का सागर भर दिया।

يا قوم فی رمضان ظهرتْ آیتی من ربّنا الرّحمٰن والدیّانِ

70-हे मेरी क़ौम! क़ादिर और रहमान ख़ुदा की ओर से मेरे समर्थन का निशान रमज़ान में ज़ाहिर हो गया।

فاقرأْ إذا ما شئتَ آیةَ ربّنا خَسَفَ الْقَمَر وتَجافَ عن عدوانِ

71-यदि तू चाहे तो हमारे रब्ब की आयत......(ख़सफ़ल् क़मर) को पढ़ और ज़ुल्म और ज़्यादती से दूर हो जा।

ثم الحدیث حدیث آل محمدٍ شرح لما یتلی مِنَ الفُرقانِ

72-फिर क़ुरआन शरीफ़ की आयतों की व्याख्या में हदीस को देख जो आले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वर्णित है।

هذا کلامُ نبیّنا وحبیبنا فافرَغْ إلیه وخَلِّ ذِکْرَ أدانی

73-यह हमारे नबी और हबीब (प्रेमपात्र) की कही हुई बात है इसलिए तू उसकी ओर ध्यान दे और नीच लोगों की बात को छोड़ दे।

هذا أشدُّ علی العدا وجموعهم مِن وقعِ سیفٍ قاطعٍ وسنانِ

74-यह भविष्यवाणी दुश्मनों और उनके गिरोहों पर तलवार और बर्छी के वार से भी भारी है।

والحُرُّ بعد ثبوت أمرٍ قاطعٍ یُهْدیٰ ولا یصغٰی إلی بهتانِ

75-एक आज़ाद सोच का व्यक्ति विश्वसनीय सबूत के बाद हिदायत पा जाता है और तोहमत की ओर नहीं झुकता।

لا تُعرِضوا عنّی وکیف صدودکم عن مُرسَلٍ یهدی إلی الفرقانِ

76-तुम मुझसे विमुख मत हो, तुम ख़ुदा के भेजे हुए से क्यों मुँह फेरते हो जो क़ुरआन की ओर हिदायत देता है?

ما جاء نی قومی شقًا وتَباعدوا فترکتُهم مع لوعة الهجرانِ

77-मेरी क़ौम (अपनी) दुष्टता और उदंद्डता के कारण मेरे पास नहीं आई और दूर हो गई। इसलिए मैंने जुदाई के ग़म में रोते हुए उन्हें छोड़ दिया।

إنی رأیت بهجرِ قوم فارقوا حالًا کحالةِ مُرسَلٍ کَنْعانی

78-इस क़ौम की जुदाई में मेरी हालत याक़ूब (अलैहिस्सलाम) की तरह हो गई है।

وسألتُ ربّی فاستجاب لِیَ الدُّعا فرجعتُ مَجْلُوًّا من الاحزانِ

79-फिर मैंने अपने रब्ब से दुआ की और उसने मेरी दुआ क़बूल कर ली। फिर मैं ग़मों से मुक्ति पा गया।

إنّ العدا لا یفهمون معارفی ویکذّبون الحق کالنّشوانِ

80-दुश्मन मेरे मर्मों को नहीं समझते और मदहोशों की तरह सच को झुठला रहे हैं।

لا ینظرون تدبّرًا وتفکّرًا وتأبّطوا الاَوْهَامَ کَالْاَوْثَانِ

81-वे बुद्धि और विवेक से नहीं सोचते और वहमों (भ्रमों) को बुतों (मूर्तियों)की तरह अपने बग़ल में छुपाए रखते हैं।

إنّ العقول علی النقول شواهدٌ تحتاج أثقالٌ إلٰی میزانِ

82-अक्लें उदाहृत प्रमाणों पर गवाह हैं कि (उदाहृत प्रमाणों के) ये बोझ कसौटी के मोहताज हैं।

إن النُّهی مَلَکَتْ یَدَاهُ قُلُوْبَنَا ونریٰ بَریقَ الحق بالبرهانِ

83-अक़्ल के दोनों हाथ हमारे दिलों के मालिक हैं और सच की रौशनी हम तर्क से ही पाते हैं।

إن العدا یئسوا إذا کُشِفَ الهدیٰ فالیوم لیس لهم بذاك یَدانِ

84-जब सच्चाई खुलकर स्पष्ट हो गई तो दुश्मन निराश हो गए। अत: आज उनके पास इसके साथ मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं।

یا لاعِنی خَفْ قَهْرَ ربٍّ قادرٍ واللّٰهِ إنّی مسلم ذو شانِ

85-हे मुझ पर लानत डालने वाले! ख़ुदा तआला के क़हर (प्रकोप) से डर, ख़ुदा की क़सम! मैं एक गौरवशाली मुसलमान हूँ।

واللّٰهِ إنّی صادق لا کاذبٌ شهدتْ سماء اللّٰه والمَلَوانِ

86-ख़ुदा की क़सम! मैं सच्चा हूँ न कि झूठा। आसमान ने गवाही दी और रात और दिन ने भी।

وَدَّعْتُ أهوائی لحُبِّ مهیمنی وترکتُ دنیاکم بعطفِ عِنانی

87-अपने मोहसिन (उपकारी) ख़ुदा की मुहब्बत पाने के लिए मैंने अपनी इच्छाओं को त्याग दिया और तुम्हारी मोह-माया को छोड़ा और उससे मुँह फेर लिया।

وتعلّقَتْ نفسی بحضرةِ ملجأی وتبرّأتُ مِن کل نَشْبٍ فانی

88-मेरा दिल ख़ुदा तआला से जा लगा और हर इक नश्वर धन-दौलत से विमुख हो गया।

لا تعجَلوا وتَفکَّروا وتَدبَّروا والعقل کل العقل فی الإمعانِ

89-जल्दी मत करो, सोचो और चिन्तन-मनन करो कि सारी अक़्ल रहस्यों पर चिन्तन-मनन करने में है।

إن کنتَ لا تبغی الهدی وتُکذّبُ فأَضِرَّنی بجوارحٍ ولسانِ

90-यदि तू सत्य को क़बूल नहीं करता और झुठलाता है तो मुझे अपने हाथ, पैर और ज़बान से दु:ख पहुँचाता रह।

والْعَنْ ولعنُ الصادقین وسبُّهم متوارثٌ مِن قادِمِ الازمانِ

91-और लानत डालता रह और सच्चों पर लानत डालना और उनको गालियाँ देना पुरातन से लोगों की विरासत चली आई है।

لن تُعجِزوا بمکائد ربَّ السما لِلّٰهِ سُلطانٌ علی السلطانِ

92-तुम अपने छलों से ख़ुदा तआला को कदापि विवश नहीं कर सकते, हर सत्ता से ऊपर ख़ुदा तआला की सत्ता है।

أُنظُرْ ذُکائً ثم قمرًا مُنصِفًا هذانِ للکذّاب ینخسفانِ؟

93-न्याय की दृष्टि से सूर्य और चंद्रमा को देख, क्या इन दोनों को किसी झूठे के लिए ग्रहण लगा?

یا لاعنی خَفْ قَهْرَ ربٍّ شاهدٍ ویُریك آیاتٍ من الإحسانِ

94-हे मुझ पर लानत डालने वाले! ख़ुदा तआला के क़हर (प्रकोप) से डर, जो मेरा साक्षी है और उपकारस्वरूप तुझे अपने निशान दिखाता है।

قمر القدیر وشمسه بقضائه خُسِفَا وأنت تصول کالسِّرحانِ

95-ख़ुदा के चंद्रमा और सूर्य को उसके निर्णय के अनुसार ग्रहण लग चुका और तू अभी भी भेड़िए की तरह हमला कर रहा है।

لِلّٰهِ آیات یُریها بعدها هذانِ قد جاءاك کالعنوانِ

96-इन दोनों ग्रहणों के बाद और भी ख़ुदा तआला के निशान हैं। यह तो दोनों तेरे

सामने प्रस्तावना (भूमिका) की तरह प्रकट हुए हैं।

هذا من الله الكريم المحسنِ فاستيقِظوا مِن رقدة العصيانِ

97-यह महान उपकारी ख़ुदा की ओर से है। अत: चाहिए कि अब तुम नाफ़र्मानी की नींद से जाग जाओ।

من كان فى بئر الشقا متهافتًا لا يُنصَرَنْ بل يُهلَكَنْ كالعانى

98-जो जानबूझकर बदबख़्ती (धृष्टता) के कुएँ में गिरता है उसको मदद नहीं दी जाएगी, बल्कि वह क़ैदी की तरह मरेगा।

لا تحسبوا بَرَّ الفساد حديقةً عَذْبَ الموارد مثمِرَ الاغصانِ

99-तुम ऐसे बाग़ को फ़साद का जंगल मत समझो, जिसकी (नहरों का) पानी अत्यन्त मीठा और डालें फलों से लदी हुई हैं।

لا تظلموا لا تعتدوا لا تجرُؤوا وتَباعدوا عن ذلك اللَّهبانِ

100-अन्याय (अर्थात् हेरफेर) मत करो, हद से मत बढ़ो, दुस्साहस मत करो और उद्दंडता की इस प्यास से दूर रहो।

لا تُكفِروا يا قومِ ناصِرَ دينكم واخشَوا المليكَ وساعةَ اللقيانِ

101-हे मेरी क़ौम! अपने दीन (धर्म) के मददगार को काफ़िर (अधर्मी) मत ठहराओ, ख़ुदा से डरो और आख़िरी हिसाब-किताब के दिन से भी।

قد جئتكم يا قومِ من ربّ الورىٰ بُشرىٰ لتوّابٍ إذا لاقانى

102-हे मेरी क़ौम! मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा तआला की ओर से आया हूँ। उस तौबा करने वाले के लिए ख़ुशख़बरी है जब वह मुझसे मिलता है।

أُرسلتُ من ربّ الانام فجئتُكم فاسعوا إلىٰ بُستانه الرّيّانِ

103-मैं ख़ुदा तआला की ओर से इसलिए भेजा गया हूँ और तुम्हारे पास आया हूँ ताकि तुम उसके हरे-भरे बाग़ की ओर दौड़ो।

هذا مقام الشكر إنّ مُغيثكم قد خصَّكم بعنايةٍ وحنانِ

104-यह शुक्र (धन्यवाद) का मुक़ाम है कि तुम्हारी फ़रियाद सुनने वाले ने तुमको अपने उपकार और बख़्शिश के लिए विशिष्ट किया।

يا قوم قُوموا طاعةً لإمامكم وتَباعدوا مِن معتدٍ لَعّانِ

105-हे लोगो! अपने इमाम के लिए फ़रमाँबर्दार बनकर खड़े हो जाओ और उस व्यक्ति से दूर रहो जो हद से बढ़ने वाला और लानत डालने वाला है।

قد جاء یومُ اللّٰہ فارْنُوا واتقوا وتَسـتَّروا بملاحف الإیمانِ

106-ख़ुदा (के वादा) का दिन आया है, अत: सोचो और डरो और ईमान की चादरों से अपने आपको ढाँप लो।

لا یُلْھِکم غولٌ دنئٌ مفسدٌ عن ربّکم یا معشرَ الحَدَثانِ

107-हे नवजवानों! कोई छलिया और उपद्रवी (फ़सादी) तुम्हें तुम्हारे रब्ब के रास्ते से भटकाकर तबाह और बर्बाद न करे।

قد قلتُ مرتَجِلًا فجاءت ھٰذہ کالدّرر أو کسبیکۃ العقیانِ

108-मैंने यह क़सीद: जल्दी में कहा है और यह मोती की भाँति है या उस शुद्ध सोने की तरह जो आग में जलकर निकलता है।

ما قلتُھا من قوتی لٰکنّھا دُرَرٌ من المولٰی ونظمُ بنانی

109-मैंने इस (क़सीद:) को अपनी शक्ति और सामर्थ्य से नहीं कहा, बल्कि ये ख़ुदा तआला की ओर से दिए गए मोती हैं और मेरे हाथों ने इन्हें पिरोए हैं।

یا ربّ بارکھا بوجہ محمّدٍ ریق الکرام ونخبۃ الاعیانِ

110-हे ख़ुदा! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा के लिए इसमें बरकत डाल दे, जो सब प्रतिष्ठितों के प्रतिष्ठित और सब पुण्यात्माओं (मुक़द्दसों) के पुण्यात्मा हैं।

फिर जान लो कि ख़ुदा तआला ने मेरे दिल में डाला कि यह चन्द्र-सूर्य ग्रहण जो रमज़ान में हुआ है यह दो सचेतक निशान हैं जो उन लोगों को सचेत करने के लिए प्रकट हुए हैं जो शैतान की पैरवी करते हैं और अन्याय (हेरफेर) और उद्दंडता को अपना लिया और फ़ित्न: भड़काया और उसे भड़काना पसन्द किया और उससे रुके नहीं। ख़ुदा तआला इन दोनों निशानों के द्वारा उनको डराता है और इसके अतिरिक्त हर एक ऐसे व्यक्ति को भी सचेत करता है जो लोभ-लालसा के पीछे चल पड़ा और सच को छोड़ दिया और झूठ बोला और ख़ुदा

की नाफ़र्मानी की। ख़ुदा तआला ऐलान करता है कि अगर वे गुनाह की क्षमा चाहें तो उनके गुनाह क्षमा किए जाएँगे और उन पर रहम (दया) और उपकार किया जाएगा और यदि नाफ़र्मानी की तो अज़ाब (सज़ा) का समय आ गया है। इसके अतिरिक्त इन दोनों निशानों के द्वारा उन लोगों को सचेत करना भी उद्देश्य है जो सच्चाई को समझे बिना झगड़ते हैं और प्रभुत्ववान् ख़ुदा से नहीं डरते और ऐसे व्यक्ति के लिए डाँट-डपट और होशियार करना भी उद्देश्य है जो इन्कार करता है और घमण्ड करता है और अड़ियल रवैये को नहीं छोड़ता। इसलिए ख़ुदा से डरो और ज़मीन पर फ़साद मत करते फिरो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उससे डरते नहीं, हालाँकि डराने के निशान प्रकट हो चुके और हदीस की किताब सहीह मुस्लिम और बुख़ारी से साबित है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मोमिनों को समझाने के लिए फ़रमाया था कि अल्लाह के निशानों में से सूर्य और चंद्रमा दो ऐसे निशान हैं जिनको किसी के मरने या जीने के लिए ग्रहण नहीं लगता। बल्कि वे ख़ुदा तआला के निशानों में से दो निशान हैं और वह उनके द्वारा अपने बन्दों को डराता है। अत: जब तुम उनको देखो तो तुरन्त नमाज़ में गिड़गिड़ाकर दुआओं में लग जाओ। देख कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किस तरह चन्द्र-सूर्य ग्रहण से डराया है और हदीस में इस बात की ओर संकेत है कि ये दोनों निशान ख़ुदा तआला की ओर से गुनहगारों को डराने के लिए विशिष्ट हैं और उस समय लगते हैं जब संसार पाप से भर जाए और लोगों में दुष्कर्म फैल जाएँ और दुराचारी स्त्रियों और पुरुषों की अधिकता हो जाए। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनके ग्रहण के समय बहुत दान पुण्य करें और नेक कामों की ओर दौड़ें, जैसे कि सच्ची नीयत से नमाज़, रोज़ा, सदक़: के साथ-साथ ख़ुदा के समक्ष रोना और गिड़गिड़ाना और ख़ुदा तआला की महानता बयान करना और उसकी ओर झुकना और अपने गुनाहों से तौबा करना और पूरी तरह गिड़गिड़ाकर और रो-धोकर उससे अपने गुनाहों की माफ़ी माँगना और इसी तरह सामर्थ्यानुसार उपकार और ग़ुलाम आज़ाद करना, किसी को क्षमा करना और अनाथों और ग़रीबों के साथ हमदर्दी

करना और ख़ुदा जो धरती और आसमान का रब्ब है उसके समक्ष गिड़गिड़ाना इत्यादि। गिड़गिड़ाकर नमाज़ पढ़ने और उपरोक्त कर्मों के करने में यही रहस्य है कि चन्द्र और सूर्य को उसी समय ग्रहण लगता है जब ख़ुदा की ओर से कोई मुसीबत आने वाली हो, किसी मुसीबत का समय निकट हो, और आसमान पर दुष्टता के ऐसे साधन पैदा हो गए हों जो लोगों की नज़रों से ओझल हों, उनको केवल ख़ुदा ही जानता है। इसलिए उसकी दया और रहस्यमय युक्ति तक़ाज़ा करती है कि किसी ग्रहण के समय लोगों को वे राहें सिखलावे जो ग्रहण के कारणों को दूर कर दें और उसकी बुराइयों को मिटा दें। अत: उसने अपने नबी की ज़बान से यह सारे ढंग बतला और सिखला दिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नेकियाँ बुराइयों को दूर कर देती हैं और गुनाह की माफ़ी माँगने वालों के आँसू प्रकोप की आग को बुझा देते हैं। जिस समय कोई बन्दा सच्ची नीयत और फ़रमाँबर्दारी से कोई नेक काम करता है और वह उसके द्वारा ख़ुदा तआला को ख़ुश कर लेता है तो वह नेक कार्य उसके दुराचार का सामना करता है जिसके साधन पैदा हो गए थे। फिर ख़ुदा तआला उस सदाचारी को दुराचार से बचा लेता है और यह ख़ुदा तआला की प्रकृति है कि दुआ करने से वह मुसीबतों को दूर कर देता है। दुआ और विपदा कभी दोनों एकत्र नहीं हो सकतीं। जब दुआ ऐसे होंठों से निकलती है जो ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले हों तो वह ख़ुदा के आदेश से विपदा पर ग़ालिब आ जाती है। इसलिए दुआ करने वालों के लिए ख़ुशख़बरी हो।

जब एक ग्रहण इतनी विपदाओं पर संकेत करता तो उस ज़माने का क्या हाल होगा जिसमें दो ग्रहण एकत्र हो गए हों। इसलिए हे मेरे भाइयो! ख़ुदा तआला से डरो और ग़ाफ़िल मत बनो। यह कहना व्यर्थ है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण उन कारणों से होता है जो किताबों में दर्ज हैं। उनका उन विपदाओं से क्या सम्बन्ध, जो लोगों पर गुनाहों के बदले आती हैं। नबियों और अवतारों के निकट यह बात मान्य है कि ख़ुदा तआला ने मनुष्य को इसलिए पैदा किया है कि उसको अपने प्यारों में या धिक्कृतों (शैतानों) में दाख़िल करे। ख़ुदा ने संसार

के समस्त परिवर्तनों को मनुष्य की अच्छाई-बुराई और लाभ-हानि पर संकेत करने के लिए पैदा किए हैं और उसके लिए समस्त संसार को शुभसूचक और सचेतक की भाँति बना दिया है। हर एक दण्ड जो ख़ुदा ने लोगों को सज़ा देने के लिए निर्धारित कर रखा है उसे वह मनुष्य के गुनाह करने, दुष्टों की भाँति उस पर अड़े रहने, दुस्साहसों की तरह आगे बढ़ने इत्यादि से पहले नहीं देता। ख़ुदा ने संसार में हर चीज़ के लिए एक उद्देश्य बनाया है और हर एक सचेत करने वाला निशान दुष्टों, नुकसान उठाने वालों, अन्यायियों और अत्याचारियों इत्यादि को चेतावनी देने के लिए बनाया है और वह उन लोगों के लिए सुखद (सौभाग्यप्रद) है जो ख़ुदा की ओर झुक गए और उनसे अलग होकर निश्छल और सद्भावक लोगों में शामिल हो गए। यह प्रकृति का एक नियम है जिसके चिन्ह ख़ुदा की ओर से तू पहले युगों में भी पाएगा, जिसका वर्णन पहली किताबों में भी आया है। यदि तुझे शक है तो यूएल (Joel) नबी की किताब का दूसरा बाब और हिज़क़ील (Ezekiel) नबी की किताब का बत्तीसवाँ बाब देख और ख़ुदा से डर और मुजरिमों की राह की पैरवी मत कर।

सारांशत: यह कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण दो सचेत करने वाले निशान हैं और जब ये दोनों जमा हो जाएँ तो वह समय ख़ुदा तआला की ओर से एक भयानक चेतावनी है और इस बात की ओर संकेत है कि दुष्टों के लिए ख़ुदा तआला की ओर से निकट ही दण्ड का आना निर्धारित हो चुका है। इसके अतिरिक्त उनकी विशेषताओं में से एक यह भी है कि जब वे दोनों मिलकर किसी युग में प्रकट हों और जिस देश में उनका प्रकटन हो तो उस देश में जो पीड़ित हैं ख़ुदा तआला उनकी सहायता करता है और कमज़ोरों एवं दबे-कुचलों को शक्ति प्रदान करता है और उन लोगों पर रहम करता है जिनको दु:ख दिया गया और काफ़िर (अधर्मी) ठहराया गया और उन पर अकारण लानत डाली गई। उनके समर्थन के लिए आसमान से निशान उतरते हैं और ख़ुदा की सहायता प्राप्त होती है और ख़ुदा तआला इन्कार करने वालों और दुश्मनों को अपमानित करके सच्चा फ़ैसला कर देता है और वह सब फ़ैसला करने वालों से बढ़कर फ़ैसला करने

वाला है। वह झगड़ों का फ़ैसला करके दुश्मनों की जड़ काट देता है। फिर उनको एक शर्मिन्दगी, शिकस्त और चोट पहुँचती है और ख़ुदा तआला इसी तरह झूठों को सज़ा देता है। वह कमज़ोरों और संयमियों (मुत्तक़ियों) से प्रेम करता है और उन दुष्टों की जड़ काट देता है जो ख़ुदा की नसीहतों और उनके अवसरों को छोड़ देते हैं और उन बातों की पैरवी करते हैं जिनका उन्हें ज्ञान नहीं। वे कहते हैं कि हमारा क़ुरआन पर ईमान है, हालाँकि वे क़ुरआन पर ईमान नहीं रखते और उन बातों पर हठ करते हैं जिनकी वास्तविकता के बारे में वे कुछ भी नहीं जानते, जबकि उन्हें यह आदेश था कि तक़्वा (संयम) की राहों को अनिवार्य पकड़ो। लेकिन उन्होंने उनको छोड़ दिया और अपने मोमिन भाइयों को काफ़िर (अधर्मी) ठहराया। यह लोग ख़ुदा तआला की दया और दण्ड के दिनों और उनकी ख़ुशख़बरियों की आशा छोड़ दी और उनको बहुत दूर समझ लिया। लेकिन वे शीघ्र ही जान लेंगे कि फ़ित्न: फैलाने वालों और ख़ियानत करने वालों (बेईमानों) का क्या अंजाम होता है।

इस चन्द्र-सूर्य ग्रहण की विशेषताओं में से एक यह भी है कि जब वे रमज़ान में जमा हों जिसमें क़ुरआन नाज़िल हुआ तो उनके घटित होने के बाद ख़ुदा तआला सच्चे और निष्कलंक ज्ञानों को फैलाएगा और झूठे एवं नए-नए पैदा हो जाने वाले निकृष्ट आडम्बरों को दूर करेगा और ख़ुदा तआला इमामुज़्ज़मान के लिए एक महान चमक दिखलाएगा जो सहायता और समर्थन की बहुत बड़ी चमक होगी और संसार में उसका उदाहरण कभी न मिलेगा। वे लोग अपने इमाम की ओर विभिन्न योग्यताओं के साथ आएँगे और सच्चे ज्ञान की नहरें जारी होंगी और लोग छिलके से गूदे (अर्थात् बात का सार) की ओर ध्यान देंगे और ईर्ष्या से प्रेम की ओर लौटेंगे और पाखंड (दिखावा) से यथार्थ की ओर आएँगे और आवारागर्दी से सन्मार्ग की ओर रुख करेंगे और जिन्होंने अपने सच्चे मज़हब (की विचारधारा) में ग़लती की वे सचेत किए जाएँगे और जो अपनी ग़लत विचारधारा के कारण तबाही की ओर चले गए थे वे पुन: लौटेंगे और जिन्होंने अपने हाथों से इमाम का महत्त्व और सम्मान नष्ट कर दिया वे पछताएँगे और शर्मिन्दा होंगे

(अर्थात् जिन्होंने इन दिनों की क़द्र न की और इमामुज़्ज़मान को नहीं पहचाना वे हर तरफ़ से अपमानित होंगे) और वे नेक और सदाचारी बनाए जाएँगे जो भाँति-भाँति के पापों में ग्रस्त थे और ये प्रभाव ख़ुदा के आदेश से दिलों में जोश मारेंगे। फिर यह दुनिया ख़ुदा की तौहीद और अध्यात्मज्ञान से भर जाएगी और ख़ुदा तआला शिर्क (अनेकेश्वरवाद), झूठ और अन्याय के समर्थकों को अपमानित करेगा और गुमराही (पथभ्रष्टता) के बाद ख़ुदा की ओर झुकाव के दिन आएँगे और हर इक व्यक्ति अपनी पात्रता (योग्यता) के अनुसार उस विशेषता को पा लेगा। जो व्यक्ति ख़ुदाई बातों के रहस्यज्ञान को समझने के योग्य होगा उसको क़ुरआन शरीफ़ के ताज़ा ब ताज़ा (अर्थात् नए-नए) गूढ़ ज्ञान प्रदान होंगे। जो व्यक्ति इबादतों के लिए तत्पर होगा उसको नेकियों और इताअत (आज्ञापालन) की तौफ़ीक़ दी जाएगी और ख़ुदा तआला मुजद्दिद के जन्मस्थान को देशों का एक केन्द्र और सदाचारियों की शरणस्थली ठहराएगा और धरती के किनारों तक उसका असर पहुँचा देगा।

सारांश यह कि इस चन्द्र-सूर्य ग्रहण के जमा होने की विशेषताओं में से एक यह विशेषता है कि लोग ख़ुदा तआला की ओर झुकेंगे। दुष्ट दु:ख उठाएँगे और शिष्ट सुख पाएँगे। ख़ुदा तआला के इस चन्द्र-सूर्य ग्रहण में सौम्यता (दया) और रौद्रता (क्रोध) की झलकें हैं। अत: चंद्रमा का सूर्य से पहले ग्रहण लगना सौम्यता की झलक की ओर इशारा है और उसके बाद सूर्य को ग्रहण लगना रौद्रता की झलक की ओर संकेत है। इसलिए यदि तुम मुत्तक़ी (संयमी) हो तो उससे डरो। इस रौद्रता और सौम्यता की झलक में इस बात की ओर संकेत है कि मसीह आख़िरुज़्ज़मान सिद्धि और सम्मान दोनों विशेषताओं में से हिस्सा पाएगा, और ख़ुदा की ओर से उसे हर एक सौभाग्य में से हिस्सा दिया जाएगा और वह चंद्रमाओं तथा सूर्यों और सौम्यताओं तथा रौद्रताओं की प्रकृति से सुशोभित किया जाएगा। इसलिए तुम भ्रमों के जंगलों में व्यर्थ मत घूमो और नि:सन्देह जान लो कि ख़ुदा तआला की मार इन्सानों की मार से बढ़कर है। इसलिए तुम ख़न्नास (शैतान अर्थात् छुप-छुप कर लोगों को धोखा देने वालों) की पैरवी मत करो और मोमिन बनकर मेरे पास आ जाओ। मैं दुआ करता

हूँ कि ख़ुदा तआला तुम्हें सूझबूझ, विवेक, वाणी, दिल, कान और कुशाग्रबुद्धि दे और तुम्हें हिदायत दे और हिदायतयाफ़्तों में से बना दे। हे ग़ाफ़िलों के गिरोहो! तुम्हें ज्ञात हो कि ख़ुदा तआला दीन (अर्थात् इस्लाम) को कभी नष्ट नहीं करता। उसकी प्रकृति और उसका विधान इसी तरह पर जारी है कि जब अन्धकार छा जाता है और दीन-ए-इस्लाम ऐतराज़ों का निशाना बना दिया जाता है और लम्बे समय तक लोग उस पर ऐतराज़ करते हैं और उससे विमुख होने लगते हैं और धरती पर बहुत बड़ा उपद्रव फैल जाता है। तब ख़ुदा अपने धर्म की रक्षा और रखरखाव की ओर आकृष्ट होता है और उसकी सहायता के लिए कोई सुधारक खड़ा कर देता है। फिर वह दीन-ए-इस्लाम को अपने ज्ञान, सच्चाई और ईमानदारी के साथ फिर से ताज़ा कर देता है और ख़ुदा उस खड़े किए हुए व्यक्ति को पवित्र और कल्याणकारी बना देता है और उसकी आँख खोलता है और उसको अभूतपूर्व (नूतन) ज्ञान प्रदान करता है और उसे नबियों (अवतारों) के ज्ञान का उत्तराधिकारी ठहराता है। वह ज़माने के उपद्रव के रंग-ढंग के मुक़ाबले में आता है और वही कहता है जो ख़ुदा ने उसे सिखाया हो। ज़माने के अन्धकार की निस्बत उसे ख़ुदा की ओर से कई प्रकार के ज्ञान दिए जाते हैं। फ़िर तू इस बात से कुछ आश्चर्य मत कर कि चन्द्रग्रहण की हालत में चंद्रमा की रूहानियत ख़ुदा के कुछ नूर अपने अन्दर खींच लेती है इसी तरह सूर्यग्रहण की हालत में सूर्य की रूहानियत भी। क्योंकि यह ख़ुदा तआला के भेदों और रहस्यों में से है। इसलिए तू इसमें सन्देह मत कर।

कभी-कभी तेरे दिल में यह बात गुज़रेगी कि क़ुरआन रमज़ान की ओर संकेत नहीं करता, तो इस सम्बध में तुझे ज्ञात रहे कि क़ुरआन ने साररूप में चन्द्र-सूर्य ग्रहण का वर्णन किया है जो एक सच्चे विवेकवान् के लिए पर्याप्त है और किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं।

लेकिन यदि तू इसकी कुछ व्याख्या चाहे तो मैं कम से कम तुझे यह बतला देता हूँ कि यह जान ले कि ख़ुदा तआला ने दीन (इस्लाम) के निज़ाम की बुनियाद रमज़ान से ही रखी है क्योंकि उसने उसमें ही क़ुरआन नाज़िल किया है। अत: जब इस पवित्र महीने की विशेषता दीन (इस्लाम) के निज़ाम के साथ

सिद्ध हुई और इसी महीने में लैलतुल क़द्र (एक मुबारक रात) है और वह दीन के नूर (ज्ञान) फूटने का महीना है। इससे यह सिद्ध हुआ कि ख़ुदा तआला का रहम व करम रमज़ान में ही निज़ाम-ए-ख़ैर (अर्थात् इस्लाम) की तरफ़ हुआ और बरकतों का प्रारम्भ इसी महीने से हुआ। तो इससे सिद्ध हुआ कि ख़ुदा तआला घोर अन्धकार के समय निज़ाम-ए-ख़ैर (अर्थात् इस्लाम) की मदद के लिए केवल रमज़ान में ही रुख करता है और तू जान चुका है कि चन्द्र-सूर्य ग्रहण सौम्यता और रौद्रता (अर्थात् दया और प्रकोप) की अभिव्यक्ति की एक झलक है और यह झलक (इस्लाम के) जीर्णोद्धार और आध्यात्मिक उन्नति के लिए है और यह प्रबन्ध, भलाई की बुनियाद और इस्लाम के पुनरुत्थान (नव विकास) और दज्जाल के विनाश के लिए पहली ईंट है। इसमें आसमानी शक्तियाँ सांसारिक शक्तियों पर विजय पाएँगी और मसीह मौऊद व महदी मअहूद के नूर दज्जाली षड़यन्त्रों को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और उन पर विजय पा लेंगे। ख़ुदा तआला अपने बन्दों को एक चमकता हुआ तेज दिखाएगा जिससे वे लोग गिरोह दर गिरोह अल्लाह के दीन में दाख़िल होंगे।

क़सीदः

قد جاء يومُ الله يومٌ أطيبُ بُشرىٰ لذى رُشد يقوم و يطلبُ

1-ख़ुदा (के वादे) का दिन आ गया जो अत्यन्त पवित्र है, उस दिलेर को ख़ुशख़बरी हो जो उठता है और उसे ढूँढ़ता है।

سبقتْ يدا جبّارِنا سيفَ العدا فترى العدوَّ النِّكْسَ كيف يُتَرَّبُ

2-हमारे प्रतापी ख़ुदा के हाथ दुश्मनों की तलवार से आगे बढ़ गए, अब तू तुच्छ दुश्मन को देखेगा कि वह कैसे ख़ाक में मिलाया जाता है।

وأنا المسيحُ فلا تظنّنْ غيرَهُ قد جاءك المهدى وأنت تُكذِّبُ

3-मैं ही मसीह मौऊद हूँ दूसरा कोई मत सोच, तेरे पास महदी मौऊद आ चुका और तू झुठलाता है।

هل غادرَ الكفارُ من نوع الاذىٰ أم لا ترى الإسلام كيف يُذوَّبُ

4-क्या काफ़िरों (अधर्मियों) ने किसी प्रकार का दु:ख देने से उठा रखा है या तू इस्लाम को नहीं देखता कि वह कैसे कमज़ोर किया जा रहा है?

حلّتْ بأرض المسلمين جموعهم وخبيثُهم يؤذى النبيَّ ويَأْشِبُ

5-मुसलमानों की ज़मीन में उनके गिरोह आए और उन में से जो बहुत बड़ा धूर्त (दुर्जन) है वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दु:ख देता और दोष लगाता है।

إنّى أرىٰ إيذاء هم وفسادهم ويذُوب روحى والوجودُ يُثقَّبُ

6-मैं उनके सताने और उपद्रव फैलाने को देखता हूँ, जिन्हें देखकर रूह पिघलती है और जिस्म छलनी हो रहा है।

عينٌ جرتْ مِن قطرِ دمعٍ عينُها قلبٌ علىٰ جُمُر الغضا يتقلّبُ

7-आँख से आँसुओं की बारिश हो रही है और दिल भड़कते हुए अंगारों पर करवटें ले रहा है।

مِن كل قُنّاتٍ وجبلٍ شاهقٍ وشوامخٍ نسلوا ووُطئَ المِجْنَبُ

8-दुश्मन समस्त पहाड़ों और उसकी ऊँची-ऊँची चोटियों से दौड़े और अरब की सरहद तक पहुँच गए।

وعلى قِنان الشامخات مصيبةٌ عُظمٰى فأين الوهد منهم تهرُبُ

9- बड़ी मुसीबत ढाने वाले बुलन्द पहाड़ों की चोटियों पर हैं अब गढ़े में पड़े हुए लोग उनके हमलों से कहाँ भागें?

ريح المصائف قد أطالت لهبها مِن سَوْمِها وسهامِها نتعجّبُ

10-गर्मी की हवा ने अपनी लपटें लम्बी कर दीं, जिसके बहाव और जलाव से हम अचम्भित हैं।

ما بقِى مِن سبب ولا من رُمَّةٍ إلّا الّذى هو قادر ومسبِّبُ

11-(उससे बचने का) अब ख़ुदा के सिवा कोई छोटा-बड़ा साधन नहीं बचा।

شبّوا لظَى الطَّغوىٰ فبعد ضرامه هاجَ الدّخان وكلّ طرف يشغبُ

12-उन्होंने हद से बढ़कर आग को भड़काया। जिसके भड़कने के बाद ऐसा धुआँ

उठा, जिसने हर तरफ़ तबाही मचा दी।

حَرَق كجبلٍ ساطعٌ أسنامُه   فِتَنٌ تبيد الكائنات و تنهَبُ

13-यह वह आग है जिसकी ऊँचाई बुलन्द पहाड़ की तरह है और यह वे फ़ित्ने हैं जो लोगों को लूटते और तबाह करते जाते हैं।

إنّى أرىٰ أقوالهم كأسِنّةٍ   تؤذى القلوبَ جروحُها و تعذِّبُ

14-मैं उनके प्रवचनों को बर्छियों के समान देखता हूँ जिनके घाव दिलों को दु:ख और कष्ट पहुँचाते हैं।

أو كابنِ عمِّ المرهَفات كلالةً   أو كالسهام المُصمِيات تُتبِّبُ

15-या वे टुकड़े-टुकड़े कर देने वाली तलवारों के चचेरे भाई की तरह हैं या उन तीरों के समान हैं जो चूकते नहीं और काम तमाम् कर देते हैं।

ظَلَعوا إلى ظلمٍ و زيغٍ حِشْنَةً   و إلى كلامٍ يُؤذِيَنْ و يحرِّبُ

16-ईर्ष्या-द्वेष के कारण उन्होंने अन्याय और छल की ओर झुकाव किया और उस बात की ओर झुक गए जो दु:ख देती है और ग़ुस्सा दिलाती है।

و أرى الدنئَ الغُولَ يهوى نحوهم   و إلى أشائبِ قومهم يتأشّبُ

17-और मैं नीच शैतान (अर्थात् दोग़ले-अनुवादक) को देखता हूँ कि वह उनकी ओर झुकता है और उन लोगों में जा मिलता है।

إبلٌ من الفاقات أُحْنِقَ صلبُها   فاختار أديارًا لقُوتٍ يكسِبُ

18-वह भूख का मारा एक ऊँट है जिसकी कमर दुबली हो गई है। इसलिए उसने गिरजा की राह अपनायी ताकि कुछ खाना हासिल करे।

ليسوا من الاسرار فى شىء هُدًى   ما إنْ أرى مَن بالدقائق يَأْرَبُ

19-हिदायत के भेदों में से उन्हें कुछ भी ज्ञात नहीं, मैं उनमें कोई ऐसा आदमी नहीं देखता जो गूढ़ बातों को जानने वाला हो।

ما آمنوا حتى إذا خَسَفَ القمرُ   عَلِهَتْ قلوبُ المنكرين و أُنِّبوا

20-वे ईमान न लाए यहाँ तक कि जब चन्द्र ग्रहण हुआ तो इन्कार करने वालों के दिल आश्चर्य में पड़ गए और वे डाँटे-डपटे गए।

يئِسوا من الرحمٰن و الكلِمِ الّتى   كانوا عليها قائمين و ثُرِّبوا

21-वे रहमान ख़ुदा से नाउम्मीद हो गए और उन बातों से भी जिन पर वे क़ायम थे, और शर्मिन्दा किए गए।

أولم تكُنْ تدرى قلوبُ عِدا الهدى أنّ المهيمن يُخْزِيَنْ مَن ينكُبُ

22-क्या वे जो हिदायत के दुश्मन हैं, उनके दिल नहीं जानते कि ख़ुदा तआला सन्मार्ग से मुँह फेरने वाले को शर्मिन्दा करता है?

أولم تكنْ عينُ البصير رقيبَنا هل يستوى الاتقى ورجلٌ أَحْوَبُ

23-क्या ख़ुदा तआला की आँख हमें देख नहीं रही? क्या संयमी और असंयमी दोनों बराबर हो सकते हैं?

ظهرَت علامات الخسوف بليلة طَلِقٍ لذيذٍ والرواعدُ تصخَبُ

24-चन्द्रग्रहण की निशानियाँ एक मनोरम रात्रि में प्रकट हो गईं और कड़कने वाले बादल चिंघाड़ने लगे।

متفرقٌ غيمُ السماء وزَجْلُه بِيْضٌ كأنّ نِعاجَ وادٍ تَسْرُبُ

25-बादल टुकड़े-टुकड़े हैं और उसके लोग रोशन दिमाग़ हैं, मानो जंगल की भेंड़ें चुपके से अँधेरे में राह ले रही हैं।

طورًا يُرى مثل الظباء بحسنها أُخرى كآرام تميسُ وتهرُبُ

26-बादलों के यह टुकड़े (गिरोह) कभी तो अपनी सुन्दरता में हिरनों की भाँति दिखाई देते हैं और कभी हिरन के बच्चों की तरह नाज़ व नख़रे से चलते और दौड़ते हैं।

قَمَرٌ كظُعْنٍ والسحابُ قِرامُها والريحُ كِلَّتُها ليُنْهَى الاجْنَبُ

27-चंद्रमा पालकी में बैठने वाली पर्दानशींन औरतों की तरह है और बादल उस पालकी का मोटा पर्दा है और हवा उसका बारीक पर्दा, ताकि अजनबी को रोका जाय।

صُبّتْ على قمر السماء مصيبةٌ و كمثلنا بزوالِ نورٍ يَرعَبُ

28-आसमान के चंद्रमा पर मुसीबत पड़ गई और हमारी तरह नूर के ज़वाल पर डराया जाता है।

إنى أرىٰ قطرًا لديه كأنّه يبكى كرجل يُنْهَبَنْ ويُخيَّبُ

29-मैं उसके पास (आँसुओं के) क़तरे देखता हूँ मानो कि वह उस व्यक्ति की भाँति

रोता है जो लूटा और निराश किया गया।

يا قمرَ زاويةِ السّماء تصبَّرَنْ مثلي فيدركك النّصيرُ الاقربُ

30-हे आकाश के चंद्रमा! मेरी तरह सब्र कर, ख़ुदा बहुत जल्द तेरी मदद करेगा।

أَبْشِرْ سينحسر الظلامُ بفضله إن البليّةَ لا تدوم وتذهَبُ

31-ख़ुश हो कि उसके फ़ज़्ल (कृपा) से बहुत जल्द अन्धेरा दूर हो जाएगा, मुसीबत हमेशा नहीं रहती और दूर हो जाती है।

إن المهيمن لا يُضِيعُ ضيائَه فلكلِّ نورٍ حافظٌ ومؤرِّبُ

32-ख़ुदा अपने तेज को कभी नष्ट नहीं करता। वह हर एक नूर का रक्षक और प्रभुत्वदायक है।

هذا ظلام الساعتين و إنّني مِن بُرهةٍ أرنو الدُّجى وأُعذَّبُ

33-यह तो दो पल का अंधेरा है और मैं एक ज़माने से अंधेरा देख रहा हूँ और दु:ख दिया जा रहा हूँ।

تَلِجُ السحابَ لِتَبْكِيَنَّ تألُّمًا والصّبر خيرٌ للمصاب وأصوَبُ

34-तू बादल में इसलिए दाख़िल होता है कि दर्दे से रोकर कुछ हासिल कर ले, हालाँकि वह एक भयानक मुसीबत है और मुसीबतज़दा के लिए सब्र करना बेहतर है।

ذرفتْ عيونُك والدموعُ تحدّرتْ مِن مثلك الاوّابِ هذا أعْجَبُ

35-तेरे आँसू जारी हो गए और यह तेरे जैसे इबादतगुज़ार से आँसुओं का बहना आश्चर्य है।

هلاّ سألتَ مجرِّبًا عند الاذىٰ ولكلّ أمرٍ عقدةٌ ومُجرِّبُ

36-तूने दु:ख के समय किसी तजुर्बाकार से क्यों न पूछा, हर एक बात में एक रहस्य होता है और साथ ही एक तजुर्बाकार।

تبكي علىٰ هذا القليل من الدُّجىٰ سِرْنا بجَوف الليل يا مُتأوِّبُ

37-हे रात के आरम्भ में लौटने वाले! तू तो अँधेरी रात के थोड़े से अन्धकार पर रोता है, हम तो घोर अँधेरी रात से गुज़र रहे हैं।

أُثني علىٰ ربّ الانام فإنه أبدىٰ نظيري في السّماء فأَطْرَبُ

38-मैं ख़ुदा तआला की प्रशंसा करता हूँ कि उसने आसमान में मेरा नाम नज़ीर (रुद्र) रखा।

قمرُ السماء مشابهٌ بقريحتى كطَلِيحِ أسفارِ السّرَى يتطرَّبُ

39-आकाश का चंद्रमा मेरे स्वभाव से उस ऊँट की तरह समानता रखता है जो रात में चलने का अभ्यस्त है और ख़ुश है।

نَصَعَتْ مقاصدُ ربّنا بخسوفه فاطلُبْ هداه وما أخالُك تطلُبُ

40-उस (चंद्रमा) के ग्रहण से हमारे ख़ुदा के इरादे ज़ाहिर हो गए। अब तू उसकी हिदायत को ढूँढ़, मुझे उम्मीद नहीं कि तू ढूँढ़ेगा।

ظهرتْ بفضل الله فى بلداننا آياتُه العظمٰى فتوبوا وارْهَبوا

41-ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से उसके बड़े-बड़े निशान हमारे देश में ज़ाहिर हुए, अब तौबा करो और उससे डरो।

قمرٌ كمثل ظعينةٍ فى ظعنها شاقَتْك جلوتُه وفيها ترغَبُ

42-चंद्रमा ऐसा है जैसे पालकी (हौदा) में बैठी हुई पर्दानशींन औरत, जिसकी एक झलक तुझे चाह और जिज्ञासा दिलाती है।

وَدَقُ الرّواعدِ قد تعرَّضَ حولهُ إرْزامُها فى كل حين يُعْجِبُ

43-कड़कदार बादलों की चिंघाड़ उसके साथ है, जिनकी आवाज़ हर समय आश्चर्य में डालती है।

غيمٌ كأطباقٍ تَصِرُّ خيامُه رعدٌ كمثل الصالحين يُؤوِّبُ

44-धूलधूसरित बादल के ख़ेमों (डेरों) से श्रृंखलाबद्ध चूँ-चूँ की आवाज़ आ रही है और कड़कदार बादल सदाचारियों की तरह जवाब दे रहा है।

قمرٌ بحِلْيته مُشاكِهةِ الدَّمِ وجهٌ كغضبانٍ يهُول ويُرعِبُ

45-चंद्रमा का चेहरा ख़ून की तरह लाल हो रहा है जो प्रकोप से भरे व्यक्ति की भाँति डराता है।

فى جَلْهَتَيْهِ بدا السحابُ كأنّه كِفَفٌ على أيدى التى هى تَغْضَبُ

46-उस (चंद्रमा) के दोनों किनारों पर अचानक इस तरह बादल ज़ाहिर हो गए मानो वे सुई की नोकें हैं जो उस औरत के हाथ में हैं जो ग़ुस्से से भरी हो।

قد صار قمرُ اللّٰهِ مطعونَ الدُّجَی   لیلٌ منیرٌ کافرٌ فتعجَّبوا

47-ख़ुदा तआला के चंद्रमा को दोषी और कलंकित ठहराया गया (अर्थात् आलोचना का निशाना बनाया गया-अनुवादक), हे चाँदनी रात को अन्धेरा कहने वालो! तुम पर आश्चर्य है।

إنّی أراه کَنُؤْیِ دارٍ خَربَةٍ   لم یبق إلا مثل طَلَلٍ یَشْجَبُ

48-मैं उसको उस वीरान घर के खण्डहर की तरह पाता हूँ जो केवल उदाहरण की तरह शेष रह गया है और उसे देखकर दु:ख होता है।

کُسِفَتْ ذُکاءُ اللّٰه بعد خسوفه   إنی أراها مثل دارٍ تُخْرَبُ

49-चंद्र ग्रहण के बाद फिर सूर्य को ग्रहण लग गया और मैं उसको उजड़े हुए घर के समान देखता हूँ।

کُسفتْ وظهَر الکَدَرُ فی أجْزَاءِها   عَفَتِ الإنارةُ مثل ماءٍ یَنْضَبُ

50-सूर्य को ग्रहण लगा और उसकी समस्त किरणों में अन्धकार छा गया और रोशनी इस तरह दूर हो गई जैसे कि ज़मीन से पानी सूख जाता है।

حتی انثنتْ فی الساعتین ککافرٍ   ضاهتْ نذیرًا یُکْفَرَنْ ویُکذَّبُ

51-यहाँ तक कि सूर्य दो घन्टे में काली अँधियारी रात की तरह हो गया और उस नज़ीर (सचेतक) के समान हो गया जिसे प्रकाशहीन (अर्थात् अधर्मी और मूर्ख) ठहराया गया और उसको झुठलाया गया।

وتبیّنتْ صورُ الظلام کأنها   ألقتْ یدًا فی اللیل أو هی کوکبُ

52-और अन्धकार के कई कारण ज़ाहिर हो गए, मानो सूर्य ने अपना हाथ रात में डाल दिया या वह मात्र एक छोटा सितारा है।

النـیّرانِ تجاوَبا فی أمرنا   قاما کشهداءٍ وزالَ الهَیْدَبُ

53-सूर्य और चंद्रमा हमारी बात में सहमत हो गए और गवाहों की तरह खड़े हो गए और सन्देह का बादल छट गया।

لما رأیتُ النیّرَینِ تکسّفَا   وأنارَ وجههما وزال الغَیهبُ

54-जब मैंने देखा कि सूर्य और चन्द्र ग्रहण हो चुका और उन दोनों का मुँह फिर चमकने लगा और अन्धकार दूर हो गया।

ففهمتُ مِن لُطف الكريم بخُطّتى أنّ السَّنا بعدَ الدّجٰى مُترقَّبُ

55-तो मैं ख़ुदावन्द करीम के फ़ज़्ल (कृपा) से अपने काम के बारे में समझ गया कि (इससे) अन्धेरे के बाद रौशनी की उम्मीद दिलाई गई है।

النـــيّرانِ يُبشِّران بنصرنا غَرَبَا ونـيّرُ دينِنا لا يَغْرُبُ

56-सूर्य और चंद्रमा हमारी सहायता और सफलता की ख़ुशख़बरी दे रहे हैं। वे दोनों डूब गए, परंतु हमारे दीन का सूर्य (कभी) नहीं डूबेगा।

يا معشر الاعداء توبوا واتقوا واللّٰهِ إنى مُرسَلٌ و مقرَّبُ

57-हे दुश्मनों के गिरोहो! तौबा करो और तक़्वा (संयम) से काम लो। ख़ुदा की क़सम, मैं रसूल हूँ और उसका मुक़र्रब (निकटस्थ) हूँ।

إن كان زعمُ العلم علّةَ كِبركم فأْتوا بمثل قصيدتى وتَعرَّبوا

58-यदि तुम्हारे अहंकार का कारण ज्ञान का घमण्ड है तो मेरे क़सीद: जैसा क़सीद: लिखकर ले आओ और अरब बनकर दिखा दो।

यह वह बात है जो हमने तुम्हारे वहमों (भ्रमों) को दूर करने और तुम्हारा मुँह बन्द करने के लिए लिखा है। इसलिए अपने झगड़ों को ख़त्म करो और गुनाहों से बचो और सोचो, लेकिन न व्यर्थ के तौर पर, बल्कि तहक़ीक़ के तौर पर। अल्लाह तआला के क्रोध से डरो, न कि किसी बूढ़े और जवान की बात से। हे संकीर्ण विचार रखने वाले शैख़! तौबा कर, क्योंकि तू सच से मुँह फेरता है। मेरे पास आ कि मैं तेरी आँखों का इलाज करूँ, मेरे पास सुरमा और सलाई भी है। ख़ुदा तेरी बेचैनी को दूर कर देगा और तेरे दिल को ठीक कर देगा लेकिन शर्त यह है कि तू सत्य का अभिलाषी बनेगा। यह बात मत कह कि मैं अमुक-अमुक विद्याएँ जानता हूँ, क्योंकि हम तुझे जानते हैं कि तू कौन है और तू छुपा हुआ नहीं है। मैं तुझे तेरी नादानी के समय से जानता हूँ, तू कब से विद्वान हो गया? क्या तू अपनी अनर्गल बातों को नहीं छोड़ेगा और अपने शैतान से दूर नहीं होगा? क्या तू लज्जाशील लोगों में से नहीं है?

मैंने इस किताब में महदी का वर्णन करने से छोड़ दिया है क्योंकि मैंने

उसे लोगों के लिए दूसरी किताबों में विस्तारपूर्वक लिख दिया है। मैंने इसमें केवल एक बड़े निशान का वर्णन किया है जो महदी के प्रादुर्भाव की पहली निशानी है और ख़ुदा की तरफ़ से उसकी सहायता और समर्थन का पहला तीर है। क्योंकि सूर्य और चन्द्र ग्रहण हो गया और हर एक आँखों वाले ने उनको देख लिया। वे दोनों गवाह दो न्यायकर्ताओं के क़ाययमुक़ाम (स्थानापन्न) हो गए। इसलिए तौबा करो और सरवरे कौनैन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात को याद करो। सत्य स्पष्ट हो चुका है, इससे उस व्यक्ति के अतिरिक्त कोई इन्कार नहीं करेगा जो झूठ की पैरवी करने वाला हो। इसलिए अपने विचारों से ख़ुश मत हो और तालियाँ मत पीटो और घमण्ड में चूर होकर आँखों से इशारे करते हुए मत चलो और जबड़े फाड़-फाड़कर गाने मत गाओ और मत नाचो और लोगों में फूट और वैमनस्यता मत पैदा करो। क्योंकि ख़ुदा ने तुम्हें शर्मिन्दा किया और तुम्हारे हद से बढ़ने का तुम्हें बदला दिया और उसने तुम्हें दुश्मन पाया। इसलिए यदि तुम मुत्तक़ी (संयमी) हो तो ख़ुदा तआला से लड़ाई मत करो। यदि तुम सोचते हो कि महदी और मसीह तलवार और भाले के साथ निकलेंगे और रक्तपात करके धरती को ख़ून से रंग देंगे तो यह भ्रम तुम में केवल तुम्हारी मूर्खता से पैदा हुआ है और इसका कारण तुम्हारे भ्रम हैं। ख़ुदा तआला ऐसा नहीं है कि दुनिया को सचेत और तर्क पूर्ण करने से पहले नष्ट कर दे। क्या वह बेख़बर बन्दों को नष्ट कर देगा? क्या तुम अंग्रेज़ों में से पश्चिमी लोगों को नहीं देखते कि क़ुरआन के रहस्यज्ञान अब तक उन तक नहीं पहुँचे और सत्य और असत्य में अन्तर करने वाले फ़ुर्क़ान की गूढ़ताओं से बेख़बर हैं। ख़ुदा की क़सम वे दूध पीते बच्चों के समान हैं जो अल्लाह के दीन के रहस्यों से बेख़बर हैं। क्या तुम्हारे निकट दूध पीते बच्चों का क़त्ल करना जायज़ है? यदि तुम शरीअत के क़ानूनों से परिचित हो तो इसका उत्तर दो। तुम ज़रूर कहोगे कि यह दज्जाल है जो हमारे पुराने अक़ीदों की मुख़ालिफ़त करता है और बड़े-बड़े उसूलों को बदलवाता है। तुम जान लो कि ख़ुदा तआला दज्जाल के समर्थन में निशान प्रकट नहीं करता और पथभ्रष्टों की सहायता नहीं करता। तुम जान लो कि मैं झूठा नहीं

हूँ और न तबाह होने वालों की राह की पैरवी करता हूँ। बल्कि तुम अन्धे हो गए हो। ख़ुदा तआला जानता है जो कुछ मेरे दिल में है और जो तुम्हारे दिल में है और वह झूठों को अच्छी तरह जानता है। वह नाफ़र्मानों को एक मुद्दत तक ढ़ील देता है। सचेत करने के बाद जब अकाट्य और निर्णायक तर्क पूर्ण हो जाता है और सत्य और असत्य स्पष्ट हो जाता है तब उसका अज़ाब (प्रकोप) उनकी ओर नाज़िल होता है जो हद से बढ़ जाते हैं। यह एक प्राकृतिक नियम है जो पहले बीत चुका है। क्या तुम अवतारों की जीवनी नहीं देखते? फिर तुम यह भी जानते हो कि ख़ुदा तआला ने अंग्रेज़ों को तुम्हारे देशों में तुम पर शासक ठहराया है, उनमें तुम हृदय की उदारता के अतिरिक्त कुछ नहीं पाते। वे दिल दु:खाकर और गालियाँ देकर तुम्हें कष्ट नहीं पहुँचाते और जब तुम उनको मध्यस्थ (सरपंच) बनाते हो तो न्याय करते हैं और छानबीन करते हैं और अन्याय नहीं करते और तुम्हारी रक्षा करते हैं और लूटते नहीं और जब तुम माँगते हो तो देते हैं और इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वे एहसान करते हैं और अत्याचार नहीं करते और हमें हमारे दीन की इबादतों से उस समय तक नहीं रोकते जब तक कोई लड़ाई-झगड़े या युद्ध की स्थिति न पैदा हो और निर्दयों की भाँति नहीं पकड़ते। इसलिए जो तुम पर एहसान करते हैं उन पर एहसान करो, ख़ुदा एहसान करने वालों से प्रेम करता है। ख़ुदा का शुक्र करो कि उसने तुमको ऐसे शासक दिए जो तुम्हें तुम्हारे धर्म के पालन में कष्ट नहीं पहुँचाते और तुम्हें तुम्हारे धार्मिक तर्कों के प्रचार-प्रसार से नहीं रोकते। इसलिए तुम सोचो-समझो और ज़मीन में फ़साद करते मत फिरो और यदि तुम इसलिए रोते हो कि तुम्हारे हाथ ख़ाली हैं और तुम्हारी जूतियाँ टूटी हुई हैं तो निकट है कि ख़ुदा तआला अपनी कृपा से तुम्हें धनी कर दे। उसकी ओर झुको और अपना सुधार करो क्योंकि नेकों को वह अपना मित्र बनाता है। क़ुरआन को फैलाने के लिए खड़े हो जाओ और शहरों में फिरो और अपने वतनों की ओर मत झुको। अंग्रेज़ देशों में ऐसे दिल हैं जो तुम्हारी मददों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ख़ुदा ने तुम्हारी मददों में उनका सुकून रखा है। इसलिए तुम उस व्यक्ति की तरह चुप मत बैठो जो देखकर आँखें बन्द कर ले और

बुलाया जाए तो दूरी इख़्तियार कर ले। क्या तुम उन देशों में उन भाइयों का रोना नहीं सुनते और उन दोस्तों की आवाज़ें तुम्हें नहीं पहुँचतीं? क्या तुम बीमार की तरह हो गए हो और तुम्हारी सुस्ती तुम्हारी अन्दरूनी बीमारी की तरह बन गई और तुमने इस्लाम के शिष्टाचार भुला दिए और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विनम्रता को भुला बैठे। तुम्हारी आदत सद्व्यवहार से दुर्व्यवहार में और तुम्हारे सुविचार कुविचार में बदल गए और तुमने मोमिन स्त्रियों और पुरुषों के शिष्टाचार भुला दिए। हे लोगो! भ्रम में फँसे हुओं को छुड़ाने और पथभ्रष्टों की हिदायत के लिए खड़े हो जाओ और अपनी तलवार और तीरों पर उत्तेजित होकर मत गिरो और अपने ज़माने के हथियारों और अपने समय की लड़ाइयों को पहचानो। क्योंकि हर एक ज़माने के लिए एक अलग हथियार और एक अलग लड़ाई है। इसलिए उस विषय पर मत झगड़ो जो स्पष्ट और रौशन है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारा ज़माना प्रमाण और तर्क के हथियारों का मोहताज है, धनुष तीर और बर्छी-भालों का नहीं। इसलिए तुम दुश्मनों के लिए वे हथियार तैयार करो जो बुद्धिमानों के निकट लाभदायक हों और यह कदापि सम्भव नहीं कि अकाट्य तर्क प्रस्तुत किए बिना और भ्रमों का निवारण किए बिना तुम्हें सफलता मिले। इस्लाम की सच्चाई पसन्द करने के लिए लोग आगे बढ़ने लगे हैं। इसलिए उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसके दरवाज़े में दाख़िल हो और तीरन्दाज़ों की तरह मत अकड़ो। यदि तुम सच्चे हो और नेकियों की तरफ़ झुकाव रखते हो तो विद्वानों में से कुछ आदमी नियुक्त करो ताकि वे धर्मोपदेशक बनकर अंग्रेज़ी देशों की ओर जाएँ और काफ़िरों (अधर्मियों) के सामने सुस्पष्ट और रौशन शरीअत के अकाट्य और निर्णायक तर्क प्रस्तुत करें और सत्याभिलाषियों के गिरोह की मदद करें और उनकी सहायता के लिए खड़े हो जाएँ। और जिस ढंग को मैं श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अत्यन्त लाभप्रद और सबसे सही समझता हूँ वह यह है कि इस काम के लिए मेरे निश्छल और सद्भावक धर्म भाई मौलवी हसन अली जैसा कोई नेक और अंग्रेज़ी भाषा का माहिर आदमी चुन लिया जाए, जो साहसी और इस काम के योग्य है और इसके अतिरिक्त सदाचारी और इस्लाम

के प्रचार व प्रसार में दिलेर भी है। लेकिन यह इच्छा समृद्धिशाली लोगों की हिम्मत के बिना पूरी नहीं हो सकती, अर्थात् ऐसे लोग क़ौम की ख़िदमत (सेवा) के लिए अपनी पूरी कोशिश करें और किसी की निन्दा की परवाह न करें। तुम जानते हो कि यह सफ़र इस बात का मोहताज है कि पर्याप्त सफ़र ख़र्च के साथ-साथ कोई ऐसा साथी भी साथ हो जो अरबी भाषा का माहिर हो। इसलिए यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करते हो तो निकम्मे होकर मत बैठो और नि:सन्देह समझो कि इस्लाम धर्म अध्यात्म जगत के लिए केन्द्र और स्तम्भ है क्योंकि शरीर रूह के अधीन है और ख़ुदा तआला ने जिस्म की सलामती और पवित्रता अध्यात्म जगत में रखी है और ख़ुदा का विधान इसी तरह पर घटित है। ख़ुदा तआला जब लोगों को प्रतिष्ठा प्रदान करना चाहता है तो उनको दीन (धर्म) में उच्च उत्साही और ग़ैरतमन्द बना देता है। इसलिए दुश्मन का सामना करने के लिए खड़े हो जाओ लेकिन मूर्खों की तरह नहीं, बल्कि अक़्लमन्दों और मीमांसकों की तरह। अन्याय और अत्याचार की राह मत अपनाओ और चाहिए कि तुम्हारे दिल में उसका विचार तक भी न आवे। ख़ुदा तआला की आज्ञा का पालन करो और उसकी हिदायत को फैलाओ। ख़ुदा तआला स्वच्छ प्रकृति लोगों से प्रेम करता है। तुम्हारे इस्लामी साहस और धार्मिक स्वाभिमान से उम्मीद है कि बुद्धिमानों की तरह साधन तैयार करो, न कि जाहिलों और पागलों की तरह। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि ग़ाफ़िल गुमराहों को समझाना आलिमों (विद्वानों) पर अनिवार्य है। इसलिए ख़ुदा तआला के लिए खड़े हो जाओ और उसकी हिदायत को फैलाओ और इस पर उसके अतिरिक्त किसी और बदला की ओर मत झुको और उन देशों में इन्कार करने वालों के पास दो बुद्धिमान आदमी भेजो और यदि मुझसे पूछो तो मैं ऐसे आदमी का नाम बयान कर चुका हूँ जिसकी महानता, विद्वता, धीरता और गम्भीरता को मैंने देखा है। हाँ, वह एक या दो ऐसे साथियों का मोहताज है जो अरबी भाषा में माहिर हों और क़ुरआन का अत्यधिक ज्ञान रखते हों। इसलिए हे मुसलमानो! इस बारे में उसकी सहायता करो। यदि तुमने ऐसा किया और मेरे कहने पर व्यवहृत हुए तो अन्त समय तक तुम्हारी सुन्दर

यादगार बाक़ी रहेगी और तुम ख़ुदा के प्रिय बन्दों के साथ जमा किए जाओगे। इसलिए सख़ावत (दानशीलता) दिखलाओ, ख़ुदा तुम पर रहम करे। ख़ुदा के लिए फ़रमाँबर्दार बनकर उठ खड़े हो। मैं तुम्हें एक उदाहरण बताता हूँ उसे न्यायपसन्दों की तरह सुनो। हर एक इन्सान यह चाहता है कि सारी धन-दौलत ख़र्च करके वह पेट की गैस (अतिसार) से मुक्ति पा जाए और चाहता है कि किसी तरह हवा ख़ारिज हो जाए। फिर उसे क्या हो गया है और कौन सा पर्दा पड़ गया है कि वह दीन की मदद के लिए धन-सम्पत्ति ख़र्च करना नहीं चाहता? क्या उसके निकट दीन (इस्लाम) उस बदबूदार हवा के भी बराबर नहीं जो पेट के अन्दर से निकलती है? इसलिए तुम लज्जावानों की तरह सोचो कि दीन की मदद करना सुधार और सफलता का एक बड़ा साधन है, सुन्दर याद, नि:स्वार्थ प्रशंसा और ख़ुदा के प्यारों में शामिल होना इसके अतिरिक्त है। यह तो नेकी की बात नहीं कि तुम में से कुछ कुछ को काफ़िर (अधर्मी) ठहरावें और दुश्मनों की तरह ज़्यादती करें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों को छोड़ दें। नेकी की बात तो यह है कि ख़ुदा तआला की राह में ऐसी कोशिश करें जो समयोचित और समयानुसार हो। यदि तुम ख़ुदा तआला की प्रसन्नता पाने के इच्छुक हो तो नजात (मुक्ति) दिलाने वाले कामों के इच्छुक बन जाओ और सदाचारियों की प्रकृति अपनाओ।

हे भाइयो! हमारा दीन (इस्लाम) जो सूर्य और चंद्रमा से बढ़कर चमकदार था वह कमज़ोर हो गया है और ज़माने में बहुत सी बुराइयाँ फैल गई हैं और यह वह बात है जिसमें किसी को कोई सन्देह नहीं और इसके ख़िलाफ़ किसी के होंठ नहीं हिलते। तुम देखते हो कि हमारी क़ौम गुमराह शैतान (अर्थात् भ्रष्ट लोगों) के दाढ़ों के नीचे आ गई है और अन्ततः बहुत बुरे कारण प्रकट हो चुके हैं हैं और हम अपने मूल (बुनियादी) और आंशिक फ़राइज़ (कर्तव्यों) में कमज़ोर हो गए, इसलिए दुष्परिणाम से ख़ुदा की शरण माँगो और इन मुसीबतों से नजात (मुक्ति) पाने के लिए दुआ के अतिरिक्त और कोई साधन नहीं। अब वह समय आ गया है कि संयम (तक़्वा) साहस, और स्वाभिमान को शूरवीरों

की तरह काम में लाओ और यदि अब भी न सुनो तो याद रखो कि ग़ाफ़िलों का गुनाह तुम्हारे ऊपर है।

क्या तुम पतन की हालतों और तबाही के दिनों और उन मुसीबतों को नहीं देखते जो तुम्हारे साथ चिमटी हुई हैं। यह मुसीबतें केवल हमारी ग़फ़लत की वजह से हम पर उतरी हैं और यदि तुम तौबा के साथ ख़ुदा की तरफ़ झुकोगे तो निकट है कि ख़ुदा तुम पर रहम करे और जो व्यक्ति धर्मोपदेश (अर्थात् इस्लाम के प्रचार व प्रसार) के लिए नि:स्वार्थ होकर अंग्रेज़ी देशों की ओर जाएगा वह ख़ुदा के चुने हुए नेक बन्दों में शामिल किया जाएगा और यदि उसको मौत आ गई तो वह शहीदों में गिना जाएगा। इसलिए हे क़ौम के पक्षधरो और साहसियो और स्वाभिमानो और शरीअते मुहम्मदी के मददगारो! ज़माने को पहचान लो, क्योंकि समय आ गया है और यह वही ज़माना है जिसके आने की तुम उम्मीद रखते थे और यह वही समय है जिसकी उम्मीदें तुम्हें हमेशा से थीं और यह वही महदी है जिसकी तुम प्रतीक्षा में थे। देखो चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लग गया और रात और दिन ने गवाही दी। हे मेरे भाइयो! क्या अब भी तुम मेरे पास नहीं आओगे या पीठ फेरने वालों की तरह मुँह मोड़ लोगे? जागो, कि तुमने वह ज़माना पा लिया जो खो दिया था। अब उस नेमत (कृपा) की तरफ़ दौड़ो जो तुम पर उतरी और उस मुजद्दिद (सुधारक) की तरफ़ आओ जो तुम्हारे पास अवतरित हुआ और किसी शक में न पड़ो और सन्देह मत करो और उन साहस और संयमों के साथ उठो जिनसे पहाड़ टल जाते हैं और हाथी भागते हैं। ख़ुदा तआला के दिनों की उपेक्षा (नाक़द्री) मत करो, यदि तुमने इन दिनों की क़द्र न की तो तुम पर उसका प्रकोप और आग भड़केगी। इसलिए ख़ुदा तआला के क्रोध से डरो और दुस्साहस मत करो।

मैंने सुना है कि कई मूर्ख और नादान यह कहते हैं कि यद्यपि चन्द्र-सूर्य ग्रहण रमज़ान में हो चुका और हम क़ुरआन को इस भविष्यवाणी का समर्थक भी पाते हैं और विभिन्न धर्म पुस्तकों और हदीसों में भी यह भविष्यवाणी मौजूद है, लेकिन हम इससे संतुष्ट नहीं कि पहले ज़माने में कभी ऐसा घटित नहीं हुआ और इसका अनोखा और अनुपमेय होना विभिन्न धर्मों के धर्मावलम्बियों के निकट

सिद्ध नहीं, तो हम कैसे मान लें?

इसका उत्तर यह है कि हे मूर्खो और नादानो! यह हदीस ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ से है जो सब नबियों का सरदार है और यह हदीस दारक़ुतनी में लिखी है जिसके संकलन पर एक सहस्र वर्ष से अधिक समय बीत चुका है। यदि तुम्हें कोई सन्देह है तो उन इन्कार करने वालों से पूछ लो और हमारे सामने कोई ऐसी किताब या अख़बार प्रस्तुत करो जिसमें तुम्हारा दावा खुले-खुले प्रमाण के साथ मौजूद हो। यदि तुम सच्चे हो तो कोई ऐसा उद्घोषक प्रस्तुत करो जो इस तरह का चन्द्र-सूर्य ग्रहण उसने इससे पहले देखा हो। तुम्हें कदापि शक्ति और सामर्थ्य न होगा कि तुम इसका उदाहरण प्रस्तुत कर सको। झूठों की पैरवी मत करो। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि पूर्वकालीन उलमा (विद्वान) इस निशान की प्रतीक्षा किया करते थे और शताब्दी दर शताब्दी और पीढ़ी दर पीढ़ी इस अद्वय और अटल प्रमाण की प्रतीक्षा कर रहे थे? अत: यदि वे इसको किसी शताब्दी में देखते तो अवश्य उसका वर्णन करते और नज़रअन्दाज़ न करते। क्योंकि वे इस मासूर हदीस को बहुत बड़ा दर्जा देते थे और इसकी प्रतीक्षा में दिन और महीने गिनते थे और दीवानों की तरह इसकी घोर प्रतीक्षा करते थे और इस निशान के देखने की अत्यधिक जिज्ञासा रखते थे। लेकिन वे अपने ज़मानों में इस निशान को न देख सके, और यदि देखते तो अवश्य उसका वर्णन करते। तुम जानते हो कि उनकी किताबें लगातार संकलित होती चली आई हैं लेकिन उनमें इस निशान का कुछ भी वर्णन नहीं किया गया। क्या तेरा यह गुमान है कि उन्होंने सुस्ती के कारण यह वर्णन छोड़ दिया है? यदि तू ऐसा गुमान करता है तो तूने लांछन लगाया और तूने यह किस तरह समझ लिया, हालाँकि तू जानता है कि वे लोग समय की घटनाओं के एकत्र करने पर बहुत उत्सुक थे और चंद्रमा और सूर्य पर जो कुछ भी बदलाव ज़ाहिर होते उनके लिखने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। अत: जिसने यह गुमान किया है कि यह चन्द्र-सूर्य ग्रहण इससे पहले भी घटित हो चुका है तो उसने झूठी बातों की पैरवी की है और रसूलुलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात पर झूठों की बात को

प्रधानता दी है। ध्यान से सुनो! कि मैं गवाहों के सामने कहता हूँ कि जो व्यक्ति इस निशान का इन्कार करे तो इसके झुठलाने के लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं और वह केवल अन्यायपूर्ण बात करता है। हमारे पास हर ज़माने की गवाही है, किताबें मौजूद हैं और जो बहाने किए गए हैं वे व्यर्थ और निराधार हैं और यह किताब हमने सोए हुओं को जगाने के लिए लिखी है।

हे लोगो! तुम मानो या न मानो निशान नि:सन्देह ज़ाहिर हो चुका है और अकाट्य एवं निर्णायक तर्क पूरा हो चुका है। तुम में ताक़त नहीं कि इस चन्द्र-सूर्य ग्रहण का कोई दूसरा उदाहरण प्रस्तुत कर सको। इसलिए ख़ुदा तआला के निशान से मुँह मत फेरो और इस अध्याय में हमारी यह आख़िरी बात है। हम इस किताब के लिखने पर ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करते हैं और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजते हैं और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि हर एक प्रशंसा समस्त लोकों के पालनहार ख़ुदा ही के लिए है।

क़सीद:

فَدَتْكَ النفسُ يا خيرَ الانامِ رأينا نورَ نَبْيِك فى الظلامِ

1-हे संसार के सर्वश्रेष्ठ वजूद (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तुझ पर सब कुछ न्योछावर है। हमने तेरी भविष्यवाणी का तेज घोर अन्धकार में देख लिया है।

رأينا آيةً تسقى وتُرْوِى وتشفى الغافلين من السَّقامِ

2-हमने वह निशान देख लिया जो (सच्चाई का जाम) पिलाता है और तृप्त करता है और ग़ाफ़िलों को बीमारियों से ठीक करता है।

رأينا النَّيّرينِ كما أشرتَا قد انخسفا لتنوير الانامِ

3-हमने चंद्रमा और सूर्य को जैसा कि तूने इंगित किया था देख लिया, दोनों को ग्रहण लगा ताकि लोग (ज्ञान से) प्रकाशित हो जाऐं।

بحمد الله قد خسَفا و كانا شريكَىْ مِحَنِ أيّامِ الصِّيامِ

4-ख़ुदा तआला का शुक्र है कि दोनों को ग्रहण लग गया और रमज़ान की कठिनाई

में दोनों सम्मिलित हो जाएं.

أتانا النصر بعد ثلاثِ مئةٍ وبعدَ مرورِ مُدّةِ ألف عامِ

5-तेरह सौ वर्ष गुज़रने के बाद हमारे पास ख़ुदा तआला की मदद आई है।

بدا أمرٌ يُعين الصّادقينا ولا يُبقِى شكوكَ ذوى الخصامِ

6-और वह निशान ज़ाहिर हुआ है जो सच्चों की मदद करता है और मुख़ालिफ़त एवं बहस-मुबाहसा करने वालों के भ्रम और सन्देहों को शेष नहीं छोड़ता।

بدا بطلٌ يحارب كلَّ خصمٍ ويضرب بالصّوارم والسّهامِ

7-वह दिलेर और रणबाँकुरा होकर प्रकट हुआ, जो हर एक दुश्मन से युद्ध करता है और तीरों और तलवारों से मारता है।

فليس لمنكر عذرٌ صحيح سوى التسويل زورًا كالحرامى

8-इन्कार करने वालों के पास चोरों की तरह झूठी बातें गढ़ने के अतिरिक्त कोई ठोस बहाना नहीं।

فهذا يَوْمُ تَهْنيةٍ وفتحٍ وتنجيةِ الخلائق من أثامِ

9-अत: यह दिन विजय और एक दूसरे को मुबारकबाद देने का दिन है क्योंकि यह दिन लोगों को गुनाह से नजात (मुक्ति) देने का दिन है।

إذا ما عَىَّ قومى مِنْ جوابٍ فمالوا نحو هَذْيٍ كالجَهامِ

10-जब मेरी क़ौम जवाब देने से असमर्थ हो गए तो बिन पानी बादल की तरह व्यर्थ और निराधार शोर मचाने लगे।

وقالوا آيةٌ لبنى حُسينٍ ومنهم نرقُبَنْ بَعْث الإمامِ

11-और कहने लगे कि यह निशान हुसैन की नस्ल के लिए है और हम उन्हीं में से इमाम के पैदा होने की उम्मीद करते हैं।

فقلتُ اخْشَوا إلٰهًا ذا جلالٍ وفِرّوا نحو عَينِىَ بالأوامِ

12-तो मैंने कहा कि महाप्रतापी ख़ुदा से डरो और मेरे उद्गम स्रोत की ओर प्यास के साथ दौड़ो।

ولا يدرى الخفايا غير رَبِّى وما الأقوام إلا كالأسامى

13-रहस्यों को मेरे रब्ब के सिवा कोई नहीं जानता और क़ौमें तो परस्पर पहचान के

लिए मात्र नाम के तौर पर हैं।

وأى ثبوتِ نسبٍ عند قومٍ سوى الدعوى كأوهام المنامِ

14-और दावा के सिवा जो नींद की अभिशंका (सन्देह) की तरह है, किस क़ौम के पास अपने नस्ब (वंश) का सुबूत है?

ونحن الوارثون كمثلِ وُلْدٍ ورِثْنا كلَّ أموال الكرامِ

15-हम बेटों की तरह वारिस हैं और मुत्तक़ियों (पुण्यात्माओं) के समस्त माल के वारिस हो गए।

فتوبوا واتّقوا ربًّا قديرًا مليكَ الخَلق والرسلِ العظامِ

16- तौबा करो और उस सामर्थ्यवान् ख़ुदा से डरो, जो सृष्टि और सन्देशवाहकों (रसूलों) का बादशाह है।

ومَن راما فأين يفرّ منّا وإنا النازلون بأرضِ رامى

17-जो हम पर तीर चलाएगा वह हमसे भागकर कहाँ जाएगा, हम तीर चलाने वालों की धरती पर उतरने वाले हैं।

وردنا الماءَ صفوًا غيرَ كدرٍ ويشرَب غيرُنا وَشْلَ الإجامِ

18-हम उस पानी के पास आए जो अत्यन्त निथरा हुआ और शुद्ध है और हमारे मुख़ालिफ़ घने और झाड़ीदार जंगलों से टपकने वाला पानी पी रहे हैं।

أتانى الصالحون فبايَعونى وخافوا ربّهم يومَ القيامِ

19-सदाचारी मेरे पास आए और उन्होंने मेरी बैअत की (अर्थात् दीक्षा ली) और अपने रब्ब से और क़यामत (अर्थात् हिसाब-किताब) के दिन से डरे।

وأمّا الطالحون فأكفَرونى ولعنونى وما فهِموا كلامى

20-और दुराचारियों ने मुझे काफ़िर (अधर्मी) ठहराया और मुझ पर लानतें डालीं और मेरी बातों को न समझा।

وأفتَوا بالهوىٰ من غيرِ علمٍ وقالوا كافرٌ للكُفْر كامى

21-और बिना बुद्धि और विवेक के स्वार्थपरायणता से फ़त्वा दिया और कहा कि यह काफ़िर (अधर्मी) है और कुफ़्र (अधर्म) के लिए गवाही को छुपाता है।

وصالوا كالافاعى أو ذيابٍ وإن الله للصِّدّيق حامى

22-उन्होंने साँपों और भेड़ियों की तरह हमला किया लेकिन ख़ुदा तआला सच्चों का सहायक है।

لقد كذَبوا وخلاّقى يراهم وللشَّيْطَان صاروا كالغلامِ

23-उन्होने झूठ बोला और मुझे पैदा करने वाला उन्हें देख रहा है और वे शैतान के लिए ग़ुलाम की भाँति बन गए।

فلا واللّٰهِ لستُ ككافرينا فدَتْ نفسى نبيًّا ذا المقامِ

24-ख़ुदा की क़सम! मैं काफ़िर (अधर्मी) नहीं, मेरे प्राण उस नबी पर न्योछावर हैं जो अत्यन्त प्रशंसनीय स्थान वाला है।

وأصبانى النّبيُّ بحسنِ وجهٍ أرىٰ قلبى له كالمستهامِ

25-नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सुन्दर व्यक्तित्व से मेरा दिल अपनी ओर खींच लिया और मैं अपने दिल को उसके लिए आतुर पाता हूँ।

وذِكرُ المُصْطفٰى رَوْحٌ لقلبى وصار لِمُهْجتى مثل الطعامِ

26-नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की याद मेरे दिल की राहत (चैन) है जो मेरे प्राणों के लिए भोजन के समान है।

وخصمى يجلَعَنْ مِن غير حقٍّ ويأمَنُ مَكْرَ ربٍّ ذى انتقامِ

27-मेरा दुश्मन बेशर्मी से अकारण गालियाँ दे रहा है और प्रतिशोध (बदला) लेने वाले रब्ब की युक्ति से अपने आप को अमन में समझता है।

سيبكى حين يُضحِكنا القديرُ وقلنا الحق مِن غيرِ احْتشامِ

28-वह उस दिन रोएगा जिस दिन ख़ुदा हमें हँसाएगा, हमने बेझिझक सच्ची बात कही है।

يخيّبنى عدوّى مِن ورائى يبشّر ذو العجائب مِن قُدامى

29-मेरे पीछे से मेरा दुश्मन मुझे नाकाम व नामुराद करना चाहता है और मेरे आगे से मेरा रब्ब मुझे कामियाबियों की ख़ुशख़बरियाँ दे रहा है।

وإنّى سوف يدركنى إلٰهٌ عليمٌ قادرٌ كهفِى مَرامِى

30-ख़ुदा निकट ही मेरी सहायता करेगा और वह सर्वज्ञ और सामर्थ्यवान् है और मेरी शरण और ध्येय है।

أأنت تُكذِّبَنَّ آياتِ ربّي أأنت تُعادِيَنَّ سبلَ السلامِ

31-क्या तू ख़ुदा तआला के निशानों को झुठलाता है और इस्लाम की राहों का दुश्मन है?

لنا مِن ربّنا نور عظيم نُريك كما يُرَى برق الحُسامِ

32-(यह निशान) हमारे लिए हमारे रब्ब की ओर से एक महान तेज है, हम उसे चमकती हुई तलवार की तरह तुझे दिखाएँगे।

विज्ञापन

ईसाइयों को निरुत्तर करने और हर प्रतिद्वन्द्वी का मुँह बन्द करने हेतु

ईसाइयों ने कहा कि हमें अरबी भाषा का पूर्ण ज्ञान है और मुसलमानों में से अरबी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वानों और इस्लामी धर्मशास्त्र के धुरन्धरों का एक बड़ा गिरोह हमारे साथ आ मिला है और उन्होंने यह भी कहा कि क़ुरआन आलंकारिक नहीं है और न ही सही है और हम सब उसके दोषों से अवगत हैं। उन्होंने बहुत सी किताबें लिखीं और उन्हें देश-विदेशों में फैलाया ताकि लोगों को गुमराह करें और इस्लाम से विमुख होने के लिए लोगों को बढ़ावा दें और उन्होंने यह भी कहा कि हमारी गिनती इस्लाम के बड़े-बड़े उलेमाओं और धुरन्धरों में होती थी। हमने क़ुरआन पर ग़ौर किया और उसकी बातों को गहराई से देखा तो उसकी सरसता एवं आलंकारिकता और वाग्मिता एवं वाक्पटुता को उत्कृष्टतम् विशेषता और सर्वश्रेष्ठ शृंखलित शैली के उच्चतम् स्तर पर नहीं पाया जो लोगों में मशहूर है। बल्कि हमने उसे अत्यधिक त्रुटिपूर्ण, अशिष्ट और आलंकारिकता के स्थान से गिरे हुए शब्दों से परिपूर्ण पाया और वह अपने दावे में बिल्कुल सच्चा नहीं। इस तरह उन्होंने वास्तविकता को खोलकर बयान कर देने वाली ख़ुदा की किताब क़ुरआन करीम का अपमान किया और अपनी गालियों एवं व्यंग्य और कटाक्ष में हद से बढ़ गए। तब मेरे रब्ब ने मुझे आकाशवाणी की, कि मैं उनके

सामने अल्लाह की ओर से अकाट्य एवं निर्णायक तर्क प्रस्तुत करूँ और उन दुराचारियों की मूर्खता लोगों पर प्रकट कर दूँ।

इसलिए इस उद्देश्य से मैंने यह किताब लिखी और इसे दो भागों में विभाजित किया। एक भाग तो उनकी बातों के खण्डन में है और एक भाग चन्द्र-सूर्य ग्रहण के बारे में है। मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसने खोलकर अन्तर स्पष्ट कर देने वाली किताब क़ुरआन मजीद अवतरित की और उसे व्यापक और सर्वांगपूर्ण बनाया। वे सारे के सारे पक्के मूर्ख हैं, ज्ञान एवं अध्यात्म का उन्हें तनिक भी ज्ञान नहीं और जिसने कहा मैं आलिम (विद्वान) हूँ उसने झूठ बोला है और उनमें से जिसने यह दावा किया कि उसे अरबी भाषा का व्यापक ज्ञान है और अरबी साहित्य में दक्षता प्राप्त है तो उसकी दक्षता का प्रमाण और उसकी रचना की वास्तविकता ज्ञात करने और उसके ज्ञान को तौलने का अत्युत्तम ढंग यह है कि ऐसा दावेदार मेरी इस किताब के तुल्य किताब लिखने के लिए मुक़ाबले में आए और इसमें पाए जाने वाले चमत्कारों का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए तुरन्त क़लम उठाकर लिखने की अनिवार्यत: कोशिश करे। मैं ईसाइयों को अपनी इस किताब के मुद्रित होने के दिन से पूरे दो मास की मोहलत देता हूँ अत: जो प्रकाण्ड विद्वान और तीक्ष्णबुद्धि हो वह मुक़ाबले के लिए तुरन्त निकले। मुझे तो मेरे रब्ब ने आकाशवाणी की है कि वे सब अन्धों के समान हैं और इसका उदाहरण कदापि नहीं प्रस्तुत कर सकेंगे और वे सब अपने दावों में झूठे हैं। अत: क्या कोई उनमें से है जो अपनी किताब के साथ मुक़ाबले में निकले और सरसता और आलंकारिकता के युद्ध में अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए और मेरी आकाशवाणी को झूठी सिद्ध करे और मेरी ओर से इनाम प्राप्त करे और धिक्कार से बचे और अपनी क़ौम और समाज की सहायता करे और व्यंग्यकारों के व्यंग्य और कटाक्ष से भी बच जाए? मैंने ऐसे लोगों के लिए समयानुसार प्रचलित मुद्रा के पाँच हज़ार रुपए का इनाम देना क़सम खाकर अपने ऊपर अनिवार्य ठहरा लिया है चाहे मुझ पर कंगाली की हालत हो या समृद्धता की। लेकिन शर्त यह है कि वे मेरी किताब जैसी किताब चाहे अकेले-अकेले या मेरे सारे मुख़ालिफ़ों

(विरोधियों) की मदद से लिखकर लाएँ। यदि वे ऐसा न करें, और वे कदापि ऐसा न कर सकेंगे तो तुम समझ लो कि वे पक्के मूर्ख, झूठे, दुराचारी और दग़ाबाज़ हैं। जब पराजित होते हैं तो धोखा देते हैं। वे इस्लाम और क़ुरआन की रहस्यपूर्ण बातों में से कुछ नहीं जानते। वे मुसलमानों को अकारण दु:ख पहुँचाते हैं और ख़ुदा के अज़ाब (प्रकोप) से नहीं डरते।

ما للعدا مالوا الى الاهواء مالوا الىٰ اموالهم وعلاء

1-दुश्मनों को क्या हो गया है कि वे वासनाओं की ओर गिर गए और अपनी धन-दौलत और घमण्ड की ओर झुक गए।

عادوا الهًا واسع الآلاء مولًى ودودًا حاسم اللاواء

2-वे उस ख़ुदा के दुश्मन हो गए जो अपार नेमतों वाला और बहुत प्यार करने वाला आक़ा है और मुसीबतों को दूर करने वाला है।

ملك العلىٰ ومطهر الاسماء اهل السماح واهل كل عطاء

3-वह सारी महानताओं का मालिक और पवित्र नामों वाला है और वह अत्यन्त दयालु और सर्वदाता है।

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

18 मई सन् 1894 ई.

दिन शुक्रवार

हाशिया

(मौजूदा संस्करण के पृष्ठ 173 के विषय से संबंधित हाशिया)

तुम्हें ज्ञात रहे कि इस स्थान पर मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) को कुछ ऐतराज़ और भ्रम हैं। लेकिन यह सब दुष्टों और नीचों की तरह तुच्छ सोच और घोर दुश्मनी की ओर संकेत कर रहे हैं और सबसे बड़ा ऐतराज़ रावियों के बारे में आलोचना (जिरह-क़दह) है। तो इसका जवाब यह है कि हम आलोचना (जिरह-क़दह) करने वालों की आलोचना (जिरह-क़दह) को स्वीकार नहीं करते। क्योंकि जांच-पड़ताल करने वालों के निकट वह प्रमाणरहित है। अल्लाह तआला (क़ुरआन मजीद में) फ़रमाता है कि-

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ (अल हुजुरात- 49/7)

अर्थात "हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे पास यदि कोई दुराचारी कोई ख़बर लाए तो (उसकी) छानबीन कर लिया करो, ऐसा न हो कि तुम मूर्खता से किसी क़ौम को नुकसान पहुँचा बैठो फिर तुम्हें अपने किए पर शर्मिन्दा होना पड़े।" अत: यह आयत इस बात की ओर संकेत करती है कि दुराचारियों की गवाही, ऐसी जाँच-पड़ताल के बिना कि जब तक वह छानबीन करने वाले को निश्शंक न कर दे, स्वीकार करना ठीक नहीं। इसलिए जब यह बात तय हो गई तो हमारा मत यह है कि क़ुर्आन के अति आवश्यक आदेशों में यह बात शामिल है कि हम मोमिन के बारे में सुधारणा से काम लें और यह कहें कि दारक़ुतनी ने यह हदीस उन रावियों से ऐसी छानबीन और जाँच-पड़ताल के बाद ली है जो विश्वास करने के लिए पर्याप्त है, अन्यथा कैसे सम्भव है कि दारक़ुतनी जानते-बूझते हुए एक झूठे और दुराचारी से रिवायत पूछे और अपने आपको दुराचारियों में शामिल कर ले। अत: नि:सन्देह उसने अपने विषय की बुनियाद पूरी छानबीन और जाँच-पड़ताल पर रखी। इसलिए तुम न्याय और धैर्य

के साथ चिन्तन करो और दुराचारियों में से मत बनो। एक मोमिन का दिल उस जैसे महान व्यक्ति को दुराचारियों और अन्यायियों में शामिल करने का कैसे दुस्साहस कर सकता है और एक सदाचारी और ईमानदार पर अत्याचार करके उसे बेईमान और उपद्रवी ठहराने की कैसे धृष्टता कर सकता है। इसलिए वह सत्य बात जिसके स्वीकार किए बिना चारा नहीं और वह ज्ञान जिसके आने पर सन्देह दूर हो जाता है यही है, कि दारक़ुतनी ने रावियों में कोई ऐसी बात नहीं देखी जिस पर व्यंग्य किया जा सके। उसने अपनी आँखों से हदीस की ख्याति को देखा और इस तरह यह चश्मदीद गवाही दो न्यायप्रिय गवाहों के क़ायममुक़ाम ठहरी।

यदि हम मान लें कि दारक़ुतनी ने इस हदीस के रावियों को दुराचारी पाया और फिर भी बिना किसी छानबीन और जाँच-पड़ताल के झूठ गढ़ने वालों और नास्तिकों की तरह फिर भी (अपनी किताब में) इस हदीस को लिखा, तो यह बात उसे पहले दर्जे का भ्रष्ट ठहराती है और सिद्ध करती है कि वह सदाचारी और संयमी नहीं था बल्कि रिवायतें एकत्र करने वालों में से सबसे दुष्ट और दुराचारी था क्योंकि उसने ऐसे व्यक्ति की रिवायत स्वीकार कर ली जो दुराचारी, झूठा और मनगढ़त बातें रचकर रिवायत के रूप में प्रस्तुत करता था और राफ़ज़ियों के लिए रिवायतें रचता था और छलिया और अपने ज़माने का सबसे बड़ा झूठा और आरोपक था और वह जाने-माने निन्दित और मशहूर लोगों में से था। जैसा कि किताब "सियानतुल उनास" के लेखक ने लिखा है जो ग़ज़नवियों में से था। अत: तेरा क्या विचार है, क्या तू दारक़ुतनी को दुराचारी और इस्लाम से विमुख और बेईमान समझता है?

फिर तुम्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि क़ुरआन हमें फ़ासिक़ो (दुराचारियों) की गवाही क़ुबूल करने से मना नहीं करता है। बल्कि यह कहता है:-

اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا (अल हुजुरात- 49/7)

अर्थात यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी ख़बर लाए तो उसकी छानबीन कर लिया

करो। अर्थात् छानबीन और जाँच-पड़ताल के तमाम पहलू पूरे करने के बाद उनकी गवाहियों को क़ुबूल करो, जल्दबाज़ी में नहीं। इसलिए सुधारणा की बात यह है कि हम यह इक़रार करें कि "दारक़ुतनी" ने इस हदीस की पूरी छानबीन और जाँच-पड़ताल कर लेने और रावियों की विश्वस्नीयता परखने के पश्चात् और पूर्णतः सन्तुष्ट होने के बाद ही उनसे यह हदीस ली। तू बुख़ारी शरीफ़ में कुछ ऐसे रावी भी पाएगा जिन पर पथभ्रष्टता और कई प्रकार की बुराइयों का आरोप है। यह हदीस तो कई अन्य सनदों से भी विश्वस्त रावियों द्वारा वर्णित की गई है इसलिए उन्हें भी दृष्टिगत रखना चाहिए जो नईम इब्नि हमाद और अबुल हसन अलख़ैरी ने "अलजुज़्इयात्" में अली इब्नि अब्दुल्लाह इब्नि अब्बास से रिवायत की हैं। अतः तर्कसंगत ढंग से दिरायत वालों (हदीसों की छानबीन और उन्हें इकट्ठी करने वालों) की तरह गहन चिन्तन-मनन से काम लो। इसी तरह की रिवायतें हाफ़िज़ अबूबक्र इब्नि अहमद इब्नि अल् हसन और कसीर इब्नि मर्रः अल् हज़रमी और बेहक़ी इत्यादि से वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त क़ुरआन मजीद सबसे बढ़कर इन सब रिवायतों पर खुले-खुले और सुस्पष्ट तर्कों द्वारा निगरान है। अतः ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त कौन इसका इन्कार कर सकता है जो पत्थर दिल और ईर्ष्या-द्वेष के गढ़े में गिरा हुआ हो और छानबीन एवं जाँच-पड़ताल की रुचि से रहित हो और उसने विवेक के सागर में गोता नहीं लगाया और न ही रहस्यों के छुपे हुए ख़ज़ानों को ढूँढ़ निकाला और न ही सत्याभिलाषियों की तरह सच के ढूँढ़ने का इरादा किया। प्रमाणों की अधिकता के साथ-साथ हदीस की प्रसिद्धि भी इस बात पर दलालत करती है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही कथन है और यही हर इक सिखाने वाले और सीखने वाले ने समझा, वर्ना दूसरों के कुल्लड़ से दूध पीने की क्या मजबूरी आ पड़ी थी। क्या स्वच्छ स्वभाव लोगों की हिदायत के लिए हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसें पर्याप्त न थीं, फिर क्यों उन्होंने ऐसी बातें जमा कीं जो हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नहीं थीं और न ही उनके कथनों से उद्धृत थीं। ऐसी सोच

झूठ, छल और शैतानी काम के अतिरिक्त और कुछ नहीं। ऐसा वही करता है जो धरती में उपद्रव फैलाने की कोशिश करता है और लोगों को दज्जालों की भाँति तबाह और बर्बाद करने की कोशिश में लगा रहता है। जहाँ तक उस व्यक्ति का सम्बन्ध है जिसे ईमान का अंश दिया गया है और उसने ख़ुदाए रहमान की दी हुई सामर्थ्य से रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत (अर्थात् आदर्श एवं क्रियाकलाप) के अनुसरण का सौभाग्य पाया है तो वह इसे बुरा समझेगा और अल्लाह तआला से डरेगा और धृष्टों की तरह पैशाचिक बातों को ईशवाणी का स्थान नहीं देगा और न ही इन्सानी बातों को ख़ुदा की बातों के हमपल्ला ठहराएगा। और तू हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रिवयतों में अधिकतर *मुर्सल** हदीसें पाएगा। वर्णनकर्ताओं ने उन बातों को अपनी ओर मन्सूब नहीं किया और न ही यह कहा कि ये उनकी अपनी बातें हैं या उन जैसे सदाचारी और संयमियों की। बल्कि उन्होंने उनका वर्णन ऐसे ठोस विश्वास और आदर-सम्मान के साथ किया है जो नबियों के सरदार हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी साधारण सदाचारी के लिए शोभा नहीं देता।

अत: यह इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण और तर्क है कि उन्होंने जो भी *मुर्सल* हदीस बयान की उससे उनका अभिप्राय यह था कि वह हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से वर्णित है और वह ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही कथन है और उसके मुर्सल होने का कारण उस हदीस की ख्याति का चर्मोत्कर्ष तक पहुँचना है और जो बातें मशहूर, जानी-पहचानी और रिजाल-ए-हदीस में वर्णित और

* **मुर्सल-** ऐसी हदीस को मुर्सल कहा जाता है जिसको, नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बयान करने वाला ताबई हो, सहाबी न हो, और जिस रिवायत को मुहद्दिस ताबई तक मुत्तसिल सनद के साथ बयान करे, और *ताबई* यह कहे कि :"रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अर्थात यह वह हदीस है जिसमें सिलसिला सनद किसी सहाबी पर टूटता हो यानी ताबई सीधे तौर पर आँहज़रत से रिवायत करे। (अनुवादक)

प्रकाशित हैं वे मर्फ़ूअ मुत्तसिल होने (अर्थात् रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक क्रमशः पहुँचने -अनुवादक) की मोहताज नहीं, केवल अहाद हदीसें (अर्थात् वे हदीसें जो एक ही रावी से वर्णित हों- अनुवादक) ही शक दूर करने की मोहताज हैं ताकि फेरबदल, नास्तिकता और रावियों (वर्णनकर्ताओं) की ग़लती का शक दूर हो जाए और कितनी ही मशहूर और मान्य रिवायतें हैं कि हमें उनके बारे में कोई शक नहीं और न हम उन्हें मनगढ़त समझते हैं बल्कि विश्वसनीय तौर पर सुन्नत-ए-मुतह्हरा (अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र आदर्श) और इस्लामी रीति-रिवाजों में से समझते हैं और इस बात के सिद्ध करने के पीछे नहीं पड़ते कि वे मर्फ़ूअ मुत्तसिल हदीसों में से हैं कि नहीं। यह बात धार्मिक रहस्यों में से एक महान रहस्य है। इसलिए इसे समझ और शुक्रगुज़ारों में से हो जा।

फिर यह भी जान ले कि जो हदीसें ग़ैब (परोक्ष) की बातों और भविष्यवाणियों पर आधारित होती हैं उनकी प्रामाणिकता की अन्तिम कसौटी वे क़ानून नहीं जिनको हदीस लिखने वालों ने बनाया है और रावियों ने उसको उत्कृष्टता तक पहुँचाया है। बल्कि उसकी अन्तिम और सच्ची कसौटी यह है कि वे भविष्यवाणियाँ इच्छित घटनाओं और वादा किए गए समय और बातों के अनुसार ठीक समय पर घटित हो जाएँ और ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के निकट कोई अन्तर शेष न रहे। जिसने इस कसौटी का इन्कार किया और घटित बातों की ओर ध्यान न दिया, वह छानबीन और जाँच-पड़ताल के नियमों से पूर्णतः अनभिज्ञ है और उसका सम्पूर्ण ज्ञान केवल इतना ही है कि वह कपोल-कल्पित बातों के पीछे चलने वाला और आधारहीन एवं भ्रमित बातों का अनुयायी है और सन्मार्गप्राप्तों के मार्ग की ओर मार्गदर्शन से वंचित है और अन्यायियों एवं पक्षपातियों ने कहा कि ज़ईफ़ हदीस अहले सुन्नत के निकट ज़ईफ़ ही है चाहे उसकी सच्चाई स्वयं आँखों के देखने से सिद्ध हो जैसे कि भविष्य की ख़बरें हैं जिनकी सच्चाई स्वयं देखने से स्पष्ट हो जाए और सिद्ध हो जाए कि वह ख़ुदा की ओर से है। हालाँकि ऐसे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व

सल्लम की यह हदीस भी पढ़ते हैं कि सुनी सुनाई बात स्वयं देखने के समान नहीं हो सकती और यह भी जानते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उदाहृत प्रमाणों की अवलोकनों से पुष्टि की है और जहाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुँह मोड़ने वाले झूठे व्यक्ति को सचेत करते हुए फ़रमाया कि ख़बर देने वाला, देखने वाले के समान नहीं, वहीं सुनने वालों को भी इस बात के द्वारा इस ओर प्रवृत्त किया कि वे चश्मदीद गवाहों की गवाही को प्रधानता दें।

उनके व्यर्थ भ्रमों में से एक यह भी है कि सूर्यग्रहण का निर्धारित दिनों और निर्धारित समयों से पहले लग जाना धरती और आसमान पैदा करने वाले ख़ुदा की सामर्थ्य से दूर नहीं। इसके अतिरिक्त वे यह भी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बेटे इब्राहीम का देहान्त महीने की दसवीं तिथि को हुआ था और उस समय ख़ुदा के आदेश से सूर्य को ग्रहण लगा था, फिर ख़ुदा तआला के आदेश से आख़िरी ज़माने (अर्थात् कलियुग) में उसे ग्रहण क्यों नहीं लग सकता। हालाँकि वे जानते नहीं कि उनकी यह बात सत्य नहीं, बल्कि एक प्रकार का खुला-खुला झूठ और झूठों की बातों में से है।

इब्नि तीमिय: रहमतुल्लाह अलैहि ने वर्णन किया है कि यह उपरोक्त कथन वाक़दी से वर्णित है इसलिए अपने समस्त विवरण सहित झूठ है। क्योंकि वाक़दी से उदाहृत की हुई बात का प्रमाण सम्मतिपूर्ण तर्क नहीं। फिर इस बात की क्या हैसियत होगी जिसका प्रमाण क्रमहीन है और कहने वाले का यह कथन कि सूर्य को दसवीं तिथि को ग्रहण लगा, ऐसी ही बात है जैसे कि वह यह कह दे कि हिलाल (अर्थात् पहली रात का चंद्रमा) महीने की बीसवीं तारीख़ को निकला।

इसके अतिरिक्त सहीह एवं ठोस निष्कर्ष और सही एवं सच्चा मंथन दोनों इस बात पर गवाह हैं कि प्राकृतिक विधान इसी तौर पर जारी है कि चन्द्रमा को शुक्ल पक्ष की शीर्षस्थ तिथियों (अर्थात् तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं

तिथि-अनुवादक) में से किसी एक तिथि को ग्रहण लगता है जबकि सूर्य को मास के अन्तिम दिनों (अर्थात् सत्ताईस, अट्ठाईस और उन्तीस-अनुवादक) में से किसी एक दिन ग्रहण लगता है और ख़ुदा के बनाए हुए विधान में परिवर्तन नहीं होता।

इसी पुरातन पद्धति और कालातीत विधानानुसार चन्द्र-सूर्य ग्रहण प्रकट हुआ। जब यह सच्चाई जिसके प्रकटन का ख़ुदा ने इरादा किया था संसार के पटल पर प्रकट हो गई तो कौन सी घोर आवश्यकता आ पड़ी कि हम ठोस और ज्ञात अर्थों में हेरफेर करें और कौन सी मुसीबत आ पड़ी कि पूर्णतः समझी और जानी-पहचानी हुई बात को बदलते फिरें। जब सत्य तुम्हारे पास आ गया तो उसे मत झुठलाओ और एक सतत् सिद्ध और आँखों देखी बात से मुँह मत फेरो। हमने सत्याभिलाषियों को सत्य से अवगत कराने के लिए अपनी बात को विस्तारपूर्वक खोलकर वर्णन किया है और इस विषय को किताब (क़ुरआन) सुन्नत और हदीस के इमामों और इस्लाम के भूतपूर्व विद्वानों के कथनों से सिद्ध किया है। क्या कोई साहसी और बहादुर व्यक्ति है जो संयम धारण करे और सदाचारियों का मार्ग अपनाए।

और उनके भ्रमों में से एक भ्रम यह भी है कि यह हदीस हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस नहीं बल्कि इमाम बाक़र रहमहुल्लाह का कथन है और हम इसमें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम नहीं पाते। तो इसके उत्तर में जान लो कि यह धार्मिक विषयों में से एक विषय है। इमाम बाक़र हों या कोई और, उनके लिए यह सम्भव नहीं कि वे ऐसी बातें करें जो नबियों की शान है और इमाम बाक़र रज़ियल्लाहो अन्हो ने यह नहीं कहा कि यह मेरा कथन है और न ही इसे अपनी ओर मन्सूब किया है। इसलिए यह इस बात की पक्की दलील है कि यह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही कथन है और इस पर तर्क यह है कि इस्लामी पूर्वजों की यह आदत थी कि जब वे धर्म की बात करते तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कही हुई बात

को न अपनी ओर और न मोमिनों में से किसी और की ओर मन्सूब करते और न तार्किकों की तरह उस पर बहस करते, बल्कि मुकल्लिदीन (अर्थात् बात को ज्यों का त्यों नक़ल करने वाले-अनुवादक) की तरह बातों की पुनरुक्ति करते और उस बात से उनका तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन होता और उसे ज्यों का त्यों बयान करते, जो इस बात की ओर संकेत होता कि इस बात की सुप्रसिद्धि ही प्रमाणों की जाँच-पड़ताल और छानबीन की आवश्यकता से निस्पृह करती है। क्योंकि वह ऐसी बात है कि जिसकी सुप्रसिद्धि उसे ठोस और प्रमाणिक ठहराती है इसलिए किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं। यही बात सत्य है, इसलिए इसे स्वीकार कर और भ्रम में पड़ने वालों में से मत बन।

उनके बड़े-बड़े भ्रमों में से एक वह भी है जो कपोल-कल्पित बातों के अनुसरण की पैदावार है। अत: जिसने सच्चाई के आँचल को (माँ के दूध की तरह) नहीं चूसा, बल्कि वह भूख से बिलबिला रहा है। वे कहते हैं कि महदी की निशानियाँ तो दो सौ के लगभग हैं। इसलिए हम तुझे उस समय तक स्वीकार न करेंगे और न ही कभी तेरे दावे को सच्चा समझेंगे, जब तक कि उन सारी निशानियों को अपनी आँखों से पूरा होते न देख लें। उनके प्रकट होने से पहले हम तुझे झूठी बातें बनाने वाला, दिखावटी रोने-धोने वाला और झूठों में से समझेंगे और हमारे लिए उस समय तक तेरे साथ प्रेम और लगाव का सम्बन्ध जोड़ना या तुझ पर भरोसा करना असम्भव है जब तक कि तुझ में वे सारी निशानियाँ न प्रमाणित हो जाएँ। इससे पहले हम तेरे मुँह से निकलने वाली किसी बात को कदापि स्वीकार न करेंगे। बल्कि तुझे फ़सादी और उपद्रवी समझेंगे। इसके प्रत्युत्तर में तुम यह जान लो कि उनकी यह सारी बातें इन्द्रजाल की तरह वास्तविकता से रहित हैं और भ्रमों का एक ढेर हैं। जिनसे इन सरकर्द: (अगुवा) लोगों ने धोखा खाया है और उन्होंने अज़ाब (दण्ड) के स्रोत को मीठा पानी समझ लिया है और उलेमाओं ने शक पैदा करने वाले धोखेबाज़ का रूप धारण कर लिया है और लोगों को गुमराह किया है और महान सच्चे न्यायक हज़रत

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बातों को झुठलाया और छलिया दज्जाल की तरह सच को उलट-पलट दिया और अजीब चालबाज़ी दिखायी और खुला-खुला सन्देह पैदा कर दिया है और वह सत्य जो सूर्य के समान चमक रहा है और अपने प्रकाश से दिलों को रोशन कर रहा है, यह है कि भविष्यवाणियों पर आधारित आसार (हदीसें) सब एक समान नहीं, बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार और भिन्न-भिन्न स्तरों की हैं। उनमें से कुछ तो सुस्पष्ट और खुली-खुली बातों के समान हैं और कुछ बहुअर्थी बातों के समान। अत: जिस भविष्यवाणी के प्रकटन की निशानियाँ सुस्पष्ट हो गई हों और उसके नूर की किरणें चमक उठी हों और उसकी सच्चाई और वास्तविकता अच्छी तरह स्पष्ट गई हो और उसकी हर छोटी-बड़ी बात अच्छी तरह खुल गई हो और बुद्धिमानों की प्रतिभाएँ उसे पहचान चुकी हों और विचारज्ञों ने उसके सन्दर्भ में गवाही दे दी हो और यह स्पष्ट हो गया हो कि वह भविष्यवाणी अपनी सच्चाई के सम्मान के कारण अच्छी प्रसिद्धि की पात्र है और यथासामर्थ्य उसकी जाँच पड़ताल और छानबीन हो चुकी है और अब वह एक अनसुलझा रहस्य या धूमिल बात नहीं रही, बल्कि वास्तविकता खुलकर स्पष्ट हो गई और सच्चाई चमक उठी और बीमार के ठीक होने और प्यासे के तृप्त होने के सारे सामान जमा हो गए और जाँच पड़ताल करने वालों के एक गिरोह ने उसे अपनी आँखों से देख लिया तो यह ख़बर (हदीस) नि:सन्देह स्पष्ट और खुली-खुली हदीसों में दाख़िल हो गई और झूठी या ज़ईफ़ होना उसकी ओर मन्सूब नहीं हो सकता, चाहे हज़ारों रावी और ठोस रिवायतें इसके विरुद्ध ही क्यों न हों। क्योंकि आँखों देखी बातें उदाहृत प्रमाणों के द्वारा झुठलाई नहीं जा सकतीं और खुली-खुली एवं सुस्पष्ट बातें दर्शन एवं अवधारणाओं से ग़लत नहीं ठहराई जा सकतीं। उदाहरण के तौर पर यदि तू जानता है कि तू जीवित है तो अत्यधिक गवाहियों के बावजूद तू अपनी मौत की ख़बर को कैसे सच्ची समझेगा। इसी तरह जब कोई बात खुलकर और स्पष्ट होकर सामने आ जाए तो यह नहीं कहा जाएगा कि उसका रावी झूठा था इसलिए उसने झूठ बोला और ग़लतबयानी की। भविष्यवाणियाँ

जब स्पष्ट और खुले-खुले तौर पर घटित हो जाएँ तो उनकी सच्चाई रावियों के संयम की छानबीन और जाँच-पड़ताल की मोहताज नहीं रहती। बल्कि यह सब सिद्धान्त हैं जो अहाद (अर्थात् एक ही रावी से वर्णित होने वाली ख़बरों-अनुवादक) से उद्धृत ख़बरों (हदीसों) के बारे में बनाए गए हैं और रिवायतें यदि तवातुर (अर्थात् क्रमशः अपने मूल वक्ता तक ज्यों का त्यों पहुँचने वाली बातें-अनुवादक) हों तो इस सिद्धान्त के सहारे की मोहताज नहीं। सुस्पष्ट हदीसों की सच्चाई तो दोपहर के सूर्य की तरह स्पष्ट है। उन्हें मूर्ख या दुष्टों के अतिरिक्त कोई नहीं झुठला सकता। जो रिवायतें इस स्तर तक न पहुँची हों वे सुस्पष्ट और सुविख्यात हदीसों की चमक को नहीं बुझा सकतीं, चाहे उनकी संख्या एक लाख ही क्यों न हो। क्योंकि उनके मर्म सुस्पष्ट नहीं बल्कि रहस्य के पर्दे में छुपे हुए हैं। यदि यह मान भी लें कि यह सारी ख़बरें रावियों के सच्चे होने की दृष्टि से सच्ची हैं तब भी साबितशुदा आँखों देखी सच्चाइयाँ इनसे झुठलाई नहीं जा सकतीं। बल्कि हम उनकी व्याख्या करेंगे और ऐसी दशा में हम व्याख्याओं के मोहताज होते हैं। क्योंकि अहाद ख़बरें (अर्थात अहाद हदीसें-अनुवादक) बुद्धिमानों की दृष्टि में तवातुर (निरन्तरता) का स्थान नहीं रखतीं। उनकी सच्चाई दूसरों पर आधारित है, अनुभूत और अवलोकित बातों के समान उनका स्थान नहीं। क्योंकि उन्हें हम केवल रावियों पर ही भरोसा करके सही समझते हैं और सुधारणा रखते हैं कि वे संयमी (मुत्तक़ी) और सदाचारी थे और उत्तम स्मरणशक्ति और ज्ञान रखते थे। विश्लेषकों और अनुभवियों के निकट इस नियम को आँखों देखी हुई बातों पर आधारित सच्चाइयों से वही सम्बन्ध है जो बुद्धिमानों के निकट तयम्मुम को वुज़ू से है। अतः जिस पर अल्लाह तआला सच्चे साधनों या सुस्पष्ट सच्चे इल्हामों द्वारा सच्चाइयों के वे दरवाज़े खोल दे जो हर एक दुविधा या असमंजस के धुएँ से रहित हों तो उस पर अनिवार्य है कि वह उन सच्चाइयों के विपरीत बातों की ओर ध्यान न दे और संशय को सत्य पर प्रधानता न दे। हे संशयों के पीछे चलने वालो! तुमने सत्य को जानबूझकर भुला दिया है और कुमार्ग पर भरोसा करके जानबूझकर संशययुक्त बातों को अपना लिया है और सुन्दर

और सन्मार्ग की शिक्षा देने वाले ख़ुदा को भूल गए हो। जबकि वह (क़ुरआन करीम में) कह चुका है कि- اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا (अन्नज्म-53/29) अर्थात् संशय सत्य के सामने कोई लाभ नहीं दे सकता। विश्वस्त साधनों की बजाय वास्तविक और मूल साधनों से साबितशुदा बात क़ुरआन मजीद की ठोस और सुस्पष्ट बातों की तरह है, और विश्वस्त साधनों से सिद्ध होने वाली बात क़ुरआन मजीद की अनेकअर्थी बातों की तरह है। जिन लोगों के दिलों में बीमारी है वे ठोस और सुस्पष्ट बातों को छोड़कर अनेकअर्थी बातों का अनुसरण करते हैं और जिसकी बात ब्रह्मज्ञान से भरी हुई ठोस विश्वास तक न पहुँची हुई हो वह उस मिलावटशुदा दूध की तरह है जिसमें दूध कम और पानी ज़्यादा है। इसलिए ईमानदारी का तक़ाज़ा है कि हम दुविधाजनक बातों को ठोस और सुस्पष्ट बातों के अधीन रखें और जब हम घटनाओं में से किसी घटना को देखें कि वह अच्छी तरह स्पष्ट हो चुकी है और उसकी सच्चाई के रहस्य चमक उठे हैं तो हम पर अनिवार्य है कि उसके विरुद्ध पाई जाने वाली सारी रिवायतों की व्याख्या करें और नेकनीयती के साथ उन्हें उस घटना के अनुरूप करें। अत: जो इस नियम का अनुसरण न करेगा उसका दिल पथभ्रष्टता (दुराचार) में पड़ा रहेगा, यहाँ तक कि उसकी पथभ्रष्टता उसे मूर्खताओं की छुरी से तबाह व बर्बाद कर देगी। एक सोच-विचार करने वाला बुद्धिमान भविष्यवाणियों के पूरा होने की दशा पर ग़ौर करता है न कि रिवायतों की अधिकता और उनके रंग-ढंग पर, फिर जब वह भविष्यकाल से सम्बन्धित हदीसों और ख़बरों में से किसी हदीस को देखता है कि उसकी सच्चाई खुली-खुली और अनुभूत बातों के समान सुस्पष्ट हो गई है तो ऐसे आसार (अर्थात् आसार हदीसें- अनुवादक) की परवाह नहीं करता जो प्रमाण के इस स्तर तक नहीं पहुँचे, चाहे उसके समस्त रावी विश्वस्त और मान्य लोगों में से ही क्यों न हों। बल्कि वह हर उस बात से नफ़रत करता है जो साबितशुदा बातों के रंग-ढंग के ख़िलाफ़ हो और उसे रद्दी चीज़ की तरह समझता है और खुली-खुली, ठोस एवं सुस्पष्ट बातों के बदले कमज़ोर एवं आधारहीन विचारों और

अनुमानों को नहीं अपनाता और अच्छी तरह जानता है कि सुनी-सुनाई बात आँखों देखी जैसी नहीं होती। यह वह क़ानून है जो ठोकर और शर्मिन्दगी से बचाने वाला है। क्योंकि जो बात सच्चे और सुस्पष्ट प्रमाणों से साबित हो वह संशयपूर्ण रिवायतों से कैसे झूठी और व्यर्थ ठहर सकती है। जाँच पड़ताल और छानबीन करने वालों के निकट भी सूचना पाने वाला, चश्मदीद की भाँति नहीं होता। क्या तू हज़रत ख़ातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन को भूल गया या तू विक्षिप्तों में से है। जो लोग ज़ईफ़ रिवायतों को साबितशुदा और चश्मदीद हदीसों पर प्रधानता देना उचित समझते हैं, मुझे आश्चर्य है कि सच्चाई के चेहरे से पर्दा उठ जाने के बाद उन्हें यह बात कैसे गवारा होती है और सच्चाई खुलने और रहस्यज्ञानों के पूर्णत: चमक उठने के बाद वे कैसे संशयों पर आत्मविश्वास किए बैठे हैं। मौजूदा हालत कुछ ऐसी ही है, जब हमने उनकी रिवायतों पर गहरी नज़र डाली और उनकी हदीसों पर ख़ूब ग़ौर किया तो उनके हाथ में अहाद हदीसों के ढेर के सिवा कुछ न पाया और महदी से सम्बन्धित रिवायतों में तो परस्पर बहुत सी विरोधाभास और भाँति-भाँति के विकार हैं। इसलिए यह क़ानून जिसका मैने वर्णन किया है और यह कसौटी जो मैंने निर्धारित की है उन लोगों के लिए शुभ और समृद्धि का कारण है जो इन विषयों की जाँच पड़ताल की इच्छा रखते हैं और झूठ और निषिद्ध बातों से छुटकारा पाना चाहते हैं। अत: यह क़ानून और यह कसौटी जो मैंने निर्धारित की है छानबीन और जाँच पड़ताल करने वालों की दृष्टि में अत्यन्त पवित्र और लाभदायक है और आपस में मतभेद रखने वालों के लिए एक निर्णायक विषय है। इसलिए तुझ पर अनिवार्य है कि इन बातों में से किसी बात पर तब तक जाँच पड़ताल और छानबीन करे जब तक कि वह ठोस और सुस्पष्ट बातों की भाँति न हो जाए और संशय की उसमें कोई गन्ध शेष न रहे। फिर जब तू देखे कि वह खूब खुलकर स्पष्ट हो चुकी है और उसमें रहस्य का कोई पर्दा शेष नहीं रहा और वह सूर्य की तरह स्पष्ट हो चुकी है तो उसे ऐसी दुविधाजनक बातों का निगरान और निरीक्षकर समझ जो रोशन और सुस्पष्ट बातों की तरह

स्पष्ट और परिभाषित नहीं। फिर यदि दोनों में अनुकूलता पैदा हो जाए तो ठीक, अन्यथा अलगाव, विमुखता और दूरी ही सही है। फिर तुझ पर अनिवार्य है कि अपने विवेकानुसार ठोस और सुस्पष्ट बातों पर ईमान लावे और उनका अनुसरण और अनुकरण करे और उन रिवायतों पर सारांशत: ईमान लाने के साथ-साथ दुविधापूर्ण रिवायतों की असल हक़ीक़त ख़ुदा के सुपुर्द करे। यही संयम का मार्ग और संयमियों का स्वभाव है और यही वह क़ानून है जो ग़लतियों से बचाने वाला और मतभेदित विचारों की मुसीबत से छुटकारा दिलाने वाला है। जब हम इस क़ानून की दृष्टि से सूर्य-चन्द्र ग्रहण के नियम पर ग़ौर करते हैं तो इस नियम को मोती की तरह साबितशुदा और चमकदार पाते हैं। इसलिए जब हम किसी ऐसी रिवायत को देखें जो इस नियम के अनुरूप और अनुकूल न हो, बल्कि उसे बेलगाम और बेक़ाबू सवारी या अत्यन्त बिदकने वाले जंगली जानवरों की भाँति पाएँ तो हम ऐसी रिवायत को इस तरह नापसन्द करें जिस तरह एक सदाचारी व्यक्ति उपद्रव को नापसन्द करता है। इसलिए इन रहस्यों को पल्ले बाँध ले और जो हो चुका उससे सदाचारियों की तरह तौबा कर, और जहाँ तक तेरी इस बात का सम्बन्ध है कि यह हदीस पहली रात के चंद्रमा को ग्रहण लगने की ओर संकेत करती है तो यह मूर्खता और मूढ़ता है और हमें तेरी बेबसी और तुच्छ ज्ञान पर रोना आता है। हे ज्ञान से कंगाल व्यक्ति! ज़रा किताब "लिसानुल अरब" को खोलकर देख, जिसकी सदृश साहित्यकारों के निकट अभी तक लिखी नहीं गई। वह कहती है कि हिलाल चंद्रमा की वह प्रारम्भिक अवस्था है जिसे लोग मास के प्रारम्भ में देखकर ख़ुश होते हैं। कुछ के निकट महीने की प्रारम्भिक दो रातों का चंद्रमा हिलाल कहलाता है। इसके बाद उसे यह नाम तब तक नहीं दिया जाता जब तक कि वह अगले मास में उदय न हो। कुछ के निकट महीने की प्रारम्भिक तीन रातों के चंद्रमा को हिलाल कहते हैं, फिर उसको क़मर कहा जाता है। कुछ कहते हैं कि तब तक उसका नाम वही रहता है जब तक कि उसके चारों ओर घेरा न प्रकट हो जाए। कुछ के निकट उसका नाम तब तक हिलाल ही रहता है जब तक कि उसकी रोशनी

रात के अँधेरे को रोशन कर दे और यह दशा सातवीं रात को होती है। अबू इस्हाक़ ने कहा है कि मेरे और अधिकतर लोगों के अनुसार प्रारम्भिक दो रातों का चंद्रमा हिलाल कहलाता है, क्योंकि तीसरी रात में उसकी रोशनी खुलकर स्पष्ट हो जाती है। इसलिए हे बुद्धि और विवेक रखने वाले! यदि तू सत्याभिलाषियों में से है तो सोच-विचार कर।

अब हम तेरे लिए एक ब्योरा तैयार करते हैं और तुझे दिखाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महीने की पहली रात के चंद्रमा को क़मर के नाम से नामित नहीं किया बल्कि उसे "हिलाल" का नाम दिया है। यदि तू इसका इन्कारी है तो इसके विरुद्ध हमारे सामने कोई हदीस निकालकर प्रस्तुत कर। और अगर तू मोमिन है तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रमाणित बात को क़ुबूल कर ले।

क्रमांक	किताब का नाम	पृष्ठ	स्थान	प्रेस	हदीसों का लेखांश
1	सहीह बुख़ारी	255	किताबुस्सौम बाब रुइयते हिलाल	अहमदी मेरठ	قال ثنی عقیل و یونس لهلال رمضان الخ
2	"	"	"	"	قول النبی صلعم اذا رایتم الهلال فصوموا
3	"	"	"	"	لا تصوموا حتی تروا الهلال الخ
4	सहीह मुस्लिम	347	किताबुस्सियाम बाब वजूद सौम रमज़ान लिरुइयते हिलाल	अन्सारी देहली	عن ابن عمر عن النبی صلعم انه ذکر رمضان فقال لا تصوموا حتی تروا الهلال

5	"	"	"	"	قال رسول الله صلعم الشهر تسع وعشرون فاذا رايتم الهلال
6	"	"	"	"	قال رسول الله صلعم اذا رايتم الهلال
7		348	"	"	ذكر رسول الله صلعم الهلال
8	"	"	बाब बयान इन लिकुल्ले बलद...अन्त तक	"	واستهل على رمضان وانا بالشام فرايت الهلال
9	"	"		"	ثم ذكر الهلال فقال متى رايتم الهلال
10	"	"		"	
11	"	"		"	
12	"	349	बाब मअना क़ौलहू सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम		
13	सुनन दार-क़ुतनी	232	किताबुस्सियाम बाब शहादत अला रुइयते हिलाल	फ़ारूक़ी देहली	فقال من راى الهلال
14	"	"	"	"	وانهما اهلاه بالامس
15	"	"	"	"	ان الاهلة بعضها اكبر من بعض فاذا رايتم الهلال
16	"	"	"	"	اذا رايتم الهلال
17	"	"	"	"	ان الاهلة بعضها اعظم من بعض فاذا رايتم الهلال
18	"	"	"	"	راى الهلال

क्रमांक	किताब का नाम	पृष्ठ	स्थान	प्रेस	हदीसों की संख्या
19	"	233	"	"	ان الاهلة بعضها اعظم من بعض فاذا رايتم الهلال
20	"	"	"	"	انهما اهلاه
21	"	"	"	"	ان الاهلة بعضها اكبر من بعض فاذا رايتم الهلال
22	"	"	"	"	انهما اهلاه بالامس
23	"	"	"	"	فشهدا عند النبى صلعم بالله لا هلا الهلال امس
24	"	"	"	"	انهم راوا الهلال
25	"	"	"	"	فشهدوا انهم رأو الهلال بالامس
26	"	"	"	"	ان رجلا شهد عند على بن ابى طالب علیہ السلام على رؤية هلال رمضان
27	"	"	"	"	قال الشافعى فان لم تر الصامة هلال رمضان
28	"	"	"	"	قال الشافعى من راى هلال رمضان وحده فليصمه و من راى هلال شوال
29	"	"	"	"	وقال مالك فى الذى يرى هلال رمضان
30	"	"	"	"	ومن راى هلال شوال
31	"	"	"	"	قد راينا الهلال
32	"	"	"	"	قال اهللنا هلال ذى الحجة
33	"	"	"	"	راينا الهلال فقال بعضهم هو لثلث وقال بعضهم لليلتين

क्रमांक	किताब का नाम	पृष्ठ	स्थान	प्रेस	हदीसों की संख्या
34	"	"	"	"	انا راينا الهلال
35	सुनन दार क़ुतनी	234	बाब मअना क़ौलहू सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ...अन्त तक	फ़ारूक़ी देहली	قال اهللنا هلال رمضان
36	"	"	किताबुस्सियाम बाब शहादत अला रुइयते हिलाल	फ़ारूक़ी देहली	واستهلّ على رمضان وانا بالشام فرايتُ الهلال
37	"		"	"	ذكر الهلال متى رأتيم الهلال
38	"		"	"	رجلان يشهدان عند النبى صلى الله عليه وسلم انهما اهلاه بالامس
39	"	235	"	"	اصبح رسول الله صلعم صائما صبح ثلثين يوما فرأى هلال شوال
40	"	"	"	"	قال راى هلال شوال
41	"	"	"	"	حتى تروا الهلال
42	"	"	"	"	سالت الزهرى عن هلال شوال
43	तिर्मिज़ी	121	अबवाबुस्सौम बाब मा जाअ फ़ी अहसा-ए- हिलाल	फ़ख़रुल मताबेअ देहली	احصو هلال شعبان لرمضان
44	मिश्कात	166	किताबुस्सौम बाब रुइयते हिलाल	बम्बई 1282 हिज्री	قال رسول الله صلعم لا تصوموا حتى تروا الهلال

क्रमांक	किताब का नाम	पृष्ठ	स्थान	प्रेस	हदीसों की संख्या
45	"	"	" " "	"	قال رسول الله صلعم احصوا هلال شعبان لرمضان
46	"	"	" " "	"	انی رایت الهلال یعنی هلال رمضان
47	"	"	" " "	"	قال ترااى الناس الهلال
48	"	167	" " "	"	ترااینا الهلال فقال بعض القوم هو ابن ثلاث وقال بعض القوم هو ابن لیلتین
49	"	"	" " "	"	اهللنا رمضان

अन्तिम शब्द

(निर्णायक तर्क)

काफ़िर-काफ़िर कहने वाले दुस्साहसियों को चेतावनी और झूठे और झुठलाने वालों पर अकाट्य एवं निर्णायक तर्क

जान लो कि यह किताब हर ऐसे व्यक्ति के लिए जो रहमान ख़ुदा के औलिया के ख़िलाफ़ दुस्साहस करता है और ब्रह्मज्ञानियों के मक़ाम तथा मर्तबा (स्तरों) से बेख़बर है एक डाँट-डपट है। मैंने उपकार करने वाले ख़ुदा की कृपा से इसको दो भागों में लिखा है और दोनों ही एक ऐसे बन्दा की दो करामतें हैं जो उस ज्ञान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानता जो सामर्थ्यवान और उपकारी ख़ुदा के इल्हाम (ईशवाणी) ने उसे सिखाया। अल्लाह तआला उन्हीं लोगों का समर्थन करता है जो निष्ठा में ऐसे स्थान तक पहुँच जाते हैं जहाँ तक दुनियादारों में से कोई नहीं पहुँचा। उनको वह कुछ दिया जाता है जो जनसाधारण में से किसी को नहीं दिया जाता। वह उनकी करनी एवं कथनी में कल्याण और कामयाबी और उनकी सूझ-बूझ में ज्ञान और दूरदर्शिता रख देता है और लोगों को दिखाता है कि वे ख़ुदा के समर्थनप्राप्त स्वीकृत बन्दों में से हैं। विधाता का विधान हमेशा से इसी तरह जारी है कि वह सदाचारियों (संयमियों) को प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान करता है और दुराचारियों को लज्जित और शर्मिन्दा करता है। वह अपने निष्ठावान् बन्दों (भक्तों) को कभी तबाह नहीं करता और जब भी उनकी करामतों के प्रकट करने और स्थानों को बढ़ाने के लिए उन्हें कोई विषय प्रदान करता है तो विरोधी उसका उदाहरण प्रस्तुत करने पर समर्थ नहीं होते, चाहे सोच-विचार में अपनी सारी आयु लगा दें और प्राण न्योछावर कर दें। किसी मनुष्य के लिए यह सम्भव नहीं कि वह ख़ुदा तआला और उसके सहायताप्राप्त बन्दों का मुक़ाबला कर सके। नित नए होने वाले आविष्कारों से उद्धृत ज्ञान ख़ुदा से मिले ज्ञान की बराबरी नहीं कर सकता। क्या सुजाखा और अन्धा बराबर हो सकते हैं? क्या

ब्रह्मज्ञानी और सांसारिक लोग बराबर हो सकते हैं? कदापि नहीं, बल्कि अल्लाह तआला अपने औलिया (भक्तगण) के लिए एक विशिष्ट अन्तर पैदा कर देता है और उनके ज्ञान एवं अध्यात्म को बढ़ाता है और अपनी दया और कृपा से उनके सारे कामों में उनकी सहायता करता है और उपद्रवियों के षड़यन्त्रों को धूल में मिलाता है और जब ख़ुदा लोगों में से किसी को लज्जित और शर्मिन्दा करने का इरादा करता है तो उसे अपने औलिया के दुश्मनों और ईर्ष्यालुओं में से बना देता है, फिर वह अल्लाह के निकटस्थ के ख़िलाफ़ अशोभित और धृष्टतापूर्ण बातें करता है और उसे कष्ट पहुँचाता है और उसके मुँह से दुष्टता से भरे हुए शब्द निकलते हैं और कभी-कभी उसकी क्षीणबुद्धि, घोर भ्रम और ख़ुदा के रहस्य और उसके सिद्धान्तों के उत्कृष्टतम् अर्थों को समझने से रहित होने के कारण अल्लाह तआला उसे ढील भी देता है। लेकिन जब सच्चाई को समझने के बावजूद उस मार्ग को नहीं अपनाता तो ख़ुदा की ढील और मोहलत की नज़र से गिर जाता है और अल्लाह उससे ईमान का विवेक और विश्वास छीन लेता है और उसको नुकसान उठाने वालों में से शामिल कर देता है और यह औलिया की करामतों के भेदों में से एक भेद है, क्योंकि अल्लाह तआला उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए हर एक डींग मारने वाले और दिखावा करने वाले को लज्जित और शर्मिन्दा कर देता है। अत: शेख़ बत्तालवी की तरह जो बड़ा घमण्ड़ी और घोर झूठा है मुझ पर कुफ्र और इल्हाद (अधर्म और नास्तिकता) का आरोप लगाते हैं और मुझे काफ़िर और फ़ाजिर (अधर्मी और दुराचारी) समझते हैं और इसी तरह हर वह व्यक्ति जिसने मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा लगाया और मुझे दुराचार और गुमराही (पथभ्रष्टता) की ओर मन्सूब किया और मेरी बातों को अच्छे अर्थों में न आँका तो मैं उन सबको उसी तरह मुक़ाबले के लिए आमन्त्रित करता हूँ जैसा कि ईसाइयों को किया था और उन्हें घोषणापूर्वक मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) के ललकारता हूँ। यदि वे सच्चे हैं तो इस मुनाज़रा (शास्त्रार्थ) के लिए आ जाएँ। मेरे रब्ब ने मुझे बता दिया है कि वे अवश्य पराजित होंगे। ख़ुदा की क़सम ! मैं उलमाओं में से नहीं हूँ और न ही विद्वानों और बुद्धिमानों में से। मेरे बयान की

सारी वाग्मिता एवं आलंकारिकता या क़ुरआन की तफ़्सीर (व्याख्या) रहमान ख़ुदा के प्रदत्त उपकारों में से है। इसमें जो भी मुझसे ग़लती हुई है वह मेरी ओर से है और जो भी सत्य है वह मेरे रब्ब की ओर से है। मेरे रब्ब ने मुझे ब्रह्मज्ञान से परिपूर्ण किया है। इन सब के बावजूद मैं अपने आप को भूल-चूक से बरी नहीं ठहराता। हालाँकि अल्लाह तआला मुझे एक क्षण के लिए भी ग़लती पर क़ायम नहीं छोड़ता और हर झूठ से मुझे बचाता है और शैतान एवं राक्षसों के मार्ग से मेरी रक्षा करता है। अत: हे खोखले दावे करने वालो और लोभ-लालसा और दिखावा के शिकारो! यदि तुम अपने आप को विद्वान, ब्रह्मज्ञानी और प्रतिभावान् समझते हो या अपने आप को सदाचारी, औलिया अल्लाह और मुत्तक़ी (संयमी) समझते हो या उन लोगों में से समझते हो जिनकी दुआएँ ब्रह्मलीनों की तरह सुनी जाती हैं तो समस्त दृष्टिकोणों से विभूषित मेरी इस किताब का उदाहरण ले आओ और इस तरह ख़ुदा के दरबार में मुझे अपनी विद्वता और महानता दिखलाओ। हे निपट मूर्खों की टोली! यदि तुम ऐसा न कर सको और याद रखो कि कदापि ऐसा न कर सकोगे, इसलिए हे मूर्खों के गिरोह! सच्चों और ब्रह्मज्ञानियों से सभ्यता और शिष्टता का व्यवहार करो और हर प्रकार की सरकशी (उजड्डता एवं उद्दण्डता) छोड़ दो। यह सारा काम सर्वशक्तिमान ख़ुदा का है, न कि कमज़ोरों और लाचारों का। करामात (चमत्कार) दुश्मन की ओर से उपेक्षा और उपहास के समय प्रकट होते हैं और अत्याचारियों के हद से ज़्यादा अत्याचार के समय ख़ुदा के पवित्र भक्तों को ख़ुदा की ओर से सहायता मिलती है और जब अत्याचार हद से बढ़ जाता है तो ख़ुदा उनकी सहायता को आता है। इसलिए अपने दुष्कर्मों और झूठी बातों से तौबा करो और नैतिकता और सदाचार की ओर तेज़ी से क़दम बढ़ाओ, कि सारी विद्वता निशान के स्वीकार करने में है। इसलिए निशान को शर्मिन्दगी उठाने से पहले स्वीकार करो और अपने आप को शर्मिन्दगी और रुसवाई की स्याही और क़यामत के अज़ाब से बचाओ। यदि तुम पछतावा और प्रायश्चित करने वालों की तरह आओ तो तुम्हारे लिए शुभसूचना है। यहीं पर नसीहत समाप्त हुई

और दुश्मनों को निरुत्तर करने और उन पर निर्णायक तर्क पूरा करने का काम समाप्त हुआ। उस पर सलामती हो जिसने शर्मिन्दा होने से पहले हमें क़ुबूल किया और गुनहगारों (पापियों) का मार्ग त्याग दिया।

आख़िरी बात हमारी यही है कि हर प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा को है जो समस्त लोकों का पालनहार है।

विनम्र लेखक
निस्पृह ख़ुदा की चौखट का फ़क़ीर
ग़ुलाम अहमद

यह किताब अति लोकप्रिय और ख़ुदा के सर्वोच्च गौरवशाली प्रतापवान् रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिजरत से 1311 हिज्री, ज़ीक़ाद: महीने में लिखी गयी।

★ ★ ★

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इब्ने मरियम- मरियम का पुत्र (अर्थात ईसा मसीह अलैहिस्सलाम)

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है। फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्राईल रखा है।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

क़यामत- महाप्रलय। मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

कुफ़्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

ज़ईफ हदीस- (अर्थात कमज़ोर) वह हदीस जिसके रावी (हदीस बताने वाले) की ईमानदारी के बारे में कि सी को आपत्ति हो या उसकी स्मरण शक्ति बहुत कमज़ोर हो।

जिब्रील- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नुबुव्वत- नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मजरूह हदीस- वह जिसमें, हदीस बताने वाले (रावी) के शब्दों और कार्यों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में जिरह की गई है।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

मौज़ूअ हदीस- झूठी हदीस, जिसे रावी (हदीस बताने वाले) ने झूठ बोलकर आंहज़रत स०अ० व० की ओर सम्बद्ध कर दिया हो।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत, पैगम्बर।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रहिमहुल्लाहु- उन पर अल्लाह की कृपा हो। यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के साथ प्रयुक्त होता है।

रूह- आत्मा।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता, जिब्राईल।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

ला'नत - अभिशाप, अमंगल कामना।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलाम - शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हज़रत - श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *